# University Studies—Mo. 1.

## HISTORY

OF THE

# MEDIÆVAL SCHOOL OF INDIAN LOGIC

BY

Манаманораднуа ya SATIS CHANDRA VIDYABHUSANA, м.А., Рн.D.

Professor of Sanskrit and Pali, Presidency College, Calcutta; Joint Philological Secretary, Asiatic Society of Bengal; and Fellow of the Calcutta University.



Thesis approved for the Degree of Doctor of Philosophy in the University of Calcutta,

1907.

## Cafcutta:

PUBLISHED BY THE CALCUTTA UNIVERSITY AND PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

#### TO

# THE HON'BLE MR. JUSTICE ASUTOSH MUKHOPADHYAYA,

SARASVATI, M.A., D.L., D.So., F.R.A.S., F.R.S.E.,

Vice-Chancellor of the Calcutta University,

President of the Asiatic Society of Bengal, and Chairman of the Board
of Indigenous Sanskrit Education, Bengal,

WHOSE LIFE IS AN UNBROKEN RECORD
OF LOFTY IDEALS
TRANSLATED INTO PRACTICE,
THIS BOOK IS DEDICATED

IN TOKEN OF PROFOUND ESTEEM
BY

HIS HUMBLE ADMIRER, THE AUTHOR.

|             | eface<br>production | ••      | ••       | ••         | ••         | ••         | ••     | ••  | xiii<br>xvii |
|-------------|---------------------|---------|----------|------------|------------|------------|--------|-----|--------------|
| TIII        | roduction           | • •     | • •      | • •        | ••         | • •        | ••     | ••  | XVII         |
|             |                     |         | E        | 300        | K I        | •          |        |     |              |
|             |                     | ·T      | HE .     | JAIN       | A L        | ogic       | ١.     |     |              |
|             | Cı                  | IAPTE   | п I.—    | Тив І      | CRA OF     | TRAD       | ITION. |     |              |
| 1.          | The Jina            | s and   | Mahā     | vira       |            |            |        | • • | 1            |
| 2.          | The Svet            | āmba    | ras an   | d Diga     | mbara      | s          |        |     | 2            |
| 3.          | Indrabhū            |         |          |            |            |            |        |     | 2<br>2<br>3  |
| 4.          | Canonica            | l Scrip | otures   | of the     | Jainas     | 3          |        |     |              |
| 5.          | The Drst            | ivāda   |          |            | • •        |            |        | • • | 3            |
| 6.          | Logic in            | the Sc  | riptur   | e <b>s</b> |            |            |        |     | 4            |
| 7.          | Hetu                |         | ••       | • •        | • •        |            | • •    |     | 4            |
| 8.          | Four type           | es of   |          |            | • •        |            |        |     | 5            |
| 9.          | Bhadra-b            | āhu     |          |            |            | • •        | • •    | • • | 5            |
| 10.         | His date            |         |          |            |            |            |        |     | 5            |
| 11.         | His work            |         |          |            | • •        |            | • •    |     | 6            |
| 12.         | His syllog          | gism    |          | • •        | • •        |            |        | • • | 6            |
| 13.         | Ten parts           | of th   | ie syllo | gism       |            | • •        | • •    | • • | 7            |
| 14.         | Syādvāda            |         | • •      |            |            |            | • •    | • • | 8            |
| 15.         | Seven cat           |         |          |            |            | • •        |        | • • | 8            |
| 16.         | The Tatty           | värthä  | idhiga   | ma Sü      | tra        |            |        | • • | 8            |
| 17.         | Umāsvāti            |         |          |            |            |            | • •    | • • | 8            |
| 18.         | Pramāņa             | or va   | lid kno  | owledg     | <b>.</b> . | • •        | • •    | • • | 9            |
| 19.         | Indirect k          |         |          |            |            | • •        |        | • • | 10           |
| <b>20</b> . | Meanings            | of Pr   | atyak    | sa and     | Parok      | <b>ș</b> a |        |     | 10           |
| 21.         | Naya .              | •       | • •      | • •        |            |            |        |     | 11           |
| <b>22</b> . | Naigama.            |         | • •      |            | • •        |            | • •    |     | 11           |
| <b>23</b> . | *Samgraha           |         | • •      |            |            |            | • •    |     | 11           |
| <b>24</b> . | Vyavahār            | a       |          |            |            |            |        |     | 11           |
| <b>25</b> . | Ŗju-sūtra           |         |          |            |            |            | • •    |     | 11           |
| <b>26</b> . | Sabda .             | •       | • •      | • •        | • •        | • •        | • •    | ••  | 12           |
|             | Сна                 | PTER    | II.—'    | Гне Н      | Iistori    | CAL P      | ERIOD. |     |              |
| <b>27</b> . | The writte          | n rec   | ords of  | f the J    | ainas      |            |        |     | 13           |
| <b>2</b> 8. | Siddhasen           |         |          |            |            | , .        | • •    |     | 13           |
|             |                     |         |          |            |            |            |        |     |              |

|             |   |         |         |         |        |     | PAGE       |
|-------------|---|---------|---------|---------|--------|-----|------------|
| 29.         | His Sammatitarka-sūtra  |         |         |         |        |     | 14         |
| <b>3</b> 0. | He converts Vikramādit  | ya to   | Jainis  | m       |        |     | 14         |
| 31.         | His date  |         |         |         |        |     | 14         |
| <b>32</b> . | The Nyāyāvatāra   |         |         |         |        |     | 15         |
| 33.         | Pramāņa or valid knowl  | edge    |         |         |        |     | 15         |
| 34.         | Verbal Testimony  |         |         |         |        |     | 15         |
| 35.         | Inference   |         |         |         |        |     | 16         |
| 36.         | Inference   |         |         |         |        |     | 16         |
| <b>37</b> . | Inference for the sake of   | f othe  | rs      |         |        |     | 16         |
| <b>3</b> 8. | Terms of a syllogism Importance of the minor                              |         |         |         |        |     | 16         |
| <b>39</b> . | Importance of the minor   | r tern  | ı       |         |        |     | 17         |
| <b>4</b> 0. | Fallacy of the minor ter  | m       |         |         |        |     | 17         |
| 41.         | Fallacy of the minor ter<br>Vyāpti or inseparable co                      | onnect  | tion    |         |        |     | 18         |
| 42.         | Intrinsic inseparable con   | necti   | on      |         |        |     | 18         |
| 43.         | Extrinsic inseparable co  | nnect   | ion     |         |        |     | 18         |
| 44.         | Superfluity of extrinsic i  |         |         |         | tion   |     | 18         |
| <b>4</b> 5. | Fallacy of the middle to  |         |         |         |        |     | 18         |
| 46.         | Fallacy of example .  |         |         |         | • •    | ٠.  | 19         |
| 47.         | Fallacies of the homoge   | neous   | exami   | ole     |        |     | 19         |
| 48.         | Fallacies of the heteroge   | eneou   | s exam  | ple     |        |     | 20         |
| 49.         | Refutation, &c.   |         |         |         | • •    |     | 21         |
| 50.         | Refutation, &c Effect of Pramāṇa .  |         |         |         |        |     | 21         |
| 51.         | Nava  |         |         |         |        |     | 21         |
| <b>52</b> . | Naya<br>Syādvāda śruta, etc   |         |         |         |        |     | 22         |
| 53.         | Siddhasena Gani .   |         |         |         |        |     | 22         |
| 54.         | Samantabhadra   |         |         |         |        |     | 22         |
| 55.         | Samantabhadra<br>His works and date                                       |         |         |         |        |     | 23         |
| <b>56</b> . | The Aptamimāmsā .   |         |         |         |        |     | 24         |
| <b>57</b> . | Non-existence, abhāva.  | :       |         |         |        |     | 24         |
| 58.         | Non-existence, abhāva.<br>Existence, bhāva, and so                        | inta-b  | hanas   |         |        |     | 25         |
| 59.         | Akalanka Deva .   |         | • •     |         |        |     | 25         |
| 60.         | Akalaṅka Deva .<br>Akalaṅka and his Buddl                                 | hist aı | ntagoni | ist     |        |     | 26         |
| 61.         | Date of Akalanka .  |         |         |         |        |     | 26         |
| 62.         | Vidvānanda  | _       |         |         |        |     | 20         |
| 63.         | Date of Akalanka  | too     | ther p  | hilosor | hers a | and |            |
|             | his date  |         |         |         |        |     | 27         |
| 64.         | his date<br>Māṇikya Nandi   |         |         |         |        |     | 28         |
| 65.         | The Pariksā-mukha-sūtu  | ra.     |         |         | • •    | • • | 28         |
| 66.         | Valid knowledge Prama   | ลี.ทล.  |         |         | •      |     | 29         |
| 67.         | Valid knowledge, Prama<br>Kinds of valid knowledg<br>Terms of a syllogism | re.     | • •     | • •     | ••     | • • | 29         |
| 68.         | Terms of a syllogism  |         |         | • •     | •      |     | 29         |
| 69.         | Different phases of the   | reasor  | or mi   | ddle te | erm    | • • | 30         |
| 70.         | Perceptible reason in the   | e affir | mative  | form    |        | • • | <b>3</b> 0 |
| 71.         | Perceptible reason in the   |         |         |         | • •    | • • | 30         |
| <b>72</b> . | Imperceptible reason in   |         |         |         |        | • • | 31         |
| ,           | Timbercolverore remotil III   | 0110 II | Same    | LOLIII  | • •    | • • | J.         |

|             |   |           |                 |         |          |     | PAGE      |
|-------------|---|-----------|-----------------|---------|----------|-----|-----------|
| <b>73.</b>  | Imperceptible reason                                    | n in th   | e affirr        | native  | form     |     | 31        |
| <b>73</b> . | Example   |           |                 |         |          |     | 31        |
| 74.         | Example Inference                                       | • •       | ••              | ••      |          |     | 31        |
| <b>75.</b>  | Verbal Testimony  |           | . •             |         | • •      |     | <b>32</b> |
| <b>76.</b>  | Objects of valid kno                                    | owledg    | œ               |         |          |     | 32        |
| 77.         | Result of valid kno                                     | wledge    | ·               |         |          |     | 32        |
| <b>78.</b>  | Various kinds of fal                                    | lacies    |                 |         |          |     | 32        |
| <b>79</b> . | Manikya Nandi's re                                      | eferenc   | ces to          | conter  | nporane  | ous |           |
|             | systems of philos                                       | ophy      |                 |         |          |     | 33        |
| 80.         | His estimate of the                                     | Parik     | āmukh           | a sütr  | a        |     | 33        |
| 81.         | Prabhā Candra   | ••        |                 |         |          |     | 33        |
| 82.         | Prabhā Candra<br>Mallavādin                             |           |                 |         |          |     | 34        |
| 83.         | Dharmottara-tippan                                      | aka a     | nd Mal          | lavādir | i's date |     | 34        |
| 84.         | Pradyumna Sūri  |           |                 |         |          |     | 35        |
| <b>85.</b>  | His date  |           |                 |         |          |     | 36        |
| 86.         | His date<br>Abhayadeva Sūri                             |           |                 |         |          |     | 36        |
| 87.         | Laghusamantabhadi                                       | ra        | ••              |         |          |     | 37        |
| 88.         | Anantavirva   |           |                 |         |          |     | 37        |
| 89.         | Anantavīrya<br>Deva Sūri                                |           |                 |         |          |     | 38        |
| 90.         | His triumph over th                                     | ne Dig    | amba <b>r</b> a |         |          |     | 38        |
| 91.         | His date  |           |                 |         |          |     | 39        |
| 92.         | Pramāņa-naya-tattv                                      | vālokā    | lankār          | a       |          |     | 39        |
| 93.         | Valid knowledge   |           |                 |         |          |     | 40        |
| 94.         | Valid knowledge<br>Perception (Direct l                 | knowle    | edge)           |         |          |     | 40        |
| 95.         | Indirect knowledge                                      |           | ••              |         |          |     | 41        |
| 96.         | Inference   |           |                 |         |          |     | 41        |
| 97.         | Parts of a syllogism                                    | 1         |                 |         |          |     | 42        |
| 98.         | Non-existence (abhā                                     | (va)      |                 |         |          |     | 42        |
| 99.         | Character of knowle                                     |           | • •             |         |          |     | 43        |
| 00.         | Fallacies of Nava                                       |           |                 |         |          |     | 43        |
| 01.         | آ $tm\bar{a}$ (soul)                                    |           |                 |         |          |     | 43        |
| 02.         |   |           |                 |         |          |     | 44        |
| 03.         | Rules of debate<br>Hema Candra Sūri<br>His Pramāna-mīmā |           |                 | ••      |          |     | 44        |
| 04.         | His Pramāna-mīmā  | msā       |                 |         | • •      |     | 45        |
| 05.         | His date  |           |                 |         |          |     | 45        |
| 06.         | His date<br>Candraprabha Sūri                           |           | • •             |         |          |     | 45        |
| 07          | Nyāyāvatāra-vivṛti                                      |           |                 |         | •••      |     | 46        |
| .08.        | Nemicandra Kavi   |           | • •             | • •     |          |     | 46        |
| 09.         | Ānanda Sūri and   | Amara     | acandra         | Sūri    | nicknai  | med |           |
|             | lion-cub and tige                                       |           |                 |         |          |     | 47        |
| 10.         | Haribhadra Sūri   |           | • •             | • •     | • •      |     | 48        |
| 11.         | Haribhadra Sūri<br>His life                             | • •       | • •             | • •     | ••       |     | 49        |
| 12.         | His date  | • •       |                 | ••      | • •      | • • | 50        |
| 13.         | Syādvāda-ratnāvatā                                      | <br>irikā | • •             |         |          | • • | 50        |
| 14.         | Ratnaprabha Sūri  |           |                 |         |          | ••  | 50        |
|             |   |           |                 |         |          |     |           |

|             | •   |         |       |        |     | PAGE      |
|-------------|---|---------|-------|--------|-----|-----------|
| 115.        | Mallisena Sūri  |         |       |        |     | 51        |
| 116.        | Mallisena Süri  |         | . ,   |        |     | 51        |
| 117.        | Jñāna Candra  |         |       |        |     | 51        |
| 118.        | Guṇaratna   |         |       | • •    |     | 52        |
| 119.        | Guṇaratna<br>His date   |         | • •   |        |     | 52        |
| 120.        | His references to other philos  | sopher  | 3     |        |     | 53        |
| 121.        | Dharmabhūsana   |         |       |        |     | . 54      |
| 122.        | His Nyāva-dīnikā  |         |       | ••     |     | 54        |
| 123.        | His references to other philos  | sopher  | 8     |        |     | <b>54</b> |
| 124.        | Yaśovijava Gani   |         |       |        |     | 54        |
| 125.        | His references to other philos<br>Yaśovijaya Gani<br>His life   |         |       |        |     | 55        |
|             |   |         |       |        |     |           |
|             | BOOK  | II.     |       |        |     |           |
|             | THE BUDDHIS   | ST L    | OGIO  | ).     |     |           |
| Сн          | MAPTER 1.—THE OLD BUDDHIS   | st Rei  | FEREN | es to  | Lo  | GIC.      |
| 1.          | m, ,, ,,,,  |         |       |        |     | 57        |
| 2.          | The Buddhas   | • •     | • •   | • •    | • • | 57        |
| 2.<br>3.    | Buddha Gautma<br>Tripiṭaka—Pāli Literature  | • •     | • •   |        | • • | 57        |
|             | Tripitaka—Pali Literature   | <br>: 4 | • •   | • •    | • • | 58<br>58  |
| <b>4</b> .  | Heretical Sects of the Buddhi<br>Tripiṭaka carried to Ceylon<br>Vijñāna (knowledge)<br>Classification of Vijñāna<br>Takkika | isus    | • •   | • •    | • • | 58<br>58  |
| 5.          | Tripitaka carried to Ceylon .   | • •     | • •   | • •    | • • | 59        |
| 6.          | Vijnana (knowledge)   | • •     | • •   |        | • • | 59<br>59  |
| 7.          | Classification of Vijnana   | • •     | • •   | • •    | • • | 59<br>59  |
| 8.          | Takkika   | · ·     | • •   | • •    | • • | 59        |
| 9.          | Takkika Takkika in the Brahma-jāla S<br>Takkika in the Udāna  | Sutta   | • •   | • •    | • • | 60        |
| 10.         |   |         | • •   | ••     | • • | 60        |
| 11.         | Logic in the Kathā-vatthuppa  | akaran  | a     |        | • • | 61        |
| 12.         | Nyāya in the Milinda-pañha  | • •     | • •   | • •    | • • | 62        |
| 13.         | The Method of debate  | • •     | • •   | • •    | • • |           |
| 14.         | The Mahāyāna and the Hinay  | yana    | • •   | • •    | • • | 62        |
| 15.         | The Council of Kaniska The Sanskrit Buddhist Litera   | • •     | • •   | • •    | • • | 63        |
| 16.         |   |         |       | • •    | • • | 63        |
| 17.         | Nava Dharmas  | • •     | • •   | • •    | • • | 64        |
| 18.         | Hetuvidyā in the Lalitavistar<br>Eighteen Sects of the Buddhi   | a       | • •   | • •    | • • | 64        |
| 19.         | Eighteen Sects of the Buddhi  | sts     | • • . | • •    | • • | 65        |
| 20.         | Four Schools of the Buddhist  | Philo   | sophy | • •    | • • | 66        |
| 21.         | The Vaibhāṣika School<br>The Sautrāntika School   |         | • •   | • •    | • • | 66        |
| 22.         | The Sautrantika School  | • •     | • •   |        | • • | 67        |
| 23.         | Logic in works of the Madh  | yamik   | a and | Yogācā | ira | <b>^</b>  |
|             | Schools<br>Ārya Nāgārjuna   | • •     | • •   | • •    | • • | 67        |
| <b>24</b> . | Schools  Ārya Nāgārjuna  The date of Nāgārjuna  | <br>    | • •   | • •    | • • | 68        |
| <b>25</b> . |   | • •     | • •   |        |     | 69        |
| 26          | Nāgārinna's works   |         |       |        |     | 70        |

|             | _  |          |         |               |         |         |        | PAGE      |
|-------------|--|----------|---------|---------------|---------|---------|--------|-----------|
| <b>27.</b>  | Ārya Deva<br>The Yogācāra So                       |          |         |               |         |         |        | 70        |
| 28.         | The Yogācāra So                                    | chool    |         |               | • •     | • •     |        | 71        |
| 29.         | The Tārkika and                                    | Naiyā    | yika i  | n the         | Laṅkā   | vatāra  | Sütra  | 72        |
| <b>3</b> 0. |  |          |         |               |         |         |        | 73        |
| 31.         | His Logic .  |          |         |               |         |         |        | 74        |
| <b>32.</b>  | His Logic .<br>Ārya Asaṅga .                       |          |         |               |         |         |        | 74        |
| <b>33</b> . | His Logic .  | •        |         | • •           | ••      |         | • •    | 75        |
| <b>34</b> . | His Logic<br>Vasubandhu                            |          |         |               |         |         | • •    | 75        |
| 35.         | His Logic .  | •        | • •     |               | • •     | • •     | • •    | 76        |
| C           | hapter II.—Sys                                     |          |         |               |         |         | n Logi |           |
| <b>3</b> 6. | Logic distinguish                                  | ied fro  | m ger   | ıeral p       | philoso | phy     |        | 78        |
| <b>37</b> . | Ācārya Dignāga                                     | —his l   | ikene   | 38            |         |         |        | <b>78</b> |
| <b>3</b> 8. | Life of Dignaga.<br>His Date                       |          |         |               |         | • •     | • •    | 80        |
| <b>39</b> . | His Date   |          |         |               |         |         | • •    | 80        |
| <b>4</b> 0. | References to D.<br>History of the                 | ignäga   | b       |               |         |         |        | 81        |
| 41.         | History of the                                     | Pramā    | na-sa   | mucc <b>s</b> | ya an   | d refer | ence   |           |
|             | to Iśvara-kṛṣṇ                                     | a        |         |               |         |         |        | <b>82</b> |
| <b>42.</b>  | Xylograph of the                                   | e wor    | k       |               |         |         |        | <b>84</b> |
| <b>43</b> . | Subjects of the                                    | work     |         |               |         | •       |        | 85        |
| 44.         | Subjects of the Dignaga's Theor                    | y of I   | ercep?  | tion          |         |         |        | 85        |
| <b>4</b> 5. | Dignāga criticise<br>Dignāga's Theor               | s Vāt    | syāyā   | na            |         |         |        | 86        |
| <b>46</b> . | Dignāga's Theor                                    | y of I   | nferer  | ıce           |         | • •     |        | 87        |
| 47.         | Comparison and                                     | Verba    | ıl Test | imony         | y rejec | ted     |        | 88        |
| <b>48</b> . | Dignāga's Nyāya<br>Parts of a Syllo                | a-prav   | eśa     | ••            |         |         |        | 89        |
| <b>49</b> . | Parts of a Syllo                                   | gism     |         |               |         |         |        | 89        |
| <b>5</b> 0. | Form of a Syllo                                    | gism     |         |               |         |         |        | 90        |
| 51          | Thesis   | • •      |         |               | •••     |         |        | 90        |
| <b>52</b> . | Thesis Fallacies of The                            | sis      |         |               |         |         |        | 90        |
| <b>53</b> . | Three Character                                    | istics o | of the  | Midd          |         |         |        | 91        |
| <b>54</b> . | Symbols of the                                     | Charac   | cterist | ics           |         |         |        | 91        |
| <b>55</b> . | Vyāpti or relativ                                  | e exte   | nsion   | of the        | e midd  | le term | and    |           |
|             | the major term<br>Fallacies of the                 | 1        |         |               |         |         |        | 92        |
| <b>56</b> . | Fallacies of the                                   | Middle   | e Terr  | n             |         |         |        | 93        |
| <b>57</b> . | Theory of Exam                                     | ıple     |         |               |         |         |        | 95        |
| <b>58</b> . | Wallacies of Hor                                   | nogene   | ous F   | xamn          | le.     |         |        | 96        |
| <b>59</b> . | Fallacies of Het                                   | erogen   | eous    | Exam          | ple     |         |        | 97        |
| 60.         | Fallacies of Het<br>Refutation and                 | its Fal  | lacv    |               | • *     |         |        | 98        |
| 61.         | Fallacies of Per                                   | ception  | n and   | Infere        | ence    |         |        | 99        |
| 62.         | Dignāga's Hetu-                                    | cakra    |         |               |         |         |        | 99        |
| 63.         | The Wheel of R                                     | easons   | 3       | ••            | ••      | ••      |        | 100       |
| 64.         | The Wheel of R<br>Analysis of the<br>Pramāṇa-samuc | Wheel    |         |               |         |         | • •    | 100       |
| 65.         | Pramāna-samuc                                      | cava-v   | rtti    |               |         |         |        | 100       |
| 66.         | Another version                                    | of it    |         | • • •         |         | • •     | • •    | 100       |
|             |  |          |         | • •           |         |         |        |           |

|             |  |            |     | PAGE |
|-------------|--|------------|-----|------|
| <b>67</b> . | Pramāṇa-śāstra-praveśa   | • •        | • • | 100  |
| <b>68</b> . | Alambaņa-parikṣā   |            |     | 101  |
| <b>69.</b>  | Alambaṇa-parīkṣā-vṛtti   |            | • • | 101  |
| <b>70</b> . | Trikāla-parīksā  | • •        | • • | 101  |
| 71.         | Sankara Svāmin   |            |     | 101  |
| <b>72</b> . | Dharmapāla<br>His Works  | • •        |     | 102  |
| <b>73</b> . | His Works  |            |     | 102  |
| <b>74</b> . | Ācārya Silabhadra  |            |     | 102  |
| <b>75</b> . | Acārya Dharmakirti   |            |     | 103  |
| <b>76</b> . |  |            |     | 103  |
| <b>77</b> . | Dharmakirti's Triumphs   |            |     | 104  |
| <b>78</b> . | His further triumphs<br>His Death                                  |            |     | 104  |
| <b>79</b> . | His Death  |            |     | 104  |
| 80.         | Dharmakirti and Sron-tsan-gam-po                                   |            |     | 104  |
| 81.         | Dharmakirti's Date   |            |     | 105  |
| 82.         | Dharmakīrti's Date<br>History of the Pramāṇa-vārtika-kārik         | ā          |     | 105  |
| 83.         | Subjects of the work   | • •        |     | 106  |
| 84.         | Pramana-vartika-vrtti  |            |     | 107  |
| 85.         | Pramāṇa-viniscaya  |            |     | 107  |
| 86.         | Nyāya-bindu  |            |     | 109  |
| 87.         |  |            |     | 109  |
| 88.         | Theory of Perception   |            |     | 110  |
| 89.         |  |            |     | 110  |
| 90.         | Three kinds of Middle Term Inference for the sake of others Thesis |            |     | 111  |
| 91.         | Thesis   | <i>:</i> . |     | 112  |
| 92.         | Fallacies of Thesis  |            |     | 112  |
| 93.         | Fallacies of the Middle Term                                       |            |     | 112  |
| 94.         | Dharmakīrti criticises Dignāga                                     |            |     | 113  |
| 95.         | Dharmakirti's theory of example                                    |            |     | 114  |
| 96.         | Fallacies of Homogeneous Example                                   |            |     | 115  |
| 97.         | Fallacies of Heterogeneous Example                                 |            |     | 116  |
| 98.         | Refutation and its semblance                                       |            |     | 116  |
| 99.         | Dharmakirti the Vanquisher of Tirthik                              |            |     | 116  |
| 100.        | Hetu-bindu vivaraņa  |            |     | 117  |
| 101.        | Tarka-nyāva or Vāda-nyāva  |            |     | 117  |
| 102.        | Santānāntara-siddhi  |            |     | 117  |
| 103.        | Sambandha-parikṣā  |            |     | •118 |
| 104.        | Sambandha-parikṣā-vṛtti  |            |     | 118  |
| 105.        | Devendra bodhi   |            | • • | 118  |
| 106.        | Devendra bodhi<br>Pramāṇa-vārtika-pañjikā                          | • •        |     | 118  |
| 107.        | Story of composition of the work                                   | • • •      |     | 118  |
| 108.        | S'ākva bodhi   | • •        |     | 119  |
| 109.        | Sākya bodhi Pramāṇa-vārtika-pañjikā-ṭīkā                           |            |     | 119  |
| 110.        | Vinita Deva  | • •        | • • | 119  |
| 111         | Nyāva hindu tikā   | • •        | ••  | 120  |

|              |   |      |     |     |     | PAGE        |
|--------------|---|------|-----|-----|-----|-------------|
| 112.         | Hetu-bindu-ţīkā   |      |     |     |     | 120         |
| 113.         | Vāda-nyāya-vyākhyā  |      | • • | • • |     | 120         |
| 114.         |   |      |     |     |     | 120         |
| 115.         | Ālambaņa-parīksā-tikā   |      |     |     |     | <b>12</b> 0 |
| 116.         | Santānāntara-siddhi-tikā  |      |     |     |     | 121         |
| 117.         | Candra Gomin  |      |     |     |     | 121         |
| 118.         | ~~. *** 1 .   |      |     |     |     | 122         |
| 119.         | His Date  |      |     |     |     | 123         |
| 120.         | Nyāyāloka-siddhi  |      |     |     |     | 123         |
| 121.         | <b>5</b>  |      |     |     |     | 123         |
| 122.         |   |      |     |     |     | 124         |
| 123.         |   |      |     |     |     | 124         |
| 124.         |   |      |     |     |     | 124         |
| 125.         | our : 75 1 t.   |      |     |     |     | 124         |
| 126.         | Vāda-nyāya-vṛtti-vipañcitār   | tha  |     |     |     | 125         |
| 127.         | Tattva-samgraha-kārikā  |      |     |     |     | 125         |
| 128.         |   |      |     |     |     | 126         |
| 129.         |   |      |     |     |     | 129         |
| 130.         | Nyāya-bindu-pūrva-pakṣe-sa  | mksi | ota |     | ٠   | 129         |
| 131.         | rm  |      | •   |     |     | 130         |
| 132.         | Kalyāņa Raksita   |      |     |     |     | 130         |
| 133.         | Vāhyārtha-siddhi-kārikā   |      |     |     |     | 130         |
| 134.         |   |      | • • |     |     | 130         |
| 135.         | Anyāpoha-vicāra-kārikā  |      |     |     |     | 130         |
| 136.         | 7/ 11 . 1-11-   |      |     |     |     | 130         |
| 137.         | Dharmottarācārya  |      |     |     |     | 131         |
| 138.         |   |      |     | • • |     | 131         |
| 139.         | Pramāņa-parīkṣā   | ••   |     |     |     | 132         |
| 140.         | A 1 1   | ••   |     | • • |     | 132         |
| 141.         | m= 1 1 . 1311 ·   | • ·  |     |     |     | 132         |
| 142.         | 17 11   | • •  |     |     |     | 132         |
| 143.         | Pramāna-vinišcava-tīkā  | • •  |     |     |     | 132         |
| 144.         | Muktā-kumbba  | • •  |     |     |     | 133         |
| 145.         | Pramāņa-viniscaya-tīkā<br>Muktā-kumbha<br>Kṣaṇa-bhaṅga-siddhi-vyākh | · ·  |     |     |     | 133         |
| 146.         |   |      | • • | • • | • • | 133         |
| 147:         | Arcața<br>Hetu-bindu-vivarana                                       | • •  | • • |     | • • | 133         |
| 148.         | D: (7)  |      | • • | • • | • • | 134         |
| 149.         |   | • •  | • • | • • |     | 134         |
| 150.         | Pustaka-pāṭhopāya<br>Jina Mitra                                     | • •  | • • | • • | • • | 135         |
| 150.         |   | • •  | • • | • • | • • | 135         |
| 151.<br>152. |   | • •  | • • |     | • • | 135<br>135  |
| 152.<br>153. | Prajňākara Gupta  | • •  | • • | • • | • • | 135         |
|              |   |      |     | • • | • • |             |
| 154.         | Sahāvalambha-niścaya  | • •  | • • | • • | • • | 136         |
| 155.         | Acārva Jetāri   | • •  | • • | • • | • • | 136         |
| 156.         | His date  |      |     |     |     | 136         |

|                         |          |    |     |     | PAGE        |
|-------------------------|----------|----|-----|-----|-------------|
| Hetu-tattva-upadeśa     |          |    | . • |     | 136         |
| Dharma-dharmi-viniscays | а        |    |     |     | 136         |
| Bālāvatāra-tarka        |          |    | ••  |     | 137         |
| Pramāņa-vārtikālankāra- | tīkā     |    |     |     | 137         |
| Jina                    | •        |    |     |     | 137         |
| Jñāna-śrī               |          |    |     |     | 137         |
| Pramāņa-vinišcaya-tīkā  |          |    |     |     | 138         |
| Kārya-kāraņa-bhāva-sidd |          |    |     |     | 138         |
| en î 11                 |          |    |     |     | 138         |
| Ratnavajra              |          |    |     |     | 139         |
| Yukti-prayoga           |          |    |     |     | 139         |
| Ratnākara Santi and Ra  | tnakīrti |    |     |     | 140         |
| Vijñapti-mātra-siddhi   |          |    |     |     | 140         |
| A ~, ~                  |          |    |     |     | 140         |
| Vāk-praja               |          |    |     |     | 141         |
| Yamāri                  |          |    |     |     | 141         |
| Pramāņa vārtikālankāra  | ·tīkā    |    |     |     | 141         |
| Sankarānanda            | •        |    |     |     | 142         |
| Pramāņa-vārtika-tīkā    |          |    |     |     | 142         |
| Sambandha-parīksānusār  | a        |    |     |     | 142         |
| Apoha-siddhi            |          |    |     |     | 143         |
| Pratibandhasiddhi       |          |    |     | • • | 144         |
| APPEN                   | DIX A    |    |     |     |             |
|                         |          |    |     |     | 145         |
| The University of Nalar | ıaa      | •• | • • | • • | 140         |
| APPEN                   | NDIX I   | 3. |     |     |             |
| The Pāla Kings          |          |    |     |     | 148         |
| THO Tara IZHIRa         | ••       | •• | ••  | ••  |             |
| APPEN                   | DIX C    | •  |     |     |             |
| The University of Vikra | masilā   |    |     |     | <b>15</b> 0 |

## PREFACE.

WITH the object of drawing the attention of scholars to the vast literature of the Mediæval school of Indian Logic, I have in the present thesis embodied the results of some of my researches into it.1 The Mediæval Logic of India is divided into two principal systems, viz., the Jaina and the Buddhist. The materials of the Jaina portion of my thesis were derived from several rare Jaina manuscripts procured from Western India and the Deccan. I have also used the Jaina manuscripts of the Asiatic Society of Bengal and the numerous Jaina works printed in Bombay, Benares and Calcutta. From the footnotes of my thesis it will be evident that I have frequently used Professor Peterson's Reports of Operations in Search of Sanskrit manuscripts in the Bombay Circle. Though the Professor has said nothing in particular about Logic and Logicians, he has given a general index of Jaina authors which has been of the greatest use to me. I have not heard of any scholar who has yet written any special account of the Jaina Logic. Dr. Herman Jacobi's "Eine Jaina-Dogmatik" printed in Leipzig is an annotated translation of Umāsvāti's Tattvārthādhigama Sūtra, an ancient Jaina work on general philosophy and not a special treatise on Logic. A short time ago I sent a proof of my account of the Jaina Logic to Dr. Jacobi who very graciously returned it with a few marginal glosses which have been most thankfully accepted and embodied in the foot-notes of this thesis.

To show how generously that most eminent authority on Jainism condescended to help me, I quote here the

<sup>!</sup> Some of these researches were published in the "Journal" of the Asiatic Society of Bengal during the last two years.

xiv Preface.

letter which he wrote in communicating to me his suggestions:

Bonn, 21st October, 1907.

Niebuhrstrasse 59.

DEAR SIR.

I have received your kind letter and the proofs of the Jaina Logic, and I heartily congratulate you on the work you have done. It will prove very useful, for you have brought together a mass of information which is not of easy access to many. In looking over the proofs I have made some marginal glosses to show you where I think you might alter your statement. Of course, everything is left to your decision.

I shall be glad to see your whole book, as I take great interest in Indian Logic and I have myself written an article on it principally for the information of our Logicians who as a rule know nothing about what has been done in this branch of Philosophy by Indian thinkers. I shall therefore feel obliged if you can spare me a copy of your work.

With kind regards,

I am,
Yours sincerely,
H. JACOBI.

A proof of the Jaina Logic was also sent to two oriental authorities on Jainism—Muni Dharmavijaya and his pupil Sri Indravijaya at Benares. I owe them a great debt of gratitude for the kind assistance which they cheerfully rendered to me by going through the proof and offering certain suggestions and observations which have been incorporated in the foot-notes of this thesis.

As to the Buddhist Logic, no systematic information is available from Pāli texts as there is not a single regular treatise on Logic in the Pāli language; but references to ancient Brahmanic Logic can be gleaned from the publications of the Pali Text Society of London and also from other Pali works printed elsewhere. The Buddhist Sanskrit works on Logic of the Middle Age are now almost extinct in India. A few of them, which are available in Chinese versions, have been noticed by Dr. Sugiura in his "Hindu Logic as preserved in China and Japan." But almost all the Buddhist Sanskrit works on Logic

are carefully preserved in faithful translations in Tibet. The materials of that portion of my thesis, which deals with Buddhist Logic, were chiefly derived from the Hodgson Collection of Tibetan xylographs deposited in the India Office, London, and the large number of Tibetan block-prints brought down to Calcutta from Gyantse during the British Mission to Tibet in 1904. I also consulted almost all the Tibetan manuscripts and block-prints bearing on Logic that lie hidden in the Tibetan monasteries of Labrang and Phodang in Sikkim which I visited during May and June 1907.1 For the historical account of the Buddhist authors I have chiefly depended on Lama Tārānātha's Tibetan history of Indian Buddhism translated into German by A. Schiefner under the designation of "Geschichte des Buddhismus," and the Tibetan historical work called Pag-sam-ionzang edited in the original Tibetan by Rai Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., in Calcutta. Some most important historical facts regarding the Buddhist Logicians and their works have been discovered from the colophons at the end of each of the Tibetan works which I have examined.

It was mainly through the influence of Mr. F. W. Thomas that I was enabled to borrow the Tibetan xylographs of the India Office, London, and I avail myself of this opportunity of acknowledging my humble appreciation of the generosity of that distinguished scholar. My respectful thanks are also due to the Government of India, who kindly lent me several block-prints out of the vast Tibetan collection brought down to Calcutta by the Tibet Mission of 1904. I should be guilty of great ingratitude if I were not to mention my obligations to Mr. A. Earle, I.C.S., Director of Public Instruction, Bengal, Mr. C. H. Bompas, I.C.S., Deputy Commissioner,

<sup>1</sup> Subsequently in October 1908 I visited Pamiangchi, which is another very old monastery in Sikkim, where all facilities were kindly afforded to me by their Highnesses the Maharaja and Maharani of Sikkim as well as by Mr. Crawford, I.C.S., the then Deputy Commissioner of Darjeeling.—S. C. V.

- 9. Pramāņa-vārtikālankāra by Prajnākara Gupta.
- 10. Pramāņa-vārtikālankāra-tīkā by Jina.
- 11. Pramāņa vārtikālankāra by Yamāri.
- 12. Pramāņa-vārtika-tikā by Šankarānanda.

## The Modern School of Logic.

#### Text.

1. Tattva-cintāmaņi by Gangeśa Upādhyāya.

## Commentaries.

- 2. Tattva-cintāmani Prakāśa by Rucidatta.
- 3. Tattva Aloka by Jayadeva Miśra.
- 4. Tattva Didhiti by Raghunātha Siromaņi.
- 5. Tattva Rahasya by Mathurānātha.
- 6. Tattva Dipani by Krsnakanta.
- 7. Tattva Tīkā by Kanāda Tarkavāgiśa.
- Tattva Āloka-sāra-mañjarī by Bhavānanda.
   Tattva Āloka-darpana by Maheśa Thakkura.
- 10. Tattva Āloka-kantakoddhāra by Madhu Sūdana Thakkura.
- 11. Tattva Āloka-rahasya by Mathurānātha. [pati.
- 12. Tattva Didhiti-vyākhyā-vivecana by Rudra Nyāyavācas-
- 13. Tattva Didhiti-tippani by Jagadiśa.
- Tattva Didhiti-tikā by Gadādhara.
   Tattva Didhiti-sāramañiari by Bhavānano
- 15. Tattva Didhiti-sāramañjarī by Bhavānanda.
  16. Tattva Bhavānandī vyākhyā by Mahādeva Paṇḍita.
- 17. Tattva Kālīśankarī-patrikā by Kālīśankara.
- 18. Tattva Cāndri-patrikā by Candra Nārāyaṇa.
- 19. Tattva Raudri-patrikā by Rudra Nārāyaṇa.

etc. etc. etc

Besides these there are numerous other texts and commentaries on Logic which belong to one or another of the three schools mentioned above.

ichools mentioned above.

I shall say here nothing about the ancient and modern
schools of Logic, my whole attention will

The Jaina system of Mediæval Logic.

It is perhaps known to very few scholars that the Mediæval Logic was almost entirely in the hands of the Jainas and Buddhists. For one thousand years, from 600 B.C. to 400 A.D., the Jainas and Buddhists were fully occupied in questions of metaphysics and religion though there are occasional references to Logic in their works of that period. At about 400 A.D. began an epoch when they seriously took up the problems of Logic, and all the text-books on the Jaina and Buddhist systems of Logic date at or after that time. Ujjaint in Malwa and Valabhi in Guzerat were the scenes of activity of the Jaina Logicians of the Svetāmbara sect. The Digambaras flourished principally in Pātaliputra and Drāvida

are carefully preserved in faithful translations in Tibet. The materials of that portion of my thesis, which deals with Buddhist Logic, were chiefly derived from the Hodgson Collection of Tibetan xylographs deposited in the India Office, London, and the large number of Tibetan block-prints brought down to Calcutta from Gyantse during the British Mission to Tibet in 1904. I also consulted almost all the Tibetan manuscripts and block-prints bearing on Logic that lie hidden in the Tibetan monasteries of Labrang and Phodang in Sikkim which I visited during May and June 1907.1 For the historical account of the Buddhist authors I have chiefly depended on Lama Tārānātha's Tibetan history of Indian Buddhism translated into German by A. Schiefner under the designation of "Geschichte des Buddhismus," and the Tibetan historical work called Pag-sam-jonzang edited in the original Tibetan by Rai Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., in Calcutta. Some most important historical facts regarding the Buddhist Logicians and their works have been discovered from the colophons at the end of each of the Tibetan works which I have examined.

It was mainly through the influence of Mr. F. W. Thomas that I was enabled to borrow the Tibetan xylographs of the India Office, London, and I avail myself of this opportunity of acknowledging my humble appreciation of the generosity of that distinguished scholar. My respectful thanks are also due to the Government of India, who kindly lent me several block-prints out of the vast Tibetan collection brought down to Calcutta by the Tibet Mission of 1904. I should be guilty of great ingratitude if I were not to mention my obligations too Mr. A. Earle, I.C.S., Director of Public Instruction, Bengal, Mr. C. H. Bompas, I.C.S., Deputy Commissioner,

<sup>1</sup> Subsequently in October 1908 I visited Pamiangchi, which is another very old monastery in Sikkim, where all facilities were kindly afforded to me by their Highnesses the Maharaja and Maharani of Sikkim as well as by Mr. Crawford, I.C.S., the then Deputy Commissioner of Darjeeling.—S. C. V.

- 9. Pramāņa-vārtikālankāra by Prajnākara Gupta.
- 10. Pramāņa-vārtikālankāra-tīkā by Jina.
- 11. Pramāņa-vārtikālankāra by Yamāri.
- 12. Pramāna-vārtika-tikā by Sankarānanda.

## The Modern School of Logic.

Text.

1. Tattva-cintāmaņi by Gangeśa Upādhyāya.

Commentaries.

- 2. Tattva-eintāmaņi Prakāśa by Rucidatta.
- 3. Tattva Aloka by Javadeva Miśra.
- 4. Tattva Didhiti by Raghunātha Siromani.
- 5. Tattva Rahasya by Mathuranatha.
- 6. Tattva Dipani by Krsnakanta.
- 7. Tattva Ţikā by Kanāda Tarkavāgiśa.
- 8. Tattva Aloka-sāra-manjarī by Bhavananda.
- 9. Tattva Aloka-darpana by Mahesa Thakkura.
- 10. Tattva Āloka-kantakoddhāra by Madhu Sūdana Thakkura.
- 11. Tattva Āloka-rahasya by Mathurānātha. [pati.
  12. Tattva Didhiti-vyākhyā-vivecana by Rudra Nyāyavācas-
- 13. Tattya Didhiti-tippani by Jagadiśa.
- 14. Tattva Didhiti-tikā by Gadādhara.
- 15. Tattva Didhiti-sāramanjarī by Bhavānanda.
- 16. Tattva Bhavanandi vyakhya by Mahadeva Pandita.
- 17. Tattva Kāliśankari-patrikā by Kāliśankara.
- 18. Tattva Cāndrī-patrikā by Candra Nārāyaņa.
- 19. Tattva Raudri-patrikā by Rudra Nārāyaņa.

etc. etc. etc

Besides these there are numerous other texts and commentaries on Logic which belong to one or another of the three schools mentioned above.

I shall say here nothing about the ancient and modern schools of Logic, my whole attention will

The Jaina system of Mediæval Logic.

It is perhaps known to very few scholars that the Mediæval Logic was almost entirely in the hands of the Jainas and Buddhists. For one thousand years, from 600 B.C. to 400 A.D., the Jainas and Buddhists were fully occupied in questions of metaphysics and religion though there are occasional references to Logic in their works of that period. At about 400 A.D. began an epoch when they seriously took up the problems of Logic, and all the text-books on the Jaina and Buddhist systems of Logic date at or after that time. Ujjain in Malwa and Valabhi in Guzerat were the scenes of activity of the Jaina Logicians of the Svetāmbara sect. The Digambaras flourished principally in Pātaliputra and Drāvida

(including Karnāṭa) about the 8th century A.D. The Nyāyā-vatāra by Siddhasena Divākara, dated about 533 A.D., was the first systematic work on the Jaina Logic.

The real founders of the Mediæval Logic were the Buddhists.

The first batch of the Buddhist Logicians

The Buddhist system came principally from Gandhara (modern of Mediæval Logic. Peshwar) on the Punjab Ayodhyā (Oudh) was the scene of their activity. Unfortunately we have not before us any of the original Sanskrit works on Logic produced by them. We may, however, form an approximate estimate of their Logic from the works on the Yogācāra philosophy by Maitreya, Asanga and Vasubandhu recovered from the Chinese sources. About 500 A.D.1 the Huns conquered Gandhara, and their leaders Mihirakula and others perpetrated terrible atrocities on the Buddhists to the Asanga and great detriment of Buddhistic studies there. Vasubandhu (and perhaps Maitreya too) passed the best days of their lives in Ayodhyā and wrote most of their works there. King Vikramāditya who reigned in Avodhyā about 480 A.D.2

was at first a patron of the Sāmkhya philosophy but afterwards greatly supported Buddhism through the influence of Vasubandhu. Bālāditya, who succeeded Vikramāditya to the throne of Ayodhyā, was a pupil of Vasubandhu and a supporter of Buddhism. The Buddhist Logic of the Yogācāra school appears thus to have originated in Ayodhyā and flourished there during

400-500 A.D. under Kings Vikramāditya and Bālāditya. The second batch of the Buddhist Logicians flourished in Drāvida (the Deccan) during 500-700 A.D. when the Buddhist kings of the Pallava dynasty were supreme there. Dignāga, about 500 A.D., was the oldest logician of Drāvida whose works are still extant, in faithful translations. logician of eminence of the Dravida school was Dharmakirti who lived about 650 A.D. His Nyāvabindu, and a commentary on it by Dharmottara called Nyāya-bindu-tikā, are the only systematic works on Buddhist Logic which have come down to us in their Sanskrit originals. They would have certainly disappeared from India like a hundred other works of their kind, had it not been that a Jaina logician named Mallavadin had written a gloss on them. Seeing that the gloss would be useless without the text and commentary, the Jainas preserved all three. The Nyayabindu, together with the commentary, preserved

<sup>1</sup> Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I., pp. xv. 168

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Takakusu's Paramārtha's Life of Vasubandhu published in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January 1905, p. 36.

(including Karnāta) about the 8th century A.D. The Nyāyāvatāra by Siddhasena Divākara, dated about 533 A.D., was the first systematic work on the Jaina Logic.

The real founders of the Mediæval Logic were the Buddhists.

The Buddhist system of Mediæval Logic.

The first batch of the Buddhist Logicians came principally from Gandhara (modern Peshwar) on the Punjab Ayodhyā (Oudh) was the scene of their activity. Unfortunately we have not before us any of the original Sanskrit works on Logic produced by them. We may, however, form an approximate estimate of their Logic from the works on the Yogācāra philosophy by Maitreya, Asanga and Vasubandhu recovered from the Chinese sources. About 500 A.D.1 the Huns conquered Gandhara, and their leaders Mihirakula and others perpetrated terrible atrocities on the Buddhists to the great detriment of Buddhistic studies there. Asanga and Vasubandhu (and perhaps Maitreya too) passed the best days of their lives in Ayodhyā and wrote most of their works there. King Vikramāditya who reigned in Ayodhyā about 480 A.D.2 was at first a patron of the Samkhya philosophy but afterwards greatly supported Buddhism through the influence of Vasubandhu. Bālāditya, who succeeded Vikramāditya to the throne of Ayodhya, was a pupil of Vasubandhu and a supporter of

400-500 A.D. under Kings Vikramāditya and Bālāditya. The second batch of the Buddhist Logicians flourished in Drāvida (the Deccan) during 500-700 A.D. when the Buddhist kings of the Pallava dynasty were supreme there. Acarya Dignāga, about 500 A.D., was the oldest logician of Drāvida whose works are still extant, in faithful translations. Another logician of eminence of the Drāvida school was Dharmakirti who lived about 650 A.D. His Nyāyabindu, and a commentary on it by Dharmottara called Nyāya-bindu-tikā, are the only systematic works on Buddhist Logic which have come down to us in their Sanskrit originals. They would have certainly disappeared from India like a hundred other works of their kind, had it not been that a Jaina logician named Mallavadin had written a gloss on them. Seeing that the gloss would be useless without the text and commentary, the Jainas preserved all three. The Nyayabindu, together with the commentary, preserved

Buddhism. The Buddhist Logic of the Yogacara school appears thus to have originated in Ayodhyā and flourished there during

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I., pp.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Takakusu's Paramārtha's Life of Vasubandhu published in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January 1905, p. 36.

### BOOK I.

# The Jaina Logic.

#### CHAPTER L.

THE ERA OF TRADITION (circa 607 B.C.-453 A.D.).

THE JINAS AND MAHĀVĪRA.

1. The Jainas maintain that their religion is coeval with time. According to their traditions there appeared at various periods in the world's history sages whom they call Jinas, conquerors of their passions, or Tirthankaras, that is, builders of a landing place in the sea of existence. These sages preached the religion of the Jainas. The Jainas hold that in every cycle of time (utsarpinior avasarpini-kāla) 24 sages are born. The first sage of the last series was Rṣabhadeva, the 24th was Mahāvira or Vardhamāna, who attained nirvāna at Pāvā in 527 B.C.! The scriptures which the Jainas obey are founded on the teachings of Mahāvira. No one disputes this, and scholars generally regard Mahāvira as the founder of Jainism, and hold that the theory of the existence of Jinas previous to him, except Pāršvanātha the 23rd Tīrthankara, was a subsequent invention.

प्राचित्र वस प्राप्तास जुदं गिमय नौर्षितुर्दो सगराजो। (Trilokasāra of the Digambara sect). ''Mahāvīra attained nirvāna 605 years 5 months before the Saka King (78 A.D.) came to the throne,'' that is, in 527 B.C. As he lived 72 years he must have been born in 599 B.C.

Acmording to Vicārairenī of Merutunga, Tīrthakalpa of Jinaprabha Sūri, Vicāraisarai-prakarana, Tapāgacchai-paṭtāvalī, etc., of the Svetāmbara sect Mahāvīra attained nirvāņa 470 years before Vikrama Samvat or in B.C. 527.

Dr. Jacobi of Bonn, in his letter dated the 21st October 1907, kindly writes to me as follows:—

"There is however another tradition which makes this event [viz. the nirvāna of Mahāvīra] come off 60 years later, in 467 B.C. (see Parišita Parvan, Introduction, p. 4 f.; also Kalpasūtra, Introduction, p. 8). The latter date cannot be far wrong because Mahāvīra died some years before the Buddha whose death is now placed between 470-480 B.C."

#### THE S'VETAMBARAS AND THE DIGAMBARAS.

2. The Jainas are divided into two sects, the Svetāmbaras, those who are clothed in white, and the Digambaras, those who are sky-clad or naked. The Svetāmbaras claim to be more ancient than the Digambaras, whose existence as a separate sect is said to date from A.D. 82,1 i.e., 609 years after the attainment of nirvāņa by Mahāvīra.

#### Indrabhūti Gautama (607 B.C.—515 B.C.).

3. The teachings of Mahāvira as represented in the scriptures are said to have been collected by a disciple of his called Indrabhūti. This disciple is often known as Gautama or Gotama. He was a Kevalin and the first of the Gaṇa-dharas or leaders of the assembly. His father's name was Brāhmaṇa Vasubhūti, and his mother's name was Brāhmaṇi Pṛthvi. He was born in

1 The Svetāmbaras say:—कव्यास सथाई नवुत्तराई तरेशा सिक्षंगयस वीरस तो बोड़ियाण दिही रचवीरपुरे समुष्णा। "The Digambara doctrine was preached in Rathavīrapura 609 years after the attainment of nirvāṇa of Mahāvīra" (Āvasyaka niryukti—52). But the Digambaras deny this and say that the Svetāmbaras rose in Vikrama 136 or 79 A.D. Cf. Bhadrabāhucarita IV. 55:

स्ते विक्रमभूपाको षट्चिंग्रद्धिके ग्रते। गर्तेऽस्दानामभूकोके मतं श्वेताम्बराभिधम्॥ 2 स्वयं सत्यविसम्पद्मं श्रुतायं जिनभाषितम्। द्वाद्शाक्रमृतं स्कन्यं सोपाकं गौतमो यथात्॥

(Jaina Harivamsa Purāņa.)

Indrabhūti Gautama and Sudharma Svāmi were the joint compilers of the Jaina scriptures. But Indrabhūti became a Kevalin or attained kevalajnāna (absolute knowledge) on the day on which Mahavira attained nirvāṇa. He did not therefore occupy the chair of his teacher Mahāvīra, but relinquished it to his spiritual brother Sudharma Svāmi. Cf. रक्श्वान प्रस्तान क्यां विषदी बादरत् प्रमु:॥ (Hemacandra's Mahāvīracarita, chap. v. MSS. lent by Muni Dharmavijaya and Indravijaya).

3 Possessor of absolute knowledge. For a further reference to this title see R. G. Bhandarkar's Report, 1883-84, p. 122.

4 यत्प्रज्ञाप्रसरेऽतिशाधिन तथा प्राक्षेयग्रेकोङ्क्वने जैनी गौरचरिक्वपद्यपि यथा सदाः पदेः कोटिशः। सङ्गोपाङ्गमडोद्या समभवज्ञेकोक्यसंचारिणी वन्द्रोऽसौ गणस्क्रमञ्जयगृद्गक्रिकेन्द्रभृतिः सतास् ॥ ॥॥

> (Siddhajayantī-caritra-ţīkā, noticed in Peterson's 3rd Report, App. 1, p. 38.)

the village of Gorbara in Magadha and died at Guṇava in Rājagrha (R ijgir) at the age of ninety-two, 12 years after the attainment of nirvāṇa by Mahāvīra. Assuming that Mahāvīra attained nirvāṇa in 527 B.C., Indrabhūti's birth must be assigned to 607 B.C. and his death to 515 B.C.

#### THE CANONICAL SCRIPTURES OF THE JAINAS.

- 4. Those scriptures of the Jainas which are generally regarded as canonical are divided into 45 siddhāntas or āgamas classified as 11 Angas, 12 Upāngas, etc. "For the benefit of children, women, the old, and the illiterate," these were composed in the Ardha-Māgadhi or Prākīta language. On the same principle the scriptures of the Buddhistic canon were originally written in Māgadhī or Pāli. It is maintained that originally the Angas were 12 in number. The 12th Anga, which was called the Dṛṣṭivāda or the presentation of views, was written in Sanskrit.
- 5. The Dṛṣṭivāda is not extant. It consisted apparently of five parts, in the first of which logic is said to have been dealt with. The Dṛṣṭivāda is reputed to have existed in its entirety at the time of Sthūlabhadra b who, according to the Tapāgachapaṭṭāvali, died in the year in which the 9th Nanda was killed by Candra Gupta (i.e., about 327 B.C.). By 474 A.D. the Dṛṣṭivāda
  - मौननं नगधेषु गोर्वर इति पानोऽभिरामः विया तबोत्पञ्चमधञ्जिष्णमानिषं त्रीवीरसेवाविधी। ज्योतिः संत्रयगौतमान्वयिवयत् प्रयोतनद्योमिषं तापोत्तीण्तुवणेवणेवपुषं भन्नयेन्द्रभूतिं स्तृवे॥

(Gotamastotra by Jinaprabha Sūri, extracted in Kāvyamālā, 7th Gucchaka, p. 110).

- <sup>2</sup> For particulars about Indrabhūti Gautama, vide Dr. J. Klatt's Paṭṭāvalī of the Kharatıraga cha in the Indian Antiquary, Vol. XI, Sept. 1882, p. 246; and Weber's Die Handschritten-verzeichnisse der Königlichen Bibliothek zu Berlin, pp. 983 and 1030, in which are noticed Sarvarājagaṇi's Vṛtti on Guṇadhara-sārdha-sātakam of Jinadattasūri, and Srī-paṭṭāvalī vācanā of the Kharataragaccha.
  - <sup>3</sup> Haribhadra-sūri, in his Daśa-vaikālika-vṛtti (Chap. III), observes:—
    - वालस्त्रीटबसूर्णाणां चर्णा चारिनकाङ्किणाम् ।
       चन्पचार्थे तत्त्वज्ञैः सिवानः प्राकृतः स्नतः ॥
- $^4$  Vardhamána-sūri, in his Ācāra-dinakara, quotes the following passage from  ${\bf \bar Agama}:$

# सुत्तृष विद्विवायं कालिय एक्कालियंग सिदंतं। योबालवायणस्यं पाइय सुइयं जिनवरेषिं॥

<sup>5</sup> Vide Cūrnika of Nandī Sūtra, page 478, published by Dhanapat Sing, Calcutta, and Peterson's 4th Report on Sanskrit MSS., p. cxxxvi.

had disappeared altogether. Nothing is known as to the way in which logic was treated in the Dṛṣṭivāda.

- 6. The subject-matter of logic is touched upon in several of the 45 Prāk<sub>I</sub>ta scriptures of the Jainas. In the Anuyoga-dvāra-sūtra,<sup>2</sup> Sthānāṅga-sūtra, Nandī-sūtra, etc., there is a description of Naya, or the method of comprehending things from particular standpoints. In the Nandī-sūtra, Sthānāṅga-sūtra, Bhagavatī-sūtra, etc.,<sup>3</sup> there is a complete classification of valid knowledge (Pramāṇa).
- 7. The word "Hetu" is found in these Prākṛta scriptures, but its use in these works makes it clear that it had not at this period acquired a very definite significance. In the Sthānāṅga-sūtra it is used not only in the sense of reason, but also as a synonym for valid knowledge (Pramāṇa) and inference (Anumāna). Hetu as identical with valid knowledge (Pramāṇa) is stated to be of four kinds, viz:—
  - (1) knowledge derived from perception (Pratyaksa);
  - (2) knowledge derived from inference (Anumana);
  - (3) knowledge derived through comparison (Upamāna); and
  - (4) knowledge derived from verbal testimony or reliable authority (Agama).

Pro a full history of the Listivada (called in Prakrta Ditthivao) see Weber's Sacred Literature of the Juins, translated by Weir Smyth in the Indian Antiquary, Vol. XX, May 1891, pp. 170-182.

<sup>2</sup> In the Anuyoga-dvēra-sūtra Naya is divided into seven kinds, viz., naigama, samgraha, vyavahēra, rjū-sētra, šabda, samabhīrūdha and evambhūta. For an explanation of these terms see Umāsvāti (in articles 21-26), who instead of dividing Naya into seven kinds, first divides it into five kinds, and then subdivides one of the five, viz., šabda, into three kinds.

3 In the Sthinhinga-sutra knowledge (jūūna) is divided into (1) Pratyaksa (direct knowledge) and (2) Paroksa (indirect knowledge). Pratyaksa again is subdivided as Kevala jūūna (entire knowledge) and Akevala jūūna (defective knowledge). The Akevala jūūna is subdivided as avadhi and manah-paryāya. The Paroksa jūūna is subdivided as abhinibodha (mati) and śruta. Vide the Sthinhinga-sūtra, pp. 45-48, and the Nandī-sūtra, pp. 120-134; both published by Dhanapat Sing and printed in Calcutta. See also what is said in the account of Umisvati seq.

चयवा चेक चल्लिके पश्चित मंज्ञा प्रचक्ते चनुमाणे लवमे चाममे। चयवा केज चल्लिके पश्चित मंज्ञा चयवा केज चल्लिको चिक्र चित्र मं। चल्लिको केलिक चल्लिको केलिक चल्लिको केलिक चल्लिको केलिक चल्लिक मं चल्लिको केलिक चल्लिक मं चल्लिक केलिक मं चलिक मं चलिक मं चलिक मं चलिक मं चलिक केलिक मं चलिक केलिक मं चलिक मं

(Sthenenga-sutra, pp. 309-310, published by Dhanapat Sing and printed in Calcutta.)

- 8. When *Hetu* is used in the sense of inference (*Anumāna*), it is classified according to the following types:—
  - (1) This is, because that is: There is a fire, because there is smoke.
  - (2) This is not, because that is: It is not cold, because there is a fire.
  - (3) This is, because that is not: It is cold here, because there is no fire.
  - (4) This is not, because that is not: There is no \$im\$\$ap\$\tilde{a}\$ tree here, because there are no trees at all.\tag{1}\$

## Внадкавани (433—357 В.С.).

- 9. An elaborate discussion of certain principles of logic is found in a Prakrta commentary on the Daśa-vaikālika-sūtra called Daśavaikālika-niryukti. This commentary was the work of one Bhadrabāhu² of the Pracina Gotra. For 45 years this sage lived the ordinary life of the world; 17 years he passed in the performance of religious vows (Vratas) and for 14 years he was acknowledged by the Jainas to be the foremost man of his age (Yuga-pradhāna).³ He was a Srutakevalin,⁴ that is, one versed in the 14 Pūrvas of the Dṛṣtivāda.
- 10. The abovementioned incidents are generally accepted as facts in the life of the author of the commentary. There is some doubt, however, as to the time in which he lived. According to the records of the Svetāmbaras he was born in 433 B.C. and died in 357 B.C. The Digambaras, however, maintain there were two Bhadrabāhus; that the first lived to 162 years from the nirvāṇa

1 Vide footnote 4 on page 4.

3 In the Vicara-ratna-samgraha by Jayasoma-suri noticed by Peterson in his 3rd Report on Sanskrit MSS., pp. 307-308, Bhadrabahu is included

among the Yuga-pravaras or Yuga-pradhanas.

4 For further particulars about this title see R. G. Bhandarkar's

Report, 1883-84, p. 122.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> For particulars vide Dr. J. Klatt's Kharataragaccha-patțāvalî in the Indian Antiquary, Vol. XI. Sept. 1882. p. 247; Weber II, p. 999; Peterson's 4th Report on Sanskrit MSS., p. lxxxiv; and Dr. H. Jacobi's edition of the Kalpasūtra, Introduction, pp. 11-15.

boln Weber II, p. 999, in which the Gurvavali-sūtra of Mahopādhyāya Dharmasāgaragani is noticed, we read of Sambhūtivijaya and Bhadrabāhu '' Ubhau-pi şaṣṭhapaṭṭadharau.''

<sup>&</sup>quot; खपिसः पूर्वस्तां दितीयः श्रीभद्रवाङ्क (०) गुदः श्रिवाय । क्षेत्रोपसर्गोद्दिरस्वयं यो ररक सङ्घं भरणाचितां क्षिः ॥ १२ ॥ नियूंद सिदान्तपयोधिराप सर्थक वीरात् बनगेन्द्रवर्षे १०० ।

of Mahāvīra, that is, up to 365 B.C., and that the second 1 to 515 years from the nirvāņa of Mahāvīra, that is, up to 12 B.C. They do not state definitely which of these Bhadrabāhus was the author of the Daśavaikālika-niryukti, but they hold the view that the second was the author of several of the existing Jaina works. The Svetāmabara records do not contain any mention of the second Bhadrabāhu, but in the Rsimaṇḍala-prakaraṇa-vṛtti,² a commentary of the Svetāmbaras, and in the Caturvimsati prabandha it is stated that Bhadrabāhu lived in the south in Pratiṣṭṇāna and was a brother of Varahamihira. Now Varāhamihira is popularly believed to have lived in the first century B.C. It is possible therefore, even according to the Svetāmbaras, that the Daśavaikālika-niryukti was the work of a commentator who, to rely on popular belief, lived about the time of the opening of the Christian era.

11. Whenever he lived, the author of the Daśavaikālikaniryukti also wrote commentaries (niryuktis) on the following Jaina scriptures:—Āvaśyaka-sūtra, Utarādhyayana-sūtra, Ācārānga-sūtra, Sūtra-kṛtānga-sūtra, Daśāśruta-skandha-sūtra, Kalpa-sūtra, Vyavahāra-sūtra, Sūrya-prajūapti-sūtra, and Ŗṣibhāṣita-sūtra.

12. Bhadrabāhu did not set himself to analyse knowledge with the object of evolving a system of logic. His object was to illustrate the truth of certain principles of the Jaina religion. To do this, he, in his Daśavaikālika-niryukti, selaborated a syllogism consisting of ten parts (daśāvayava-vākya) and then demonstrated how the religious principles of Jainism satisfied the conditions of this formula.

## तयोविनेयः क्रतविश्वभद्रः श्रीक्यूचभद्रव ददातु सर्वः ॥ १४॥

Gurvāvalī by Munisundara-sūri published in the Jaina Yaśovijaya-granthamālā of Benares, p. 4.

1 Vide the Sarasvatī-gaccha-paṭṭāvalī in the Indian Antiquary, October 1891, and March 1892.

<sup>2</sup> Vide Dr. R. G. Bhandarkar's Reports on Sanskrit MSS. during 1883-84, p. 138. Bhadrabāhu must have lived as late as the 6th century A.D., if he was really a brother of that Varāhamihira who was one of the nine Gems at the court of Vikramāditya. Munis Dharmavijaya and Indravijaya maintain that Bhadrabāhu's brother was not the same Varāhamihira that adorned the court of Vikramāditya.

## <sup>3</sup> ते ७ पदच विभन्नी चे ७-विभन्नी विवक्ख पहिंचे चां। दिहंती आसंका मण्डिसेची निगमणं च॥१४२॥

Daśavaikālika-niryukti, p. 74, published under the patronage of Dhanapat Sing by the Nirnaya Sāgara Press, Bombay; and Dr. E. Leumann's edition of Daśavaikālikaniryukti, p. 649.

- 13. The following is an example:—
- (1) The proposition  $(Pratij\tilde{n}\tilde{a})$ ,—" to refrain from taking life The Syllogism. is the greatest of virtues."
- (2) The limitation of the proposition (*Pratijāā-vibhakti*)—" to refrain from taking life is the greatest of virtues according to the Jaina scriptures."
- (3) The reason (*Hetu*),—'to refrain from taking life is the greatest of virtues, because those who so refrain are loved by the gods and to do them honour is an act of merit for men."
- (4) The limitation of the reason (*Hetu-vibhakti*),—" none but those who refrain from taking life are allowed to reside in the highest place of virtue."
- (5) The counter-proposition (Vipaksa),—" but those who despise the Jaina scriptures and take life are said to be loved by the gods and men regard doing them honour as an act of merit. Again, those who take life in sacrifices are said to be residing in the highest place of virtue. Men, for instance, salute their fathers-in-law as an act of virtue, even though the latter despise the Jaina scriptures and habitually take life. Moreover, those who perform animal sacrifices are said to be beloved of the gods."
- (6) The opposition to the counter-proposition (Vipakṣa-pratiṣedha),—" those who take life as forbidden by the Jaina scriptures do not deserve honour, and they are certainly not loved by the gods. It is as likely that fire will be cold as that they are loved by the gods or that it is regarded by men as an act of merit to do them honour. Buddha, Kapila and others, really not fit to be worshipped, were honoured for their miraculous sayings, but the Jaina Tirthankaras are honoured because they speak absolute truth."
- (7) An instance or example (Drstanta),—"the Arhats and Sadhus do not even cook food, lest in so doing they should take life. They depend on householders for their meals."
- (8) Questioning the validity of the instance or example  $(\bar{A} \hat{s} \hat{a} \hat{n} k \bar{a})$ ,—" the food which the householders cook is as much for the Arhats and  $S\bar{a}dhus$  as for themselves. If, therefore, any insects are destroyed in the fire, the Arhats and  $S\bar{a}dhus$  must share in the householders' sin. Thus the instance cited is not convincing."
- (9) The meeting of the question  $(\bar{A}sank\bar{a}\text{-}pratisedha)$ ,—'the Arhats and  $S\bar{a}dhus$  go to householders for their food without giving notice and not at fixed hours. How, therefore, can it be said that the householders cooked food for the Arhats and  $S\bar{a}dhus$ ? Thus the sin, if any, is not shared by the Arhats and  $S\bar{a}dhus$ .'

- (10) Conclusion (Nigamana),—" to refrain from taking life is therefore the best of virtues, for those who so refrain are loved by the gods, and to do them honour is an act of merit for men."
- 14. Bhadrabāhu in his Sūtra-kṛtāṅga-niryukti¹ mentions another principle of the Jaina logic called Syādvāda (Syat "may be" and Vāda "assertion," or the assertion of possibilities) or Sapta-

bhangi-naya (the sevenfold paralogism).

15. The  $Sy\bar{\alpha}dv\bar{\alpha}da^2$  is set forth as follows:—(1) May be, it is, (2) may be, it is not, (3) may be, it is and it is not, (4) may be, it is indescribable, (5) may be, it is and yet is indescribable, (6) may be, it is not and it is also indescribable, (7) may be, it is and it is not and it is also indescribable.

### Umāsvāti (1—85 A.D.).

16. Jaina philosophy recognises seven categories, viz., (1) the soul Jiva, (2) the soul-less (Ajiva), (3) action  $(\overline{Asrava})$ , (4) bondage (Bandha), (5) restraint (Sanivara), (6) destruction of the consequences of action  $(Nirjar\bar{a})$ , and (7) release or salvation (Moksa). According to the Tattvārthādhigama-sūtra which with a  $Bh\bar{a}sya$  or commentry was composed by one Umāsvāti, these categories can only be comprehended by  $Pram\bar{a}na$ , which in this  $s\bar{u}tra$  fluctuates between the two meanings of valid knowledge and the sources of valid knowledge, and of Naya, the method of comprehending things from particular standpoints.

17. This Umāsvāti is better known as Vácaka-śramaņa: he was also called Nāgaravācaka, this title being probably a reference to his Sākhā (spiritual genealogy). The Hindu philosopher Mādhavācārya calls him Umāsvāti-vācakācārya.<sup>3</sup> He lived for 48 years, 8 months, and 6 days and attained nirvāna in Samvat

चिस्तियसयं किरियाणं
 चिकिरियाणं च कीर चुलसीति।
 चभाणिय समद्वी
 वेषद्याणं च बभीसा॥ २१॥

(Sūtra-kṛtāṅga-niryukti, skandha l, adhyṅya 12, p. 448, edited by Bhim Sing Manak and printed in the Nirnaya Sāgara Press, Bombay.)

Cf. Sthānānga Sūtra, p. 316, published by Dhanapat Sing, Benares edition.

<sup>8</sup> Vide Sarvadarsana-samgraha, chapter on Jaina darsana.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Cf. Sarvadarśana samgraha translated by Cowell and Gough, p. 55. For full particulars about Syādvāda or Saptabhangi naya vide Saptabhangi-tarangini by Vimala Dāsa printed in Bombay.

142, i.e., in 85 A.D. In the Tattvārthādhigama-sūtra Umāsvāti gives the following account <sup>1</sup> of himself:—He was born in a village called Nyagrodhikā, but he wrote the Tattvārthādhigama-sūtra in Pāṭaliputra or Kusumapura (modern Patna). He belonged to the Kaubhīṣaṇin-gotra. His father was Svāti and he was consequently sometimes called Svāti-tanaya. He was also known as Vātsi-sūta, because his mother was Umā of the Vatsa-gotra. In the Tīrthakalpa of Jinaprabha-sūri it is stated that Umāsvāti was the author of 500 Sanskrit prakaraṇas (treatises). He is said to have belonged to the Svētāmbara sect though, as stated in article 2 above, it is probable that the distinction between that sect and the Digambaras had not yet come into existence.

18. It has been observed in article 16 above that in the

Parokea, indirect knowledge, and Pratyakea, direct knowledge. Tattvårthådhigama-sūtra Pramāṇa fluctuates between the meanings of valid knowledge and the sources of valid knowledge. In its former sense

न्यपोधिकाप्रस्तिन विचरता पुरवर कुसुमनानि । कौभीपणिना स्वातितनयेन वान्धीसुतेनार्ध्यम् ॥ २ ॥ सर्वेद्वचनं सम्यम्गुदन्तमेषागतं समुपधार्यः । दुःखाभ च दुरागमविचतमतिं स्रोक्तमवस्रोक्य ॥ ४ ॥ द्रस्यैनीगरवाचकेन सस्तामुकस्यया दृश्यम् । तस्तार्थोधिगमास्यं स्रष्टमुमास्तातिना शास्त्रम् ॥ ॥

> (Tattvārthādhigama-sūtra, Chap. X, p. 233, edited by Mody Keshavlal Premchand in the Bibliotheca Indica Series, Calcutta.)

A similar account is found in the commentary on the Tattvārthā-dhigama-sūtra by Siddhasenagaņi. This account is mentioned by Peterson in his 4th Report on Sanskrit Manuscripts, p. xvi.

For Further particulars about Umāsvāti see Peterson's 4th Report on Sanskrit Manuscripts, p. xvi, where he observes that in the Digambara Pattāvalī published by Dr. Hoernle in the Indian Antiquary, XX, p. 341, Umāsvāmin (probably the same as Umāsvāti) is included as the sixth Digambara Sūri of the Sarasvatī-gaccha, between Kundakunda and Lohācārya II. According to Dr. Hoernle (ride "Two Pattāvalis of the Sarasvatīgaccha" by Dr. Hoernle in the Indian Antiquary, Vol. XX, October 1891, p. 351) the date of Umāsvāmin's accession is 44 A.D., and he lived for 84 years, 8 months and 6 days. Dr. Hoernle adds, the Kāṣṭhāsaṁgha arose in the time of Umāsvāmin.

Umāsvāti's Tattvārthādhigama-sūtra with his bhāsya, together with Pūjā-prakaraņa, Jambudvīpa-samāsa and Prasamarati, has been published by the Asiatic Society of Bengal, Calcutta, in one volume which ends thus:

## क्रतिः सिताम्बराचार्यस्य महाकवेदमासातिवाचकस्य द्ति॥

(Jambudvīpa-samāsa, p. 38, published as Appendix C to the Tattvārthādhigama-sūtra in the Bibliotheca Indica Series.) Pramāṇa, according to this Sūtra, is of two kinds: (1) Parokṣa, indirect knowledge, which is acquired by the soul through external agencies such as the organs of sense, and (2) Pratyakṣa, direct knowledge which is acquired by the soul without the intervention of external agencies. Parokṣa, indirect knowledge, includes mati¹ and śruta, for these are acquired by the soul through the medium of the senses and the mind. Knowledge which is attained by Yoga (concentration) in its three stages of avadhi, manaḥparyāya and kevala is a species of Pratyakṣa, direct knowledge, because it is acquired by the soul not through the medium of the senses.

- 19. Umāsvāti contends  $^{2}$  that inference ( $Anum\bar{a}na$ ), comparison ( $Upam\bar{a}na$ ), verbal testimony or reliable authority ( $\bar{A}gama$ ), presumption ( $Arth\bar{a}patti$ ), probability (Sambhava), and non-existence ( $Abh\bar{a}va$ ) are not distinct sources of valid knowledge: he includes them under Paroksa (indirect knowledge). According to his theory the majority of them are the result of the contact of the senses with the objects which they apprehend; and some of them are not sources of valid knowledge at all.
- 20. It is interesting to note that according to Umāsvāti and the earlier Jaina philosophers all sense-perceptions (visual perception, auditory perception, etc.) are indirect apprehensions in as much as the soul acquires them not of itself but through the medium of the senses. The words Parokṣa and Pratyakṣa are thus used by these authors in senses quite opposite to those which they bear both in Brāhmaṇic logic and in the later Jaina logic.
  - 1 Mati is knowledge of existing things acquired through the senses and the mind.

Struta is knowledge of things (past, present and future) acquired through reasoning and study.

Avadhi is knowledge of things beyond the range of our perception.

Manahparyāya is knowledge derived from reading the thoughts of others.

Kevala is unobstructed, unconditional and absolute knowledge.

 $^2$  In the  $\it bh\bar a iya$  on a phorism 12, of chapter 1 of the Tattvarthadhigamasūtra, Umūsvātı observes :—

खनुमानोपमानागर्मार्थापत्तिसभावाभावानपि च प्रमाणानीति केचिकान्यने तत्क्रयमेतदिति खन्नोच्यते। सर्वाष्ट्रेतानि मतिश्रुतयोरन्तर्भूतानि द्ष्य्रियार्थसञ्जिषं-निममत्नान्॥ (Tattvārtbādbigama-sūtra, p. 15).

In his  $bh\bar{a}sya$  on 1-6 of the Tattvārthādhigama-sūtra Umāsvāti observes :—-

#### चतुर्विधमित्येके।

(Tattvārthādhigama-sūtra, p. 9.)

In his bhāsya on 1-35 he mentions the four Pramānas thus:

यथा वा प्रत्यचानुमानीपमानाप्तवचनैः प्रमाणिरेकोऽर्थः प्रमीयते खविषय -नियमात् न च ता विप्रतिपत्तयो भवन्ति तद्वचयबाद्। इति ॥

(Tattvārthādhigama-sūtra, p. 35).

21. Naya is the method by which things are comprehended from particular standpoints. It is of five Naya, the method of kinds:—(1) Naigama, the non-distinguished (2) Saingraha, the general, (3)

from particular standpoints.

Vyavahāra, the practical, (4) Rju-sūtra, the straight expression, (5) Sabda, the verbal.

22. Naigama, the non-distinguished, is the method by which an object is regarded as possessing both general and specific properties, no distinction being made between them. For instance, when you use the word "bamboo," you are indicating a number of properties, some of which are peculiar to the bamboo, while others are possessed by it in common with other trees. You do not distinguish between these two classes of properties.

23. Samgraha, the collective, is the method which takes into consideration generic properties only,

ignoring particular properties.

24. Vyavahāra, the practical, is the method which takes into consideration the particular only. The general without the particular is a nonentity. If you ask a person to bring you a plant, he must bring you a particular plant, he can not bring plant in general.

25. Riu-sūtra, the straight expression, is the method which

considers a thing as it exists at the mo-Riu-sütra. ment, without any reference to past or its future. It is vain to ponder over a thing as it was in the past or as it will be in the future. All practical purposes are served by considering the thing itself as it exists at the present moment. For instance, a man who in a previous birth was my son is now born as a prince, but he is of no practical use to me now. The method of Riu-sutra recognises nothing but the entity itself (bhāva) and does not consider the name  $(n\bar{a}ma)$ , the image  $(sth\bar{a}pan\bar{a})$ , or the causes which constituted it (dravya). The fact that a cowherd is called Indra does not make him lord of the heavens. An image of a king can not The causes which exist in me perform the functions of a king. now and will necessitate my being born hereafter with a different body can not enable me to enjoy that body now.

These four kinds of *Pramāna* seem to refer to those in the Nyāya Sūtra of the Hindu logician Akṣapāda Gautama. But the same four kinds are also referred to as sub-divisions of *Hetu* in the Sthānāṅga Sūtra of the Jainas, p. 309, published by Dhanapat Sing and printed in Calcutta.

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> मैगममंग्रद्यवदारर्जुस्त्रमण्ड्या नयाः॥ १-५४॥

26. Sabda, the verbal, is the method of correct nomenclature. It is of three kinds, viz., Samprata, the S'abda. suitable, Samabhirudha, the subtle, and Evambhuta, the such-like. In Sanskrit a jar is called ghata, kumbha or kalasa, and these are synonymous terms. Sāmprata consists in using a word in its conventional sense, even if that sense is not justified by its derivation. For example the word "Satru" according to its derivation means "destroyer," but its conventional meaning is "enemy." Samabhirādha consists in making nice distinctions between synonyms, selecting in each case the word which on etymological grounds is the most appropriate. Evambhüta consists in applying to things such names only as their actual condition justifies. Thus a man should not be called Sakra (strong), unless he actually possesses the Sakti (strength) which the name implies.

1 Umāsvāti in his bhāsya on 1-35 observes :-

यथार्थाभिभानं प्रस्टः। नामादिषु प्रसिद्धपूर्व्याच्छन्टाट् सर्थे प्रत्ययः साम्प्रतः सत्यु सर्थेषु सर्वज्ञमः समभिक्षतः। यञ्जनार्थयोरेवसूत इति ॥

(Tattvarthadigama-sutra, p. 32.)

## CHAPTER II.

THE HISTORICAL PERIOD (COMMENCING FROM 453 A.D.).

THE WRITTEN RECORDS OF THE JAINAS.

27. The teachings of Mahāvīra as contained in the Jaina Āgamas are said to have been handed down by memory for several centuries until in Vira Samvat 980 or A.D. 453, they were codified in writing by Devardhi Gaṇi, otherwise known as Kṣamāśramaṇa, at a council held at Valabhi. According to this theory the authentic history of the Jaina literature commences from 453 A.D., and all that preceded that period is to be regarded as merely traditional.

### SIDDHASENA DIVĀKARA (ABOUT 533 A.D.).

28. The first Jaina writer on systematic logic, during the historical period, appears to be Siddhasena Divākara. Before his time there had not perhaps existed any distinct treatise on Jaina logic, its principles having been included in the works on metaphysics and religion. It was he who for the first time laid the foundation of a science called Logic  $(Ny\bar{a}ya)$  among the Jainas by compiling a treatise called Nyāyāvatāra in 32 short stanzas.

वस्तिषुरंति नयरे। देवट्टि पमुद्द सयसमंघेदिः। पुष्ये खागम स्निद्धिः। नयसय खसी खान् वीराज॥१॥

> (Sukhabodhikā Tīkā to Kalpasūtra, p. 433, printed in Kathiwar by-Hira Lal Hamsarāja.)

In Devardhi Gani's redaction of the Kalpasūtra (vide Dr. Jacobi's edition of the Kalpasūtra, p. 67) we read:—

Samanassa bhagavao Mahāvīrassa jāva savva-dukkha-ppahīnassa navavāsasayāim vikkamtaim dasamassa ya vāsa-sayassa, ayam asī ime samvacchare kāle gacchai iti (148).

<sup>2</sup> Vide No. 741 in the list of MSS. purchased for the Bombay Government as noticed by Peterson in his 5th Report, p. 289. A manuscript of the Nyāyāvatāra with Vivrti was procured for me from Bhavanagara, Bombay, by Muni Dharmavijaya and his pupil Sri Indravijaya.

<sup>1</sup> Vide Dr. Klatt's Pattāvali of the Kharataragaccha in the Indian Anitquary, Sept. 1882, Vol. XI, p. 247; and Dr. Jacobi's Kalpasūtra, Introduction, p. 15. See also Vinaya Vijaya Gaṇi's commentary on the Kalpasūtra which quotes the following text:—

- 29. Siddhasena Divākara is also the famous author of the Sammatitarka-sūtra which is a work in Prākṛta on general philosophy containing an elaborate discussion on the principles of logic. This author, who belonged to the Svetāmbara sect, has been mentioned by Pradyumna Sūri (q.v.) in his Vicāra-sāra-prakaraņa and by Jina Sena Sūri in the Adipurāna dated 783 A.D.
- 30. Siddhasena Divākara, who was a pupil of Vṛddha-vādi-sūri, received the name of Kumuda-candra at the time of ordination. He is said to have split, by the efficacy of his prayers, the Linga, the Brāhmanical symbol of Rudra, in the temple of Mahākāla at Ujjayini, and to have called forth an image of Pārsvanātha by reciting his Kalyāṇa-mandira-stava. He is believed by Jainas to have converted Vikramāditya to Jainism 470 years after the nirvāṇa of Mahāvira, that is, in 57 B.C.<sup>5</sup>
- 31. But Vikramāditya of Ujjainī does not seem to be so old as he has been identified by scholars with Yaśodharma Deva, king of Malwa, who, on the authority of Alberuni, defeated the Huns at Korur in 533 A.D. This view of scholars agrees well with the statement of the Chinese pilgrim Hwen-thsang, who, coming to India in 629 A.D., says that a very powerful king, presumably Vikramāditya, reigned at Ujjainī 60 years before his arrival there. Moreover, Varāhamihira, who was one of the nine Gems at the court of Vikramāditya, is known to have lived between 505 A.D. and 587 A.D. It is therefore very probable that

# । पंचेव य वरिससर सिडसेषदिवायरो य जयपयड़ो। स्वसर वीसडिए सङ्ख्युक सक्करविखपक्ष ॥ २९॥

(Vicāra-sāra-prakaraņa, noticed by Peterson in his 3rd Report, p. 272.)

<sup>2</sup> Cf. Prabhāvakacaritra VIII, V. 57.

8 For other particulars about Siddhasena Divākara see Dr. Klatt's Pattāvalī of the Kharataragaccha in the Indian Antiquary, Vol. XI. Sept. 1882, p. 247. Vide also Dr. R. G. Bhandarkar's report on Sanskrit MSS., during 1883-84, pp. 118, 140. Also the Prabandha-cintāmaṇi translated by Mr. Tawney in the Bibliotheca Indica series of Calcutta, pp. 10-14.

4 Vide Beal's Buddhist Records, Vol. II, p. 261.

b Varahamihira chose Saka 427 or A.D. 505 as the initial year of his astronomical calculation, showing thereby that he lived about that time:

## सप्तासि वेदसंद्धं शकतासमपास्य चैत्रशक्तादौ । चर्चासमिते भागी यवनपुर सीख दिवसारो ॥ ८॥

Pañcasiddhāntikā, chap. 1, edited by Dr. G. Thibaut and Sudhākara Dvivedi.

Vide also Dr. Thibaut's Introduction to the Pañcasiddhantika, p. xxx.

Vikramāditya and his contemporary Siddhasena Divākara lived at Ujjaini about 533 A.D. I am inclined to believe that Siddhasena was no other than  $K_sapaṇaka$  (a Jaina sage) who is traditionally known to the Hindus to have been one of the nine Gems that adorned the court of Vikramāditya.

32. The Nyāyāvatāra written in Sanskrit verse gives an exposition of the doctrine of *Pramāṇa* (sources of valid knowledge) and *Naya* (the method of comprehending things from particular

standpoints).

33. Pramāṇa is valid knowledge which illumines itself as well Pramāṇa or valid knowledge. Perception.

It is of two kinds: (1) direct valid knowledge or perception (Pratyakṣa) and (2) indirect valid knowledge (Parokṣa). Direct valid knowledge (Pratyakṣa) is two-fold: (1) practical (Vyāvahārika) which is the knowledge acquired by the soul through the five senses (the eye, ear, nose, tongue and touch) and the mind (Manas), and (2) transcendental (Pāramārthika) which is the infinite knowledge that comes from the perfect enlightenment of the soul: it is called Kevala or absolute knowledge.

34. Indirect valid knowledge (Paroksa) is also of two kinds:

Verbal Testimony.

(1) inference (Anumāna) and (2) verbal testimony (Sābda). Verbal testimony is the knowledge derived from the words of reliable persons including knowledge from scripture. Suppose a young man coming to the side of a river cannot ascertain whether the river is fordable or not, and immediately an old experienced man of the locality, who has no enmity against him, comes and tells him the river is easily fordable: the word of the old man

धव्यम्मरिः चपणकोऽमरिष्ठंः शङ्क् वैतास्त्रभट्ट घटखपैर कास्त्रिदासाः । स्त्राता वराचिमस्तिरा व्यपतेः सभायां रत्नानि वै वरविच नेव विज्ञमस्य ॥

(Jyotirvidabharana).

In the Pancatantra and other Brahmanic Sanskrit works as well as in the Avadānakalpalatā and other Buddhist Sanskrit works the Jaina ascetics are nicknamed as Kṣapaṇaka:

भगवद्गाषितं तम् सुभद्रेण निवेदितम् । श्रुला चपणकः चिप्रमभूद् द्वेषविषाकुः ॥ ९ ॥ तस्य सर्व्वज्ञतां वेत्ति सुभद्गे यदि मद्गिरा । तदेव चपण्यदां त्यच्यति श्रमणादरात् ॥ १९ ॥

(Avadānakalpalatā, Jyotişkāvadāna).

<sup>1</sup> The nine Gems are:-

is to be accepted as a source of valid knowledge called personal testimony or Laukika Sābda. Scripture is also a source of valid knowledge for it lays down injunctions on matters which baffle perception and inference: for instance, it teaches that misery is the consequence of vice. Knowledge derived from this source is called scriptural testimony or Sāstraja Sābda. Scripture is defined as that which was first cognised by a competent person, which is not such as to be passed over by others, which is not incompatible with the truths derived from perception, which imparts true instruction and which is profitable to all men and is preventive of the evil path.

- 35. Inference (Anumāna) is the correct knowledge of the major term (Sādhya) derived through the middle term (Hetu, reason, or Linga, sign) which is inseparably connected with it. It is of two kinds: (1) inference for one's own self (Svārthānumāna) and (2) inference for the sake of others (Parārthānumāna).
- 36. The first kind is the inference deduced in one's own mind after having made repeated observations. A man by repeated observations in the kitchen and elsewhere forms the conclusion in his mind that fire must always be an antecedent of smoke. Afterwards, he is not certain whether a hill which he sees has fire on it or not. But, noticing smoke, he at once brings to mind the inseparable connection between fire and smoke, and concludes that there must be fire on the hill. This is the inference for one's own self.
- 37. If the inference is communicated to others through words, it is called an inference for the sake of others. A type of this kind of inference is as follows:—
  - (1) The *hill* (minor term or *Pakṣa*) is full of *fire* (major term or *Sādhya*);
  - (2) because it is full of smoke (middle term or Hetu);
  - (3) whatever is full of smoke is full of fire, as, e.g., a kitchen (example or Drstānta);
  - (4) so is this hill full of smoke (application or *Upanaya*):
- (5) therefore this hill is full of fire (conclusion or Nigamana).
- 38. In a proposition the subject is the minor term (Paksa) and the predicate the major term (Sadhya).

  The minor term is that with which the connection of the major term is to be shown: In the proposition

<sup>&</sup>lt;sup>।</sup> चाप्तोपज्ञमनुक्कञ्चामदृष्टेष्टिविरोधकम्। तत्त्वापदेशकत् सार्वे शास्त्रं कापथवद्गम्॥

"the hill is full of fire," the hill is the minor term and fire major term. The middle term (Hetu) is defined as that which cannot occur otherwise than in connection with the major Thus in the proposition: "the hill is full of fire because it is full of smoke," smoke is the middle term which cannot arise from any other thing than fire which is the major term. The example (Dystanta) is a familiar case which assures the connection between the major term and the middle term: It is of two kinds: (1) homogeneous Sādharmya), such as "the hill is full of fire because it is full of smoke, as a kitchen," and (2) heterogeneous (Vaidharmya) which assures the connection between the middle term and major term by contrariety, that is, by showing that the absence of the major term is attended by the absence of the middle term, such as "where there is no fire there is no smoke as in a lake."

39. In an inference for the sake of others the minor term (Pakṣa) must be explicitly set forth, otherwise the reasoning might be misunderstood by the opponent, e.g. This hill has fire because it has smoke.

This instance, if the minor term is omitted, will assume the following form:—

Having fire, Because having smoke.

Here the opponent might not at once recollect any instance in which fire and smoke exist in union, and might mistake a lake for such an instance. In such a case the whole reasoning will be misunderstood.

40. If that of which the major term or predicate is affirmed is opposed by evidence, the public opinion, one's own statement, etc., we have that which is known as the fallacy of the minor term (Paksābhāsa) of which there are many varieties.

The semblance or fallacy of the minor term (Pakṣābhāsa)

Fallacy of the minor term.

arises when one attributes to it as a proved fact that which is yet to be proved, or which is incapable of being proved, or when it is opposed to perception and inference, or inconsistent with the public opinion or incongruous with one's own statement, thus:—

- (1) "The jar is animate (paudgalika)"—this is a conclusion which is yet to be proved to the opponent.
- (2) "Every thing is momentary"—this is a Saugata conclusion which, according to the Jainas, is incapable of being proved.
- (3) "The general  $(s\bar{a}m\bar{a}nya)$  and particular  $(vi\dot{s}e\dot{s}a)$  things are without parts, are distinct from each other and are like themselves alone"—this is opposed to perception.

- (4) "There is no omniscient being"—this is, according to the Jainas, opposed to inference.
- (5) "The sister is to be taken as wife"—this is inconsistent with the public opinion.
- (6) "All things are non-existent"—this is incongruous with one's own statement.
- 41. Inseparable connection  $(Vy\bar{a}pti)$  is the invariable accompaniment of the middle term by the major term. In the inference: "this hill is full of fire, because it is full of smoke," the connection between fire and smoke, that is, the invariable presence of fire with smoke, is called  $Vy\bar{a}pti$  or Inseparable Connection. It is of two kinds: (1) Intrinsic and (2) Extrinsic.
- 42. Intrinsic inseparable connection  $(Antar-vy\bar{a}pti)$  occurs when the minor term  $(pak\bar{s}a)$  itself as the common abode of the middle term (hetu) and major term  $(s\bar{a}dhya)$  shows the inseparable connection between them, thus:—
  - (1) This hill (minor term) is full of fire (major term):

(2) because it is full of smoke (middle term).

Here the inseparable connection between fire and smoke is shown by the hill (minor term) in which both of them abide.

- 43. Extrinsic inseparable connection  $(Bahir-vy\bar{a}pti)$  occurs when an example  $(drst\bar{a}nta)$  from the outside is introduced as the common abode of the middle term (hetu) and major term  $(s\bar{a}dhya)$  to assure the inseparable connection between them, thus:—
  - (1) This hill is full of fire (major term);
  - (2) because it is full of smoke (middle term);

(3) as a kitchen (example).

Here the reference to the kitchen is no essential part of the inference: but is introduced from without as a common instance of a place in which fire and smoke exist together, and so it reaffirms the inseparable connection between them.

- 44. Some logicians hold that, that which is to be proved, that is, the major term  $(s\bar{a}dhya)$ , can be established by intrinsic inseparable connection  $(Antarvy\bar{a}pti)$  only: hence the extrinsic inseparable connection  $(Bahir-vy\bar{a}pti)$  is superfluous.
- 45. The semblance of reason or fallacy of the middle term '(Het-vābhāsa') arises from doubt, misconception or non-conception about it (the middle term). It is of three kinds:—
- (1) The unproved (Asiddha): This is fragrant because it is a sky-lotus.

Here the reason (middle term), viz., the sky-lotus, is unreal.

(2) The contradictory (Viruddha): "This is fiery because it is a body of water."

Here the reason alleged is opposed to what is to be established.

(3) The uncertain  $(Anaik\bar{a}ntika)$ : "Sound is eternal because it is always audible."

Here the reason or middle term is uncertain because audible-

ness may or may not be a proof of eternity.

46. The fallacy of example  $(D_{rst}\bar{a}nt\bar{a}bh\bar{a}sa)$  may arise in the homogeneous or heterogeneous form from a defect in the middle term (hetu) or major term  $(s\bar{a}dhya)$  or both; or from doubt about them.

47. Fallacies of the homogeneous example (Sādharmya-

drstāntābhāsa) are as follows:—

(1) Inference is *invalid* (major term), because it is a *source of knowledge* (middle term), like *perception* (homogeneous example).

Here the example involves a defect in the major term (sadhya),

for perception is not invalid.

(2) Perception is *invalid* (major term), because it is a *source* of valid knowledge (middle term), like a dream (homogeneous example).

Here the example involves a defect in the middle term (hetu),

for the dream is not a source of valid knowledge.

(3) The omniscient being is not existent (major term), because he is not apprehended by the senses (middle term), like a jar (homogeneous example).

Here the example involves a defect in both the major and middle terms (sādhya and hetu), for the jar is both existent and

apprehended by the senses.

(4) This person is devoid of passions (major term), because he is mortal (middle term), like the man in the street (homogeneous example).

Here the example involves doubt as to the validity of the major term, for it is doubtful whether the man in the street

is devoid of passions.

(5) This person is mortal (major term), because he is full of passions (middle term), like the man in the street (homogeneous example).

Here the example involves doubt as to the validity of the middle term, for it is doubtful, whether the man in the street

is devoid of passions.

(6) This person is non-omniscient (major term), because he is full of passions (middle term), like the man in the street (homogeneous example).

Here the example involves doubt as to the validity of both the major and middle terms, for it is doubtful whether the man in the street is full of passions and non-omniscient.

It is stated in the Nyāyāvatāra-vivṛti that some unnecessarily lay down three other kinds of fallacy of the homogeneous example (Sādharmya-drejāntābhāsa), viz.:—

(1) Unconnected (Ananvyaya), such as: This person is full of passions

(major term), because he is a speaker (middle term), like a certain man in

Magadha (example).

Here though a certain man in Magadha is both a speaker and full of passions, yet there is no inseparable connection between "being a speaker" and "being full of passions."

(2) Of connection unshown (Apradar stanvaya), such as:—

Sound is non-eternal (major term), because it is produced (middle term), as a jar (example).

Here though there is an inseparable connection between "produced" and "non-eternal," yet it has not been shown in the proper form as:—

"Whatever is produced is non-eternal as a jar."

(3) Of inverted connection (Viparītānvaya), such as:

Sound is non-eternal (major term), because it is produced (middle term). Here if the inseparable connection (vyāpti) is shown thus—

"Whatever is non-eternal is produced as a jar," instead of-

- "Whatever is produced is non-eternal as a jar," the example would involve the fallacy of inverted connection.
- 48. Fallacies of the heterogeneous example (Vaidharmyadrstāntābhāsa) are of six kinds, thus:—
- (1) Inference is *invalid* (major term), because it is a *source of knowledge* (middle term): whatever is not invalid is not a source of knowledge, as a *dream* (heterogeneous example).

Here the example involves in the heterogeneous form a defect in the major term ( $s\bar{a}dhya$ ) for the dream is really invalid though it has been cited as not invalid.

(2) Perception is non-reflective or nirvikalpaka (major term), because it is a source of knowledge (middle term): whatever is reflective or savikalpaka, is not a source of knowledge, as inference (heterogeneous example).

Here the example involves in the heterogeneous form a defect in the middle term  $(s\bar{a}dhana)$ , for inference is really a source of knowledge though it has been cited as not such.

(3) Sound is eternal and non-eternal (major term), because it is an existence (middle term): whatever is not eternal and non-eternal is not an existence, as a jar (heterogeneous example).

Here the example involves in the heterogeneous form a defect in both the major and middle terms ( $s\bar{a}dhya$  and  $s\bar{a}dhana$ ), for the jar is both "eternal and non-eternal" and "an existence."

(4) Kapila is not omniscient (major term), because he is not a propounder of the four noble truths (middle term): whoever is omniscient is the propounder of the four noble truths, as Buddha (the heterogeneous example).

Here the example involves in the heterogeneous form a doubt as to the validity of the major term  $(s\bar{a}dhya)$ , for it is doubtful whether Buddha was omniscient.

(5) This person is untrustworthy (major term), because he is full of passions (middle term): whoever is trustworthy is not full of passions, as Buddha (heterogeneous example).

Here the example involves doubt as to the validity of the

middle term (hetu), for it is doubtful whether Buddha is not full of passions.

(6) Kapila is not devoid of passions (major term), because he did not give his own flesh to the hungry (middle term): whoever is devoid of passions did give his own flesh to the hungry, as Buddha (heterogeneous example).

Here the example involves doubt as to the validity of both the major and middle terms (sadhya and sadhana), for it is doubtful whether Buddha was devoid of passions and gave his own flesh to the hungry.

It is stated in the Nyāyāvatāra-vivṛti that some unnecessarily lay down three other kinds of fallacy of the heterogeneous example (Vaidharmyadṛṣṭāntābhāsa), viz.-

(1) Unseparated (Avyatireki): This person is not devoid of passions (major term), because he is a speaker (middle term): whoever is devoid of passions is not a speaker, as a piece of stone (heterogeneous example).

Here though a piece of stone is both "devoid of passions" and "not a speaker," yet there is no invariable separation (vyatireka vyāpti) between "devoid of passions" and "a speaker."

(2) Of separation unshown (Apradarátavyatireka):

Sound is non-eternal (major term), because it is produced (middle term);

as ether (example).

Here though there is an invariable separation between "produced" and "eternal," yet it has not been shown in the proper form, such as: "Whatever is non-non-eternal is not produced, e.g., ether."

(3) Of contrary separation (Viparīta-vyatireka):

Sound is non-eternal (major term), because it is produced (middle term): whatever is not produced is non-non-eternal, e.g., ether (example).

Here the example has been put in a contrary way, for the proper form should have been: Whatever is non-non-eternal is not produced, e.g., ether."

49. Refutation ( $D\bar{u}sana$ ) is the pointing out of defects or fallacies in the statements of the opponent in any of the forms enumerated above. The semblance of a refutation ( $Dusan\bar{a}bh\bar{a}sa$ ) is the contrivance to allege defects where there are no defects at all.

50. The immediate effect of Pramāna (valid knowledge) is the removal of ignorance. The consequence of the transcendental perception (Pāramārthika Pratyaksa Pramāna) is bliss and equanimity consisting in salvation (Moksa or final emancipation), while that of the other kinds of Pramana (direct and indirect knowledge) is the facility which they afford us to choose the desirable and reject the undesirable things.

51. Naya is the method of comprehending things from particular

Naya or the method of comprehending things from particular standpoints.

standpoints. Thus we may conceive rose either as a flower possessing the attributes common to all flowers or as a thing possessing attributes which are

peculiar to the rose as distinguished from other flowers. Naya is of seven kinds: naigama, samgraha, vyavahāra, riusūtra, sabda, samabhirūdha, and evambhūta.

52. Knowledge which determines the full meaning of an object through the employment, in the scriptural method, of one-sided nayas, is called  $Sy\bar{n}dv\bar{n}da$ -śruta. It is the perfect knowledge of things taken from all possible standpoints. Thus a thing may be, may not be, both may or may not be, etc., according as we take it from one or other standpoint.

The soul (Jiva) is the knower, the illuminator of self and non-self, doer, enjoyer, undergoes changes of condition and is

self-conscious, being different from the earth, water, etc.

This system of  $\bar{P}ram\bar{a}na$  and Naya, with which all of us are familiar, and which serves to perform all practical functions, has no beginning and no end.

#### SIDDHASENA GAŅI (600 A.D.).

53. Siddhasena Gaṇi, who belonged to the S'vetāmbara sect, was the author of a commentary on Umāsvāti's Tattvārthādhigama-sūtra called Tattvārthatīkā, in which the logical principles of Pramāna (the sources of knowledge), and Naya (the method of comprehending things from particular standpoints) have been fully discussed. He was a pupil of Bhāsvāmin² who was a spiritual successor of Simhasūri, himself a disciple of Dinna Gaṇi. Siddhasena Gaṇi³ is generally believed to have been a contemporary of Devardhigaṇi Kṣamāśramaṇa, who flourished 980 years after Mahāvīra, or about 453 A.D. But as he has in his Tattvārthatīkā quoted Siddhasena Divākara and was posterior to Simhagiri or Simhasūri, a contemporary of Vikramāditya, I am inclined to suppose that he lived after 533 A.D., or about 600 A.D.

#### Samantabhadra (600 A.D.).

54. Samantabhadra, who belonged to the Digambara sect of Southern India, was the famous author of a well-known com-

### श्रतसाद्रजोऽवयवः सस्याममञ्जूषीकपञ्जाषः। तत्त्रार्थेशास्त्रदीकामिमां स्थात् पिदसेनमणिः॥ ०

(Tattvārthaṭīkā, noticed in Peterson's 3rd Report, p. 85.)

8 Simhasūri is identified by Peterson with Simhagiri who was a contemporary of Vikramāditya.

(Peterson's 4th Report, pp. cxxxi and cxxviii.)

Muni Dharmavijaya and his pupil Indra-vijaya tell me that Siddhasena Gaņi was a contemporary of Devardhigaņi Kşamāśramaņa,

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> A palm-leaf manuscript of the Tattvārthatīkā in the temple of Sāntinātha, Cambay, has been noticed by Peterson in his 3rd Report, pp. 83-86.

mentary on Umāsvāti's Tattvārthādhigama-sūtra called Gandha-hasti-mahābhāṣya. The introductory part of this commentary is called Devāgamastotra <sup>1</sup> or Āptamīmāmsā, and is replete with discussions of logical principles besides a review of the contemporary schools of philosophy including the Advaita Vāda.<sup>2</sup> The Āptamīmāmsā has been cited by the Hindu philosopher Vācaspati Miśra³ in explaining S'aṅkarācārya's criticism of the Syādvāda doctrine in the Vedānta-sūtra.

55. Šamantabhadra, who was styled a Kavi and whose works were commented on by Vidyānanda and Prabhācandra, was also the author of the Yuktyanuśāsana, the Ratnakarandaka (also called Upāsakādhyayana), the Svayambhū-stotra, and the Caturvim-

who flourished 980 years after the nirvāṇa of Mahāvīra. Vide also Uvā-sagadasāo edited by A. F. R. Hoernle, Appendix III, page 50.

In the Pandavapurana he is extelled as the author of the Devagama-

totra:-

#### समन्तभद्रो भद्राची भातु भारतभूषणः देवागमेन येनाच खक्तो देवागमः क्षतः॥

(Pāṇḍavapurāṇa, noticed in Peterson'a 4th Report, p. 157.)

# श्रेतेकान्मपचेऽपि दहो। भेदी विदश्यते। कारकायां विद्यायाच नेकं सस्मात् प्रजायते॥ २४॥

(Āptamīmāmsā, verse 24.)

3 Vācaspati Miśra in his Bhāmatī-tīkā on Sankara's exposition of the Vedānta Sūtra 2-2-33 quotes the following verse:—

# स्तादादः पर्वथैकान्तरागात् किंष्टनचिद्विधेः। सप्तभन्ननयापैको चैयादैयविश्रेषकत्॥

(Bhāmatī, Bibliotheca Indica, p. 458.)

The same verse occurs in the Aptamimāmsā as follows:—

# स्यादादः सर्वथेकानात्यामात् किं दत्तचिद्धिः। सप्तभन्नवापेच देशादेय विभेषकः॥ १०४॥

(MSS. of the Aptamīmāmsā, verse 104, borrowed from Mr. Jain Vaidya of Jaipur.)

Vidyānanda at the closing part of his commentary on the Aptamīmāmsā (called Apta-mīmāmsālankṛti-ṭīkā aṣṭasāhasrī) refers to Samanta-bhadra thus:—

येनाभेषकुनीतिष्टतिष्ठितः प्रेषावतां गोषिताः सहाचेऽत्यकलङ्कनीतिष्टिरास्त्रज्ञार्थेषार्थेसुतः। स त्रीसानि समन्तमद्र यतिष्ठत् सूयाद् विशुभीनुनान् विद्यानन्दफलप्रदोऽनष्टियां साहादमार्गायपोः॥

> (Folio 218, Aptamīmāmsālankṛti-ṭīkā, Govt. Collection, in the Asiatic Society of Bengal, No. 1525.)

sati-jina-stuti. He is mentioned by Jina Sena in the Ādipurāṇa composed about 838 A.D., and is referred to by the Hindu philosopher Kumārila. Kumārila, a contemporary of the Buddhist logician DharmakIrti, is generally held to have lived in the 7th century A.D. Samantabhadra is supposed to have flourished about 600 A.D.

56. The Apta-mimāmsā consists of 115 stanzas in Sanskrit, divided into ten chapters called Paricehedas, in the course of which a full exposition of the seven parts of the  $Sy\bar{a}d\cdot v\bar{a}du$  or Sapta-bhangi-naya has been given. The first and second parts of the doctrine, viz.,  $Sy\bar{a}d$ -asti ("may be, it is"), and  $Sy\bar{a}d$ - $n\bar{a}sti$  ("may be, it is not"), have led to most interesting discussion of the relation between asti, that is,  $bh\bar{a}va$  or existence, and  $n\bar{a}sti$ , that is,  $abh\bar{a}va$  or non-existence.

57. Non-existence  $(Abh\bar{a}va)$  is divided into four kinds: (1) antecedent non-existence  $(pr\bar{a}gabh\bar{a}va)$ , e.g., a lump of clay becomes non-existent as soon as a jar is made out of it, so the jar is an antecedent non-existence with reference to the lump of clay; (2) subsequent non-existence  $(pradhva\dot{m}s\bar{a}bh\bar{a}va)$ , e.g., the lump of clay is a subsequent non-existence with reference to the jar; (3) mutual non-existence  $(anyony\bar{a}bh\bar{a}va)$  or  $any\bar{a}poha$ , e.g., a jar and a post are mutually non-existent with reference to each other; and (4) absolute non-existence  $(samav\bar{a}y\bar{a}bh\bar{a}va)$  or  $atyant\bar{a}bh\bar{a}va$ ), e.g., the inanimate is not a living object. It is observed that on the supposition of mere existence to the entire exclusion of non-existence, things become all-pervading, beginningless, endless, indistinguishable and inconceivable. For

Prabhācandra in his commentary on the Ratnakaraṇḍaka (or Upāsakādhyayana) observes:—

येनाज्ञानतमो विनाध्य निष्यसं भयात्मचेतोगतं सम्यम्ज्ञानसर्दाद्धाभः प्रकटितः सागारमागीऽष्यसः । स त्रीरवकरखकामस्ररितः संस्त्यरिरक्शेषको जोवादेव समनाभद्रमुनिषः त्रीमत्प्रभेन्द्र्जिनः॥

(Upāsakādhyayana with the commentary of Prabhācandra noticed in Peterson's 4th Report, pp. 137-38.)

1 Vide Dr. R. G. Bhandarkar's Report on Sanskrit MSS. during 1883-84, p. 118, and J.B.B.R.A.S., for 1892, p. 227.

शांविकानो पदार्थानामभावानामपक्रवात् । सर्वात्मक्षमनाद्यन्तमस्य इपमभावकम् ॥ ८ ॥ कार्याद्वस्यमनादि स्थात् प्राग्नभावस्य निक्कते । प्रश्लंसस्य च भक्तस्य प्रचारेऽनन्ततां व्रजेत् ॥ १० ॥ सर्वात्मकं तदेवं स्थादन्यापास्यतिक्रमे । चन्यच समनावन सपदेश्येत सर्वथा ॥ ११ ॥ instance, if the antecedent non-existence is denied, action and substance are to be supposed as beginningless, while on the denial of the subsequent non-existence, they become endless, and in the absence of mutual non-existence they become one and all-pervading, while on absolute non-existence being denied they are to be supposed as existing always and everywhere.

58. In the same way on the supposition of mere non-existence to the entire exclusion of existence, it becomes impossible to establish or reject anything (since it is non-existent). If on the other hand existence and non-existence, which are incompatible with each other, are simultaneously ascribed to a thing, it becomes

indescribable. Therefore the truth is as follows:—

(1) A thing is existent—from a certain point of view.

(2) It is non-existent—from another point of view.

(3) It is both existent and non-existent in turn—from a third point of view.

(4) It is *indescribable* (that is, both existent and non-existent simultaneously)—from a fourth point of view.

- (5) It is existent and indescribable—from a fifth point of view.
- (6) It is non-existent and indescribable—from a sixth point of view.
- (7) It is both existent and non-existent and indescribable—from a seventh point of view.

#### AKALANKADEVA (ABOUT 750 A.D.).

59. Akalanka, otherwise known as Akalankadeva or Akalankacandra, was a famous logician who belonged to the Digambara sect. He was designated as a  $Kavi^{-1}$  (poet)—a title of special honour given to writers of repute. He wrote a commentary on Samantabhadra's Āptamīmānisā called Aṣṭa śatī ² which is a

सभावैकाम्मपचेऽपि भावापम्हववादिनाम्।
स्वीधवाक्यप्रमाणं न केम साधनदूषणम्॥१२॥
विराधान्नोभयेकात्मा स्यादादन्याय विद्विषाम्।
स्वास्त्रतेकामोऽप्यित्तर्भवास्यसिति युक्तते॥१३॥
कर्णतिको सदेवेष्टं कर्णतिदसदेव तत्।
तथाभयमवास्य च उपयोगान्न सर्वेषा॥१४॥

(Aptamīmāmsā, MSS., verses 9-14, lent to me by Mr. Jain Vaidya of Jaipur.)

<sup>1</sup> For an explanation of the term "Kavi" vide R. G. Bhandarkar's Report on Sanskrit MSS. during 1883-84, page 122.

<sup>2</sup> A manuscript of the Asta-satī was kindly supplied to me by Mr. Jain Vaidya of Jaipur early in 1907.

most precious work on the Jaina philosophy dealing mainly with logic. Māṇikyanandi's Parīkṣāmukha-sūtra (q.v.) was based on another work on logic, called Nyāya-viniścaya, written by Akalanka, to whom the following works are also attributed: Laghīyastraya, Akalanka-stotra, Svarūpa-sambodhana and Prāyaścitta. Laghusamantabhadra i in his Aṣṭa-sāhasrī-viṣama-pada-tātparya-ṭīkā calls Akalanka as Sakala-tārkika-cakra-cūḍā-maṇi or "the crest-gem of all logicians."

60. In the Pāṇḍava-purāṇa reference is made to a legend according to which Akalanka was embarrassed in a controversy with a Buddhist antagonist. Finding that the antagonist was effectively prompted by Māyādevī concealed in a jar, Akalanka is said to have put an end to that prompting or inspiration by

kicking the jar over with his foot.

61. Akalanka, though mentioned along with Dharmakīrti <sup>3</sup> as a logician, flourished at a considerably later time. He is held to have been a contemporary of Rāṣṭrakūṭa king Subhatunga <sup>4</sup> or Kṛṣṇarāja I. As Kṛṣṇa-rāja's son, Govind II, lived in S'aka 705 <sup>5</sup> or 783 A.D., Kṛṣṇa-rāja I, and consequently his contemporary Akalanka, must have flourished about 750 A.D.

#### VIDYĀNANDA (ABOUT 800 A.D.).

62. Vidyānanda, mentioned by the Hindu philosopher Mādhavācārya,6 was a Digambara logician of Pāṭalīputra. He was the author of the Āpṭa-mīmāmsālankṛṭi, otherwise called Aṣṭasāhasrī, an exhaustive sub-commentary on the Āpṭa-

# भवलक्कोऽकलक्कः च कलौ कलयतु व्यतम्। पारेन ताङ्गा येन नायारेनी घटक्किता॥

(Pāṇḍavapurāṇa, noticed by Peterson in his 4th Report, p. 157.)

े वाचकसुद्धाविरचितानि सकलमास्त्रचूड़ामणिसूतानि तच्चार्थसुचाणीति यद्येवमकलक्ष्मभ्यंकीच्यादिवत् प्रकरणनेव किं नारभ्यते किमनया सूचकारलाष्टोपुच-विकया।

> (Pramāṇa-mīmāṁsā, by Hemacandra, noticed by Peterson in his 5th Report, p. 148.)

4 Vide K. B. Pathak's article on "Bhartrhari and Kumārila" in the Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XVIII, 1892.

<sup>5</sup> Vide R. G. Bhandarkar's "Early History of the Deccan," 2nd

edition, p. 78.

6 Vide the chapter on the Jaina system in the Sarvadarsana-samgraha translated by Cowell and Gough, p. 56.

l Vide Aşṭasāhasrī-viṣamapada-tātparyaṭīkā by Laghusamanta-bhadra, noticed by Peterson in his 5th Report, p. 217.

mīmāmsā, containing an elaborate exposition of various logical principles. Vidyānanda, in the opening and the closing lines of his Aṣṭaṣāhasrī, makes an indirect reference to Samantabhadra and Akalaṅka respectively, while in chapter X of the work he distinctly says that he followed the Aṣṭaṣatī of Akalaṅka in explaining the Āptamīmāmsā. Another logical treatise called Pramāṇa-parīkṣā is also attributed to him. He was also the author of the S'loka-vārtika and Āpta-parīkṣā.

63. He has, in his Astasāhasrī, criticised the doctrines of the Sāmkhya, Yoga, Vaišesika, Advaita, Mīmāmsaka and Saugata, Tāthāgata or Bauddha philosophy; and has also mentioned Dignāga, Udyotakara, Dharmakīrti,<sup>2</sup> Prajñākara,<sup>3</sup> Bhartrhari,<sup>4</sup> S'abarasvāmi, Prabhākara and Kumārila. Vidyānanda was

1 The opening lines of the Aşta-sāhasrī are:-

# त्रीवर्षमानमभिवन्दा समन्तभइसुद्भूतवोधमस्त्रिमानमनिन्द्यवाचम् । मास्रावताररचितस्त्रतिगोचराप्तमोमांसितं क्रतिरसंक्रियते नयास्य ॥१॥

The closing lines of the Astasahasri are:-

# त्रीमदक्तज्ञामस्थरकुल विद्यानन्दस्थावा भूयात्। गदमोमांसालंकांतरदसालकी सतासत्ती॥

The lines in Chapter X referred to run thus:-

# श्रीमद्कलक्कविष्टतां समनाभद्गोक्किमन संचेपात्। परमागमार्थविषयामद्यसादकों प्रकाशयति॥

(Aşṭasāhasrī, MSS., Asiatic Society of Bengal.)

<sup>2</sup> यद्रक्तं भर्मकी तिनाः —

श्वतदूप पराष्टत वस्तुमान प्रवेदनात् । सामान्यविषयम्बोक्तं सिङ्गकेदाप्रतिष्ठिवेः ।

(Quoted in Astasāhasrī, chap. I.)

चर्चीपयोगेऽपि पुनः सार्त्तं सब्दानुयोजनम्। चचथीयैद्यपेचेत सोऽधी स्ववस्ति। भवेत्।

(Quoted in Astasāhasrī, chap. I.)

प्रज्ञाकरस्रेदं वचः :-

क्रमप्रतीवेरेवं स्थात् प्रथमश्यावना गतिः। तस्यामर्थ्यात् पुनः पञ्चाद् यतः कर्ता प्रतीयवे॥

(Quoted in Astasāhasrī, chap. I.)

न सेाऽस्ति प्रत्यया कीके यः मञ्दान्गमाहते । चनविवसिवाभाति सर्वे मञ्दे प्रतिष्ठितम् ॥

(This verse of Vākyapadīya by Bhartrhari is quoted in the Astasāhasrī, vide J.B.B.R.A.S. for 1892, p. 221.)

otherwise named Pātra Kesari or Pātra Kesari Svāmi who has been praised by Jina Sena in the Adi Purana 1 composed about Saka 760 or A.D. 838. He is believed to have lived early in the 9th century A.D. 3 at Pātaliputra.4

#### MANIKYA NANDI (ABOUT 800 A.D.).

- 64. Māņikya Nandi was a Digambara author, whose Parīkṣāmukha-śāstra b or Parīkṣā-mukha-sūtra is a standard work on the Jaina logic. As his work is based on that of Akalanka, he must have lived after 750 A.D. The earliest commentary on the Parikṣā-mukha-śāstra is the Prameya-kamala-martanda of Prabhācandra. Vidyānanda, Mānikya Nandi and Prabhā-candra have been pronounced to be contemporaries.7 So Manikya Nandi seems to have lived about 800 A.D.
- 65. The Parīkṣā-mukha-sūtra is divided into six chapters thus: (1) the characteristic of valid knowledge (Pramanasvarūpa); (2) direct apprehension or perception (Pratyaksa); (3) indirect apprehension (Paroksa); (4) the object of valid knowledge (Visaya): (5) the result of valid knowledge (Phala); (6) the semblances or fallacies  $(\bar{A}bh\bar{a}sa)$ .

## । अङ्काकलंक श्रीपाल पाचकेसरियां गयाः। विद्वां इद्याद्धा चारायकेश्तिमिक्साः ॥ ५३॥

(Ādīpurāṇa, quoted by Mr. K. B. Pathak, J.B.B.R.A.S., for 1892, p. 222.)

Mr. Pathak has quoted Samyaktvaprakāśa to show that Vidyānanda and Patrakesari were identical:-

#### तथा स्रोकवार्त्तिके विद्यानन्द्यपरनाम पायके सरिखामिना यदन्नं तथ लिखावे तकार्ये दहानं सम्यगदर्शनम्।

(J.B.B.R.A.S., for 1892, pp. 222, 223.)

2-3 Vide K. B. Pathak's article on Bhartrahari and Kumārila in J.B.B.R.A.S., for 1892, pp. 227, 229.

4 Vide Brahma-nemidatta's Kathākosa, life of Pātrakesari alias Vidyānanda.

<sup>5</sup> A manuscript of the Parikṣāmukha-śāstra was kindly lent to me by Mr. Jain Vaidya of Jaipur (Rajputana), and subsequently another manuscript of the work was procured from the Deccan College, Poona.

\* 6 Peterson in his 4th Report, p. 155, notices Parikṣāmukham saṭīkam. The Tikā is the Primeya-ratna-mālā or Parīkṣāmukhapañjikā of Anantavirya, which open thus:

#### अबलक्ष्यचो आधेषद्धे येन भीमता। न्यायविद्यास्तं तसी नमी माणिकानन्दिने ॥ २॥

7 Vide K. B. Pathak's article on Bhartrhari and Kumārila in J.B.B. R.A.S., for 1892, pp. 219, 220, 221. Mr. Pathak says that Manikya Nandi has mentioned Vidyananda, but in the text of the Pariksa-mukha-sastra itself I have not come across any such mention.

Valid knowledge. Which ascertains the nature of what was uncertain to one's self. It generally arises in the form: "I know the jar by myself," which consists of a subject, an object, an act, and an instrument. Just as a lamp illumines itself as well as the surrounding objects, so the Pramāna sets forth the knower as well as the thing known.

67. Pramāna is of two kinds: (1) direct knowledge (Pratuaksa) which arises through the senses, etc., and (2) indirect knowledge (Paroksa) consisting of recollection (Smrti), recognition (Prat $yabhij\tilde{n}\bar{a}na$ ), argumentation (Tarka or Uha), inference (Anu $m\bar{a}na$ ), and the scripture ( $\bar{A}gama$ ). Recollection is a knowledge of the form "that" which arises through Kinds of valid knowledge. the awaking of impressions, thus: "that Devadatta." Recognition is a knowledge which arises from perception through recollection in the forms, "this is that," "this is like that," "this is different from that," "this is the counterpart of that," etc., thus: "this is that Devadatta," "the bos gavaeus is like the cow," "the buffalo is different from the cow," "this is far from that," "this is a tree," etc. Argumentation is a knowledge of the connection between the middle term and the major term based on the presence or absence of the latter, in the form, "if this is, that is, if this is not, that is not," thus smoke arises only if there is fire, but it cannot arise if there is no fire. Inference is the knowledge of the major term arising through the middle term: there is fire here because there is smoke.

68. Pervasion 2 or inseparable connection ( $Vy\bar{a}pti$  or  $Avin\bar{a}$ Terms of a Syllogism. bh $\bar{a}va$ ) is the universal attendance of the middle term by the major term in simultaneity or succession: thus fire and smoke may abide simultaneously or the latter may follow the former.

If the middle term and the major term exist simultaneously, the former is called *vyāpya*, pervaded or contained, and the

latter vyāpaka, pervader or container.

But if the middle term follows the major term, the former is called effect  $(k\bar{a}rya)$ , and the latter cause  $(k\bar{a}rana \text{ or } hetu)$ , thus fire is the cause of smoke. Ordinarily, however, the major term is called  $s\bar{a}dhya$  or that which is to be proved, and the middle term is called  $s\bar{a}dhana$  or that by which it is to be proved. Sometimes the major term is also called dharma or predicate, and the middle term linga, mark or sign.

The minor term is called *Pakṣa*, the place or locus in which the major term abides, or *Dharmin*, the subject, thus: "this

¹ साधनात् साध्यविज्ञानसन्सानस् ॥ €॥ (Parīkṣā-mukha-sūtra).

<sup>े</sup> सद्ज्ञसभावनियमोऽविनाभावः ॥ ११ ॥ (Pariksä-mukha-sütra).

place is fiery"; "sound is mutable": here "this place" and "sound" are the minor terms. Some philosophers, who divide the middle term (reason) into three phases, dispense with the minor term in an inference.

The middle term (*Hetu*) is defined as that which is inseparably connected with the major term, or in other words, which cannot come into existence unless the major term exists. For instance, smoke could not come into existence unless the fire existed.

- 69. The middle term or reason (Hetu) is divided as (1) per-Different phases of the middle term. ceptible (upalabdhi), and (2) imperceptible (anupalabdhi). Each of these again may occur in the form of an affirmation (Vidhi) or negation (pratisedha).
- 70. The perceptible reason in the affirmative form admits of six subdivisions according as it is:—
  - (i) the pervaded  $(vy\bar{a}pya)$ —sound is mutable because it is factitious;
  - (ii) an effect  $(k\bar{a}rya)$ —this man has got intellect because there are (intellectual) functions in him;
  - (iii) a cause (kāraṇa)—there is a shadow here because there is an umbrella;
  - (iv) prior (pūrva)—the Rohiņī stars will rise for the Kṛttikās have risen.
  - (v) posterior (uttara)—the Bharaṇī stars certainly rose for the Kṛttikās have risen;
  - (vi) simultaneous (sahacara)—the man had a mother for he had a father; or this mango has a particular colour because it has a particular flavour.
- 71. The perceptible reason in the negative form admits of six subdivisions as follows:—
  - (i) the pervaded  $(vy\bar{a}pya)$ —there is no cold sensation because of heat;
  - (ii) an effect (kārya)—there is no cold sensation because of smoke;
  - (iii) a cause (kāraṇa)—there is no happiness in this man because of the shaft in his heart;
  - (iv) prior (pūrva)—the Rohini stars will not rise at once for the Revati [only] has risen.
  - (v) posterior (uttara)—the Bharaṇi did not rise a moment ago for the Puṣyā has risen.
  - (vi) simultaneous (sahacara)—there is no doubt of the existence of the other side of this wall for this side of it is perceived.

- 72. The imperceptible reason in the negative form admits of seven subdivisions as follows:—
  - (i) identity  $(svabh\bar{a}va)$ —there is no jar here because it is imperceptible;
  - (ii) the pervaded (vyāpya)—there is no Simsapā here because there is no tree at all;
  - (iii) an effect  $(k\bar{a}rya)$ —there is no smouldering fire here because there is no smoke;
  - (iv) a cause  $(k\bar{a}rana)$ —there is no smoke here because there is no fire;
  - (v) prior (pūrva)—the Rohiņī stars will not rise in a moment for the Kṛttikās are not perceptible;
  - (vi) posterior (uttara)—the Bharaṇi did not rise a moment ago for the Kṛttikās are not perceptible;
  - (vii) simultaneous (sahacara)—in this even balance there is no bending upwards because it is not perceptible.
- 73. The *imperceptible* reason in the affirmative form admits of three subdivisions thus:—
  - (i) an effect  $(k\bar{a}rya)$ —in this man there is some disease because there is no healthy movement in him;
  - (ii) a cause (kāraṇa)—this man is sorrowful because he has no union with his beloved ones;
  - (iii) identity (svabhāva)—there is uncertainty here because certainty is not discernible;
- 73. The middle term and the major term are the parts of an inference, but the example (udāharaṇa) is not. Nevertheless for the sake of explaining matters to men of small intellect, the example (udāharaṇa or dṛṣṭānta), nay, even the application (upanaya) and the conclusion (nigamana) are admitted as parts of an inference. The example is of two kinds: (1) the affirmative or homogeneous (anvayi or sādharmya) which shows the middle term as covered by the major term, such as: wherever there is smoke, there is fire, as in a kitchen; and (2) the negative or heterogeneous (vyatireki or vaidharmya) by which the absence of the middle term is indicated by the absence of the major term, e.g., wherever, there is no fire, there is no smoke, as in a lake.
  - 74. Inference is of two kinds, viz., (1) inference for one's own self (svārthānumāna), and (2) inference for the sake of others (parārthānumāna).
- An instance of the latter kind of inference is given below:—
  - (1) Sound (minor term) is mutable (major term)—proposition;
  - (2) because it is factitious (reason or middle term);

- (3) whatever is factitious is mutable, as a jar (affirmative or homogeneous example);
- (4) sound is factitious (application);
- (5) therefore sound is mutable (conclusion).

#### Or

- (3) whatever is not mutable is not factitious, as the milk of a barren woman's breast (negative or heterogeneous example);
- (4) but sound is factitious (application);
- (5) therefore sound is mutable (conclusion).
- 75. Testimony (\$\overline{A}gama\$) is a knowledge of objects derived from the words of reliable persons or scripture in virtue of their natural fitness or suggestiveness—e.g., the north pole exists.
- 76. Objects of valid knowledge are either general (sāmānya) or Objects of valid knowledge.

  Particular (višēsa). The general is of two kinds: (1) homogeneous (tiryak), including many individuals of like nature as, the "cow" is a general notion which signifies many individual cows as Sabalā, Khamba, Mumbha, etc.; and (2) heterogeneous (ūrddhvatā), including many individuals of dissimilar nature, as, "gold" is a general notion comprising a bracelet, necklace, ear-ring, etc. The particular is also of two kinds: (1) relating to things (vyatireka), e.g., cow, buffalo, elephant, dog, are four particular things distinguished from one another; and (2) relating to action such as pleasure, pain, etc., experienced by the soul.
- 77. The result or consequence of valid knowledge is the cessa-Result of valid knowtion of ignorance enabling one to choose the desirable and reject the undesirable.
- 78. Fallacy or semblance consists of the knowledge of that Various kinds of Falla- which is different from the real thing. cies.

  It is of many kinds, such as the fallacy—
  - (1) of perception (pratyakṣābhāsa), e.g.—to mistake a post for a man;
  - (2) of recollection (smaranābhāsa)—in trying to recollect Jinadatta to say: "O, that Devadatta";
  - (3) of recognition (pratyabhijñānābhāsa)—on seeing a greyhound to say: "this is a tiger";
  - (4) of argumentation (tarkābhāsa)—" whoever is his son must be black";
  - (5) of the minor term (pakṣābhāsa) —" sound is impermanent": This is a fallacy of the minor term according to the Mimāmsakas, for they do not attribute

impermanency to sound; or fire is not hot because it is a substance as water;

- (6) of the middle term or reason (hetvābhāsa)—sound is eternal because it is factitious;
- (7) of example (drstāntābhāsa)—sound is eternal because it is corporeal, like a jar;
- (8) of verbal testimony (āgamābhāsa)—"there is a heap of sweetmeats on the side of the river, run you boys"; "there are a hundred elephants on his finger"; "the Jainas are allowed to eat in the night" [as a fact they are not so allowed according to their scripture].
- 79. Māṇikya Nandi in the Parīkṣāmukha-sūtra (chapter vi, aph. References to contemporaneous systems of philosophy.

  Saugata, Sāmkhya, Yoga, Prābhākara, Jaiminīya, etc. In the 3rd chapter of the work he has alluded to—"a certain philosopher who maintaining three phases of the reason or middle term (hetu) dispenses with the minor term (pakṣa)."
- 80. He concludes his work by referring to it as a mirror through which a man can see what is to be accepted and what rejected.<sup>2</sup>

#### PRABHA CANDRA (ABOUT 825 A.D.).

81. Prabhā Candra styled a Kavi, a member of the Digambara sect, was the author of the famous logical treatise called the Prameya-kamala-mārtaṇḍa, the earliest commentary on the Parikṣāmukha-sūtra of Māṇikya Nandi. He was also the author of the Nyāya-kumuda-candrodaya (or briefly Candrodaya), a commentary on the Laghiyastraya of Akalanka. He has in his Prameya-kamala-mārtanda mentioned Bhagavān Upavarsa,

<sup>1</sup> साध्याविमाभाविलेन निचितो चेतुः॥ १०॥ को वा विधा चेतुमुक्का समर्थयमानो न पचयति॥ ३१॥

(Parīkṣāmukha-sūtra, MSS. lent to me by Mr. Jain Vaidya of Jaipur).

परीकानुष्यमाद्ये चेथोपादेयतस्ययेः। संबद्धे माहक्रो वास्तः परीचाद्चवद् बधान्॥

> (Parīkṣāmukha-sūtra, chap. VI, MSS. lent to me by Mr. Jain Vaidya of Jaipur).

S'abarasvāmi, Bhartrhari, Bāṇa,¹ Kumārila,² Prabhākara, Dignāga, Udyotakara Dharmakirti, Vidyānanda and others. He himself has been mentioned by Jina Sena in the Ādi Purāṇa ³ composed about S'aka 760 or A.D. 838. Prabhā Candra, as a contemporary of Maṇikya Nandi and Vidyānanda, is believed to have lived in the first half of the 9th century A.D.

#### MALLAVADIN (ABOUT 827 A.D.).

82. He belonged to the Svetāmbara sect and was the famous author of a commentary on the Buddhist logical treatise Nyāyabinduṭīkā called Dharmottara-ṭippanaka. According to a Jaina legend,\* Malla was the son of King Silāditya's sister. He was called vādin or logician, because, having vanquished the Buddhists in a dispute, he re-established the Jaina faith and brought to its former glory the great figure of Ādinātha on Mount Satruūjaya (in Kathiwar).

83. A palm-leaf manuscript 6 of the Dharmottara-tippanaka

 $^1$  Prabhā Candra has quoted the following verse from Bāṇa's Kādambarī:—

रकोकुषे जन्मनि पत्त्वहत्त्वये स्थितौ प्रकानां प्रखये तसःस्पृष्टे । स्वजाय सर्गस्थिति-नाम-देतवे नयीसयाय निग्नसामने नसः॥

(Prameya-kamala-mārtaṇḍa, Deccan College, MSS., p. 21a, quoted by Mr. K. B. Pathak in J.B.B.R.A.S., for 1892, p. 221.)

<sup>2</sup> Prabhā Candra refers to Kumārila otherwise called Bhatta thus:—

तथा चर्चापत्तिरीय प्रमाचान्तरं तक्षचणं चार्चीपत्तिरीय दशः श्रुतो वा चर्चीऽन्यथा नैगपपद्यते द्रत्यस्त्वार्थकष्पना, कुमारिकीऽपि स्तदेव भाष्यकारवधी वाचर्छ।

(Prameya-kamala-mārtanda, quoted by Mr. K. B. Pathak in the J.B. B.R.A.S., for 1892, p. 227).

3 In the Adi Purana Prabha Candra is thus mentioned:—

#### चन्द्रां ग्राज्यस्य सर्वे प्रभाचन्द्रं कियं खुरे। ज्ञला चन्द्रोद्यं येन सस्दाक्कादिनं जगत्॥ ४०॥

(Quoted by Mr. K. B. Pathak in J.B.B.R.A.S., for 1892, p. 222.)

On p. 227 of the same journal the date of the Adipurana is fixed at Saka 760 or 838 A.D.

- 4 Peterson 4, pp. 3-4, in which is mentioned the legend from the Prabandhacintāmaņi (Rāmacandra's edition, Bombay, p. 273).
- ं इति अमोत्तरिक्यनके श्रीमश्चवाद्याचार्यक्कते व्यतीयः परिच्येदः समाप्तः सङ्गसं सद्यश्रीः॥

is preserved at Anhilwad Patan and is said to be dated Samvat 1231 or 1174 A.D. According to the Prabhāvaka-caritra <sup>1</sup> Mallavādin was also the author of a Padmacaritra and lived in Vīra Samvat 884 or 357 A.D. But this is impossible as Dharmottara (q.v.), on whose Nyāyabinduṭīkā Mallavādin wrote Tippanaka, lived about 837 A.D. On the other hand Mallavādin is mentioned <sup>2</sup> by Hem Candra Sūri who lived during 1088—1172 A.D. It seems therefore probable that the year 884 in which Mallavādin lived does not refer to Vīra Samvat, but to Vikrama Samvat. On that supposition Mallavādin lived in 827 A.D. and was a contemporary of Dharmottara.

#### PRADYUMNA SÜRI (ABOUT 980 A.D.).

84. He <sup>3</sup> belonged to the Rājagaccha of the Svetāmbara sect. In Māṇikyacandra's Pārśvanātha-caritra, <sup>4</sup> his prowess in logical discussions is referred to in the following terms:—

"There was born the preceptor Pradyumna Sūri—the first healer of disease of the world—who entirely removed all corruptions from the body of men (or detected all defects in disputation committed by men) and who, using sharp logical expressions, made his irrelevant opponents to sweat and thereby to be cured of the fever of pride."

# संवत् १२३१ वर्षे भाइपद ग्रादि १२ रवी खदोड जंनाविखगाम वास्तय य० दाड्डुत्तयः चाडहेन वक्षीयं भग्नीतर-ठिप्पनकं लिखापितम्॥

(Noticed in Peterson 5, App. p. 3.)

1 Vide Klatt, Vienna Oriental Journal, Vol. IV, p. 67.

# <sup>2</sup> चनु मसवादिनं तार्किकाः। तस्त्रादन्ये चीना दत्यर्थः॥

(Siddha Hema Sabdānusāsana Brhat Ļīkā, 2-2-39).

- <sup>3</sup> For further particulars about Pradyumna Sūri see Peterson's 4th Report, p. lxxix.
  - पंशां विषयं विकारमिख्यं निर्मुख्यम् एवं-सावादः समभूद् भवामयभिषक् प्रदासक्किर्गृदः। येन खेदयता प्रयुच्य तरकां तर्नीक्चकां भारतीं वादीन्ताः प्रविकापिनो घनतरं द्येच्चरं त्याजिताः ॥ ४॥ दिगम्बरसमाजान्तवेद्वपद्यं समाददे। यः प्रत्येचं नरेन्द्रस्य जगतस्यद्यसः पुनः॥ ५॥ नौरागतानिधौ राजगच्यस्यूष्यवारिधिः। स्वरिः प्रशुक्तस्यांक्यः पूर्वं वः पूर्वेजोऽभवत्॥ २०॥

85. In the same work reference is made to his victory over the Digambaras of Venkapatta in the presence of the king of that province. He delighted the kings of various countries by no fewer than eighty-four triumphs in discussion. He was eleventh in ascent from Māṇikyacandra Sūri, who wrote his Pārśvanátha-caritra in Samvat 1276 or 1219 A.D. Pradyumna must have flourished about 980 A.D., for he was the preceptor of Abhayadeva Sūri (q.v.) who lived a little before 1039 A.D.

#### ABHAYADEVA SÜRI (ABOUT 1000 A.D.).

86. Abhayadeva Sūri belonged to the S'vetāmbara sect¹ and was the pupil and successor of Pradyumna Sūri of the Rājagaccha. He was an eminent logician and author of Vādamahārṇava, a treatise on logic called the Ocean of Discussions, and of a commentary on the Sammati-tarka-sūtra called Tattvārthabodha-vidhāyinī.² "He is described as a lion that roamed at ease in the wild forest of books on logic. That the rivers of various conflicting opinions might not sweep away the path of

सपादस्रकामेपास्रिभुवनमिर्यादिदेशमोपासान्। ययुषतुरिधकामौत्या वादजयैरंजयामास ॥ १८ ॥ त्रीष्मभयदेवस्तरस्रिक्षस्रस्त्रम् । भग्नासनास्त्रितस्त्राह्मीर्यदास्त्रममित्रयत्॥ १८ ॥

(Parsvanatha-caritra as noticed by Peterson in his 3rd Report, pp. 57-164.)

तर्कप्रस्विचारदुर्गमवनीसद्यारपञ्चाननस्वत्यदेश्यदेवस्तरिजनि सेनाम्बरपामणीः ।
सद्यास्त्रप्रतिस्वास्तरो निस्ताम्बरपामणीः ।
सद्यास्त्रप्रतिस्वास्तरो निस्ताम्बरपामणीः ।
द्वानिकागः सत्ययभेदमेनाः
भुवं वरिद्यानि जद्दैः समेनाः ।
द्वीव रोधाय चकार नासं
पत्र्यं नवं वादमदार्णयं यः ॥ ०॥
विद्याद्यस्वीस्तिमस्त्रनम्बिः प्रेड्सन्पोऽदर्भविविद्याद्यस्वीस्तिमस्त्रनम्बिः प्रेड्सन्पोऽदर्भविविद्याद्यस्वीस्त्रप्रस्वानम्बिः प्रेड्सन्पोऽदर्भविविद्याद्यस्वीद्यस्त्रस्वानम्बिः प्रदर्भविन्
विद्याद्यस्त्रस्वान् स्विज्ञस्वीक्ष्याः पुरा प्रविद्यान् ।
वादे वादिवरान् विज्ञस्य विज्ञयक्षीसंप्रदं स्वसान् ॥ ८॥

(Pārśvanātha-caritra by Māṇikyacandra noticed by Peterson in his 3rd Report, pp. 158-59.)

<sup>\$</sup> See R. Mitra's Catalogue, X, pp. 39-40.

the good, Abhayadeva <sup>1</sup> wrote his Vāda-mahārṇava." He was succeeded by Jīneśvara Sūri, a contemporary of King Muñja. <sup>2</sup> He was the ninth predecessor of Siddhasena Sūri, who wrote Pravacana sāroddhāra-vṛtti in Samvat 1242 or 1185 A.D. It was probably this Abhayadeva Sūri, who was "world-renowned" and a teacher of Sānti Sūri <sup>3</sup> who died in Samvat 1096 or 1039 A.D.

#### LAGHUSAMANTABHADRA (ABOUT 1000 A.D.).

87. He wrote a commentary on the Astasāhasrī of Vidyā nanda called the Astasāhasrī-viṣamapada-tātparya-tīkā and seems to have belonged to the Digambara sect and lived about 1000 A.D.

#### Ananta-vīrya (about 1039 A.D.).

88. Ananta-virya was the Digambara author of a commentary on the Parikṣā-mukha of Māṇikya Nandi called Parikṣā-mukha-pañjikā or Prameya-ratnamālā, as also a commentary on Akalaṅka's Nyāya-viniścaya- called the Nyāya-viniścaya-vṛtti. He wrote the former for Santi-ṣena at the request of Hirapa, son of Vijaya and Nāṇambā. Now Sāntiṣena, supposed to be identical with Sānti Sūri, died in Samvat 1096 or A.D. 1039. His contemporary Ananta-virya must, therefore, have flourished

1 For particulars about Abhayadeva Süri see Peterson's 4th Report, p. iii.

<sup>2</sup> Weber's Die Handschriften-verzeichnisse, etc., p. 851. vv. 1, 2, and pp. 121, vv. 4-5. Jineśvara Sūri was probably a spiritual brother of Dhaneśvara Sūri.

उथसम्ब्रुषरामने गुणनिधः श्रीसवेदैवाक्रयः स्ट्रीमोऽभयदेव स्ट्रिटिश्वतस्त्रातप्रमाणेऽपि च। तस्त्रयं सुगुबदयादिधमत (?) दल्पात्मविद्यागुण (?) प्रत्यास्त्राय चिरं भृवि प्रचरत् श्रीमान्तस्यः स्तरिः॥

(Uttarādhyayana brhadvitti by Sāntyācarya noticed by Dr. R. G. Bhandarkar in his Report on Sanskrit McS. for 1883-84, p. 44.) § See also Weber's Die Handschriften-verzeichnisse der Königlichen Bibliothek zu Berlin, p. 827.

4 Vide Peterson's Sixth Report, p. xxiii.

<sup>5</sup> The Aştasāhasri-vişama-pada-tātparya-tikā has been noticed in Peterson's Fifth Report, pp. 216-219. where we read:

देवं खामिनममनं विद्यानन्दं प्रणम्य निजभक्त्या । विष्टणोम्पष्टपादचोविषमपदं न्रघुसमन्तभद्रोऽदम् ॥

वैनेयप्रियपुचस्य चौरपस्योपरोधतः। स्वान्तवेषार्थमार्था परौचामुखपञ्चिता॥ ६॥

(Parīkṣā-mukham saṭīkam, noticed in Peterson's Fourth Report, p. 155.)

about that time. Ananta-vīrya must have lived before the 14th century, for he is mentioned by Mādhavācārya in the chapter on Jaina darśana in the Sarvadarśana-samgraha.

#### DEVA SÜRI (1086-1169 A.D.).

- 89. Deva Sūri, called Vādipravara or the foremost of disputants, belonged to the S'vetāmbara sect and was a pupil of Municandra Sūri. He was the author of the well-known treatise on logic called Pramāṇa-naya-tattvālokālaṅkāra on which he himself wrote an elaborate commentary named Syādvādaratnākara. He totally vanquished the Digambara Kumudacandrācārya in a dispute over the salvation of women [at the court of Jaya-simha-deva at Anahillapurapattana in N. Guzerat] and thereby practically stopped the entrance of the Digambaras into that town. The dispute 3 took place in Samvat 1181 or 1124 A.D.
- 90. Ratnaprabha Sūri, a pupil of Deva Sūri, in his Upadeśamālā-tīkā, composed in Samvat 1238 or A.D. 1181, writes:—
- "Lord S'rī Deva Sūri, who was the crest-gem of the pupils of the esteemed Municandra Sūri and succeeded him in his paṭṭa (sacred chair), conquered the Digambaras in the council-room of
- 1 Vide the Indian Antiquary, Vol. XI, p. 253; and Dr. R. G. Bhandarkar's Report on Sanskrit MSS. during 1883-84, p. 129.
  - श्राद्वादरवाकर द्रायस्ति प्रन्यो मचनमः। वादिष्टन्दारकत्रोमदुदेवस्त्ररिविनिर्मतः॥ ४॥

Malladhāri Rājaśekhara Sūri's Pañjikā on Syādvāda-ratnākarāvatāi k.

# <sup>8</sup> चन्द्राष्ट्रियववर्षेऽन वैशाखे पूर्णिमादिने। चाक्रतो वादिशाखायां तो वादिशतिवादिनो॥

(Prabhāvakacar., XXI, v. 95, quoted by Dr. Klatt in his article on "Historical Records of the Jains" in the Indian Antiquary, Vol. XI, Sept. 1882, p. 254.)

4 Ratnaprabha Sūri observes :--

शिष्यः श्रीमिषश्रस्तरिगविभागे तार्थेषू झामणिः पहे से विनिवेशितस्वदन् स श्रीदेवस्तरित्रमुः । बाच्याने जयसिंददेवन्यपतेर्थेनास्वदिग्नासमा स्नीनिर्वाणसमर्थेनेन विजयसम्मः समुक्तिकाः ॥ तत्त्वहुप्रभवी भवद्वथ गुण्यामाभिरामोदयाः श्रीभद्रेस्टरस्तरयः ग्राचिधियस्वन्नानस्त्रीतये । श्रीरसप्रभस्तरिभः ग्राभक्षते श्रीदेवस्तरिप्रभोः श्रिष्टे वेयमकारि समादक्वते दृष्तिविशेषार्थिनाम् ॥

(Upadeśamālāṭīkā noticed by Peterson in his 3rd Report, p. 167.)

King Jaya-simha-deva and raised a pillar of victory by maintaining the nirvana or salvation of women [that is, holding that

even women are capable of attaining nirvanal."

91. In Samvat 1204 or 1147 A.D. Deva Sūri founded a caitya, raised a bimba at Phalavardhigrāma, and established an image of Neminātha at Arāsana. He was born in Samvat 1143 or 1086 A.D., attained the rank of Sūri in 1174 Samvat or 1117 A.D., and ascended to heaven in Samvat 1226 or 1169 A.D.<sup>2</sup>

92. The Pramāṇa-naya-tattvālokālankāra 3 consists of eight

chapters (paricchedas), viz.—

Subjects of the Pramāṇanaya-tattvālokālaṅkāra. (1) Determination of the nature of valid knowledge (pramāṇa-svarūpa-nirnaya); (2) determination of the

Munisundara Sūri in his Gurvāvalī composed in Samvat 1466 gives a similar account:—

येगादितस्तुरशीत सुगदिसीसास्थासम्ब्यायसामद्केलिशाली।
वादास्वे कुमुद्धम्ब्रद्गिम्बरेन्द्रः
श्रीसिद्धम्मिपतिसंसदि पत्तनेऽस्मिन्॥ ०४॥
स्थादादरमाकरतकंवेधा
सुदे स केषां निह्न देवस्त्रदिः।
यतस्तुविश्तिस्द्रिर्णाखं
यस्येव नामा विदितं वसूव॥ ०५॥
वेदमुनीश्रमितेऽस्दे
देवगुर्वजंगदनुत्तरोऽभ्युद्तिः।
श्रीमुनिचन्द्रगुरोरिति
श्रिष्धा वस्वोऽभवन् विदिताः॥ ०६॥

(Gurvāvalī published in the Jaina Yaśovijaya-granthamālā of Benares, pp. 18-19.)

1 Vide Peterson's 4th Report, p. lv.; also Klatt, Ind. Ant. XI. p. 254.

शिखिवेदिशिवे जमा दीचा युगागरेखरे। वेदाखगंकरे वर्षे स्तरित्वमभवत् प्रभोः॥ रस्युगारवी वर्षे शावणे मासि संगते। छत्रापचस्य सप्तम्यामपराक्रे गुरोर्दिने॥ मच्चेजोकस्थितं जोकं प्रतिबोध्य पुरन्दर-बोधकां दव ते जमादिंवं श्रीदेवस्तर्यः॥

(Prabhāvakacar., XXI, vv. 287 seq., quoted by Dr. Klatt in his article on "Historical Records of the Jains" in the Indian Antiquary, Sept. 1882, Vol. XI, p. 254.) According to some authorities Deva Sūri was born in Samvat 1134 or 1077 A.D.

3 The Pramāna-nayatattvālokālankāra has been printed and published

in Benares in the Jaina Yaśovijaya series.

nature of perception (pratyakṣa-svarūpa-nirṇaya); (3) determination of the nature of recollection, recognition, argumentation and inference (smaraṇa-pratyabhijňāna-tarkānumāna-svarūpa-nirṇaya); (4) determination of the nature of valid knowledge derived from verbal testimony or scripture (āgamākhya-pramāṇa-svarūpa-nirṇaya); (5) determination of the nature of objects of knowledge (viṣaya-svarūpa-nirṇaya); (6) determination of the consequences and semblances or fallacies of knowledge (phala-pramāṇa-svarūpādyābhāsa-nirṇaya); (7) determination of the nature of one-sided knowledge (nayātma-svarūpa-nirṇaya); and (8) determination of the right procedure of a disputant and his opponent (vādi-prativādi-nyāya-nirṇaya).

Ās this work is written on the same plan as Māṇikya Nandi's Parīkṣāmukha-sūtra or Akalaṅka's Nyāya-viniscaya as well as Siddhasena Divākara's Nyāyāvatāra, I shall pass over the

common points, mentioning only the special features.

93. Pramāna or valid knowledge is defined here as the knowledge which ascertains the nature of itself Valid knowledge. and all other things. The intercourse between the sense-organs and the objects of sense is not pramāna (valid knowledge), for though it can ascertain the nature of objects outside itself, it cannot ascertain its own nature, since it has no consciousness. Pramāna must certainly be knowledge, for it is capable of choosing what is desirable and rejecting what is undesirable. It must also be definite in character for it is opposed to superimposition ( $sam\bar{a}ropa$ ). Superimposition is of three kinds: (1) inversion (viparyaya)—such as to look upon a pearl-oyster as a piece of silver; (2) doubt (samsaya)—such as: is this a post or a man? and (3) uncertainty (anadhyavasāya) consisting in a mere cogitation in the mind as to what the thing might be.

94. Pramāṇa (valid knowledge) is of two kinds: (1) direct (pratyakṣa) perception, and (2) indirect (parokṣa). The direct knowledge or perception is of two kinds: practical (sāmvyavahārika) and transcendental (pāramārthika). The practical direct knowledge again is subdivided as that which arises through the sense-organs (indriya-nibandhana) and that which does not arise through the sense-organs (anindriya-nibandhana) but through the mind (manas). Each of these passes through four stages, viz.: (1) avagraha, distinguishing the type whether it be, e.g., horse or man, but not discerning the characteristics;

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> The explanation of avagraha, etc., as given here is taken from Col. Jarrett's translation of the Ain-i-Akbari, published by the Asiatic Society of Bengal, vol. III, p. 190, as the portion related to pramāna in the Jaina

(2) iha, inquiring, e.g., whence came the man and from what country came the horse; (3) avaya, arriving at a correct identification of the above, and (4) dharana, recollecting the thing

particularised and keeping it in mind.

The transcendental direct knowledge ( $p\bar{a}ram\bar{a}rthika$ ) is that which comes exclusively from the illumination of the soul and is profitable to emancipation. It is two-fold: (1) vikala (defective) including  $avadhi-j\bar{n}\bar{a}na$  (limited knowledge), i.e., knowledge of special objects which, near or remote, are not differentiated, and  $manah-pary\bar{a}ya$ , i.e., definite knowledge of another's thoughts and the laying bare of the secrets of the heart; and (2) sakala, i.e., perfect, which is the unobstructed intuition of the entire aspects of a thing. One who possesses that perfect transcendental knowledge is called an arhat, i.e., one freed from all faults or obstructions.

95. Indirect knowledge (parokṣa) is of five kinds: viz., (1)

Indirect knowledge. recollection (smaraṇa); (2) recognition (pratyabhijñāna); (3) argumentation (tarka); (4) inference (anumāna); (5) verbal testimony or the knowledge derived from the words of a reliable person or scripture (āgama).

96. Inference is of two kinds: (1)  $sv\bar{a}rtha$ , for one's own self, and (2)  $par\bar{a}rtha$ , for the sake of others. Hetu (reason or the middle term) is defined as that which cannot happen except in connection with the major term. The definition that the hetu (middle term) is that which possesses three characteristics, is to be rejected as involving fallacies. Some maintain the threefold characteristic or division of the hetu (reason or middle term), but do not admit the necessity of using the minor term (paksa) in an

chapter of Ain-i-Akbari very closely resembles that in the *Pramāna-naya-taitvālokālaņkāra*. Dr. R. G. Bhandarkara's explanation of these terms given on p. 93, footnote, of his Report on Sanskrit MSS., for 1883-84, is, however, different.

# निश्चितान्यथानुपपच्चेकलचणे चेतुः न तु विलचणकादिः। नस्य चेलाभासस्यापि पश्चवात्॥ ११॥

(Pramāṇa-naya-tattvālokālaṅ**kārā,** Chap. III.)

This is an attack on Dharmakīrti and other Buddhist logicians who define the three characteristics of hetu as follows:—

# चैक्ष्यं पुनिकंत्रस्य चनुमेथे सच्चमेव । सपज्ञ एव सच्चम् । असपचे चासच्चमेव निश्चितम् ।

(Nyāyabindu, Chapter II.)

inference. Again, according to others, as the connection or absence of connection between the middle and the major terms can be shown by internal inseparable connection (antar-vyāpti), the example forming the external inseparable connection (bahir-vyāpti) is useless. For instance:—

The hill (minor term) is fiery (major term), because it is smoky (middle term) as a kitchen (example).

Here the hill is an integral part of the inference, and in it may be found the necessary connection between fire and smoke. Why then should we burden our inference with an example from without? The kitchen certainly shows the same connection: fire and smoke are found together there: but the kitchen is not an essential part of the inference, and so for the purpose in hand the connection which it proves may be described as the external inseparable connection. We must look to logical neatness, and the economy of mental labour, since the mind is liable to be confused when the unessential is brought across its track.

97. The application (upanaya) and conclusion (nigamana) as parts of the syllogism are also useless, but these together with the example are to be employed to convince men of small intellect.<sup>3</sup>

Parts of a syllogism.

Avayava or parts of a syllogism are stated to be the following:—

1. Pakṣa-prayoga (use of the minor term, otherwise called proposition,  $pratij\tilde{n}\tilde{a}$ )—the hill is fiery.

2. Hetu-prayoga (use of the middle term)—because it is

smoky.

- 3. Drstānta (example)—whatever is fiery is smoky just as a kitchen.
- 4. Upanaya (application)—this hill is smoky.
- 5. Nigamana (conclusion)—therefore this hill is fiery.
- 98. Non-existence  $(abh\bar{a}va$  or anupalabdhi) is subdivided as (1) antecedent  $(pr\bar{a}gabh\bar{a}va)$ ; (2) subsequent  $(pradhva\dot{m}s\bar{a}bh\bar{a}va)$ ; (3) mutual  $(itaretar\bar{a}bh\bar{a}va)$ ; and (4) absolute  $(atyant\bar{a}bh\bar{a}va)$ . Various kinds of  $\bar{a}bh\bar{a}sa$  or fallacy are also enumerated. Under the verbal

# <sup>1</sup> विविधं साधनमभिधारीय तत्समर्थनं विद्धानः कः खलु न पचप्रयोगम् चङ्गीकुरते ॥२३॥

(Pramāṇa-naya-tattvālokālaṅkāra, Chap. III.)

<sup>2</sup> चन्नक्षाप्ता हेतोः साध्यप्रत्यायने सन्नावसन्तो च बहिर्चाप्तेरद्वावनं वर्षस् ॥ २५ ॥

(Pramāna-naya-tattvālokālankāra, Chap. III.)

<sup>3</sup> सन्दमतीं स् युत्पाद्यितुं दृष्टान्तापनयनिगमनान्यपि प्रयोच्यानि ॥ २८ ॥

(Pramāṇa-naya-tattvālokālaṅkāra, Chap. III.) testimony (i.e.,  $\bar{a}gama$ ) as also under the method of one-sided interpretation (naya) there is given an elaborate exposition of the Saptabhanginaya (sevenfold paralogism). The mediate and immediate results of valid knowledge ( $pram\bar{a}na$ ) have been clearly laid down.

- 99. The results of knowledge and the practical use made of them are stated to be not illusory (samvrti), but real  $(p\bar{a}ram\bar{a}r-thika)$ .
- 100. Under naya (the method of comprehending a thing from one particular point of view), the fallacies of it  $(nay\bar{a}bh\bar{a}sa)$  are also enumerated thus:—
  - (1) Naigamābhāsa (the fallacy of the naigama)—e.g., in Eallacies of Naya.

    Fallacies of Naya.

    estimating a soul we make a distinction between its "existence" (generic property) and its "consciousness" (specific property).
  - (2) Samgrahābhāsa (the fallacy of the collective)—occurs when we call a thing real if it possesses the generic property alone, altogether losing sight of its specific properties, as when we say a bamboo is real so far as it is a tree, but it has no specific properties.
  - (3) Vyavahārābhāsa (the fallacy of the practical)—e.g., the Cārvāka philosophy which makes a wrong distinction of substance, quality, etc.
  - (4) Rjusūtrābhāsa (the fallacy of the straight expression)—
    as the Tathāgata philosophy which altogether denies
    the reality of things.
  - (5) Sabdābhāsa (the verbal fallacy)—occurs when we recognise the distinction of times into past, present and future, but go on attaching one and the same meaning to a word in all the three times, e.g., if we now use the word "kratu" (sacrifice) in the sense of "strength" which it signified a thousand years ago.
  - (6) Samabhirūdhābhāsa (the fallacy of the subtle)—occurs when we interpret synonymous words such as Indra, S'akra, Purandara, etc., signifying altogether different things.
  - (7) Evambhūtābhāsa (the fallacy of the such-like)—occurs when a thing is discarded simply because it does not, at the moment, possess the properties implied by the name, e.g., Rāma is not a man (a thinking animal) because he is not at present thinking.
- 101. The soul  $(\bar{a}tm\bar{a})$  which is the doer and enjoyer, and an embodiment of consciousness, is of the same size as its body.

In every person there is a separate soul which, having got rid of the bondage of its karma (act-fruits), attains emancipation.

102. The last chapter expounds the method of debate. Discussion  $(V\bar{a}da)$  consists in assertion Rules of Debate. and counter-assertion for the establishment of a certain proposition by rejecting its opposite. The disputant or the person who opens the discussion may be eager either to gain a victory or to ascertain a truth. The truth may be sought either for one's own self as a disciple seeks it, or for others as a teacher seeks it. The same remarks apply to the opponent or respondent. There are four constituents of a council of discussion, viz., (1) the disputant  $(v\bar{a}d\bar{i})$ ; (2) the opponent (prativadi); (3) the members (sabhya); and (4) the president (sabhāpati). The duty of the disputant and his opponent consists in establishing his own side and opposing the other side by means of proof. The members must be acceptable to both the parties in respect of the skill in grasping their dogmas; they must have a good memory, be very learned, and possess genius, patience and impartiality. Their duties consist in stating the assertions and replies of the disputant and his opponent with reference to the particular subject of discussion, in estimating the merits and demerits of their arguments and counter-arguments, in occasionally interrupting them for setting forth some established conclusions, and in, as far as possible, declaring the result of the discussion. The President must be endowed with wisdom, authority, forbearance and impartiality. duty consists in judging the speeches of the parties and the members, as also in preventing quarrels, etc., among them. the event of the parties being desirous of victory alone, they may continue the discussion with vigour as long as the members wish; but if they are eager to ascertain the truth alone, they may continue the discussion so long as the truth is not ascertained and so long as they retain their vigour.

#### HEMACANDRA SÜRI (1088-1172 A.D.).

103. Hemacandra Sūri! (surnamed Kalikāla-sarvajña), born at Dhandhuka in Ahmedabad, was a pupil of Devacandra of the Vajraśākhā. He was a contemporary of King Jaya Simha and is said to have been the preceptor of Māhārāja Kumāra Pāla of Guzerat about Samvat 1199-1229. He was the author of a large number of works such as Kāvyānuśāsana-vṛtti, Chan-

I For details about Hemacandra, see Büiler's "Ueber das Lebens des Jaina Monches Hemacandra"; Pe'erson'; 4th Report. p. cxli, and p. 82; and also Peterson's lecture on the story of Hema Candra published in the Bombay Gazette, August 29, 1895.

donuśāsanavṛtti, Abhidhāna-cintāmaṇi or Nāmamālā, Anekārtha-samgraha, Dvāśraya-mahā-kāvya, Triṣaṣṭiśalākapuruṣa-caritra (a part of which is called Mahāviracaritra and the appendix called Pariśiṣṭaparva), Yogaśāstra, Nighaṇṭuśeṣa, etc.

104. He was also the author of a most important work on logic called **Pramāṇa-mīmāmsā**,¹ on which he himself wrote a commentary. This work, which is divided into five chapters, is written in the *Sūtra* or aphoristic style, and not in the form of a

prakarana (commentary).

105. He was a spiritual brother of Pradyumna Sūri, was born in Samvat 1145 or 1088 A.D., took the vow (vrata) in 1150 Samvat or 1093 A.D., attained the rank of Sūri in 1166 Samvat or 1109 A.D., and ascended to heaven (died) in 1229 Samvat or 1172 A.D. 3

#### CANDRAPRABHA SÜRI (1102 A.D.).

106. Candraprabha Sāri (born in Guzerat), who founded the Pārņimāgaccha in Samvat 1159 or 1102 A.D., was a pupil of

1 A manuscript of the Pramana-mimans with the commentary by the author himself has been noticed by Peterson in his 5th Report on Sanskrit MSS., pp. 147-148. In explaining why the Pramana-mimans was written in the form of aphorisms, Hemacandra in the first chapter of the commentary says:—

वाचकमुख्यविरचिता। नि सक्त आसास्त्रचूड़ामणिभूतानि तत्त्वार्थस्त्रवाणीति यद्येव-मकस्त्रभर्मकौर्चादिवत् प्रकरणमेव किं नारभ्यते किमनया स्त्रवकारत्वाडोपुद्यविकया मैवं वोचः। भिद्रदिच्छ्यं जनस्ततो नास्य खेच्छाप्रतिवन्धो स्वीककराजकीयं वा सासनमस्त्रोति यत्किद्विदेतत् तत्र वर्णसमूहात्मकैः पञ्चभिरध्यायैः सास्रमेतद्रचयदा-चार्यः। तस्य च प्रेचावत्प्रदृष्टांगमभिधातुमिद्मादिस्त्रवम्। चय प्रमाणमौमांसा चय रत्यस्य चिकारार्थलात्।

(Quoted in Peterson's 5th Report, p. 148.)

श्रीमांसन्द्रकुनेऽभवद्गणनिधः प्रयुक्तस्तरित्रसु-वेश्वयेखा स सिब्बहेमविधये श्रीहेमस्तरिविधः ॥

(Candrasena's commentary on Utpādasiddhiprakaraņa, a manuscript of which is noticed in Peterson's 3rd Report, p. 209.)

अ श्रवेटेस्ट वर्षे का किंके पूर्षिमानिशि । जन्माभवत् प्रभोर्योमवाष्यंभौ वृतं तथा ॥ रसवडीस्ट स्ट्रिपिता समजावत । जन्दद्वयरवी वर्षेऽवसानमभवत् प्रभोः॥

(Prabhāvakacar., XXII, v. 851 seq., quoted by Klatt in Ind. Ant., Vol. XI, Sept. 1882, p. 254.)

<sup>4</sup> For the origin of the Pūrnimāgaccha see Dr. R. G. Bhandarkar's Report, 1883-84, p. 147.

Jayasimha Sūri and preceptor of Dharmaghoşa. He i was the author of Darśanaśuddhi, otherwise called Samyaktva-prakarana, and possibly also of the two logical treatises called the Prameyaratnakoṣa and Nyāyāvatāra-vivṛti.<sup>2</sup> He was a great logician, and in debate appeared as a lion before the opponents who resembled elephants.<sup>3</sup>

107. The Nyāyāvatāra-vivṛti is an excellent commentary on the Nyāyāvatāra of Siddhasena Divākara. In it mention is made of the Buddhist logicians Dharmottara, Arcaṭa and others, and there is also a criticism of the views of Saugata, Naiyāyika, Mīmāmsaka, Vaisesika, Sāmkhya, Cārvāka, Bauddha, Sauddhodani, Kaṇabhakṣa, Akṣapāda, Brahama-vādi, etc.

#### NEMICANDRA KAVI (ABOUT 1150 A.D.).

108. Nemicandra, born in Guzerat, who combatted the views of the Hindu philosopher Kaṇāda, was a great teacher of

1 For Candraprabha Suri see also Peterson's 4th Report, p. xxvii.

2 The manuscript of Nyāyāvatāra-vivṛti, which I consulted, was obtained from Bhavanagar, Bombay, through Munis Dharmavijaya and Indravijaya. In the Nyāyāvatāra-vivṛti itself there is no mention of Candraprabha Sūri. Elsewhere I have seen it stated that it was the work of that author. The authorship must, however, for the present, remain an open question. In the colophon of the Nyāyāvatāra-vivṛti it is stated that it was the work of Siddhasena-Divākara-vyākhyānaka or simply Siddha-vyākhyānaka which was evidently a surname. Munis Dharmavijaya and Indravijaya relying on the line

Fyeria: (quoted from Ratnaprabha Sūri's Upadeśamālā-viśeṣa-vṛtti in Peterson's 3rd Report, p. 168) are inclined to identify Siddha-vyākhyā-naka with Siddharşi who lived in Samvat 962 or 905 A.D. (as is evident from Peterson's 4th Report, p. exxix). There is another commentary on the Nyāyāvatāra by Haribhadra Sūri. For Darśana-śuddhi, vide Peterson 3, App. p. 91; for Prameya-ratna-kośa, vide the Jaināgama List, published in Bombay, p. 77; and for the Nyāyāvatāra-vivṛti vide Peterson 3, p. xvi.

तीर्थं वीरविभोः सुधर्मगणक्ष्यत्वन्तानल्भोज्ञति सारिकोक्यलचन्द्रगच्चजलिधप्रोज्ञामश्रोतद्वृतिः। सारित्यागमतर्वलचणमञ्जावद्यापगासागरः श्रीचन्द्रप्रभद्धरिरद्भतमतिर्वाहीभसिंशोऽभवत्॥१॥

(Dašavaikālikatīkā by Tılakācārya, noticed in Peterson's 5th Report, p. 65.)

+ प्रमाणेत्यादि स्वनेन स तादात्मातदुत्पत्तिस्त्रस्य विकस्तर्या ध्वनेनिहर्षः प्रति प्रामास्त्रयोगाद् स्विभेषादिस्तर्यनहारोत्यद्वार्यसंग्रयस्येन त्रोतारः त्रवर्ष प्रति प्रामास्त्रयोगाद् स्वभेषेतारः नवर्ष प्रति प्रामास्त्रयोगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वस्योतत् प्रामास्त्रास्त्रयोगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्योगाद्वार्यस्यास्त्रयास्त

(Nyāyāvatāra-vivṛti, on verse 1.)

logic.¹ He was a pupil of Vairasvāmi and preceptor of Sāgarendu (Sāgaracandra) Muni, as is mentioned by Māṇikyacandra, Sāgarendu Muni's pupil, in his Pārśvanātha-caritra written in Saṁvat 1276 or 1219 A.D. As Mānikyacandra flourished about 1219 A.D., his preceptor's preceptor Nemicandra must have lived about 1150 A.D. Nemicandra was styled a Kavi.³

ĀNANDA SŪRI AND AMARACANDRA SŪRI, NICKNAMED TIGER-CUB AND LION-CUB (1093-1150 A.D.).

109. These two, born in Guzerat, were great logicians who, even in their boyhood having overcome their elephant-like opponents in dispute, were nicknamed, respectively, Vyāghra-sisuka (Tiger-cub) and Sinha-sisuka (Lion-cub.) They were the twin pupils and successors of Mahendra Sūri in the Nāgendra-gaccha, and were succeeded by Haribhadra Sūri. As Siddharāja from whom they received their nicknames ascended the throne in Samvat 1150 or 1093 A.D., they must have flourished at the beginning of the 12th century A.D. It is probably these two

<sup>1</sup> षड् तक्षिललगिवलाधवधितस्य च तपोऽदर्पति स्रायद्दोदयस्त्रमाः समजिन श्रीनेमिस्त्रप्रशः। निःसामान्यगुर्वभूषि प्रस्कादैः प्रात्तेयग्रेलोक्स्वतिः यस्रते कषभोजिनो सुनिपतेर्वर्थं मतं स्वैतः॥ १९॥

(Pārśvanātha caritra noticed in Peterson 3, p. 160.)

The same verse is quoted almost verbatim in the Kāvya-prakāsa-samketa by Māṇikyacandra Sūri, noticed in Peterson 3, p. 321.

<sup>2</sup> For Nemicandra, see also Peterson 4, p. lxxi.

3 See Dr. R. G. Bhandarkar's Report, 1883-84, p. 122.

<sup>4</sup> Udayaprabha Sūri, who was the successor of Haribhadra Sūri through Vijayasena Sūri, in his Dharmābhyudaya-mahākāvya, noticed by Peterson in his 3rd Report, pp. 16-19, writes:—

षानन्दस्रिति [ तस्य वभूत ] शिषाः
पूर्वीऽपरः श्रमधरोऽमरचन्द्रस्राः ।
धर्माह्मपद्ध दश्नाविन पापष्टचचोदचनो जगित यो विश्वदो विभातः ॥ २ ॥
षस्यावनाङ्मयपयोनिधिमन्दराद्गिसुद्राज्योः किमनयोः सुमन्दे महिस्सः
वास्तेऽपि निर्दे सिमनादिगजी जगाद
यो बान्नसिंहिश्याकाविति सिदराजः ॥ ४ ॥

<sup>&</sup>lt;sup>5</sup> For further particulars of Ananda Süri and Amaracandra Sūri see Peterson 4, p. vii. 8

logicians who are referred to by the Hindu logician Gangesa Upādhyāya in his Tattva-cintāmaņi under Simha-vyāghrī-lakṣaṇa of Vyāpti.

#### HARIBHADRA SÜRI (ABOUT 1168 A.D.).

110. We find mention of at least two Svetāmbara Jaina authors bearing the name Haribhadra Sūri. One died in Samvat 535 or 478 A.D., while the other, who was a pupil of Ānanda Sūri and Amaracandra Sūri of the Nāgendragaccha, lived about Samvat 1225 or 1168 A.D.<sup>2</sup> It is this second Haribhadra Sūri who was called "Kalikāla-Gautama." He must have been an eminent logician if we suppose him to be the author of the Saḍdarśana samuccaya, the Daśavaikālika-niryukti-tīkā, the Nyāya-praveśaka-sūtra and the Nyāyāvatāra-vṛtti. There are

# पंचसर पणतीर विकासकालाचा भित चलमिचा। चरिभइस्त्रस्तिरहरो निब्बो दिसल सिवसुरस्क ॥ १००॥

(Gacchotpatti-prakīrņaka quoted in the Gāthāsī hāsrī noticed in Peterson 3. p. 284.)

<sup>2</sup> Klatt refers to Bühler's Sukrtasamkīrtana, pp. 24-25; see Peterson 4, pp. exxxix, exl.

उस्तानोपनिषत्निषत्नस्ट्रयो धीजन्मभूभिस्तयोः पट्टे श्रीस्रिभद्रस्ट्ररिर्भवसारिनिषामयषौः। भान्ना प्र-यमनात्रयेरितिचिराद्यस्तिद्वस्थानतः सन्तरेः कलिकालगौतम द्ति ख्यातिवितेने गणैः॥५॥

(Dharmābhyudaya-mahākāvya by Udayaprabha Sūri noticed in Peter-

son 3, Appendix I, p. 18.)

<sup>4</sup> In the concluding lines of the Daśavaikālika-niryukti-tīkā it is stated that the author of that work was one Haribhadra Sūri who was a dharmaputra of Yākinī. A similar description of Haribhadra the author of Ṣaddarśana-samuccaya is found in the opening sentences of Guṇaratna's commentary on that work (dated about 1409 A.D.). The Caturvinśati-prabandha by Rājaśekhara Sūri composed in Samvat 1405 or 1348 A.D. makes a like reference to Haribhadra, the author of Nyāyāvatāra-vṛtti. Now the dharmaputra of Yākinī is generally held to be a surname of the first Haribhadra Sūri whose disciples were Hamsa and Paramahamsa, as is evident from Prabhācandra Sūri's Prabhāvaka-caritra dated about 1277 A.D.

In the Gacchotpatti-prakarana, Gāthā-sāhasrī, Vicāra-sāra-prakarana, Vicārāmṛta-saṃgraha, Tapāgacchapattāvalī, Kharataragaccha-pattāvalī, etc., Haribhadra Sūri I. is stated to have flourished in Saṃvat 535 or 478 A.D.

Now the Nyāyāvatāra which is alleged to have been commented on by Haribhadra Sūri I. was itself composed about 533 A.D. (that is, after 478 A.D.), and Dharmakīrti, whose logical doctrines have been referred to in the Ṣaḍdarśana-samuccaya, lived about 650 A.D. These facts prove that Haribhadra the author of Nyāyāvatāra-vṛtti and Ṣaḍdarśana-samuccaya lived after 650 A.D.

strong grounds for supposing that the Ṣaddarśana-samuccaya was not the work of the first Haribhadra Sūri, as it refers in the chapter on the Bauddhadarśana to the views of such authors as Dignāga, Dharmakīrti, and others who flourished long after the 5th century A.D. The six systems (Ṣaddarśana) treated by him are (1) Bauddha, (2) Naiyāyika, (3) Sāmkhya, (4) Jaina, (5) Vaiśesika and (6) Jaiminiya.

111. Haribhadra Sūri is often described <sup>2</sup> as having protected the word of the Arhats like a mother by his 1,400 works. He is said to have used the word *viraha* (separation or sorrow) as his mark in the last verse of each of his works. He was by birth a Brāhmaṇa and was chaplain to king Jitāri whose capital was

Dr. Jacobi in his letter, dated the 21st October 1907, writes to me that "Haribhadra used the word viraha in the Samaraiccakahā, which is alluded to by Siddharsi who wrote in 905 A.D."

Regarding the dates of the Saddarsana-samuccaya, etc., he observes:—These are "unanimously ascribed to the first Haribhadra," "whose date. I believe, with Prof. Leumann, to have been wrongly referr d to the Samvat era instead of the Valabhi or Gupta era, which commenced in 319 A.D."

According to Dr. Jacobi, therefore, the Şaddarsana-sammuccaya, etc., were written by the first Haribhadra Sūri, who died in 535 Gupta Samvat or 854 A.D.

Dr. Jacobi's theory removes many of our difficulties, yet it is far from being conclusive, as the Jaina authors very seldom used the Gupta era. Moreover, it is inexplicable why Vācaspati Miśra and Udayanācārya did not refer to such an excellent compendium of Indian philosophy as the Şaddarsana-samuccaya if it existed as early as the 9th or 10th century A.D. I am therefore inclined to believe that Haribhadra Sūri II was the author of the Ṣaddarsana-samuccaya, Nyāyāvatāra-vṛtti, etc., while the Samaraiccakahā and other treatises might be the works of the first Haribhadra Sūri.

But I must confess that the modern Jaina Panditas such as Munis Dharmavijaya and Indravijaya firmly believe that the author of all these works was the first Haribhadra Sūri who, according to them, flourished in 535 Vikrama Samvat, or 478 A.D.

# प्रत्यचं कष्पनापोढ्मभानं तन नुधातास्। निष्रपाक्षिक्षतो खिक्षितानं सन्मानसंज्ञितस्॥

(Ṣaddarśana-samuccaya, chapter on Bauddha-darśana, p. 38, edited by Dr. Suali).

This verse refers without doubt to the definition of Pratyakea and Anumana given by Dharmakirti who lived about 650 A.D.

<sup>2</sup> Klatt in his "Paṭṭāvalī of the Kharataragaccha" in the Ind. Ant., Vol. XI, Sept. 1882, p. 247; also Peterson 3, p. 35. Also:

# स्त्रोमि त्रीस्रिभइं तं येनास्त्रीर्भस्तरा । चतुर्दग्रमकरणग्रत्यागोष्यत माळवत्॥ १८॥

Amarasvāmicarita by Muniratna Sūri noticed in Peterson 3, p. 91.

Chittore near the Citrakūta hill. He was instructed in the Jaina doctrine by Jinabhata. Two of his pupils, named Hamsa and Paramahamsa, are said to have left him as missionaries of the Jaina faith, and to have been slain in the Bhota country (Tibet) by the fanatical Buddhists whom they sought to convert. The sorrow caused by the death of these two pupils is said to have been symbolised in the word *viraha*.

112. It is generally supposed that Haribhadra Sūri, whose pupils were killed in Tibet, was the first author of that name. But there will be no inconsistency if we suppose him to be the second Haribhadra Sūri, for the religious intercourse between India and Tibet was more frequent in the 12th century A.D. than in the 5th century, when Tibet had scarcely emerged into the ken of history.

#### RATNAPRABHA SÜRI (1181 A.D.).

10113. Ratnaprabha Sūri, who belonged to the Svetāmbara sect, was a logician of repute, being the author of a light commentary (laghu- $tik\bar{a}$ ) on the Pramana-naya-tattvālokālankāra called Syād-vāda-ratnāvatārikā in which are quoted the views of the Bud-

dhist logicians Arcata (q. v.) and Dharmottara (q. v.)

114. While in Broach at the Aśvavabodhatīrtha in Samvat 1238 or 1181 A.D., he wrote another work called Upadeśamālāvrtti <sup>8</sup> to please Bhadreśvara Sūri and in payment of the debt he owed to Vijayasena Sūri, the brother of Bhadreśvara. There he gives his spiritual descent in the V<sub>I</sub>hadgaccha as follows: (1) Municandra Sūri; (2) Deva Sūri; (3) Bhadreśvara Sūri and (4) Ratnaprabha Sūri.<sup>4</sup>

ः प्रमाणे च प्रमेवे च वास्त्रामां वृद्धिस्वये । विश्विद् वचनचातुर्श्यचापस्रायेणमाद्धे ॥ प्रमेचरत्वकोढीभः पूर्णोरत्वाकरो मचान् तचावतारमानेव स्त्रेरस्याः स्तार्थता ॥

8 (Syādvāda-ratnāvatārikā, Muni Dharmavijaya's MSS., p. 99). A part of the Syādvāda-ratnāvatārikā has been printed and published in the Benares Jaina Yasovijaya series.

त्रीर्वप्रभक्करिभिः ग्राभक्कते त्रीहैवक्करिप्रभीः। शिष्टेः वेयमकारि एकादकते दत्तिर्विशेषार्थिनाम् ॥ विक्रमाद्वतुकोकाकं (१२२८) वर्षे माघे समर्थिता। एकादम्सद्वापि सार्वे पक्षमतं तथा॥

(Upadeśamālā-vṛtti, noticed in Peterson 5, p. 124).

<sup>1</sup> Vide Introduction to Saddaráanasamuccaya published in the Chow-khamba series, Benares.

<sup>•</sup> For other particulars of Ratnaprabha Sūri, vide Peterson 4, p. cii. Compare also Weber II, p. 922, note 7.

# Mallişena Süri (1292 A.D.).

115. He belonged to the Nagendra Gaccha of the Svetāmbara sect, and was the author of the Syādvādamañjarī, a commentary on Hemacandra's Vītarāga-stuti or Dvātrimsikā. The Syādvāda-mañjarī contains an exposition of the Pramāṇa, Saptabhaṅgīnaya, etc., and criticises Akṣapāda's theories of Pramāṇa, Chala, Jāti, Nigrahasthāna, etc. The doctrines of the Samkhya, Aulūkya, Jaiminīya, Bhaṭṭapāda, Vedānta, Yogācāra, Madhyamika, Cārvāka, etc., have also been his favourite subjects of attack. At the close of his work Malliṣeṇa describes himself as a pupil of Udayaprabha Sūri and as having composed the work in Saka 1214 or A.D. 1292.

# Rājasekhara Sūri (1348 A.D.).

116. Rājašekhara Sūri, or Malladhāri S'rī Rājašekhara Sūri, belonged to the S'vetāmbara sect and was the author of the Ratnāvatārīkā-pañjikā,² a sub-commentary on the Pramāṇanaya-tattvālokālankāra, as also of two other works called Syādvāda-kalikā and Caturvimsatiprabandha,³ He is also the author of a Pañjikā (commentary) on the Nyāya-kandalī of the Hindu philosopher S'rī-dhara. He studied the Nyāya-kandalī under teacher Jinaprabha,⁴ and is said to have lived in Samvat 1405 or 1348 A.D.⁵

# JÑĀNA CANDRA (1350 A.D.).

117. He belonged to the Svetāmbara sect and was the author of a gloss on the Ratnāvatārikā called the Ratnāvatārīkā-ţippana, which discusses many abstruse points of logic and criticises the

# श्रीमक्षिषेणस्त्ररिभिरकारि तत्पद्गगनदिनमणिभिः। द्यतियं मम्दिमितग्रकान्द्रे दौपमद्यसि ग्रनौ॥१॥

(Syādvādamañjarī, p. 220, printed in the Benares Chowkhamba Sanskrit Series, and edited by Dāmodara Lal Gosvāmi.)

- <sup>2</sup> A part of the Ratnāvatārikā-pañjikā has been printed and published in the Benares Jaina Yasovijaya series.
- $^3$  This work has been published by Hira Lal Hamsarāja at Jāmanagara in Kathiwar.

# श्रीमिक्वनप्रभविभोरिधगत्य न्यायकद् जीं कि श्वित् । तस्यां विष्टति जनमर्च करवे स्वपरोपकाराय ॥

(Nyāyakandali of Sridhara with the Panjikā of Rājasekhara noticed in Peterson 3, p. 273; cf. also Peterson 3, pp. 28-29.)

<sup>&</sup>lt;sup>5</sup> Vide Weber II, p. 1207.

views of Dignāga i and others. He composed this work a under orders from his preceptor Rājašekhara Sūri, who flourished in 1348 A.D. Jñāna Candra's date may approximately be fixed at about 1350 A.D.

# GUNARATNA (1409 A.D.).

118. Guṇaratna belonged to the Tapāgaccha of the Svetāmbara sect, and was the distinguished author of a commentary on the Ṣaḍdarśana-samuccaya <sup>8</sup> called Saḍdarśana-samuccaya-vṛtti or Tarka-rahasya-dīpikā in which the Nyaya (logic) along with other systems has been lucidly explained. He also wrote the Kriyā-ratna-samuccaya.

119. He is mentioned by Ratna-sekhara Sūri in the Srāddhapratikramaņa-sūtra-vṛtti composed in Samvat 1496 or A.D. 1439. In that work Gunaratna is mentioned as a pupil

> वेनान्यापोच्चविषयाः प्रोक्ताः सामान्यगोचराः । मन्दास बुडयसैव बसुन्येषामसम्भवात् ॥ चस्य खाख्या तेनाचार्य्ये दिग्नागेन चन्यापोच्चविषयाः ... प्रोक्ताः ॥

> > Jñānacandra's Ratnāvatārikā-tippana, chap. I, p. 7, published in Yasovijaya-granthamālā of Benares.

रह्माकरावतारिका वरिष्यमं तत् ज्ञानेन्द्रस्यतरधीः स्वमितः प्रष्टत् । तिष्यको रिचतवान् मद्यधारिपूष्य-श्रीराजधेषरगुरोष निर्देशमाण्य

Quoted from the MSS. of Ratnakarāvatārikā-ţippanaka, lent to me by Muni Dharmavijaya. A part of this work has been printed and published in the Benares Jaina Yaśovijaya series.

- 3 Şaddar´sana-samuccaya with Vrtti, edited by Dr. Suali, is being published by the Asiatic Society of Bengal. There is another commentary on Saddar´sanasamuccaya called Laghuvrtti by Manibhadra. It has been published in the Chowkhamba series.
- 4 The Srāddha-prati-kramaņa-sūtra-vṛtti by Ratnasekhara Sūri, has been noticed in Peterson 3, pp. 226-227, whence the following lines are quoted:—

विद्धाततपेत्याच्या जगित जगवन्त्रस्त्रयोऽभूवम्। त्रीहेवसुन्दरगुक्तमाञ्च तदनृत्रमादिदिताः॥१। पञ्च च तेषां शिष्माचेष्माद्या ज्ञानसागरा गुरवः।२ कुलमण्डमा दितीयाः त्रीगणरक्षासृतीयाच ॥ १॥ of Devasundara, who attained the exalted position of Sūri at Aṇahillapattana in Samvat 1420 or A.D. 1363.¹ Guṇaratna must, therefore, have lived between A.D. 1363 and A.D. 1439. Devasundara Sūri, teacher of Guṇaratna, was a contemporary of Muni-sundara Sūri, the famous author of the Gurvāvalı² composed in Samvat 1466 or A.D. 1409. Guṇaratna himself says that his Kriyāratna-samuccaya³ was composed in Samvat 1466 or A.D. 1409.

120. Guņaratna, in his elaborate commentary (Vrti) on the Ṣaḍdarśana-samuccaya, has mentioned Sauddhodani, Dharmottarācārya, Arcaṭa, Dharmakirti, Prajñākara, Kamalaśila, Dignāga, and other Buddhist authors, as well as Tarkabhāṣā, Hetubindu, Arcaṭa-tarkaṭīkā, Pramāṇa-vārtika, Tattvasamgraha, Nyāyabindu, Nyāyapraveśaka, and other Buddhist works on logic, etc., in the chapter on the Bauddha system. Mention has also been made, in the chapter on the Nyāya, of such Hindu logicians as Akṣapāda, Vātsyāyana, Udyotakara, Vācaspati, Udayana, Srikaṇṭha, Abhayatilakopādhyāya, Jayanta, and of such works as Nyāya-sūtra, Nyāyabhāṣya, Nyāya-vārtika, Tātparyaṭikā, Tātparyapariśuddhi, Nyāyālankāra, Nyāyālankāravṛtti, etc. The Nyāya-sāra of Bhā-sarvajña and the eighteen commentaries on it such as Nyāyabhūṣaṇa, Nyāyakalikā, Nyāyakusumāñjalī, etc., have also been mentioned.

# षड्दभेनटतिक्रियारत्वसमुखयनिचारनिचयद्धाः । दवां श्रीसुगुद्धवां प्रसादतोऽब्द षड्युनिखमिते । श्रीरत्वभेषरगणिर्द्धतिममामकत क्षतितृष्टे ॥ १

1 Vide Dr. Klatt on the Paṭṭāvalī of the Kharataragaccha in the Ind. Ant., Vol. XI, September 1882, pp. 255-256; cf. also Weber II, p. 884; and Dr. R. G. Bhandarkar's Report, 1883-84, p. 157.

२ रसरसमनुमितवर्षे १४९९ सुनिसुन्दरस्त्रिषा कता पूर्वम् । मधास्त्रेरवधार्या गुर्वाखीयं जयत्रीवा ॥ ८२ ॥

> (Gurvāvalī, Jaina-Yaśovijaya granthamālā series, p. 109).

अकाले षड्रसपूर्व १४९९ वत्यरिमिते त्रीविक्रमार्काइते गुर्वादेखवादिख्या च सदा खान्योपकारं परम्। प्रन्यं त्रीगुणरत्नस्तरिरतनीत् प्रज्ञाविचीनोऽप्यसं निर्चेत्पक्रतिप्रधानजननैः शोधस्वयं घीधनैः॥ १३॥

> (Kriyāratna-samuccaya, Jaina Yasovijaya granthamālā series, p. 309).

# DHARMA-BHÜSANA (ABOUT 1600 A.D.).

121. A Digambara author who wrote the Nyāya-dipikā about 300 years ago. He has been mentioned in the Tarkabhāsā 1

by Yasovijava Gani.

122. The Nyāya-dipikā begins with a salutation 8 to Arhat Vardhamāna. It is divided into three chapters (Prakāśa viz., (1) general characteristics of valid knowledge, pramānasāmānya-laksana, (2) perception, pratyaksa, and (3) indirect knowledge, paroksa, including recollection, smrti, recognition, pratyabhijnana, argumentation, tarka, inference, anumana, tradition, āgama, and the method of comprehending things from particular standpoints, naya.

123. The technical terms of logic have been defined and minutely examined and the views of other logicians, specially of the Buddhists, have been severely criticised. references to Sugata, Saugata, Bauddha, Tāthāgata, Mimāmsaka, Yauga, Naiyāyika, Bhātta, Prābhākara, Dignāga, Samanta Bhadra, Akalanka Deva, Sālikā Nātha, Jainendra, Syād vāda-vidyāpati, Māṇikya Nandi Bhattāraka, Kumāra Nandi Bhattaraka, Udayana and others. The following works are also mentioned:-Prameya-kamala-mārtanda, Rājavārtika, Sloka-Slokavārtika-bhāsva Tattvārtha-sūtra, Tattvārthavārtika. bhāsya, Tattvārtha-śloka-vārtika, Āptamīmāmsā-vivarana, Nyāyaviniscaya, Pramāna-nirnaya, Pramāna-parīksā, Parīksāmukha, Nyayabindu, etc.

# YASOVIJAYA GANI (1680 A.D.).

124. Yaśovijava belonged to the Svetambara sect and was the famous author of Nyaya-pradipa, Tarkabhasa, Nyaya rahasya, Nyāyāmṛta-tarangiṇi, Nyāya-khanda-khādya, Anekānta Jaina-mata-vyavasthā, Jñānabindu-prakaraņa, etc. He also wrote a commentary on the Digambara work Astasahasri

Yaśovijaya's Tarkabhāṣā, leaf 10, MSS. lent to me by Munis Dharmavijaya and Indravijaya.

<sup>8</sup> श्रीबर्डमानमर्चमं नता वासप्रवृद्धये। विरच्यते मितसार सन्दभन्यायदीपिका ॥ १॥

(Nyāyadīpikā, chap. I).

<sup>1</sup> This work has been printed in Kolhāpura.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> रत्यं वा ज्ञाननिवर्तकलेन तर्कस्य प्रामाणं धर्मभूषणीर्त्तं सत्येव तत्र भिष्याज्ञानक्षे धवन्देशे संगन्धते।

<sup>4</sup> For other particulars about Yaśovijaya see Peterson 6, p. xiv. For his works see the Jainagama List published in Bombay.

called Astasāhasrī-vṛtti. The Tarkabhāṣā begins with a salutation to Jina.¹ It consists of three chapters, viz. (1) Valid knowledge, pramāṇa, (2) Knowledge from particular standpoints, naya, and (3) Imposition, niḥkṣepa. He occasionally discusses vyāptigraha, or the means of establishing the universal connection between the middle term and the major term.

125. He is descended from Hiravijaya, the well-known Sūri of Akbar's time (no. 58 of the Tapāgaccha paṭṭāvali). He ascended heaven in Samvat 1745 or A.D. 1688 at Dabhoi, in modern Baroda State. To perpetuate his memory there has been established at Benares a college called Jaina Yaśovijaya-pāṭhaśālā under the auspices of which the scred Jaina works are being published in a series called Jaina Yaśovijaya-granthamālā.

चेन्द्रप्टन्दनतं नवा जिनं तत्त्वार्थरेशिनम् प्रमायनयनिचेपेखकेभाषां तनोस्यसम्

(Tarkabhāṣā, chap. I).

#### BOOK II.

# The Buddhist Logic.

### CHAPTER I.

#### THE OLD BUDDHIST REFERENCES TO LOGIC.

Виррна Gautama (623 В.С.—543 В.С.).

1. The Buddhists maintain that their religion is eternal. It was taught at different cycles by sages called Buddhas (the Enlightened Ones) or Tathāgatas (those who have realised the truth). In the present cycle, called *Mahā-bhadra-kalpa* (the very blessed cycle), four Buddhas are said to have already appeared, viz., Krakucchanda, Kanaka Muni, Kāśyapa and Gautama, while the fifth, viz., Maitreya, is yet to be born.

2. Of the past Buddhas the last, viz., Buddha Gautama, otherwise called Sākya Muni, was born at Kapilavastu (modern Nigliva in the Nepal Terai) in 623 B.C., and attained nirvāna at Kuśinagara (modern Kuśinārā near Gorakhpur) in 543 B.C.² He passed almost his whole life in Magadha (modern Behar). He is regarded by modern scholars as the real founder of Buddhism, while his predecessors are considered as purely mythical.

# Origin of the Pali Buddhist Literature (543 B.C.—76 B.C.).

3. Buddha Gautama is said to have delivered his teachings in the Māgadhī or Pāli language. On his death these teachings were rehearsed by the Buddhist monks in three councils 3 held.

<sup>1</sup> Vide Hardy's Manual of Buddhism, second edition, pp. 88-91.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> The exact date of Buddha is unknown. The date given here is according to the Mahāvamsa, the Pāli chronicle of Ceylon. The date of Buddha's nirvāṇa is placed by European scholars between 470—480 B.C. Cf Dr. Fleet's article on "The Date of Buddha's Death" in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January, 1904.

<sup>&</sup>lt;sup>8</sup> For an account of the first and second councils, vide Vinaya Pitaka, Culla Vagga, 11th and 12th Khandhakas, translated by Rhys Davids and

at Rājagrha, Vaiśālī and Pāṭaliputra under the patronage of kings Ajātaśatru, Kālāśoka and Aśoka about the year 543 B.C., 443 B.C. and 255 B.C.¹ respectively. The texts of the teachings as discussed and settled in these councils form the sacred scripture of the Buddhists. This scripture is called in Pāli Tepiṭaka or Piṭakattaya and in Sanskrit Tripiṭaka or Piṭakatraya which signifies 'Three Baskets.' It consists of the Sermon Basket (Sutta Piṭaka), Discipline Basket (Vinaya Piṭaka) and the Metaphysical Basket (Abhidhamma Piṭaka), each of which embodies a large number of distinct works.

4. The monks assembled in the First Council, that is in the Council of Kāśyapa in 543 B.C., were called (1) Theras, and the scripture canonised by them was called Theravāda. Subsequently ten thousand monks of Vaiśālī having violated certain rules of the Theravāda were, by the decision of the Second Council in 443 B.C., expelled from the community of the Theras. These excluded priests were called (2) Mahāsānghikas who were the first heretical sect of the Buddhists. They made certain additions and alterations in the Theravāda. Afterwards within two hundred years from the nirvāna of Buddha 14 other heretical sects 2 arose, viz., (3) Gokulika, (4) Ekabbohārika, (5) Paññatti, (6) Bāhulika, (7) Cetiya, (8) Sabbatthi, (9) Dhammaguttika, (10) Kassapīya, (11) Sankantika, (12) Sutta, (13) Himavata, (14) Rājagirīya, (15) Siddhatthika, (16) Pubbaselīya, (17) Aparaselīya and (18) Vajiriya.

5. Just at the close of the Third Council about 255 B.C., the teachings of Buddha as canonised by the Theras in the form of the *Tepitaka* were carried by Mahinda, son of Emperor Asoka, to the island of Ceylon where they were perpetuated by priests in oral tradition. They are said to have been committed to writing for the first time in Ceylon in the reign of Vattagāmani during 104-76 B.C. Besides the *Tepitaka* there

Oldenberg, S.B.E. series, vol. XX, pp. 370, 386. For an account of the third council as also of the first and second, *vide* Wijesimha's translation of the Mahāvamsa, chapter V, pp. 25—29, as also chapters III and IV.

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> As to the dates of the 1st and 2nd Councils I follow the Pāli Mahāvamsa. The date of the 3rd Council is in accordance with modern researches. Aśoka ascended the throne in 272 B.C. (*Vide Vincent A. Smith's Aśoka*, p. 63), and it was in the 17th year of his reign that the third Council took place (*vide Wijesimha's Mahāvamsa*, p. 29).

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> For a discussion about the variant names and subdivisions of these sects, *vide* Wijesimha's Mahāvamsa, part I, chapter V, p. 15; and Dr. Rhys Davids' "Schools of Buddhist Belief" in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, 1892, pp. 1-37.

<sup>3</sup> Vide the Mahāvamsa, chapter XII.

<sup>4</sup> Vide the Mahāvamsa, chapter XXXIII. Cf. also Dr. Alwis's Lecture on the Pali Language in the Journal of the Pali Text Society, London. 1883, p. 42,

were numerous other works written in Pāli which have immensely added to the bulk of the Pāli literature.

#### LOGIC TOUCHED ON IN THE PALI LITERATURE.

- 6. In the Tepitaka—nay in the whole Pāli literature—there is not a single treatise on Logic. This is not at all a matter of surprise, for, according to the Pāli works, our knowledge (called in Pāli:  $Vi\tilde{n}\tilde{n}ana$  and in Sanskrit:  $Vi\tilde{n}\tilde{n}ana$ ) has arisen from  $Avidy\bar{a}^1$  or cosmic blindness, and is therefore a mere illusion. Such being the character of our knowledge, it cannot form the subject-matter of Logic, the sole function of which consists in laying down criteria for determining real or valid knowledge.
- 7. The only topic bearing upon Logic which has been touched on in the Pāli works, is the division of knowledge into six kinds. In the Tepiṭaka² knowledge (Viññāṇa³) has been classified as (1) ocular (cakkhu-viññāṇaṁ), (2) auditory (sota-viññāṇaṁ), (3) olfactory (ghāna-viññāṇaṁ), (4) gustatory (jivhā-viññāṇaṁ), (5) tactual (kāya-viññāṇaṁ) and (6) mental (mano-viññāṇaṁ). But this classification has not been carried far enough to lay the foundation of a Logic that deserved the name of science.
- 8. In the Tepiṭaka there are, however, occasional references to a class of men who were called Takki (in Sanskrit: Tarkin or Takkika (in Sanskrit: Tarkin—that is, those versed in reasoning. It is not known whether these men were Buddhists, Jainas or Brāhmaṇas, perhaps they were recruited from all communities. They were not logicians in the proper sense of the term but they appear to me to have been sophists who indulged in quibble and casuistry.

# THE Brahma-jāla-sutta (543 B.C.—255 B.C.).

9. In the Brahma-jāla-sutta, which forms a part of the Digha Nikāya of the Sutta Piṭaka and was rehearsed in the three Buddhist Councils during 543 B.C.—255 B.C., mention

l Avidyā (cosmic blindness) forms the first link in the chain of Paticca samuppāda explained in the Vinaya Pitaka, Mahāvagga, Pathama Khandhaka, translated by Rhys Davids and Oldenberg, S.B.E. series, vol. III, pp. 73—75.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide the Anguttara Nikāya III, 61. 8, edited by Dr. Morris in the Pāli Text Society series of London. Vide also the Dhammasanginī, and compare Pariccheda IV of the Abhidhammatthasangaha which, though not included in the Tepitaka, sums up the topics of the Abhidhamma Pitaka.

<sup>3</sup> Viññāna is translated as knowledge or consciousness, such as cakkhuviññāna signifies ocular knowledge or eye-consciousness.

<sup>4 &</sup>quot;Hofrath Dr. Bühler, in the last work he published, expressed the

is made of those Sramanas and Brāhmanas who were Takki and  $V\bar{\imath}ma\dot{m}s\bar{\imath}$  and indulged in Takka and  $V\bar{\imath}ma\dot{m}s\bar{a}$ . Buddha speaks of them thus:—

"In this case, brethren, some recluse or Brāhmaṇa is addicted to logic [sophism] and reasoning [casuistry]." He gives utterance to the following conclusion of his own, beaten out by his argumentations and based on his sophistry: "The soul and the world arose without a cause."

This passage refers, in my opinion, to a sophist rather than to a teacher of Logic.

## THE Udana (543 B.C.—255 B.C.).

- 10. Again, in the Udāna, which is included in the Khuddaka Nikāya of the Sutta Pitaka and is supposed to have been rehearsed in the three Buddhist Councils during 543 B.C.—255 B.C., we read:—
- "As long as the perfect Buddhas do not appear, the Takkikas [sophists] are not corrected nor are the Sāvakas: owing to their evil views they are not released from misery."<sup>2</sup>

This passage leaves no doubt that the Takkikas were sophists.

# THE Kathāvatthuppakaraņa (ABOUT 255 B.C.

11. The Kathāvatthuppakaraṇa, a work of the Abhidham-mapiṭaka, composed by Moggaliputta Tissa at the Third Bud-

opinion that these books, as we have them in the Pāli, are good evidence, certainly for the fifth, probably for the sixth, century B.C."

-Rhys Davids' Preface to the Dialogues of the Buddha, p. XX.

<sup>1</sup> The Brahma-jāla-sutta 1—32 included in Dialogues of the Buddha translated by Rhys Davids, London, p. 42.

Dr. Rhys Davids translates Takki (Tarki) and Vimamsi ( $Mim\bar{u}msi$ ) as "addicted to logic and reasoning." But the expression may also be rendered as "addicted to sophism and casuistry."

The original Pali runs thus:-

Idha, bhikkhave, ekacco samano vā brāhmano vā takkī hoti vīmamsī. So takka-pariyāhatam vimamsānucaritam sayam-patibhānam evam āha: ""Adhicea-samuppanno attā ca loko cāti."

—The Brahma-jāla-sutta 1—32 included in the Dīgha Nikāya, p. 29, edited by T. W. Rhys Davids and J. E. Carpenter, London.

<sup>2</sup> The original of this passage runs as follows: —
Yāva sammā sambuddhā loke n'uppajjanti, na takkikā sujjhanti na

c'āpi sāvakā, dudditthī na dukkhā pamuccare'ti.
—Udānam, vi, 10, edited by Pa

—Udānam, vi, 10, edited by Paul Steinthal in the Pāli Text Society series, London. dhist Council during the reign of Asoka about 255 B.C., mentions  $pati\tilde{n}\tilde{n}\tilde{a}$  (in Sanskrit:  $pratij\tilde{n}\tilde{a}$ , proposition), upanaya (in Sanskrit, too: upanaya, application of reason), niggaha (in Sanskrit: nigraha, humiliation or defeat), etc., which are the technical terms of Logic. Though Moggaliputta Tissa has not made any actual reference to Logic, his mention of some of its technical terms warrants us to suppose that that science in some shape existed in India in his time about 255 B.C.

# THE Milinda-pañha alias THE Bhikṣu-sūtra (ABOUT 100 A.D.).

12. The only Pāli work in which an explicit reference to Logic called Niti (or  $Ny\bar{a}ya$ ) occurs is the Milinda-pañha otherwise known as the Bhikṣu-sūtra, which was composed about 100 A.D.<sup>8</sup> It was translated into Chinese under the Eastern Tsin dynasty A.D. 317—420.<sup>4</sup> In the Chinese collection of the Indian books it is designated as the Nāgasena-Bhikṣu-sūtra. This work contains questions of Milinda (the Greek King Menander of Bactria) and replies of Bhikṣu Nāga Sena on various abstruse matters. In it Milinda who was versed in Logic (Niti or Nyāya) is thus described:—

1 Aśoka ascended the throne of Magadha in 272 B.C. (vide Vincent A. Smith's Aśoka, p. 63). In the seventeenth year of his reign the Third Buddhist Council took place (Wijesimha's Mahāvamsa, p. 29).

No ca mayam tayā tattha hetāya patiñnāya hevam patijānantā hevam niggahetabbo (Kathāvatthuppakarana, Siamese edition, p. 3, kindly lent to me by Anagārika H. Dharmapāla).

In the commentary on the above passage even chala (fraud), which is another technical term of Logic, has been used. Cf.

Evam tena, chalena niggahe aropite idani tass'eva patinnaya dhammena samena attavade jayam dassetum anulomanaye puccha sakavadissa attano nissaya patinnam paravadissa laddhiya kasam adatva...

(Kathāvatthuppakarana-atthakathā, published by the Pali Text Society of London, p. 13).

It is evident from the opening passages of the Kathāvatthuppakaraṇaatṭhakathā that Moggaliputta Tissa discussed in the Kathāvatthuppakaraṇa only those doctrines—Buddhistic and heretic—which had originated after the First and Second Buddhist Councils. From this statement may we not draw the conclusion that the technical terms of Logic which he has used were unknown before the Second Buddhist Council?

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Niggaha-catukkam is the name of a section of the first chapter of the Kathāvatthuppakaraṇa. Upanaya-catukkam is the name of another section of that work. A passage, in which the terms patinnā and niggaha occur, is quoted below:—

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> For discussions about date vide Rhys Davids' Introduction to "the Questions of King Milinda" in the S. B. E. series, vol. xxxv.

<sup>+</sup> Vide Bunyin Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, No. 1358.

:: "Many were the arts and sciences he knew-holy tradition and secular law; the Sāmkhya, Yoga, Nyāya and Vaiseşika systems of philosophy; arithmetic; music; medicine; the four Vedas, the Puranas, and the Itihasas; astronomy, magic, causation and spells; the art of war; poetry; conveyancing—in a word, the whole nineteen.

As a disputant he was hard to equal, harder still to overcome; the acknowledged superior of all the founders of the various schools of thought. And as in wisdom so in strength of body, swiftness, and valour there was found none equal to Milinda in all India. He was rich, too, mighty in wealth and prosperity, and the number of his armed hosts knew no end.......The king, who was fond of wordy disputation, and eager for discussion with casuists, sophists, and gentry of that sort, looked at the sun (to ascertain the time), and then said to his ministers."1

- 13. The following dialogue <sup>2</sup> between Milinda and Naga Sena is quoted to show what was thought to be the proper mode of carrying on debate in the days of those notable persons:
- 8 The King said: 'Reverend Sir, will you discuss with me again?' 'If your Majesty will discuss as a scholar (Pandita), well; but if you

will discuss as a king, no.'

'How is it then that scholars discuss?'

When scholars talk a matter over with one another then is there a winding up, an unravelling; one or other is convicted of error, and he then acknowledges his mistake, distinctions are drawn, and contradistinctions; and yet thereby they are not angered. Thus do scholars, O King, discuss.'

'And how do kings discuss?'

'When a king, Your Majesty, discusses a matter, and he advances a point, if any one differ from him on that point, he is apt to fine him, saying: "Inflict such and such a punishment upon that fellow!" Thus, Your Majesty, do kings discuss.'

Very well. It is as a scholar, not as a king, that I will discuss. Let Your Reverence talk unrestrainedly, as you would with a brother, or a novice, or a lay disciple, or even with a servant. Be not afraid!'

# Origin of the Mahāyāna (about 78 A.D.).

14. At the opening of the Christian era the north-western part of India was invaded by the Turuskas or Scythians. Kaniska, who was one of their chiefs, conquered Kāśmīra,

, Niti may mean "polity," but placed between Yoga and Vaisesika it cannot but signify Nyaya.

<sup>2</sup> Vide Rhys Davids' Questions of King Milinda in the S. B. E. series,

<sup>1</sup> Taken from Rhys Davids' translation of the Milinda-panha called 44 the Questions of King Milinda '' in S. B. E. series, vol. xxxv, pp. 6-7. Nyāya is an equivalent for the original Nīti, causation for Hetu, casuists for Lokayata and sophists for Vitanda.

vol. xxxv, p. 46.
3 In the Tangyur, Mdo, vol. Gi, there is Mahārāja-Kanika-lekha, which is a letter addressed by Maticitra to King Kaniska. Hwen-thsang in the 7th Century A.D. records a prophecy of Buddha that 400 years after his nirvāna Kaniska would be born : vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I, p. 99. The same prophecy is mentioned by Fa hian about 399 A.D., showing thereby that Kaniska was regarded as historical even at that time. According to Tibetan books such as the

Palhava and Delhi, and is said to have founded the era called  $Sak\bar{a}bda$  in 78 A.D. He accepted the Buddhist faith and established a new system of Buddhism called  $Mah\bar{a}y\bar{a}na$ , the Great Vehicle. The old system of Buddhism as promulgated in the Pāli Tepiṭaka was henceforth nicknamed  $H\bar{i}nay\bar{a}na$ , the Little Vehicle. The  $Mah\bar{a}y\bar{a}na$  gradually spread to Nepal, Tibet, Mongolia, China, Japan, Corea, etc., while the  $H\bar{i}nay\bar{a}na$  continued in Ceylon and thence spread to Burmah, Siam, etc. In India both the systems prevailed.

# ORIGIN OF THE SANSKRIT BUDDHIST LITERATURE (ABOUT 78 A.D.).

15. Under the patronage of Kaniska a council was held at Jālandhara under the superintendence of Pārśva (or Pūrṇaka) and Vasu Mitra. It consisted of 500 monks who composed in Sanskrit three works explanatory of the Pāli Tepitaka, viz., Sūtra Upadeśa of the Sutta Piṭaka, Vinaya Vibhāṣā of the Vinaya Piṭaka and Abhidharma Vibhāṣā of the Abhidharma Piṭaka. These three works written in Sanskrit were the earliest canonical books of the Mahāyāna School.

16. It must not, however, be supposed that there had been no Buddhist books written in Sanskrit before Kaniska held his council. As a fact Kaniska thought it expedient to introduce Sanskrit as the medium of Buddhistic communication seeing that there had already existed many valuable Buddhist books in that language. For instance, the Abhidharma-vibhāṣā, or rather the Abhidharma-mahāvibhāṣā-śāstra, which was compiled

Sum-pahi-chos-byun, Kaniska flourished in 33 B.C., that is, 400 years after the nirvāṇa of Buddha which is said to have taken place in 433 B.C. Dr. J. F. Fleet holds that Kaniska founded the Vikrama era in 58 B.C. (vide Traditional Date of Kaniska in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, October 1906). Dr. R. G. Bhandarkar places Kaniska at the last quarter of the 3rd century A.D., as appears from "A peep into the early history of India" in the Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society for 1897-98, p. 396. Vincent A. Smith places Kaniska in 125 A.D., while Sylvain Lévi assigns him an earlier date of 50 A.D. (vide J.R.A.S., January 1905, pp. 52-53). But Mr. Beal, Mr. Lassen, Professor Kern and others adopt the view that the Saka era dates from Kaniska in 78 A.D.

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> Vide Takakusu's I-tsing, p. XXV; also Satis Chandra Vidyābhusana's Mahāyāna and Hinayāna in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January 1900.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> An account of this council is given by Rai Sarat Chandra Das, C.I.E. in an article named "Some Historical facts connected with the rise and progress of Mahāyāna School of Buddhism, translated from the Sumpahi-chos-byun" in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, vol. I, part III, p. 18. *Vide* also Watters' "On Yuan Chwang," vol I, p. 275; and also Monier Williams' Buddhism, pp. 68-69.

at the council of Kaniska was a mere commentary on Kātyā-yani-putra's Abhidharma-jñāna-prasthāna-śāstra. This last is a Sanskrit work explanatory of the Pāli Abhidhamma Piṭaka. It was composed 300 years after the nirvāna of Buddha or 100 years before the time of Kaniska. Though Kaniska was not thus the first founder of the Sanskrit Buddhist literature, it cannot but be acknowledged that it was he, who for the first time proclaimed Sanskrit as the language of the Buddhist Canon. Since his time there have been composed innumerable Buddhist works in Sanskrit of which nine called the Nava Dharmas are specially worshipped by the Mahāyāna Buddhists.

# LOGIC MENTIONED IN THE SANSKRIT BUDDHIST LITERATURE.

17. None soft the works composed during or before the time of Kaniska has come down to us in its Sanskrit original, and I have had no opportunity of examining the Chinese or Tibetan version of the same. I cannot, therefore, say whether there is any mention of Logic in those works. But we have before us a very large collection of Sanskrit Buddhist works composed after the time of Kaniska. Many of these works, such as some of the Nava Dharmas, contain references to Logic, and several works are even replete with logical discussions.

# THE Lalitavistara (BEFORE 250 A.D.).

- 18. The Lalitavistara, which is one of the Nava Dharmas, was translated into Chinese in 221-263 A.D. The Sanskrit original of it must have been prepared in India before that
- l Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, nos. 1263, 1273 and 1275. Regarding the authorship of Abhidharma mahāvibhāṣā, or simply Mahāvibhāṣā, vide Takakusu in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January 1905, p. 159.
  - <sup>2</sup> The Nava Dharmas or Nine Sacred Works are :—
- (1) Aşta-sāhasrikā Prajñāpāramitā, (2) Ganda-vyūha, (3) Daśa-bhūmīara, (4) Samādhi-rāja, (5) Lankāvatāra, (6) Saddharma-pundarīka, (7) Tathāgata-guhyaka, (8) Lalitavistara and (9) Suvarna-prabhāsa.

Vide Hodgson's Illustrations of the Literature and Religion of the Buddhists, p. 19.

- 3 Dr. Rhys Davids in his Buddhist India, p. 316, observes that the three works composed at the Council of Kanişka are extant in European
- <sup>4</sup> The Lalitavistara was translated into Chinese four times. The first and third translations were lost by 730 A.D. The first was prepared under the Han dynasty A.D. 221-263, the second under the Western Tsin dynasty A.D. 265-316, the third under the earlier Sun dynasty A.D. 420-479, and the fourth under the Thān dynasty A.D. 683. *Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka*, nos. 159 and 160.

time. In this work Logic, under the name of *Hetu-vidyā*,¹ is mentioned along with the Sāmkhya, Yoga, Vaiśeṣika, etc., in all of which the Bodhisattva (Buddha Gautama) is said to have acquired distinction.

#### EIGHTEEN SECTS OF THE BUDDHISTS.

19. In article 4 we have found that within 200 years after the nirvēṇa of Buddha there arose in India 17 heretical sects besides the orthodox priesthood called the Theras. In course of time some of these sects disappeared while new ones grew up, the result being that at the time of Kaniska, about 78 A.D., the Buddhists had already been divided into 18 sects 2 grouped into four classes as follows:—

| four classes as follows:—  |  |
|--|--|
| I. Ārya Sarvāstivāda (1) Mūla Sarvāstivāda (2) Kāsyapiya (3) Mahisāsaka (4) Dharma-guptīya (5) Bahusrutīya (6) Tāmrasātīya (7) Vibhajyavādin II. Ārya Sammitīya (8) Kurukullaka (9) Āvantīka                   | Belonging to the Vaibhāṣika School of Philosophy.  |
| (10) Vātsīputrīya III. Ārya Mahāsāmghika (11) Pūrva-śaila (12) Apara-śaila (13) Haimavata (14) Lokottaravādin (15) Prajñaptivādin IV. Ārya Sthavira (16) Mahāvihāra (17) Jetavanīya, and (18) Abhayagirivāsin. | Belonging to the Sautrāntika School of Philosophy. |

All the sects mentioned above belonged to the  $H\bar{\imath}nay\bar{a}na$  though later on they joined the  $Mah\bar{a}y\bar{a}na$  too.

Lalitavistara, edited by Dr. Rājendra Lal Mitra in the Bibliotheca Indica series, Calcutta, Chapter XII, p. 179.

<sup>2</sup> Vide the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, vol. I

<sup>े</sup> निर्धेष्टी निगमे पुराणे इतिहासे वेदे व्याकरणे निरक्ते शिक्षायां हन्दसि यज्ञकरणे ज्योतिषि सांख्ये योगे क्रियाकरणे वैश्लेषिके वैश्लिके वर्धवद्यायां वाईस्प्रत्ये चास्यें चासुरे स्वगपित्तवते हेतुविद्यायां जातुयन्ते ..... सर्वन बोधिसस्त स्वविशिष्ठिते स्वगपित्तवते हेतुविद्यायां जातुयन्ते ..... सर्वन बोधिसस्त स्वविशिष्ठिते सा ॥

#### FOUR SCHOOLS OF THE BUDDHIST PHILOSOPHY.

- 20. The philosophical views of the sects mentioned above were gradually formulated into two schools, viz., the (1) Vaibhāṣika and (2) Sautrāntika. The Mahāyāna sect of the Buddhists founded by Kaniska established two other schools of philosophy, viz., the (3) Mādhyamika and Yogācāra. So there were altogether four schools of philosophy, two of the Hīnayāna and two of the Mahāyāna.
- Vaibhāsika was a later appellation of the philosophy of the Sarvastivada (Pali: Sabbatthivada) sect who, as their name implies, admitted the reality of the world—internal and external. The fundamental philosophical work of this sect is Katvavani-putra's Abhidharmajñāna-prasthāna-śāstra,8 simply Jñana-prasthana-śastra, composed 300 years after the nirvana of Buddha. The next work of this sect is the Abhidharma-mahāvibhāsā-sāstra 4 or simply Vibhāsā, compiled at the council of Kaniska about 78 A.D. It is from this Vibhāsā that the name Vaibhāsika was derived. Vibhāsā means "commentary" and the Vaibhāsika philosophy seems to have been so called because it was based on the commentaries rather than on the original texts of the teachings of Buddha. Sanghabhadra's Nyāyānusāra-śāstra,6 otherwise called Kosa-kārakaśāstra, composed about 489 A.D.,7 is a most learned work of the Vaibhāsika philosophy.

Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I, pp. 121, 139 n; and Takakusu's I-tsing, p. xxii.

<sup>2</sup> Vide Takakusu's I-tsing, p. xxi. The Arya Sammitīyas, at any rate their subclass called the Vātsiputrīyas, were also followers of the Vaibhāşika philosophy. The Hindu philosopher Vācaspati Miśra in his Nyāya vārtika-tātparyatīkā 3-1-1 quotes the opinions of the Vaibhāşikas who were called Vātsiputras.

3 This work exists in Chinese and Tibetan: vide Bunyiu Nanjio's

Catalogue of the Chinese Tripitaka, nos. 1273, 1275.

4 This work, too, exists in Chinese and Tibetan: vide Bunyiu Nanjio's

'Catalogue of the Chinese Tripitaka, nos. 1263, 1264.

b Compare the explanation of Vaibhāṣika given by the Hindu philosopher Mādhavācārya in his Sarvadarśana-saṃgraha, chapter on Bauddha-darśana, translated by Cowell and Gough, second edition, p. 24. Vide also Satis Chandra Vidyābhūsana's "Mādhyamika School" in the Journal of the Buddhist Textosciety of Calcutta for 1895, part II, p. 4.

6 This work exists in Chinese and Tibetan; vide Bunyiu Nanjio's

Catalogue of the Chinese Tripitaka, no. 1265.

7 Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix II, no. 95. For Sangha-bhadra, vide also Hwen-thsang's Travel in Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I, pp. 193-194.

part III, p. 18; Takakusu's I-tsing, pp. xxiii, xxiv and xxv; Rhys Davids' article in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, 1891, p. 411, and 1892, pp. 1-37; Rockhill's Buddha, p. 181 f; Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 270-274; and Wijesimha's Mahāvamsa, part I, Chapter V, p. 15.

The name Sautrāntika was derived from Sūtrānta. called in Pali Suttanta, meaning "original text." The Sautrāntika philosophy seems to have been so called because it was based on the original text of the teachings of Buddha rather than on the commentaries thereon. The text on which the Sautrantika philosophy was based belonged to the sect of Arva Sthaviras, called in Pali Theras, who held the First Council in 543 B.C., and possibly also to the sect of the Mahāsāmghikas? who were the first dissenters in 443 B.C. The philosophical principles of this school are said to have been formulated in Kāśmīra 3 during the reign of Kaniska about 78 A.D. by a sage named Dharmottara or Uttara-dharma.4 But the Chinese pilgrim Hwen-thsang. who visited India early in the 7th century A. D., states that the renowned teacher Kumāralabdha of Taksasilā (Taxila in the Punjab) was the founder of the Sautrantika school and wrote several very valuable treatises on it. He is supposed to have lived about 300 A.D. as he was a contemporary of Nagarjuna (q. v.), Ārva Deva (q. v.) and Aśvaghosa. There was another very famous teacher named Srilabdha who wrote Vibhāsā-śāstra (or commentary on a work) of the Sautrantika school. Hwen-thsang saw in Avodhvā the ruins of a Sanghārāma where Srīlabdha resided.

#### MENTION OF LOGIC IN THE WORKS OF THESE SCHOOLS.

23. As none of the old works belonging to the  $Vaibh\bar{a}sika$  or Sautrāntika school has yet become accessible to us, I cannot state whether there is any mention of Logic in those works. But there are ample references to Logic in the works of the Mādhyamika and Yogācāra schools, short accounts of which are given below.

Vide Rhys Davids' Buddhist India, p. 168, and Beal's Fahian and

Sungyun, p. 143.

<sup>2</sup> Vide Watters "On Yuan Chwang," vol. II, p. 161.

<sup>3</sup> Vide the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, vol. I, part III, pp. 18, 19; and Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 59.

<sup>4</sup> For the Dhammuttariya sect, vide Wassilief's Buddhism, p. 233; and Mahāvamsa, part I, chapter V, p. 15, Wijesimha's foot-note.

<sup>5</sup> Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. II, p. 302; and Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 78, where Kumāra-labha stands for Kumāra-labdha.

6 Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I, pp. 225, 226; and Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 67.

<sup>1</sup> Compare the explanation of the term Sautrantika given by the Hindu philosopher Mādhavācārya in the Sarvadarsana-samgraha, chapter on Bauddha-darsana, translated by Cowell and Gough, second edition, p. 26. Vide also Satis Chandra Vidyābhūsana's "Mādhyamika School" in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta for 1895, part II, p. 4.

## ĀRYA NĀGĀRJUNA (ABOUT 300 A.D.).

24. The name Mādhyamika was derived from madhyama. meaning the middle. The Mādhyamika philosophy was so called because it avoided two extremes, i.e., advocated neither the theory of absolute reality, nor that of total unreality, of the world, but chose a middle path, inculcating that the world had only a conditional existence. The founder of this school was Nāgārjuna or rather Arya Nāgārjuna, who was born at Vidarbha (modern Berar) in Mahākośala, during the reign of King Sadvāha or Sātavāha<sup>8</sup> [of the Andhra dynasty]. He passed many of his days in meditation in a cave-dwelling of the Sri-parvata, that bordered on the river Krishnā. He was a pupil of Saraha and is said to have converted a powerful king, named Bhoja Deva. 6 to Buddhism.

#### 1 Compa

# षतो भावाभावान्तद्यरिकतात् सर्वस्वभावानुत्पत्तिस्रचणा ग्रन्यता सध्यसा प्रतिपद्मध्यमी मार्ग इत्यूचिते॥

-Madhyamika Vrtti published by the Buddhist Text Society of

Calcutta, chapter XXIV, p. 185.

Compare the explanation of the term Mādhyamika given by the Hindu philosopher Mādhavācārya, in the Sarvadarsana-samgraha, chapter on Bauddha darsana, translated by Cowell and Gough, second edition, p. 24; and also Satis Chandra Vidyabhusana's History of the Madhyamika Philos-

ophy of Nigārjuna in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, 1897, part IV, pp. 7-20.

\* Vide Hwen-thsang's Travel in Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. II, Book VIII, p. 97, and Book X, p. 210; Watters' "On Yuan Chwang," vol. II, pp. 201-202; and Wassiljew quoted by

Schiefner in the Geschichte des Buddhismus, p. 301.

8 Sadvaha is the same as Sātavāha, which is a general name of the kings of the Andhra dynasty.—Vide Dr. R. G. Bhandarkar's Early

History of the Dekkan, second edition, pp. 25-37.

Nagarjuna wrote an instructive letter to Satavaha[na], whose private name in Chinese was Sh'-yen-töh-cia. This letter is called Arya Nagarjuna Bodhisattva Suhrllekha. It was translated into Chinese in 434 A.D. An English translation of this letter has appeared in the Journal of the

Pali Text Society of London, 1883, pp. 71-75.

4 The Andhra kings ruled the northern portion of the Madras Presidency and the whole of Kalinga, and overthrew the Kanva dynasty in northern India about 31 B.C. They remained powerful up to 436 A.D. They were Buddhists, and it was by them that the magnificent marble stupa at Amaravati was erected.—Vide Sewell's Lists of Antiquities in Madras, vol. II. pp. 141-146.

5 For an account of Sri-parvata or Sri-saila see Hwen-thsang's Life, Introduction, p. xi, by Beal; Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 84; Wilson's Mālatī-Mādhava, act I; and Satis Chandra Vidyabhusana's Notes on Ratnāvalī, pp. 27-29.

6 Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 66, 69-73,

25. Nāgārjuna is said to have lived four hundred years lafter the nirvāṇa of Buddha, that is, in 33 B.C. But he does not appear to me to have so early a date as he was one of the early patrons or founders of the university of Nālandā,² which had not, perhaps, come into existence in the 1st century B.C., and was insignificant³ even at 399 A.D., when the Chinese pilgrim Fa-hian came to visit India. Nāgārjuna is stated by Lama Tārānātha to have been a contemporary of King Nemi Candra, who is supposed to have reigned about 300 A.D.\* The

दे.चिव्रःमानेमाश्रःसःस्त्रश्रःशः भार्त्रःचव्रःचकुःभार्त्रःसःस्। द्रमःश्चिदःमुःविशःदेःद्रचेदःस्युदः। स्मान्त्रेदःमुःविशःदेःद्रचेदःस्युः।

> (Quoted in the Introduction to Segrab-sdon-bu published in Calcutta).

"Four hundred years after Buddha's departure from the world there will appear a Bhikṣu, named Nāgārjuna, who will do good to the believers in the doctrine."

It should be noted that according to some books of Tibet, Buddha was born in 514 B.C., lived 81 years and attained nirvāna in 433 B.C. Nāgārjuna, who was born 400 years after the nirvāna, must, at this calculation, be placed in 33 B.C.

<sup>2</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 66,

69-73.

<sup>3</sup> Fahian describes Nālandā as a mere village Nā-lo: vide Beal's Travels of Fahian and Sungyun, p. 111.

4 According to Lama Tārānātha, Nāgārjuna was a contemporary of King Nemi Candra, whose genealogy is thus traced:—

Akşa Candra

Jaya Candra > Ruled in Aparantaka.

Nemi Candra

Phani Candra

Bhamsa Candra

Ruled in Magadha.

Sala Candra

Candra Gupta

The six kings, beginning with Akşa Candra to Sāla Candra, are stated to have been weak and insignificant, while Candra Gupta, the seventh king,

 $<sup>^1</sup>$  It is prophesied in the Mañju-śrī-mūla-tantra (called in Tibetan Ijjam-dpakrtsa-rgyud) that :—

latest date that can be assigned to Nāgārjuna is 401 A.D., when his biography was translated into Chinese by Kumārajīva.

26. Nāgārjuna's Mādhyamika-kārikā is the first work of the Mādhyamika philosophy. In it he has occasionally referred to certain technicalities of Logic, such as the fallacy of Sādhyasama² (petitio principii) in chapter IV. He was the author of several other works³ on the Mādhyamika philosophy, such as the (1) Yukti-ṣaṣṭikā kārikā or sixty memorial verses on argumentation, (2) Vigraha-vyavartanī kārikā, or memorial verses on conquering disputes, and (3) Vigraha-vyavartanī vṛtti or a commentary on the Vigraha-vyavartanī kārikā.⁴ In these works he has, as the titles indicate, largely employed the methods of Logic ⁵ to establish the abstruse conclusions of the Mādhyamika philosophy.

# ARYA DEVA (ABOUT 320 A.D.).

27. Deva<sup>6</sup> or rather Arya Deva was the next writer on the  $M\bar{a}dhyamika$  philosophy. He is otherwise known as Karnaripa,

is described as having been very powerful. This Candra Gupta, who "did not take refuge in Buddha," may be the same who founded the Gupta era in 319 A.D. The reigns of his predecessors were very short. Nemi Candra may be assigned to about 300 A.D.—Cf. Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 80-83.

Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix

I, No. 3.

<sup>2</sup> The Mādhyamika-kārikā with the vrtti of Candra Kīrti has been published by the Buddhist Text Society of Calcutta; the work is being republished in the St. Petersburg Buddhist Text series under the editorship of Professor De La Vallee Poussin. The following verse refers to the fallacy of Sādhyasama:—

# विश्व सं परी हारं क्षते ग्रुन्यतया वहेत्। सर्वं तस्यापरिकृतं समं साधेन जायते॥

(Mādhyamika-kārikā, chapter IV).

<sup>8</sup> For an account of some of the works on the Tantra by Nagārjuna, wide Satis Chandra Vidyabhusana's Introduction to the Sragdharāstotra in the "Bibliotheca Indica" series. For the latest researches in the medical works of Nāgārjuna, see Dr. Palmyr Cordier's "Introduction A L'Etude des Traites Medicaux Sanseritas" printed in Hanoi, 1903; and for his hymns such as असभातुस्त, निष्पमस्त etc., vide Tangyur, Bstodpa, vol. Ka.

<sup>4</sup> For an account of these works, vide the article "Indian Logic as preserved in Tibet, No. 3," by Satis Chandra Vidyabhusana in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, new series, vol. III, No. 7, 1907. For the philosophical works of Nagarjuna, see Bunyiu Nanjio's

Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I, no. 3.

<sup>5</sup> The Nyāya-dvāra-tarka-śāstra, as noticed in Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Nos. 1223, 1224, is not a work of Nagarjuna but of Dignāga.

6 Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix

Kāṇa Deva, Nila-netra and Pingala-netra. He was born in Southern India and was an eminent disciple of Nāgārjuna. According to Hwen-thsang, he visited the countries of Mahā-kośala, Srughna, Prayāga, Coļa and Vaiśāli, in all of which he won great renown by defeating the Tirthikas and preaching the true doctrines of Buddha. According to Lama Tārānātha, Deva resided for a long time in Nālandā, where he was a Pandita. He flourished during the reign of Candra Gupta, whose date is supposed to be about 320 A.D. The latest date that can be assigned to Deva is 401 A.D., when his biography was translated into Chinese by Kumārajīva. He wrote numerous works on the Mādhyamika philosophy, such as the Śataka-śāstra, Bhrama-pramathana-yukti-hetu-siddhi, etc., all of which bear evidences of his knowledge of Logic.

# LOGIC OF THE YOGACARA SCHOOL (ABOUT 300-500 A.D.).

28. The word  $Yog\bar{a}c\bar{a}ra$  is compounded of yoga meaning 'meditation' and  $\bar{a}c\bar{a}ra$  meaning 'practice.' The  $Yog\bar{a}c\bar{a}ra$  or the contemplative system was so called because it emphasised the practice of meditation as means of attaining  $Bh\bar{u}mis$ ? or the seventeen stages of Buddhistic Perfection. The chief dogma established in it is  $\bar{a}laya$ - $vij\tilde{n}\bar{a}na$ , 8 the basis of conscious states,

I, No. 4; and Watters' "On Yuan Chwang," vol. I, p. 321, vol. II, pp. 225-226.

<sup>1</sup> Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I, Book IV, pp. 186-190, Book V, p. 231; vol. II, Book X, pp. 210, 227, Book XII, p. 302, Book VIII, pp. 98-102.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Lama Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 83-86 and 93.

<sup>3</sup> Vide foot-note 4, p. 69.

<sup>4</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I, No. 4.

<sup>&</sup>lt;sup>5</sup> Vide Satis Chandra Vidyabhusana's "Indian Logic as preserved in Tibet No. 3" in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, new series, vol. III, No. 7, 1907.

<sup>&</sup>lt;sup>6</sup> The Yogācāra philosophy is generally known in China, Tibet and Nepal as Yogācārya. For an account of this system, vide Watters' "On Yuan Chwang," vol. I, p. 356; Dr. Schlagintweit's Buddhism quoted in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta for 1895, part II, Appendix IV.

Compare explanation of the word Yogācāra given by the Hindu Philosopher Mādhavācārya in the Sarvadarsana-samgraha, chapter on Bauddhadarsana, translated by Cowell and Gough, second edition, p. 24. Vide also Satis Chandra Vidyabhusana's "The Mādhyamika School" in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, 1895, part II, p. 4.

<sup>7</sup> Vide Dharma-samgraha, LXIV and LXV, edited by Max Müller and Wenzel.

<sup>&</sup>lt;sup>8</sup> For an explanation of *ālaya-vijñāna*, see Satis Chandra Vidyabhusana's note on p. 2 of the Lankāvatāra Sūtra, Calcutta Buddhist Text Society's edition, and also see p. 45 of the same work.

which is the same as our 'ego' or 'soul.' It is not known who was the founder of the Yogācāra school, but in the Tibetan and Chinese books the Lankāvatāra Sūtra, Mahāsamaya Sūtra, Bodhisattva-caryā-nirdeśa and the Sapta-daśabhūmi-śāstra-yogācārya have been named as the prominent old works of the system.'

# THE Lankavatara Sutra (ABOUT 300 A.D.).

29. The Lańkāvatāra Sūtra<sup>2</sup> is a very sacred work as it is one of the *Nava Dharmas*. The exact date of it is unknown, beyond the fact that it was translated into Chinese in 443 A.D.<sup>8</sup> The approximate date seems to be 300 A.D., for, it existed at or before the time of Ārya Deva who mentions it.<sup>4</sup> This work speaks in a prophetic style of the *Naiyāyikas* (dialecticians) and *Tārkikas* (logicians). Thus in chapter II of the work Mahāmati asks Buddha:—

"Say how in the time to come Naiyāyikas will flourish?"5

1 Vide Section Mdo of the Tangyur; Lama Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 111 f; Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I, No. 1; Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. I, p. 226, vol. II, pp. 220, 275; and Watters' "On Yuan Chwang," vol. I, p. 371.

<sup>2</sup> The Sanskrit original of this work is being published by the Buddhist Text Society of Calcutta under the editorship of Rai Sarat Chandra Das, C.I.E., and Dr. Satis Chandra Vidyabhusana. The work also exists in Chinese and Tibetan. Hwen-thsang mentions the Lankāvatāra, vide Beal's Buddhist Records of the Western World, Book XI, p. 251.

Beal's Buddhist Records of the Western World, Book XI, p. 251.

Vide an account of the Lankāvatāra Sūtra by Satis Chandra Vidyabhusana in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, 1906.

<sup>8</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catologue of the Chinese Tripitaka, nos. 175, 176 and 177.

4 Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, nos. 1259, 1260 and Appendix I, no. 4.

5 The Sanskrit original runs as follows:—

# नैयायिकाः कथं ब्रुष्टि भविष्यन्ति सनागताः।

(Lankāvatāra Sūtra, Asiatic Society of Bengal's MSS., chapter II, leaf 11).

The Tibetan version runs thus:—

श.प्ट्या.रश.य.प्विट.च.चाश्चटश ।। हो.च.र्थश्याचिट.हा.से.येर ।

(Kangyur, Mdo, vol. V, Asiatic Society of Bengal's xylograph).

"How is tarka (reasoning or argumentation) corrected, and how is it carried on ?"1

Again in chapter X of the work we read:—

"Whatever is produced is destructible: this is the conclusion of the Tarkikas."2

# MAITREYA (ABOUT 400 A.D.).

30. The date of the Mahāsamaya-sūtra is not known. The Bodhisattva-carvā-nirdeśa was translated into Chinese during 414-421 A.D. and the Sapta-daśa-bhūmi-śāstra-vogācārva in 646-647 A.D. The author of these two works was Maitreya (called in Chinese 'Mirok'), who lived 900 years after the nirvāṇa of Buddha, that is about 400 A.D.<sup>5</sup> He is reported by Hwen-thsang to have communicated the materials of three Buddhist treatises to Arva Asanga while the latter was residing in a monastery in Avodhvā. In the Sapta-daśa-bhūmi-śāstrayogācārya 7 Maitreya has discussed certain topics of Logic, a

## <sup>1</sup> कथं चित्राधाते तर्कः कथं तर्कः प्रवर्तते ।

(Lankāvatāra Sūtra, chapter II, leaf 11, A.S.B. MSS.)

(Kangyur, Mdo, vol. V.)

# क्रतकस्य विनामः स्थात् तार्किकाणामयं नयः।

(Lankāvatāra Sūtra, chapter X, leaf 143, A.S.B. MSS.)

# विश्वत्रस्थासरायह्नासरायगुरा। परे के हें नामो खरामी **र्**द्धा

(Kangyur, Mdo, vol. V.)

3 Vide Dr. Schlagintweit's Buddhism quoted in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, 1895, part II, Appendix IV, p. 16.

4 Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I,

<sup>5</sup> Vide "Hindu Logic as preserved in China and Japan," by Dr.

6 Vide Watters' "On Yuan Chwang," Vol. I, pp. 355-56. The three treatises are: —Saptadasabhūmisāstra-yogācārya, Sūtrālankāratīkā and Madhyānta vibhāga śāstra.

It is perhaps this work which is called Yoga by Dr. Sugiura, vide

its Chinese version Yuka Ron, Book XV.

short account of which is given below from the researches of

Dr. Sugiura.1

- 31. Maitreva mainly discussed the practical questions of Logic as is evident from the titles of some of the chapters of his work, viz.: (1) Of Kinds of Debate, (2) Of Occasions of Debate, (3) Of the Attributes of the Debator, (4) Of Defeat, etc. But occasionally there was mixed in with the discussions some Pure Logic too. A thesis [pratijñā], according to Maitreya, is to be supported by a reason [hetu] and two examples [drstanta]. Validity of the reason and of the examples requires that they be based either (1) on fact [pratyaksa], (2) on another inference [anumāna], or (3) on holy saying [āgama]. Analogy or Comparison [upamāna] is omitted. The form of reasoning is illustrated as follows :-
  - 1. Sound is non-eternal.

2. Because it is a product,

3. Like a pot, but not like ether  $[\bar{a}k\bar{a}sa]$ ,

4. A product like a pot is non-eternal,

5. Whereas, an eternal thing like ether is not a product.

# ĀRYA ASANGA (ABOUT 450 A.D.).

32. Asanga,<sup>2</sup> called in Chinese Mucak, was born in Gandhara (modern Peshwar). He was at first an adherent of the Mahīśāsaka sect and followed the Vaibhāsika philosophy of the Hinayana. Later on he became a disciple of Maitreya and adopted the Yogācāra philosophy of the Mahāyāna. He is said to have lived for some years as a pandita in Nālandā.4 He lived about 450 A.D.<sup>5</sup> The latest date that can be assigned to him is 531 A.D.,6 when one of his works, called the Mahavana-samparigraha-śāstra, was translated into Chinese. Hwen-thsang in the 7th century A.D. saw the ruins of Saṅghārāmas in Kauśāmbi and Ayodhya, where Asanga resided for some years.7 He wrote 12 works, most of which still exist in Chinese and Tibetan versions.8

<sup>1</sup> Vide "Hindu Logic as preserved in China and Japan," p. 30.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Hwen-thsang's Travel in Beal's Buddhist Records of the Western World, Vol. I, pp. 98, 227 and 236.

<sup>3</sup> Vide Watters' "On Yuan Chwang," Vol. I, p. 357.

<sup>4</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 122. <sup>5</sup> Asanga is approximately placed at 450 A.D. as he was the eldest-brother of Vasubandhu (q.v.) who lived about 480 A.D.

<sup>6</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I,

<sup>7</sup> See Beal's Buddhist Records, Vol. I, pp. 98, 227, 236.

<sup>8</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I, no. 5.

- 33. Dr. Sugiura has ascertained from Chinese sources that Asanga treated Logic in the tenth volume of Genyo, in which he simply reproduced the conclusions of his master Maitreya, and also in the sixteen volumes of Zaschuh, in which he showed a slight originality. Asanga's form of reasoning, which is somewhat different from Maitreya's, is given below:—
  - Sound is non-eternal.

2. Because it is a product,

3. Like a pot (but not like ether);

- 4. Because a pot is a product it is non-eternal; so is sound, as it is a product:
- 5. Therefore we know sound is non-eternal.

Here we find that Asanga made some improvement on the form of syllogism adopted in the Logic of his master. The basis of Maitreya's inference, so far as it related to the connection between "produced-ness" and "non-eternality," was a mere analogy founded upon a single instance. This connection (between "produced-ness" and "non-eternality" in the case of the pot) might be accidental. Asanga emphasised the essential connection between "produced-ness" and "non-eternality" by saying "Because a pot is a product, it is non-eternal." In so doing he appealed not merely to an instance but to a law.

# VASUBANDHU (ABOUT 480 A.D.).

34. Vasubandhu,² called in Chinese Seish, was born in Gāndhāra (modern Peshwar), where a tablet to his memory was seen by Hwen-thsang in the 7th century A.D. His father's name was Kauśika. He began his career as a Vaibhāṣika philosopher of the Sarvāstivāda sect, but was later converted by his eldest brother Asanga to the Yogācāra school of the Mahāyāna. He passed many years of his life in Sākala, Kauśāmbi and Ayodhyā, in the last of which places he died at the age of eighty years. He was a friend of Manoratha, a master of the Vaibhāṣika Sāstra, who flourished in the middle of the thousand years after the nirvāṇa of Buddha, that is before 500 A.D. He was a contemporary of another Vaibhāṣika

1 Vide "Hindu Logic as preserved in China and Japan" by Dr. Sugiura, p. 31.

The original Sanskrit text of Asanga's Vajracchedikā has been published in the Anecdota Oxoniensia edited by Professor Max Müller.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Hwen-thsang s Travel in Beal's Buddhist Records of the Western World, Vol. I, pp. 98, 105, 172, 193, 225, 236; and Watters' "On Yuan Chwang," Vol. I, p. 210.

teacher, named Sanghabhadra, who lived about 489 A.D.¹ So we may approximately fix the date of Vasubandhu at about 480 A.D. His biography ³ was translated from Sanskrit into Chinese during 557-569 A.D. Vasubandhu was the author of a large number of very valuable works ³ including the Tarka-śāstra, which consists of three chapters and is perhaps the first regular Buddhist work on Logic. This work was translated into Chinese in 550 A.D. The Chinese version still exists, while the Sanskrit original has been long lost. The work appears to have been translated into Tibetan too, but my persistent efforts to discover the Tibetan version were unsuccessful.

35. Dr. Sugiura from Chinese sources has ascertained that in the 7th century A.D., while Hwen-thsang was in India, he saw three other books on Logic attributed to Vasubandhu, which are called in Chinese Ronki, Ronshiki and Ronshin, respectively. In the Ronki, quoted by Kwei-ke, Vasubandhu maintained that a thesis can be proved by two propositions only, and that, therefore, the necessary parts in a syllogistic inference are only three (i.e. pakṣa or minor term, sādhya or major term

# चनार्थाप्त्रीत साधास्त्र सिदेवेडिड्डाइतिः। वर्षा सानद्रसङ्खातेऽधेवं न्यायविद्रो विद्रुः॥ २०॥

(Nyâyāvatēra of Siddhasena Divākara, edited by Satis Chandra Vidyabhusana and published by the Indian Research Society of Calcutta).

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> Sanghabhadra translated Vibhāṣā-vinaya into Chinese in 489 A.D. Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix II, No. 95.

Mr. Takakusu, in a very learned article on Paramārtha's Life of Vasubandhu and the date of Vasubandhu published in the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January 1905, says that Saṅghabhadra, contemporary of Vasubandhu, was the translator of the Saṁantapāsādikā of Buddhaghoşa into Chinese in 488 A.D.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitala, Appendix I, No. 6. The statement that there was an older translation of the life of Vasubandhu by Kumārajīva A.D. 401-409 but that it was lost in 730 A.D., cannot be accepted without further testimony. Takakusu says that "some Catalogues mention by mistake that such a work was then in existence": vide Journal of the Royal Asiate Society of Great Britain and Ireland, January 1905, p. 39.

<sup>3</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I, No. 6.

<sup>4</sup> Vide Dr. Sugiura's "Hindu Logic as preserved in China and Japan," b. 32.

b The Jaina logician Siddhasena Divākara probably refers to Vasubandhu, when he says that according to some logicians antarvyāpti (internal inseparable connection) consisting of paksa or minor term, sādhya or major term and hetu or middle term is quite enough in establishing a thesis, and that dṛṣṭānta or example is altogether useless. Siddhasena Divākara writes:—

and hetu or middle term). But it is to be regretted that these three logical works are lost, and we cannot know how far the theory of syllogism was developed in them. The work in Chinese from which alone we can know anything of his Logic is his polemic against heresies (Nyojits-ron). In this book he gives the following form of reasoning:—

1. Sound is non-eternal,

2. Because it is a product of a cause,

- 3. Things produced by a cause are non-eternal like a pot, which is produced by a cause and is non-eternal;
- 4. Sound is an instance of this (kind),
- 5. Therefore sound is non-eternal.

<sup>1</sup> Is this the same work as the Tarka-śāstra already referred to ?

## CHAPTER II.

# SYSTEMATIC BUDDHIST WRITERS ON LOGIC (500—1200 A.D.).

#### LOGIC DISTINGUISHED FROM PHILOSOPHY.

36. In the previous chapter we have seen that from the origin of Buddhism in the 6th century B.C. to its expansion into four philosophical schools in the 4th century A.D., there were no systematic Buddhist works on Logic, but only a few stray references to that science in the works on philosophy and religion. During 400—500 A.D., Maitreya, Asanga and Vasubandhu handled Logic, but their treatment of it was merely incidental, being mixed up with the problems of the Yogācāra and Vaibhāsika schools of philosophy. Vasubandhu's three works on Pure Logic mentioned by Hwen-thsang are now lost and consequently their merits cannot be judged. With 500 A.D. began a period when Logic was completely differentiated from general philosophy, and a large number of Buddhist writers gave their undivided attention to that branch of learning. Dignāga is the earliest known writer of this period.

# 37. Ācārya Dignāga—Father of Mediæval Logic.

[Flourished in Andhra, modern Telingāna in the Madras Presidency, about 500 A.D.]

The likeness of Dignāga reproduced in the next page is taken from the Tibetan Tangyur (Mdo, Ce, folio 1) which was put in its present form by the celebrated Lama Bu-ston, who passed the last days of his life at the monastery of Sha-lu, twelve miles south-east of Tashi lhun-po. Bu-ston, who lived early in the fourteenth century A.D.,² must have copied the likeness from some earlier specimen, which was taken to Tibet during her intercourse with India between 600 A.D. and 1200 A.D. "A peculiarity of this likeness is its cap. In the early Buddhist Church monks were not allowed to wear any head-dress (vide the Pātimokkha rules of the Vinaya Pitaka). With the introduction of Mahāyāna in the first century A.D. by Kaniṣka, a great change was effected in the dress of monks, and caps of various shapes were invented. The hat worn here is called Panchen-shwa-dmar 8 or "Pandita's red cap," with a pointed

<sup>1</sup> Vide Book II, Chapter I, under the head "Vasubandhu."

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Sarat Chandra Das's Tibetan Dictionary, p. 870.

<sup>3</sup> Vide Waddell's Lamaism, pp. 194-196.

peak and long lappets. The lappets of the cap were lengthened in proportion to the rank of the wearer.

It is not known when the "Pandita's cap" was first introduced. It is said to have been taken to Tibet in 749 A.D. by Sānta Rakşita. "Pandita" was a degree which was conferred by the Vikramasilā University on its successful candidates. It is not known what title the Uni-



यक्ष्यत्मुरःसर्रे डेम्बिना क्षेत्रं द्वेन्यः स्ट्रान्डिम्।

versity of Nālandā conferred on its distinguished students. Perhaps in that university, too, the title "Paṇḍita" was recognised, and "Paṇḍita's cap" was possibly a distinctive badge of the scholars of that famous university where Dignāga distinguished himself in philosophical controversies.

The woollen shawl worn here is indicative of the fact that after Buck

dhism had spread into cold climes, monks like Brahmanic sages were allowed to put on suitable warm clothes. There is also in the palms of the image a thunderbolt called in Sanskrit Vajra and in Tibetan Dorje, which is a remover of all evils. The halo round the head of the image indicates that Dignāga was a saint.

#### LIFE OF DIGNAGA (ABOUT 500 A.D.).

38. Dignāga or rather Ācārva Dignāga is called in Tibetan Phyogs-glan. He was born in a Brāhmana family in Simhavaktra near Kāñci, modern Conjeeveram in the Madras Presidency. By Nāgadatta, a Pandita of the Vātsīputrīva sect, he was admitted to the religious system of that sect and attained erudition in the Tripitaka of the Hinayana. Afterwards he became a disciple of Acarya Vasubandhu with whom he studied all the Pitakas of the Mahayana and Hinayana. He miraculously saw the face of Manjusri, the Buddhist god of learning, from whom he received inspiration in the Law (Dharma). A few years later he was invited to Nālandā (Vide appendix A) where he defeated Brāhmana Suduriava and other Tirtha dialecticians and won them to the doctrine of Buddha. Since he had refuted chiefly the Tirtha controversialists he was called the "Bull in discussion" (Sanskrit: Tarkapungava, and Tibetan: Rtsodpahi-khyu-mchog). He travelled through Orissa and Mahārāstra to the south, meeting the Tirtha controversialists in discussions. At Mahārāstra he is said to have resided frequently in the Ācāra's Monastery.2 At Orissa he converted Bhadra Pālita, Treasury-minister of the king of the country, to Buddhism. He was a man of vast learning and wisdom, and practised during his life-time twelve tested virtues. He is said to have died in a solitary wood in Orissa.

39. Dignāga must have lived before 557—569 A.D.3 when two of his works were translated into Chinese. The early limit

<sup>1</sup> This account of Dignāga is taken from Lama Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 130—135. Lama Tārānātha also relates that Dignāga frequently resided in Orissa in a cavern of a mountain called Bhorasilā where he used to give himself up to contemplation. He was specially versed in incantation formulas. It is 'stated that the stem of a myrobalan tree called Muştiharītakī in the garden of Bhadra Pālita in Orissa entirely withered, but it revived in seven days after Dignāga had uttered incantation for its restoration. For a fuller account of Dignāga vide Satis Chandra Vidyabhusana's "Dignāga and his Pramāṇa-samuccaya" in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, Vol I, No. 9, 1905.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Watters' On Yuan Chwang, Vol. II, p. 122.

<sup>8</sup> Vide Bynyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, App. 1, No. 10, where Dignāga is called Jina. The Chinese name of Dignāga has been wrongly rendered as Jina by Japanese writers as well as Rev. Beal.

of his date in 480 A.D. when his teacher Vasubandhu lived. Dignāga flourished possibly about 500 A.D. when the Buddhist kings of the Pallava i dynasty ruled the eastern coast of Southern India.

40. We have already seen that Dignāga travelled in Nālandā, Orissa. Mahārāstra and Daksina (Madras) entering everywhere into disputes with controversialists. He attacked his opponents as frequently as he was attacked by them. His whole life was passed in giving blows and receiving counterblows. On account of this love of discussion he was, during his life-time, called the "Bull in discussion" (Tarka-pungava). Even his death did not terminate the great intellectual war in which he had been engaged: though he could no longer offer any violence, his opponents continued to fall upon him with force. Mark the volleys on his dead body coming from no mean warriors! Kālidāsa,3 the prince of poets, warns his poem to avoid the "rugged hand" (sthūla-hasta) of Dignāga. Udvotakara, the eminent logician, calls Dignaga "a quibbler" (Kutārkika). Vācaspati Miśra 6 describes him as "an erring one" (bhrānta) and speaks of his "blunders" (bhrānti). Mallinātha " compares him with a "rock" (adrikalpa). Kumārila Bhatta and Pārtha-sārathi Miśra turn their arrows against him.

<sup>1</sup> Vide Lama Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 134.

3 Vide Meghadūta, Pūrva-megha, verse 14.

# यदस्तपादः प्रवरो मृनीनां स्माय मास्तं जगतो जगादः कुतार्किकाज्ञाननिष्टत्तिस्तुः करिष्यते तस्य मया निवन्धः ॥

Udyotakara's Nyāya-vārtika, Introductory stanza, p. 1, in the Bibliotheca Indica series. Compare also Nyāya-vārtika, 1-1-4, pp. 43—44; 1-1-5, p. 52; 1-1-6, pp. 60—61; 1-1-7, p. 63, etc.

1-1-5, p. 52; 1-1-6, pp. 60—61; 1-1-7, p. 63, etc.

5 Vide Vācaspati Miśra's Nyāya-vārtika-tātparya-tīkā, edited by Gangadhara Sastri, 1-1-1, pp. 1, 31; 1-1-4, pp. 76—77, 97—98, 102; 1-1-5, p. 102; 1-1-6, p. 135, etc.

6 Mallinātha's commentary on verse 14 of the Meghadūta, Pūrva megha.
7 Vide Pārtha-ārathi's gloss on 59—60, Anumānapariccheda of Kumā-rila Bhatta's vārtika on the 5th Sūtra of Jaimini.

<sup>1</sup> On the downfall of the Andhras in 436 A.D., the Pallavas rose to power. They were in their turn driven out of their northern possessions, the kingdom of Vengi, by Kubja Visnuvardhana of the Eastern Chalukya dynasty. During 552—580 A.D., Kāncī, the capital of the Pallava kings, was captured by Vikramāditya I. of the Western Chalukya dynasty. Vide Sewell's Lists of Antiquities, Madras, Vol. II, pp. 141,146,148, 149 and 211, 212.

Vedantins and Jainas were not inactive in their hostility. Even Dharmakirti 2 the Buddhist sage attempted to oppose him. Dignāga must have been a very strongly built man, both physically and mentally, otherwise he could hardly have lived for a single day under assaults from so many sides. Those of his works which still exist enable us somehow to measure his strength and his weakness.

## Dignāga's Pramāna-samuccaya.3

The Pramāna-samuccaya is one of the grandest literary monuments of Dignaga. It is said to have been composed while he was residing on a solitary hill near Vengi in Andhra 4 (modern Telingana) in the Madras Presidency. Seeing

1 Vide the works of Prabhācandra and Vidyānanda referred to in the J.B.B.R.A.S., Vol. XVIII, p. 229. The Digambara Jaina logician Dharmabhūsana, in controverting the Vaisesika doctrine of Sāmānya, generality, quotes in support of his own conclusion the following verse of Dignaga :-

# न याति न च तवासे न पचादिस्त नांग्रवतः। जदाति पृथ्वे बाधारमदो समनसम्मतिः॥ र्ति दिश्वाम् चितद्वष्मण्यप्रसर्प्रसङ्ख्यात्

(Quoted in Dharmabhūṣaṇa's Nyāyadīpikā, Chap. III).

The same verse has been quoted in a little altered form by the Hindu philosopher Mādhavā ārya as follows :-

# न याति न च तवासीद्श्वि पञ्चात्रवांश्वत्। जराति पूर्वे नाधारमदी यसनसम्मतिः॥

(Sarvadaríana samgraha, chapter on Bauddhadaríana).

<sup>2</sup> Vide the head "Dharmakirti" which follows.

3 The account of the composition of the Pramana-samuccaya given here is taken from Lama Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiofner, pp. 132, 133; and the Tibetan Pag-sam-jon-zang edited by Rai

Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., pp. 62, 75. 100 and LXVII.

Vide Hwen-thsang's Travel in Beal's Buddhist Records of the Western World, Vol. II, pp. 218, 219 and 220 where the Chinese term for Dignaga is wrongly rendered as Jina. Hwen-thsang gives the following account of the composition of the Pramana-samuccaya:--" When Dignaga began to compose a useful compendium [presumably the Pramana-samuecaya] for overcoming the difficulties of the Hetuvidya-sastra, the mountains and valleys shook and reverberated; the vapour and clouds changed their appearance, and the spirit of the mountain appeared before him, asking him to spread abroad the sastra (Hetuvidye). Then the Bodhisattva (Dignaga) caused a bright light to shine and illumine the dark places. Surprised at this wonder, the king of the country (Andhra) came near him and asked whether he was entering into nirvana. When the king spoke of the infinite bliss of nirvāṇa Dignāga resolved to enter into it. Mañthat the Sāstras on Dialectics written earlier by him remained scattered about, he resolved to collect them. Accordingly, putting together fragments from particular works, he engaged himself in compiling in verse a compendium called the Pramāṇasamuccaya. While he was writing the opening lines the earth

Dignāga and Iśvarakṛṣṇa.

trembled and all the places were filled with light and a great tumult was audible. A Brāhmana named Īśvara-

krsna surprised at this wonder came to Ācārya Dignāga, and finding that he had gone out to collect alms, wiped out the words he had written. Dignaga came and rewrote the words and İsvara-krsna wiped them out again. Dignāga wrote them a third time and added: "Let no one wipe this out even in joke or sport, for none should wipe out what is of great importance; if the sense of the expression is not right, and one wishes to dispute on that account, let him appear before me in person." When after Dignaga had gone out to collect alms, the Brāhmana again came to wipe out the writings he saw what was added and paused. The Acarva returning from his rounds for meal met the Brāhmana: they began controversy, either staking his own doctrine. When he had vanquished the Tirtha (Brāhmana) several times and challenged him to accept the Buddhist doctrine, the Tirtha scattered ashes pronouncing incantations on them, and burnt all the goods of the Ācārya that happened to lie before him; and when the Ācārva was kept back by fire the Tirtha ran away. Thereupon Dignaga reflected that since he could not work the salvation of this single individual, he would not be able to work that of others. thinking he was on the point of giving up his purpose of compiling the Pramāṇa-samuccaya when the Bodhisattva Ārya Mañjuśrī miraculously appeared before him in person and said:-

"Son, refrain, refrain: the intellect is infected by arguing with mean persons Please know that when you have demonstrated it this Sästra cannot be injured by the host of Tīrthas. I undertake to be your spiritual tutor till you have attained the

I Isvarakışna here referred to was very probably the author of the Sāmkhya kārikā.

juśrī, the god of learning, knowing his purpose was moved with pity. He came to Dignāga and said: "Alas! how have you given up your great purpose, and only fixed your mind on your own personal profit, with narrow aims, giving up the purpose of saving all." Saying this he directed him to explain the Yogācāryabhūmi-śāstra and Hetuvidyā-śāstra. Dignāga receiving these directions, respectfully assented and saluted the saint. Then he gave himself to profound study and explained the Hetuvidyā-śāstra and the Yoga discipline.

stage of perfection. In later times this sastra will become the sole eye of all the śāstras." |

So saying Manjusri disapppeared and Dignaga resumed his

work and completed the Pramana-samuccaya.

The Pramāna-samuccaya<sup>2</sup> is a Sanskrit work written in anustubh metre. The Sanskrit original of it is lost but a Tibetan translation still exists. The translation was prepared by an Indian sage named Hema Varma (in Tibetan: Gsergyi-go-cha) and a Tibetan interpreter named Dad-pahi-ses-rab in the monastery of Ses-pahi-dge-gnas. It occupies folios 1-13 the Tangyur, section Mdo, volume Ce.3 In Tibetan it is called Tshad-mahi-mdo-kun-las-btus-pa (=Pramāna-sūtrasamuccaya) or briefly Tshad-ma-kun-las-btus-pa (=Pramāṇasamuccaya) signifying a compilation of aphorisms on Pramāna, It begins thus:—"Bowing down before valid knowledge. Sugata—the teacher and protector—who is *Pramāna* incarnate, and benefactor of the world, I, for the sake of expounding Pramāna (valid knowledge), put together here various scattered matters, compiled from my own works." 4 In the closing lines

મિંડ નો વચ્ચ વસાવ ઢેંસાવડે ત્યાસુ ચેવાસ ઢેંવાસ નેસ વોલેંડ સે

<u>ਜ਼ੑੑ</u>ਫ਼੶ਜ਼ੵੑਖ਼੶ਖ਼੶ਖ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ੵ੶ਜ਼ਸ਼੶ਫ਼ੑ੶ਜ਼ੵਜ਼ਖ਼ੑ੶ਜ਼ੑਖ਼ਖ਼੶ਖ਼ੑ੶ਜ਼੶ਖ਼ੑਜ਼ੑਸ਼੶ਜ਼ੵੑ੶। **ૈકુઃમદ્રેઃન્ફાનફ્રના કેંકા**ંગૃકાનું) સેનાના હેના

Pag-sam-jon-zang, edited by Rai Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., p. 101.

<sup>2</sup> Probably the same as "The Sastra on the grouped inferences," vide Takakusu's 1-tsing, p. 167.

3 The volume Ce of the Tangyur, section Mdo, was put at my disposal by the India Office, London, through Mr. Thomas.

क्र-अर-मिर-राज्यालय्वरार-पवर्। नर्भाने क्रार्केन्सा देशें र देससा दरेर माउमा नु।।

(Tangyur, Mdo, Ce, folio 1).

it is stated that "Dignāga, the subduer of controversialists in all regions and the possessor of elephantine strength, compiled this from his own works."

43. It is divided into six chapters which are named respectively: (1) Perception (Sanskrit: Pratyaksa, Tibetan: Mnonsum); (2) Inference for one's own self (Sanskrit: Svārthānumāna, Tibetan: Ran-don-gyi-rje-dpag); (3) Inference for the sake of others (Sanskrit: Parārthānumāna, Tibetan: Gshan-gyi-don-gyi-rje-dpag); (4) Three characteristics of the Middle Term (Sanskrit: Tri-rūpa-hetu, Tibetan: Tshul-sum-gtan-tshigs) and Rejection of Comparison (Sanskrit: Upamāna-khandana, Tibetan. Dpe-dan-dpe-ltar-snan-pa); (5) Rejection of Credible Word or Verbal Testimony (Sanskrit: Sabdānumānanirāsa, Tibetan: Sgrar-je-dpag-min); and (6) Parts of a syllogism (Sanskrit: Nyāyā-vayava, Tibetan: Rigs-paḥi-yan-lag).

44. Dignāga does not give any formal definition of Perception.

Perception.

But he describes Perception as that which is freed from illusory experiences and is unconnected with name, genus, etc.<sup>2</sup> Suppose a man in the twilight mistakes a rope for a snake: his experience of the snake is merely illusory

# द्वेचिश्व.क्षेत्रस्य विद्यान्त्रस्य विद्यान्त्रस्य ।। प्रत्यक्षः स्टर्गेन्द्रस्य विद्यान्त्रस्य ।। इत्विक्षः क्षेत्रस्य विद्यान्त्रस्य ।।

(Tangyur, Mdo, Ce, folio 13).

 $^2$  In chapter I of the Pramāṇa-samuccaya, Dignāga describes Perception as follows: —

अट्व-शुक्राह्मायान्द्रम्यः । अट्न-शुक्राह्मायान्द्रम्यः ।

The Sanskrit equivalents for those two lines are as follows:-

# प्रत्यचं कस्पनापीढं नामजात्याद्यसंयुतम् ॥

(Pramāṇa-samuccaya, chapter I).

The first of these lines has actually been quoted, and Dignaga's whole theory of Perception severely criticised, by the Hindu logician Udyotakara in his Nyāya-vārtika, 1-1-4.

and is not, according to Dignaga, an act of Perception. Dignaga contends that Perception is also not connected with name, genus, etc. Suppose I see a cow. This cow, which I see, is a Its infinite peculiarities can only be realised peculiar one. by me who have seen it. If I proceed to indicate this cow to other persons by saying that I saw a cow which is named Dittha or which is red, etc., I can only convey to those persons the idea of a cow of a certain class, that is, a cow possessing the common characteristics of a class of cows, but can never express to them the individual cow which I saw. Hence it follows that (a result of) Perception cannot be properly expressed by name, genus, etc. But very different is the case with inference. Knowledge derived through inference is general, and can be well expressed by name genus, etc., whereas that derived through Perception is particular, and is incapable of being properly communicated to others by name, genus, etc.

45. In the chapter on Perception Dignāga has criticised the Hindu logician Vātsyāyana, who concluded that the mind

Dignāga criticises Vātsyāyana.

(manas) was a sense-organ, because it
was accepted as such in several systems
of philosophy, and the view was not opposed in the Nyāya-sūtra according to the maxim "if I do not
oppose a theory of my opponent" it is to be understood I approve of it." Dignāga criticises this maxim of Vātsyāyana
saying: "if silence proved assent it was useless for the Nyāyasūtra to mention other sense-organs."

2

मनसः दुन्द्रियभावाञ्च वाचं जन्नणामर्गितः तन्नामरसमाचाराचैतत् प्रत्येतस्यमिति पर्मतमप्रतिषदमन्मतमिति चितन्त्रयृक्तिः।

(Nyāyabhāşya, 1-1-4).

<sup>2</sup> Dignāga writes:-

नगमायार्रिन्द्वीत्तः व्यानायार्थेत्। इत्यार्थेनालकः चीः क्षान्तिकः स्रोत्।।

(Pramāṇa-samuccaya, chapter I).

The Sanskrit originals of the lines are as follows:-

चनिष्धादुवामं चेत् चन्येन्द्रियदतं दृषा॥

(Pramāṇa-samuccaya, chapter I).

These two lines have been quoted and criticised by the Hindu logician Vācaspati Miśra in his Nyāya-vārtīka-tātparya-tīkā, 1-1-4.

I Vātsyāyana writes :--

In chapter II of the Pramāna-samuccaya, Dignāga mentions the views of some logicians who Inference. from smoke, which is the middle term, infer fire which is inseparably connected with it, and also of others, who from smoke infer the connection between it and the hill which is the minor term. He argues against the first mentioned logicians saving that if they infer fire from smoke they gain no new knowledge from this inference, for it is already known that smoke is inseparably connected with fire. His argument against the other logicians is that they are not able to infer the connection, for connection implies two things, whereas here only one thing, viz., the hill, is visible, but the other, viz., fire, is not visible. What then do we really infer from smoke? Dignāga says it is not fire nor the connection between it and the hill, but it is the flery hill that is inferred.

What Dignaga meant to say is:-

हम्बर्धितिष्ट्रस्य स्वर्धित्यः विद्यास्य स्वर्धितः ।
स्वर्धाः क्रिस्य स्वर्धाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स

The Nyāya-sūtra distinctly mentions the eye, ear, nose, tongue and touch as sense-organs, but says nothing as to whether the mind (manas) is a sense-organ or not. The presumption from this silence is that the mind is not a sense-organ according to the Nyāya-sūtra.

But Vātsyāyana, the famous Hindu commentator on the Nyāyasūtra interprets the silence in a quite different way, concluding therefrom that the mind (manas) is a sense-organ according to the Nyāyasūtra.

Dignaga contends "if silence was a proof of assent why did the Nyayasutra not remain silent regarding the other five sense-organs too?"

<sup>1</sup> Dignāga writes :—

47. In chapter III, Dignāga says that an Inference for the Comparison and Verbal Testimony rejected. sake of others consists in making explicit a matter which was inferred by one's own self.\(^1\) In chapter IV, he re-

jects Comparison as a separate source of knowledge. He says that when we recognise a thing through Perception of a similar thing, we really perform an act of Perception. Hence Comparison or Recognition of Similarity is not a separate source of knowledge, but is included in Perception. In chapter V, he rejects "Credible Word" or "Verbal Testimony" as a separate source of knowledge. He asks: "what is the significance of a Credible Word? Does it mean that the person who spoke the word is credible or the fact he averred is credible?" "If the person," continues Dignāga, "is credible, it is a mere infer-

दे.क्ष्यंत्रः कुर्यं न्याः संस्थाः न्याः स्थाः प्रमाणाः स्थाः स्याः स्थाः स्य

(Pramāṇa-samuccaya, chapter II).

The Sanskrit originals of these lines are as follows:-

केचिद् धर्मान्तरं मेथं लिक्क्यायभिचारतः।
संबद्धं केचिदिक्कन्ति सिहलाहसंधिर्माणोः॥
लिक्कं धर्मे प्रसिदं चेत् किमन्यत् तेन भीयते।
स्वय धर्माण तस्येव किमये नानुमेयता॥
संबद्धेऽपि द्वयं नास्ति षष्ठौ त्रूयते तहति।
सवास्योऽनुख्दीतलाक्कचासी लिक्कसंगतः॥

(Pramāṇa-samuccaya, chapter II).

The Hindu logician Vācaspati Miśra has quoted and criticised these lines in the Nyāya-vārtika-tātparya-tīkā, 1-1-5.

Dignāga writes :--

मान्द्रमी देव मी हेशन्यमा दे। रूटमीश अवेट देव माराया ने राध्येद। रे यान्यमा नु सम्बद्धाय दे।।

(Pramāṇa-samuccaya, chapter III).

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide a very interesting discussion on it in the Nyāya-vārtika, 1-1-6, where the Hindu logician Udyotakara defends the Nyāya-sūtra and the Nyāya-bhāsya from the attacks of Dignāga.

ence. On the other hand if the fact is credible, it is a case of Perception." Hence Dignāga concludes that Credible Word or Verbal Testimony is not a separate source of knowledge, but is included in Perception and Inference.

### Dignāga's Nyāya-praveśa.

48. The Nyāya-praveśa <sup>2</sup> or rather "Nyāya-praveśo-nāma pramāṇa-prakaraṇa" is another excellent work on Logic by Dignāga. The Sanskrit original is lost. There exists a Tibetan translation of it which extends over folios 183—188 of the Tangyur, section Mdo, volume Ce. The translation was prepared by the great Kāśmīrian Paṇḍita Sarvajña-śrī Rakṣita and the Sākya monk Gragṣ-pa-rgyal-mtshan-dpal-bzan, in the great Sa-ṣkya monastery of Western Tibet. The work in Tibetan is called Tshad-ma-rigṣ-par-hjug-paḥi-ṣgo signifying the "Door of Entrance to Logic." It opens thus:—

"Demonstration and refutation together with their fallacies are useful in arguing with others; and Perception and Inference together with their fallacies are useful for self-understanding;

seeing these I compile this Sastra."3

Parts of a Syllogism.<sup>4</sup>

49. Some of the subjects discussed in the work are noticed below:—

l Vide Udyotakara's rejoinder in the Nyāya-vārtika 1-1-7. I consulted the Nyāya-prave'a from the volume Ce of the Tibetan Tangyur which was placed at my disposal by the India Office, London. I have also brought a copy of the Nyāya-prave'a from the monastery of Labrang in Sikkim which I visited in May 1907. This is probably the same as "Nyāya-dvāra-šāstra": Vide Takakusu's I-tsing, p. 186, and Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Nos. 1223 and 1224. Cf. Dr. Sugiura's "Hindu Logic as preserved in China and Japan," pp. 36, 60, where Sankara Svāmin's Nyāya-prāveśa-tarka-šāstra is noticed.

+ In Tibetan: Rigg-pahi-yan-lag (ইনা্মাম্মর্মের্মের্মের্মা) and in Sahskrit: Nyāyāvayaya (নায়াবয়র)।

<sup>अञ्चारम् द्वार स्वार /sup> 

Reasoning, according to the Nyāya-praveśa, is carried on by means of a minor term, a major term, a middle term and two examples. The minor term is also called the subject (in Sanskrit: pakṣa or dharmin, and in Tibetan phyogs or choṣ-can). The major term is otherwise called the predicate (in Sanskrit: sādhya or dharma, in Tibetan: bṛgrub-par-bya or choṣ). The middle term is also called the reason or mark (in Sanskrit: hetu, liṅga or sādhyna, in Tibetan: gtan-tshigs or bṛgrub-par-byed). The example (called in Sanskrit: dṛṣṭānta, in Tibetan: dpe-bṛjod) is of two kinds, viz., (1) homogeneous (in Sanskrit: sādharmya, in Tibetan: choṣ-uṭthun-pa) and (2) hetrogeneous (in Sanskrit: vaidharmya, in Tibetan: choṣ-mi-mthun-pa).

Form of a Syllogism. 50. The form of reasoning is as follows:—

(1) This hill is fiery,

(2) Because it has smoke,

(3) All that has smoke is fiery like a kitchen and whatever is

not fiery has no smoke like a lake.

Here 'hill' is the minor term, 'fiery' the major term, 'smoke' the middle term, 'kitchen' a homogeneous example and 'lake' a hetrogeneous example.

Thesis. 51. A minor term and a major term linked together constitute a proposition, e.q.

The hill (minor term) is flery (major term).

A proposition which is offered for proof is a Thesis.

52. There are certain types of thesis which cannot stand the The Fallacies of Thesis. 1 test of proof and are therefore fallacious.

The following theses are fallacious:—

- (1) A thesis incompatible with perception, such as: "sound is inaudible."
- (2) A thesis incompatible with inference, such as: "A pot is eternal."

(Really "A pot is non-eternal because it is a product.")

(3) A thesis incompatible with the public opinion, such as: "Man's head is pure, because it is the limb of an animate being." (Or money is an abominable thing. I or some men like me may say "money is an abominable thing," but the world does not say so).

। In Tibetan: phyoge-ltar-snan ( শুনামান্ত্র বুল ); in Sanskrit: pakṣābhāsa ( पचाभाष )।

- (4) A thesis incompatible with one's own belief or doctrine, such as: A Vaisesika philosopher saving "sound is eternal."
  - (5) A thesis incompatible with one's own statement such as:

"My mother is barren."

(6) A thesis with an unfamiliar minor term, such as: The Buddhist speaking to the Sāmkhya, "Sound is perishable." (Sound is a subject well known to the Mīmāmsaka, but not to the Sāmkhya).

(7) A thesis with an unfamiliar major term, such as: The Samkhya speaking to the Buddhist, "The soul is animate."

(8) A thesis with both the terms unfamiliar, such as: The Vaisesika speaking to the Buddhist, "The soul has feelings as pleasurable, etc."

(The Buddhist neither deals with the soul nor with its feelings).

(9) A thesis universally accepted, such as: "Fire is warm." (This thesis cannot be offered for proof as it is accepted by all.

Three Characteristics of the Middle Term (Hetu) must possess three characteristics, viz.:—

(1) The whole of the minor term (paksa) must be connected with the middle term, e.g.

Sound is non-eternal, Because it is a product, Like a pot but unlike ether.

In this reasoning "product" which is the middle term includes the whole of "sound" which is the minor term.

(2) All things denoted by the middle term must be homogeneous with things denoted by the major term, e.g.

All things produced are non-eternal as a pot.

(3) None of the things heterogeneous from the major term must be a thing denoted by the middle term, e.g.

No non-non-eternal (that is, no eternal) thing is a product, as ether.

- 54. If we suppose the minor term or subject to be 'S,' the middle term or reason to be 'R,' and the major term or predicate to be 'P,' then the above-mentioned three characteristics of the middle term may be symbolically set forth as follows:—
  - (1) All S is R.
  - (2) All R is P.
  - (3) No R is non-P.

पार्थि) and in Sanskrit : Lingasya trairupyam ( सिन्नस्य वैक्ष्यम् )।

l Called in Tibetan : Gtan-tshigs-ni-tshul-gsum (미거지 중계시기 중시

Now, the negative aspect of the middle term, viz., no R is non-P only confirms the truth conveyed by one of the positive aspects, viz., all R is P. Hence we may put aside the negative aspect, and exhibit the positive aspects as follows:

- (1) All S is R.
- (2) All R is P.

Again, in the above instance 'R' and 'P' may be taken in their whole extent or partially. So the two positive aspects mentioned above may be fully exhibited as follows:—

- (a) All S is all R. (1)
  - (b) All S is some R.
- (a) All R is all P. (2)
  - (b) All R is some P.

Combining aspect (1) and aspect (2) together we find that a syllogism may be of any one of the following forms:-

- (1) All S is all P (conclusion): Because All S is all R. All R is all P.
- (2) All S is some P (conclusion): Because All S is all R. All R is some P.
- (3) All S is some P (conclusion): Because All S is some R. All R is all P.
- '(4) All S is some P (conclusion): Because All S is some R, All R is some P.

Hence we find that Dignaga admits only two conclusions, viz.

All S is all P, and All S is some P.

Relative extension of the Middle Term and the

55.

Major Term.

The second and third of the characteristics mentioned above indicate the relative extension of the middle term and major term. They show that the middle term is universally or inseparably connected with the major

term. This universal or inseparable connection between them is called in Sanskrit Vyāpti and in Tibetan Khyab which was, as far as I find, first discovered by Dignaga.

Supposing that the middle term or reason is R, and the major term or predicate is P, the connection between the two terms may be symbolically set forth as follows:-

- (1) All R is all P, and
- (2) All R is some P.

Fallacies of the Middle Term which may be of fourteen kinds as follows:—

A. The unproved (Sanskrit: Asiddha, Tibetan: Ma-grub) which occurs:

(1) When the lack of truth of the middle term is recognised by both the parties, e.g.

Sound is non-eternal, Because it is visible.

(Neither of the parties admits that sound is visible).

(2) When the lack of truth of the middle term is recognised by one party only, e.g.

Sound is evolved,

Because it is a product.

(The Mimāmsakas do not admit that sound is a product).

(3) When the truth of the middle term is questioned, e.g.

The hill is fiery,

Because there is vapour.

(Vapour may or may not be an effect of fire and may or may not be connected with it otherwise).

(4) When it is questioned whether the minor term is predicable of the middle term, e.g.

Ether is a substance,

Because it has qualities.

(It is questioned whether ether has qualities).

- B. The uncertain (Sanskrit: Aniścita, Tibetan: Ma-ńeg-pa) which occurs:
- (5) When the middle term is too general, abiding equally in the major term as well as in the opposite of it, e.g.

Sound is eternal,

Because it is knowable.

(The 'knowable' is too general because it abides in the eternal as well as the non-eternal. This is a fallacy of being too general, called in Sanskrit:  $S\bar{a}dh\bar{a}rana$  and in Tibetan: Thun-mon).

(6) When the middle term is not general enough, abiding neither in the major term nor in its opposite, e.g.

Sanskrit : Hetvābhāsa ( देलाभाष )।

<sup>1</sup> In Tibetan: Citan-tshigs-Itar-snan (미5주중피자'국지 및 다 ) and in

Sound is eternal, Because it is audible.

10(This is a fallacy of being not general enough, called in Sanskrit: Asādhāraṇa, and in Tibetan: Thun-mon-ma-yin).

io(7) When the middle term abides in some of the things homogeneous with, and in all things heterogeneous from, the major term, e.g.

Sound is not a product of effort, Because it is non-eternal.

(The non-eternal abides in some of the things which are not products of effort, such as lightning, and abides in all things which are not non-products of effort).

(8) When the middle term abides in some of the things heterogeneous from, and in all things homogeneous with, the major term, e.g.

Sound is a product of effort, Because it is non-eternal.

(The non-eternal abides in some of the things which are not products of effort, as lightning, and abides in all things which are products of effort).

(9) When the middle term abides, in some of the things homogeneous with and in some heterogeneous from, the major term, e.g.

Sound is eternal, Because it is incorporeal.

(Some incorporeal things are eternal as ether, but others are not as intelligence).

(10) When there is a non-erroneous contradiction, that is, when a thesis and its contradictory are both supported by what appear to be valid reasons, e.g.

The Vaisesika speaking to the Mimāmsaka:

"Sound is non-eternal, Because it is a product."

• The Mimāmsaka speaking to the Vaiśesika:

"Sound is eternal, Because it is always audible."

(Both of the reasonings are correct, but as they lead to contradictory conclusions they are classed as uncertain).

C. The contradictory (Sanskrit: Viruddha, Tibetan: Hgalwa) which occurs:

٠,

(11) When the middle term is contradictory to the major term,

Sound is eternal,

Because it is a product.

(Product is inconsistent with eternal).

(12) When the middle term is contradictory to the implied major term, e.g.

The eyes, etc., are serviceable to some being, Because they are made of particles, Like a bed, seat, etc.

(Here the major term "serviceable to some being" is ambiguous, for, the apparent meaning of 'some being' is 'the body,' but the implied meaning of it is 'the soul.' Though things 'made of particles' are serviceable to the body, they are not, according to the Sāmkhya, serviceable to the soul which is attributeless. Hence there is contradiction between the middle term and the implied major term).

(13) When the middle term is inconsistent with the minor term, e.g.

Sāmānya (generality) is neither substance, quality, nor

action;

Because it depends upon one substance and possesses quality and action.

(Sāmānya or generality does not depend upon one substance,

etc.)

(14) When the middle term is inconsistent with the implied minor term, e.g.

Objects are stimuli of action;

Because they are apprehended by the senses.

("Objects" is ambiguous meaning (1) things and (2) purposes. The middle term is inconsistent with the minor term in the second meaning).

Dignāga's theory of examples. Examples converted to universal proposition.

57. An example before the time of Dignāga served as a mere familiar case which was cited to help the understanding of the listner, e.g.

The hill is fiery, Because it has smoke, Like a kitchen (example).

Asanga (q.v.) made the example more serviceable to reasoning, but Dignāga converted it into a universal proposition, that

¹ This example may lead us to presume that the author of Nyāyapraveśa knew Iśvara Kṛṣṇa's Sāmkhya-kārikā which is the oldest of the works on Sāmkhya philosophy that have come down to us.

is a proposition 1 expressive of the universal or inseparable connection between the middle term and the major term, e.g.

The hill is fiery;

Because it has smoke;

All that has smoke is fiery as a kitchen (homogeneous example).

The above example is homogeneous. A heterogeneous example is thus given:—

Whatever is not fiery has no smoke as a lake.

- 58. Examples have already been stated to be of two kinds, viz., 1. Homogeneous and 2. Heterogeneous example.<sup>2</sup>

  Fallacies of the homogeneous example are the following:—
  - (1) An example not homogeneous with the middle term, e.g.

Sound is eternal,

Because it is incorporeal,

That which is incorporeal is eternal as the atoms.

(The atoms cannot serve as an example because they are not incorporeal. This is called a fallacy of the Excluded Middle Term).

- (2) An example not homogeneous with the major term, e.g.
  - Sound is eternal,

Because it is incorporeal,

That which is incorporeal is eternal as intelligence.

(Intelligence cannot serve as an example because it is not eternal. This is called a fallacy of the Excluded Major Term).

(3) An example homogeneous with neither the middle term nor the major term, e.g.

भुर द्वानाभाष)।

I The universal proposition, that is, the proposition expressive of the universal relation between the middle term and the major term, serves as the major premise in a syllogism of the celebrated Greek logician Aristotle. It was long unknown in India. Dignāga's discovery of the universal proposition marks a new era in the history of Indian Logic and shows a great development of the principle of induction first apprehended by Asanga in India.

<sup>2</sup> Called in Tibetan: Chos-mthun-dpe-ltar-snan-wa (อัสาปสุรัร์จี

Sound is eternal,

Because it is incorporeal,

That which is incorporeal is eternal, as a pot.

(The pot cannot serve as an example because it is neither incorporeal nor eternal. This is called a fallacy of the Excluded Middle and Major Terms).

(4) A homogeneous example showing a lack of universal connection between the middle term and the major term, e.g.

This person is passionate,

Because he is a speaker,

Whoever is a speaker is passionate, as a certain man in Magadha.

(Though a certain man in Magadha may be both speaker and passionate, there is nevertheless no universal connection between being a speaker and being passionate. This is a fallacy of Absence of Connection called in Sanskrit: Ananvaya, in Tibetan:  $\underline{\mathbf{R}}$  jes-su- $\underline{\mathbf{h}}$ gro-wa-med).

(5) A homogeneous example showing an inverse connection between the middle term and the major term, e.g.

Sound is non-eternal,

Because it is a product of effort,

Whatever is non-eternal is a product of effort, as a pot.

(The pot cannot serve as an example because though it is both non-eternal and a product of effort, the connection between the major term and the middle term has been inverted, *i.e.*, all products of effort are non-eternal; but all non-eternals are not products of effort. This is a fallacy of Inverse Connection called in Sanskrit: Viparītānvaya, in Tibetan: Rjes-su-hgro-wa-phyin-ci-log-pa).

Fallacy of the heterogeneous example. 59. Fallacies of the heterogeneous example are the following:—

(6) An example not heterogeneous from the opposite of the middle term, e.g.

Sound is eternal,

Because it is incorporeal,

Whatever is non-eternal is not incorporeal, as intelligence.

(Intelligence is non-eternal, yet incorporeal. This is a fallacy of Included Middle Term in a heterogeneous example).

(7) An example not heterogeneous from the opposite of the major term, e.g.

Sound is eternal,

Because it is incorporeal,

Whatever is non-eternal is not incorporeal, as atoms.

(The atoms are not incorporeal yet they are eternal. This is a fallacy of Included Major Term in a heterogeneous example).

(8) An example heterogeneous from neither the opposite of the middle term nor the opposite of the major term, e.g.

Sound is eternal,

Because it is incorporeal,

Whatever is non-eternal is not incorporeal, as a pot.

(A pot is neither eternal nor incorporeal. This is called a fallacy of Included Middle and Major Terms in a heterogeneous example).

(9) A heterogeneous example showing an absence of disconnection between the middle term and the major term, e.g.

This person is passionate,

Because he is a speaker,

Whoever is non-passionate is not a speaker, as a piece of stone.

(This is called a fallacy of Absence of Disconnection of a heterogeneous example).

(10) A heterogeneous example showing an absence of inverse disconnection between the middle term and the major term, e.g.

Sound is non-eternal,

Because it is a product,

Whatever is non-product is not non-eternal, as ether.

The example should be inverted as:

\*Whatever is non-non-eternal, i.e., eternal, is not a product, as ether. This is called a fallacy of Inverted Negation of a heterogeneous example.

60. All the three kinds of fallacies—of the Thesis, Middle Term and Example—are fallacies of reasoning. Refutation (called in Sanskrit: Dūṣaṇa and in Tibetan: Sun-ḥbyin) consists in finding out in the reasoning of the opponent any one of the fallacies aforementioned. Fallacy of Refutation (called in

Sanskrit: Dūṣaṇābhāsa and in ¡Tibetan: Sun-hbyin-ltar-ṣnan-wa) consists in alleging a fallacy where there is no fallacy at all.

61. Perception and Inference are the two kinds of valid knowledge for one's own self. Perception and their Fallacies.

It is free from illusory experiences and is not connected with name, genus, etc. Inference called in Sanskrit: Anumāna and in Tibetan: Ries-su-dpag is the knowledge of objects derived through a mark (Tibetan: Rtags) or middle term which has three characteristics. There are Fallacies of Perception as well as of Inference (called respectively Pratyakṣābhāsa and Anumānābhāsa in Sanskrit, and Mnonsum-ltar-nan and Rjes-dpag-ltar-snan in Tibetan).

### Dignāga's Hetu-cakra-hamaru.

62. The Hetu-cakra-hamaru is another small treatise on Logic by Dignāga. The Sanskrit original is lost, but a Tibetan translation is preserved in the Tangyur, section Mdo, folios 193-194. The Tibetan translation was prepared by the sage Bodhisattva of Za-hor and the Bhiksu Dharmāsoka. The work in Tibetan is called Gtan-tshigz-kyi-hkhor-lo-gtan-la-dwab-pa, signifying "the Wheel of Reasons put in order." It begins thus:—

"Bowing down to the Omniscient One (Buddha), who has destroyed the net of errors, I explain the system of three characteristics of the Reason (or Middle Term)." 2

In this work Dignaga has analysed all nine possible relations between the middle and the major terms and has found that there

I brought a copy of the Tibetan version of the Hetu-cakra-hamaru from the monastery of Labrang in Sikkim which I visited in June 1907. This work is probably the same as the Hetu-dvāra-śāstra: vide Taka-kusu's I-tsing, p. 187.

নাব্ৰ, স্থান্থ, ই.ব.ব.ছেম্ম মাম্প্রনার্থ, ব্রহ্ম মার্ নাব্ৰ, স্থানার্থ, মান্ত্রনার্থ, ব্রহ্ম মার্থ, ব্রহ্ম । ব্যব্রহার ব্রহ্ম মার্থ, ব্রহ্ম মার্থ, ব্রহ্ম । নাব্ৰ, মার্থ, ব্রহ্ম মার্থ, বর্ম মার্থ, ব্রহ্ম মার্থ, ব্রহ্ম মার্থ, ব্রহ্ম মার্থ, বর্ম মার্থ, বর

are among them two relations which conform to the three characteristics of the middle term already laid down, and the remaining seven relations are at variance with those characteristics. Accordingly he has concluded that only two relations are valid as will be evident from the annexed diagram.

### OTHER WORKS OF DIGNĀGA.

### Pramāņa-samuccaya-vṛtti.

- 65. The Pramāṇa-samuccaya-vṛtti is a commentary on the Pramāṇa-samuccaya by Dignāga himself. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translaton which extends over folios 13—96 of the Tangyur, section Mdo, volume Ce. The Tibetan translation was prepared, at the command of king Rigs-ldan-rgyal-po, by the famous Indian sage Vasudhara Rakṣita, who was as it were the crest-gem of logicians, and the Tibetan interpreter Sha-ma-dge-bṣñen-sin-rgyal. In Tibetan it is called Tshad-ma-kun-laṣ-btuṣ-paḥi-hgrel-wa. It is divided into six chapters corresponding to those of the Pramāṇa-samuccaya itself. At the end of the work it is stated that "led on by the command of Mañjunātha (the god of learning), Dignāga the great dialectician of sharp intellect wrote this śāstra which is as deep as the ocean."
- 66. There is another translation of the Pramāṇa-samuccaya-vṛṭṭi in Tibetan extending over folios 96—180 of the Tangyur, section Mdo, volume Ce. It was prepared by the Indian sage Hema Varma (called in Tibetan Gser-gyi-go-cha) and the Tibetan interpreter Dad-pa-śeṣ-rab in the monastery of Si-waḥi-dge-gnaṣ.

### Pramāņa-śāstra-praveśa.

67. Pramāṇa-śāstra-praveśa is another work by Dignāga It was translated into Chinese by the Chinese interpreter Thasam-tsan. The Chinese version was translated into Tibetan by the Chinese scholar Dge-śes-sin-gyan and the Tibetan monk Ston-gshon in the Saskya monastery of Western Tibet. The Sanskrit original of the work appears to be lost, but the Tibetan veision still exists. It consists of folios 188—193 of the Tangyur, section Mdo, volume Ce. In Tibetan the work is called Tshad-maḥi-bstan-bcos-rig-pa-la-hjug-pa signifying "An Entrance to the Science of Logic."

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> I have consulted the Tibetan xylograph of this work in the possession of the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted the Tibetan xylograph of this work in the possession of the India Office, London.

### Ālambaņa-parīkṣā.

68. The Ālambaṇa-parīkṣā¹ is another work by Dignāga. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation which consists of one folio only (folio 180) of the Tangyur, section Mdo, volume Ce. The work in Tibetan is called Dmigs-pa-brtag-pa signifying "An Examination of the Objects of Thought." It begins with an invocation to Buddha and all Bodhisattvas.

### Ālambaņa-parīkṣā-vṛtti.

69. The Ālambaṇa-parīkṣā-vṛtti² is a commentary on the Ālambaṇa-parīkṣā by Dignāga himself. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan version which is embodied in the Tangyur, section Mdo, volume Ce, folios 180—182. The work in Tibetan is called Dmigs-pabrtag-pahi-hgrel.

#### Trikāla-parīksā.

70. The Trikāla-parīkṣā³ is a work by Dignāga. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan version in the Tangyur, section Mdo, volume Ce, folios 182—183. This version was prepared by the great Paṇḍita Sāntakara Gupta and the interpreter-monk Tshul-hkhrimṣ-ṛgyal-mtshan. The work in Tibetan is called Duṣ-gsum-hṛtag-pa signifying "An Examination of Three Times."

### S'ANKARA SVĀMIN (ABOUT 550 A.D.).

71. Sankara Svāmin, as it appears from Chinese records, was a pupil of Dignāga. He seems to have been a native of Southern India. Logic is said to have been handed down by Dignāga through Sankara Svāmin and ten other masters to Silabhadra, who was the head of the Nālandā University, and the favourite teacher of the Chinese pilgrim Hwen-thsang in

I have consulted the Tibetan xylograph of this work as contained in the India Office, London. This is probably the same as "Alambana-pratya ya-dhyāna-śāstra": vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, No. 1173, and Takakusu's I-tsing, p. 188.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted the xylograph of this work as contained in the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> I have consulted the Tibetan xylograph of this work as contained in the India Office, London. This work is probably the same that is called by Takakusu "The Sāstra on the Meditation of the Three Worlds": vide Takakusu's I-tsing, p. 187. The "worlds" is evidently a mistake for "times."

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup> Vide Dr. Sugiura's Hindu Logic as preserved in China and Japan, pp. 36, 37.

635 A.D. According to the Chinese Tripiṭaka Saṅkara Svāmin was the author of a work called Nyāya-praveśa Tarka-śāstra,¹ which was translated into Chinese by Hwen-thsang in 647 A.D. This work seems to be different from the "Nyāya-praveśa" or more fully the "Nyāya-praveśo nāma pramāṇa-prakaraṇa" which, as we have seen, is ascribed by the Tibetans to Dignāga.

### DHARMAPĀLA (ABOUT 600—635 A.D.).

- 72. Dharmapāla, a logician, was a native of Kāñcīpura in Drāvida (modern Conjeeveram in Madras). He was the eldest son of a great minister of the country. From his childhood he exhibited much cleverness, and as he was a young man the king and queen of the country condescended to entertain him at a feast. In the evening of that day his heart was oppressed with sorrow, and assuming the robes of a Buddhist recluse he left home, and applied himself with unflagging earnestness to learning. He was admitted into the University at Nālandā (vide Appendix A) in which he acquired great distinction. Subsequently he became the head of the University. He must have retired from Nālandā before 635 A.D., when Hwen-thsang visited it, and found that Sīlabhadra had succeeded him in the headship of the University. Dharmapāla conjointly with Bhartrhari composed a Beḍā vṛtti on Pāṇini's grammar.
- 73. He was a follower of the Yogācāra philosophy and was the author of several works such as (1) Ālambaṇa-pratyaya-dhyāna-śāstra-vyākhyā; (2) Vidvāmātra-siddhi-śāstra-vyākhyā; and (3) Sata-śāstra-vaipulya-vyākhyā which was translated into Chinese in 650 A.D. Hwen-thsang, who visited India in 629 A.D., found in Kauśāmbī the ruins of a monastery where Dharma-pāla had refuted the arguments of the heretics.

### ĀCĀRYA S'ILABHADRA (635 A.D.).

74. S'Ilabhadra belonged to the family of the king of Samatața (Bengal), and was of the Brāhmaṇa caste. He was a pupil

<sup>1</sup> Vide Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, no. 1216, and Appendix I, No. 13.

The Tibetans do not know Sankara Svāmin at all. The Chinese pilgrim I-tsing, who visited India during 671—695, speaks of Dignāga and Dharmakīrti, but does not mention Sankara Svāmin. Even Hwenthsang in his Travel does not mention him.

<sup>3</sup> Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. 1, p. 237; vol. 11, pp. 110—223, 229 and 230. Vide also Takakusu's I-tsing, p. lvii, and Bunyiu Nanjio's Catalogue of the Chinese Tripitaka, Appendix I, No. 16.

<sup>4</sup> Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. 11, p. 110; and Takakusu's I-tsing, p. 181.

of Dharmapāla at the Nālandā University (vide Appendix A) of which subsequently he became the head. The Chinese pilgrim Hwen-thsang was his pupil in 635 A.D. Sīlabhadra was a great logician and master of śāstras.

### ĀCĀRYA DHARMAKĪRTI (ABOUT 635—650 A.D.).

The excellent Dharmakirti,2 called in Tibetan Chosgrags, according to the accounts of all earlier sages, was born in the south in the kingdom of Cūdāmani.3 Since, however, there is now no country by that name, and since on the other hand all the orthodox and heterodox alike name Trimalava as the birth-place of Dharmakirti, it is to be accepted that in olden times Trimalaya was called the kingdom of Cūdāmani. His father was a Tirtha of the Brāhmana caste, Parivrājaka Korunanda by name. Endowed from childhood up with a very keen intellect he attained to great skill in the fine arts, in the Vedas and Vedāngas, in the art of healing, in grammar, and in all the theories of the Tirthas. When only sixteen or eighteen years old, he was already deeply versed in the philosophy of the Tirthas. Occasionally he attended lectures of the Buddhists, and realised that the teachings of Buddha were without faults. There grew up in him a strong inclination towards Buddhism. He donned the dress of a Buddhist Upāsaka (devotee). When the Brāhmanas inquired the reason of this he praised the excellence of Buddhism for which he was out-casted. Thereupon he came to Madhyadeśa 4 (Magadha), was received into the Sangha (priesthood) by Ācārya Dharmapāla, attained to great learning in the three Pitakas, and knew in all 500 sutras and dharanis by heart.

76. Dharmakirti desiring to become acquainted with the

<sup>2</sup> This account is taken from Lama Tārānātha's Geschichte des Buddhirmus von Schiefens pp. 175

dhismus von Schiefner, pp. 175-185.

### दिमबद्धिन्ध्ययोर्मध्यं यत् प्राग् विनयनादिपि । प्रत्यगेव प्रयागाच मध्यदेशः प्रकीर्त्तितः॥

(Manusamhitā 2: 21).

In this connection vide a very learned article named "Note on the Middle Country of Ancient India" by Rhys Davids in the Journal of the Royal Asiatic Society, January 1904.

<sup>1</sup> Vide Takakusu's I-tsing, p. xlv.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> Cūdāmani is probably the same as Coda or Chola country in the Eastern Deccan. As a fact Dharmakīrti was born in the Deccan: Vide article 82 under Pramāṇa-vārtika kārikā.

<sup>\*</sup> In Tibetan literature Madhya-deśa signifies Magadha (Behar). But Manu defines Madhya deśa as the country lying between the Himalayas on the north, the Vindhya mountains on the south, Prayāga in the east, and the river Sarasvatī on the west:

secret doctrine of the Tirtha system, donned a slave-attire and went southward. On inquiring who was versed in the Tirtha system, he was informed that the Brāhmaṇa Kumārila was an incomparable master of the same. The assertion that Kumārila was an uncle of Dharmakirti is unsupported by Indian authority. Kumārila had received a large fortune from his king, owned many rice-fields, five hundred male slaves and five hundred female slaves and many hundred men. When Dharmakirti after entering their service performed the work of fifty slaves indoors and outdoors, Kumārila and his wife were satisfied. They allowed him to hear the secret doctrines. Obtaining knowledge of the secret teaching from Kumārila, he left his house. With the wages which he received from Kumārila for his special services he gave a great feast to the Brāhmaṇas in the night of his departure.

77. Thereupon he challenged the followers of the system of Kaṇāda named Kaṇāda Gupta and other followers of the Tirtha system and entered upon debates with them. The debates lasted for three months, during which he withstood all his opponents and converted many of them to Buddhism. Upon this Kumārila was enraged and appeared with 500 Brāhmaṇas for debate. He proposed the condition that whoever was defeated should be killed. Dharmakīrti who did not desire the death of Kumārila induced the latter to enter upon the condition that whoever was defeated should accept the doctrine of the winner. Putting *Dharma* (doctrine) up as the prize they began the debate, and finally Dharmakīrti was victorious. Kumārila and his 500 followers became followers of Buddha.

78. Dharmakirti further withstood the Nirgranthas (Jainas), Rāhuvratin and others, who lived within the range of the Vindhya mountains. Returning to Dravali (Drāvida?) he challenged by criers those who were ready for debate. The majority of the Tirthas fled; and some actually confessed that they were not equal to the fight. He re-established all the religious schools that had fallen into decay in that country, and lived in the loneliness of the forest given up to meditation.

79. DharamkItri towards the end of his life erected a vihāra in the land of Kalinga, and after having converted many people to the Law (*Dharma*) passed away. Those of his pupils, who by their lives had become like Brahma, carried him to the cemetery for cremation. Then there fell a heavy rain of flowers, and for seven days the whole country was filled with fragrance and music.

80. This Ācārya (Dharmakirti) and the Tibetan king Srontsan-gam po are said to have been contemporaries, which statement might be accepted as authoritative.

81. From this account it is evident that Dharmakirti was a pupil of Dharmapala. As the latter lived in 635 A.D., Dharmakirti must also have lived about that time. This date agrees well with the statement that Dharmakirti was a contemporary of the Tibetan king Sron-tsan-gam-po who lived during 627-698 A.D. It seems that in 635 A.D. Dharmakirti was very young as Hwen-thsang does not mention him. On the other hand I-tsing, who travelled over India during 671-695 A.D., declares eloquently how "Dharmakirti made further improvement in Logic " 2 after Dignāga. The Brāhmanic logician Udyotakara is attacked by Dharmakirti. The Mimāmsaka Sureśvarācārya, author of the Brhadāranyaka-vārtika, and the Digambara Jaina Vidyānanda, author of the Asta-sāhasrikā,5 have on the contrary criticised the definition of perception (Pratyaksa) as given by Dharmakirti, who is some times designated by the shorter name Kirti. Vācaspati Miśra 6 too quotes Dharmakirti to criticise him.

### Pramāņa-vārtika-kārikā.

82. Dharmakirti is the author of numerous works on Logic. The Pramāṇa-vārtika-kārikā is one of them. A verse <sup>7</sup> of this work was quoted by the Hindu philosopher Mādhavācārya in

 $^{\rm l}$  Vide Wassilief, p. 54; and Csoma de Koros's Tibetan Grammar, p. 183.

<sup>2</sup> Takakusu's I-tsing, p. lviii.

<sup>3</sup> Vide K. B. Pathak's "Bhartrhari and Kumārila," Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, 1892, vol. xviii, p. 229.

## 4 Cf. चिच्चेव लविनाभागदिति यद्धभंकीर्त्तना । प्रत्यचायि प्रतिज्ञेयं चीयेतासी न संग्रयः ॥

(Sureśvara's Brhadāranyaka-vārtika, chap. vi.)

<sup>5</sup> Vide Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, vol. xix, 1895—97, p. 56.

6 Cf. यथा इ धर्मा की त्तिः --

## तसाज्ञार्थे न च जाने च्यूलाभाससदातानः। एकच प्रतिषिद्धलादक्षम्बिप न समावः॥

(Vācaspati's Bhāmatī on Vedēntasūtra 2-2-28).

. ,

7 The verse runs thus:--

### भेद्य भामिविज्ञानैः दश्चेतेन्दाविवाद्ये॥

(Pramāṇa-vārtika-kārikā quoted in Mādhavācārya's Sarvadarsanasamgraha, chapter on Bauddha darsana). the 14th century A.D. The following story is told regarding the composition of this work:—

It is said that Dharmakirti studied many dialectic śāstras, but his spirit was not satisfied. Once at the house of one Isvara Sena,2 a pupil of Dignaga, he heard the Pramanasamuccaya. Having heard it for the first time he at once became as proficient as Iśvara Sena who had minutely studied the work. When he heard it the second time, he became like Dignāga, the author of the work, and when he heard it the third time, he recognised several errors in the work. When he mentioned them to Isvara Sena, the latter so far from being displeased, told him that he was at liberty to condemn all the mistakes of the work and to prepare a critical commentary on With the permission thus received he composed a metrical commentary on the Pramāna-samuccaya called the Pramānavārtika-kārikā.

The Sanskrit original of the Pramana-vartika appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 3 of it in the Tangyur, section Mdo, volume Ce, folios 194-258. This translation was prepared by the Indian sage Subhūti-śrī-śānti and the Tibetan interpreter Dge-wahi-blo-gros. The work in Tibetan is called Tshad-ma-rnam-hgrel-gyi-tshig signifying "Memorial Verses explanatory of Pramana or Sources of Knowledge." The work is divided into four chapters as follows:—(1) Inference for one's own self (in Tibetan: Rau-gi-don-rjes-su-dpag-pa, in Sanskrit: Svārthānumāna); (2) Establishment of Pramāna (in Tibetan: Tshad-ma-grub-pa, in Sanskrit: Pramāna-siddhi); (3) Perception (in Tibetan: Mnon-sum, in Sanskrit: Pratyaksa); and (4) Words for the sake of others (in Tibetan: Gshan-gyi-don-gyitshig, in Sanskrit: Parartha-vakya). The work concludes by stating that "it was written by the great sage S'ri Dharmakirti

The Tibetan version of the verse runs as follows:-

## क्ष.पुषात्विज.यश.चि.च.चाकेश।। शेर्धरायरायर्रास्त्रास्त्रिताय

(Pramāna-vārtika-kārikā in the Tangyur, Mdo, Ce, folio 239. Vide Louis de la Vallee Poussin's Le Bouddhisme d'après les sources brahmaniques, p. 34).

3 I have consulted the copy of this work embodied in the Tangyur of

the India Office. London.

<sup>1</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 176. <sup>2</sup> It seems that Isvara Sena, in whose house Dharmakīrti heard the Pramāṇa-samuccaya, was not a direct pupil of Dignāga, for, while Dignāga lived about 500 A.D., Dharmakīrti lived about 635 A.D.

who was unrivalled and whose fame filled the entire earth. 'It is further stated that he was born in the Deccan (in Tibetan: Yul-lho-phyog).

### Pramāņa-vārtika-vṛtti.

84. There was a sub-commentary on the Pramāṇa-vārtika-kārikā called Pramāṇa-vārtika-vṛtti by Dharmakirti himself. The Sanskrit original of this work is lost. There exists, however, a Tibetan translation <sup>2</sup> of it in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 420—535. In Tibetan the work is named Tshad-ma-ṛnam-ḥgrelgyi-ḥgrel-wa. In the concluding lines of the work Dharmakirti is described as "a great teacher and dialectician, whose fame filled all quarters of the earth and who was, as it were, a lion, pressing down the head of elephant-like debaters."

### Pramāņa-viniscaya.

85. Pramāņa vinišcaya quoted by Mādhavācārya is another work on Logic by Dharmakīrti. The Sanskrit original

2 I have consulted the Tibetan xylograph of this work embodied in the Tangyur of the India Office, London.

यःख्यन्त्रभः यः क्रिन्यः स्त्रः स व्यान्त्रिकः स्तरः स्त्रः स्त्रः स्त्रे स्त्रः स्त्

(Pramāņa-vārtika-vṛtti).

4 The following verses of Pramāṇa-viniścaya were quoted in the Sarvadarśana-saṅgraha, chapter on Bauddha darśana, by the Hindu philosopher Mādhavācārya in the 14th century A.D.:

नान्योऽनुभाव्या बुद्धास्ति तस्या नानुभवोऽपरः। पाद्यपादकवैधुर्यात् स्वयं चैव प्रकाशते॥ (क) स्वोपस्कानयमाक् सभेदो नोस्ततस्योः॥ (स) स्विभागोऽपि बुद्धात्या विपर्यासितद्श्रंतेः। पाद्यपादकसंवित्तिभेदवानिय स्वस्त्वते॥ (ग)

(Pramāṇa-viniścaya, chap. I).

of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 1 of it in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 259—347. The translation was prepared by the Kāśmīrian Paṇḍita Parahita Bhadra and the Tibetan interpreter Blo-ldan-śeṣ-rab in the matchless city of Kāśmīra. The work in Tibetan is called Tshaḍ-ma-rnan-par-neṣ-pa signifying "Determination of Pramāṇa or Sources of Knowledge." The work is divided into three chapters as follows:—(1) System of Perception (in Tibetan: Mnon-sum-gtan-la-ḍwab-pa, in Sanskrit: Pratyakṣa-vyavasthā); (2) Inference for one's own self (in Tibetan: Rangi-don-gyi-rjeṣ-su-ḍpag-pa, in Sanskrit: Svārthānumāna); and (3) Inference for the sake of others (in Tibetan: Gshan-gyi-don-gyi-rjeṣ-su-ḍpag-pa, in Sanskrit: Parārthānumāna). In the concluding lines Dharmakīrti is described as a great sage of unrivalled fame born in Southern India.

Prof. Louis de la Vallee Poussin in his "Le Bouddhisme d'après les sources brahmaniques," pp. 32 and 34, identifies the above verses with their Tibetan versions as follows:—

> (Pramāṇa-viniścaya, chap. I, embodied in the Tibetan Tangyur, Mdo, Ce, folios 272, 274 and 273 respectively).

I have consulted the Tibetan xylograph of this work embodied in the Tangyur of the India Office, London.

### Nyāya-bindu.

- 86. Nyāya-bindu is another excellent work on Logic by Dharmakīrti. The Sanskrit original of this work was discovered among the palm leaf manuscripts preserved in the Jaina temple of S'āntinātha, Cambay, and has been published in the Bibliotheca Indica series of Calcutta by Professor Peterson. There exists a Tibetan translation of the work in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 347—355. The work in Tibetan is called Rigs-pahi-thigs-pa signifying "A Drop of Logic." It is divided into three chapters as follows: (1) Perception (in Tibetan: Mnon-sum, in Sanskrit: Pratyakṣa); (2) Inference for one's own self (in Tibetan: Bdag-gi-don-gyi-rjes-su-dpag-pa, in Sanskrit: Svārthānumāna); and (3) Inference for the sake of others (in Tibetan: Gshan-gyi-don-rjes-su-dpag-pa, in Sanskrit: Parārthānumāna). Some of the subjects discussed in the work are noted below:—
- In chapter I, it is stated that all objects of man are accomplished by perfect or valid know-Perception. ledge. Valid knowledge is of two kinds: (1) Perception (in Sanskrit: Pratyaksa) and (2) ference (in Sanskrit: Anumāna). Perception which is knowledge derived through the senses, etc., is described as that which is free from illusory experiences  $(kalpan\bar{a})$  and devoid of confusion Illusory experiences are the experiences of false im- $(abhr\bar{a}nta)$ . ages which appear real as if they were capable of being addressed and touched, e.q., the shadow of a tree may appear as the tree itself or a rope may appear as a snake. Confusion is engendered by such causes as darkness, quick motion, journey by boat, shaking, etc., for instance, to a man journeying by boat, trees on both banks appear to move. Perception is of four kinds: (1) perception by the five senses; (2) perception by the mind; (3) self-consciousness; and (4) knowledge of a contemplative An object of perception is like itself (sva-laksana) saint. while an object of inference is like any one of its class (samanya-laksana), for instance, a cow which I see is a peculiar one possessing an infinite number of qualities which distinguish it from all cows, whereas a cow which I infer is a general one possessing certain qualities in common with other cows; that is, perception is individual knowledge while inference is general According to the proximity or remoteness, of an object, perception of it varies. This is the peculiar characteristic of an object of perception, and this characteristic proves the object to be absolutely real (parametric sat), as it

  1 I have consulted the Tibetan xx ograph of the Nyāya-bindu em-

I I have consulted the Tibetan xxxxxxxxxx of the Nyāya-bindu embodied in the Tangyur of the India Office, Lordon we calso the excellent edition of F. J. Sher-batski.

shows that it possesses some practical efficiency, and this characteristic also shows that perception is a source of valid knowledge for it exactly corresponds to the object perceived.

88. In chapter II, Inference for one's own self (Svārthānumāna) is defined as the knowledge of the inferrible derived through the reason or middle term with its three forms or characteristics. In the instance 'this hill has fire, because it has smoke,' the knowledge of the hill as having fire is derived through smoke which is the reason or middle term. The three forms or characteristics of the reason or middle term are the following:—

(1) The middle term must be connected with the minor

term, e.g.

The hill has fire, Because it has smoke, Like a kitchen but unlike a lake.

In this reasoning there must be 'smoke' on the 'hill.'

- (2) The middle term must abide only in cases which are homogeneous with the major term, e.g., in the above reasoning 'smoke' abides in a kitchen which is homogeneous with things that contain fire.
- (3) The middle term must never abide in cases which are heterogeneous from the major term, e.g., in the above reasoning 'smoke' does not abide in a lake which is heterogeneous from things that contain fire.

Three kinds of the middle term is of three kinds according to the relation which it bears to the major term, thus:—

(1) Identity (in Tibetan: Ran-bshin, in Sanskrit: Svabhāva),

e.g. This is a tree, Because it is simsapā.

- (2) Effect (in Tibetan: Hbras-bu, in Sanskrit: Kārya), e.g. Here there is fire, because there is smoke.
- (3) Non-perception (in Tibetan: Mi-dmigs-pa, in Sanskrit: Anupalabdhi), which is of 11 kinds as follows:
  - i. Non-perception of identity (Svabhāvānupalabdhi), e.g. Here is no smoke, because it is not perceived (though smoke is of a nature as to be perceived if existent).
  - ii. Non-perception of effect (Kāryānupalabdhi), e.g.
    Here there are no causes of smoke of unobstructed
    capacity, because there is no smoke here.

iii. Non-perception of the pervader or container (Vyāpa-kānupalabdhi), e.g.

Here there is no Simsapā, because there is no tree at all.

iv. Perception contrary to identity (Svabhāva-viruddhopalabdhi), e.g.

There is no cold sensation here because there is fire.

v. Perception of the opposite effect (Viruddha-kāryopa-labdhi), e.g.

Here there is no cold sensation because there is smoke.

vi. Perception of contrary connection (Viruddha-vyāpto-palabdhi), e.g.

Even the destruction of the past entity is not certain, because it is dependent on other causes.

vii. Perception contrary to the effect (Kārya-viruddhopa-labdhi), e.g.

Here there are no causes of cold of unobstructed capacity, because there is fire.

viii. Perception contrary to the container (vyāpakavirud-dhopalabdhi), e.g.

Here there is no icy sensation, because there is fire.

- ix. Non-perception of the cause (Kāraṇānupalabdhi), e.g. There is no smoke, because there is no fire.
- x. Perception contrary to the cause (Kāraṇa-viruddho-palabdhi), e.g.

Hair on his body does not stand erect, because he sits near a fire.

xi. Perception of effect contrary to its cause (Kāraṇa-virud-dha-kāryopalabdhi), e.g.

This place does not contain any person on whose body hair stands erect, because there is smoke here.

90. In chapter III Inference for the sake of others (Parārthānumāna) is defined as the declaration of the three-formed middle term in words, that is, when the reason is set forth in words with a view to producing a conviction in others, it is said to be an inference for the sake of others.

Inference is a kind of knowledge; and words are here called inference by the attributing of effect to cause, for, though they

are not themselves knowledge, they produce it. Inference for the sake of others is of two kinds: (1) direct or homogeneous (in Sanskrit: Sādharmyavat); and (2) indirect or heterogeneous (in Sanskrit: Vaidharmyavat), as follows:—

(a) Sound is non-eternal,

Because it is a product,

All products are non-eternal as a pot (direct).

(b) Sound is non-eternal,

Because it is a product,

No non-non-eternal *i.e.*, eternal (thing) is a product as ether (indirect).

91. The minor term (Pakṣa) is that to which the relation of the major term is to be proved, as—This hill has fire, because it has smoke. In this reasoning 'hill' is the minor term which is to be proved as having 'fire' which is the major term. A minor term and its corresponding major term combined together, constitute a proposition which, when offered for proof, is called a thesis.

Fallacies of thesis or 92. There are four fallacies of the Pakṣābhāsa. (Pakṣābhāsa).

A thesis is fallacious if it is incompatible with—

(1) Perception, e.g. Sound is inaudible;

(2) Inference, e.g. Sound is eternal;

- (3) Conception, e.g. The moon is not luna (Sasi a-candra); or (4) One's own statement, e.g. Inference is not a source of knowledge.
- 93. It has already been stated that the middle term must possess three characteristics. Fallacies of the middle term (Hetvābhāsa) occur even if one of the characteristics is unproved, uncertain or contradictory, thus—

A. Unproved (asiddha).

- (1) Sound is eternal, because it is visible.
  (Visibility of sound is admitted by neither party).
- (2) Trees are conscious, because they die if their barks are taken off.
- <sup>c</sup> (This peculiar kind of death of trees is not admitted by the opponent).
  - (3) The hill has fire, because it has vapour. (Vapour as an effect of fire is questioned).
- (4) The soul is all-pervading, because it is perceived everywhere.
- (It is a matter of doubt whether the soul is perceived everywhere).

- B. Uncertain (anaikāntika).
- (5) Sound is non-eternal. Because it is knowable.

(The knowable is too general, because it includes the eternal as well as the non-eternal).

(6) A certain man is omniscient, Because he is a speaker.

(The reason is not general enough, for speakers are not necessarily either omniscient or non-omniscient).

- C. Contradictory (viruddha).
- (7) Sound is eternal, Because it is a product.

(Here 'product' is not homogeneous with 'eternal,' that is, the middle term is opposed to the major term).

(8) Sound is eternal, Because it is a product.(Here 'product' is not heterogeneous from 'non-eternal').

94. The opposition of the middle term to the major term bignaga.

Dharmakīrti criticises bignaga.

Dignaga.

Is a kind of contradiction which is admitted by both Dignaga and Dharmakīrti. Opposition of the middle term to the implied major term (in the event of the major term being ambiguous) is noted by Dignaga in his Nyāya-praveśa as another kind of contradiction (Viruddha). Dharmakīrti in his Nyāyabindu rejects this view saying that this second contradiction is included in the first kind. Dignaga has in his Nyāya-praveśa treated another kind of fallacy called "non-

1 Vide Nyāya-praveśa, Fallacies of the Middle Term, No. 12. This contradiction, viz., the opposition of the middle term to the implied major

term (दृष्टविधातकादु विवद ) is called in Tibetan: कैंडी उन् नी नि

นर पुँ द उ प्रेंग 'रु पक्षु व पर पुँ द । (Nyāya-praveśa).

² तन च बतौथोऽपि दृष्टविधातक्षद् विषदः।... स दृष्ट कसाद्योत्तः चूनयोरेव चन्तर्भावात्। (Nyāya-bindu, Peterson's edition, Bibliotheca Indica series, chapter III, p. 113).

चर्य च विद्यह चाचार्य दिङ्नागेन एकः। स कसाद् वार्तिकतरिष सता लया नोकः। (Nyāyabindu-tikā, Peterson's edition, Bibliotheca Indica series, chapter III, p. 78). erroneous contradiction" (Viruddhāvyabhicāri), which it rejected by Dharmakīrti in his Nyāyabindu, on the ground that it does not arise in the case of inference, but is based on the scriptures of the two parties engaged in disputation.

95. In opposition to Dignaga, Dharmakirti maintains that 'example' is not a part of a syllogism, as it is included in the middle term, e.g.

The hill is fiery, Because it is smoky, Like a kitchen.

In this reasoning the term 'smoky' includes a 'kitchen' as well as other similar things, hence it is almost unnecessary to cite the example 'kitchen.'

Compare K. B. Pathak's "On the authorship of the Nyāyabindu" in the Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, vol. XIX, p. 51.

l Vide Nyāya-praveśa, Fallacies of the Middle Term, No. 10. This fallacy of 'non-erroneous contradiction' is called in Sanskrit: विवदाविभिन्नोरी and in Tibetan: द्वापान प्राप्त प्राप्त (Nyāya-praveśa).

विद्यायभिषार्थ्यपि संगयहेतुदक्तः। स द्र कस्नाचीकः चनुमानविषये चसमावात्। (Nyāyabindu, p. 115).

ननु चाचार्योष विरदायिभिचार्यिप संग्रयहेतुरकः।... क तर्ति चाचार्ये-दिङ्गानेन चर्य हेतुदोष उक्तः इत्याद। ... तस्मादागमात्रयमनुमानमात्रित्य विरदा-यभिचार्यकः। (Nyāyabindu-tīkā, p. 84).

Compare also B.B.R.A.S., vol. XIX, p. 49.

<sup>2</sup> विक्रपो चेतुवक्कः। तावतैय वार्धप्रतीतिरिति न प्रथम् इष्टान्तो नाम साधना-वथवः कवित्। तेनास्त्र स्वचणं प्रथम्[न] उच्यते मतार्थस्वात्।

(Nyāyabindu, Peterson's edition, Bibliotheca Indica series, pp. 115—116). Peterson has omitted  $\overline{\bullet}$  wrongly as will appear from the Tibetan version which runs as follows:—

माइंद्रिकेषाशाणुः सर्द्रद्रश्चरः माश्चुश्चः श्चित्रः श्चित्

(Nyāyabindu, Sherbatski's edition, St. Petersburg, p. 193).

Nevertheless, says DharmakIrti, the example has this much value that it points out in a particular way what has been expressed in a general form by the middle term: thus, the general expression "all smoky things are fiery" is made more impressive by the particular example 'kitchen' which is smoky as well as fiery.

- 96. Example is of two kinds: (1) homogeneous and (2) Fallacies of the homogeneous example. Fallacies of the homogeneous example occur as follows:—
  - (1) Sound is eternal,

    Because it is incorporeal,

    Like action.

(Action cannot serve as an example, because it is not eternal, that is, because it is excluded from the major term).

(2) Sound is eternal,
Because it is incorporeal,
Like atoms.

(Atoms cannot serve as an example, because they are not incorporeal, that is, because they are excluded from the middle term).

(3) Sound is eternal,
Because it is incorporeal,
Like a pot.

(Pot cannot serve as an example, because it is neither eternal nor incorporeal, that is, because it is excluded from both major and middle terms).

(4) This man is passionate, Because he is a speaker, Like a person in the street.

(The person in the street cannot serve as an example, as it is questionable whether he is passionate, that is, it involves doubt as to the validity of the major term).

(5) This man is mortal, Because he is passionate, Like a person in the street.

(This example involves doubt as to the validity of the middle term, that is, it is questionable whether the person in the Street is passionate).

<sup>.....</sup>जन्नम् चभेदेन..... पुनर्विश्चेषेष दर्भनीयातुन्ती । (Nyāyabindu, p. 116).

(6) This man is non-omniscient, Because he is passionate, Like a person in the street.

(This example involves doubt as to the validity of both the major and middle terms, that is, it is questionable whether the person in the street is passionate and non-omniscient).

(7) This man is passionate, Because he is a speaker, Like a certain person.

(This example is unconnected (ananvaya), for there is no inseparable connection between being 'passionate' and being a 'speaker').

(8) Sound is non-eternal, Because it is a product, Like a pot.

(This example involves the fallacy of 'connection unshown,' apradarsitānvaya: the connection should be shown as follows: All products are non-eternal like a pot).

 (9) Sound is a product, Because it is non-eternal, All non-eternal things are products like a pot.

(The example involves the fallacy of inverted connection, viparītānvaya; the real connection should be shown as follows: All products are non-eternal like a pot).

- 97. Similarly there are nine fallacies of the heterogeneous example.
- 98. Refutation (Dūṣaṇa) consists in pointing out in the reasoning of an opponent any one of the fallacies mentioned above. The fallacies or semblances of refutation are the futilities called in Sanskrit Jāti.
- 99. In the concluding lines of the Nyāyabindu it is stated that "Dharmakīrti vanquished the entire Tīrthikas as Sākyamuni had subdued the large army of Māra; and as the sun dispels darkness, the Nyāyabindu has exterminated the Ātmaka theory (that is, the Tīrthika doctrine)—wonderful!

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> For Jāti vide Nyāya-sūtra, Book I, aphorism 58.

<sup>ै</sup> भू गुंग्च्य यस मर्जु र गुः हो में के हो । के सम्मानसम्बद्धाः हो महासार स्थान । ।

### Hetu-bindu-vivarana.

100. The Hetu-bindu-vivarana is another excellent work on Logic by Dharmakirti. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation 1 in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 355-375. The work in Tibetan is called Gtantshigs-kyi-thigs-pa signifying "A Drop of Reason." The work is divided into three chapters as follows:-

(1) Relation of identity between the middle term and the major term (in Tibetan: Ran-bshin-gyi-gtan-tshigs, in Sanskrit: Svabhava-hetu); (2) Relation of effect and cause between the middle term and the major term (in Tibetan: Hbras-buhi-gtan-tshigs, in Sanskrit: Kārya-hetu); and (3) Relation of negation between the middle term and the heterogeneous major term (in Tibetan: Mi-dmigs-pahi-gtan-tshigs, in Sanskrit: Anupalabdhi-hetu).

### Tarka-nyāya or Vāda-nyāya.

The Tarka-nyāya or Vāda-nyāya is another treatise on Logic by Dharmakirti. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation 2 in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 384-416. The work in Tibetan is called Rtsod-pahi-rigs-pa signifying the "Method of Discussion." The Tibetan translation was prepared by the great Indian sage Jūāna-śri-bhadra and the Tibetan interpreter-monk Dge-wahiblo-gros. Subsequently the translation was retouched by the great Pandita Dipankara (of Vikramanīpura in Bengal, born in 980 A.D.) and the interpreter-monk Dar-ma-grags.

### Santānāntara-siddhi.

102. The Santānāntara-siddhi is a philosophical treatise by Dharmakirti. The Sanskrit original of the work is lost, but there exists a Tibetan version in the Tangyur, Mdo. Ce. folios

# कु. भशःश्चेमा. २ भ. ५ माश्रात्तरे . येमाश्राता त्राश्च ।। यर्गामी सुरार्द्रास्य सुरार्टे सकर की ।।

(Nyāvabindu).

1 I have consulted the copy embodied in the Tangyur of the India Office, London.

2 I have consuited the work embodied in the Tangyur of the India Office, London.

8 I have consulted the Tibetan version embodied in the Tangyur of the India Office, London.

416—420. The work in Tibetan is called Rgyud-gshan-grub-pa signifying "Proof of the Continuity of Succession."

### Sambandha-parīkṣā.

103. The Sambandha-parīkṣā is another philosophical treatise by Dharmakirti. The Sanskrit original of the work is lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 375—377. The work in Tibetan is called Hbrelwa-brtag-pa signifying "Examination of Connection." The Tibetan translation was prepared by the Indian teacher Jñānagarbha and the interpreter Vande-nam-mkhas.

### Sambandha-parīkṣā-vṛtti.

104. The Sambandha-parīkṣā-vṛtti² is a commentary on the Sambandha-parīkṣā by Dharmakīrti himself. The Sanskrit original of the work is lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ce, folios 377—384. The work in Tibetan is called Hbrel-wa-bṛtag-paḥi-hgrel-wa.

### DEVENDRABODHI (ABOUT 650 A.D.).

105. Devendrabodhi, called in Tibetan Lha-dwań-blo, was a contemporary of Dharmakirti, and so lived about 650 A.D. He wrote the following work on Logic:—

106. The Pramāṇa-vārtika-pañjikā, called in Tibetan, Tshad-ma-mam-hgrel-gyi-dkah-hgrel, signifying "An Explanation of Difficulties in the Pramāṇa-vārtika of Dharmakīrti." The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Che, folios 1—380. The translation was prepared by the Indian sage Subhūti-śrī and the Tibetan interpreter-monk Dge-wahi-hlo-gros.

107. This story <sup>5</sup> is told regarding the composition of the Pramāna-vārtika-pañjikā:—

Dharmakirti chose Devendrabodhi to write a commentary on his Pramāna-vārtika. After Devendrabodhi had finished the

<sup>1,</sup> I have consulted the copy embodied in the Tangyur of the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted the copy of this work embodied in the Tangyur of the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 186—187.

<sup>\*</sup> I have consulted the work in the monastery of Labrang in Sikkim

<sup>&</sup>lt;sup>5</sup> Vide Tārānatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp.186-187.

commentary for the time and shown it to DharmakIrti, the latter erased it with water. After he had compiled it a second time, DharmakIrti burnt it in fire. He then compiled it a third time and gave it to DharmakIrti with the observation: "Since the majority of men are incompetent and time is fleeting, I have written this commentary for the people of lighter understanding." This time DharmakIrti allowed the work to exist.

### S'AKYABODHI (ABOUT 675 A.D.).

- 108. Sākyabodhi is stated to have been a pupil of Devendrabodhi. He seems to have lived about 675 A.D. He was the author of the following work:—
- 109. The Pramāṇa-vārtika (-pañjikā)-ṭīkā, called in Tibetan: Tshad-ma-ṛnam-hgrel-gyi-hgrel-bśad, which is an annotation on the Pramāṇa-vārtika-pañjikā of Devendrabodhi. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation which covers volumes Je and Ne of the Tangyur, Mdo. The translation was prepared by the interpreter Dge-wahi-blo gros.

### VINITA DEVA (ABOUT 700 A.D.).

110. Vinīta Deva,<sup>3</sup> called in Tibetan Dul-lha, lived in Nālanda during the time of king Lalita Candra, son of Govi Candra, and Dharmakīrti died during the time of Govi Candra. Vimala Candra, the father of Govi Candra, was married to the sister of Bhartrhari, who sprang from the ancient royal family of Malwa. Supposing this Bhartrhari to be identical with the famous grammarian of that name who died in 651—652 A.D.,<sup>4</sup> we may place his contemporary Govi Candra in the middle of the 7th century A.D. This is exactly the time when Dharmakīrti died. Hence we may conclude that Lalita Candra, son of Govi Candra, flourished towards the end of the 7th century A.D. Vinīta Deva, contemporary of Lalita Candra, must also have lived about this time, a view which harmonises with the date of Dharmakīrti on whose works Vinīta Deva wrote commentaries.

VinIta Deva, who was the famous author of the Samayabhedoparacana-cakra, wrote the following works on Logic:—

Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 187.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted this work in the monastery of Labrang in Sikkim in 1907.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 195—198, 272; Pag-sam-jon-zang edited by Sarat Chandra Das, pp. xlviii, 108.

Vide Takakusu's I-tsing, p. lvii.

Nvāva-bindu-tīkā, called in Tibetan: Rigs-pahi-thigspa-rgya-cher-hgrel-wa, which is a detailed commentary on the Nyayabindu of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work is lost, but a Tibetan translation of it exists in the Tangyur, Mdo, She, folios 1-43. The translation was prepared by the Indian sage Jina Mitra and the interpreter of Shu-chen named Vande-ye-ses-sde.

112. Hetu-bindu-tīkā, called in Tibetan: Gtan-tshigs-kvithigs-pa-rgya-cher-hgr l-wa, which is a detailed commentary on the Hetu-bindu of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 2 in the Tangvur, Mdo. She, folios 116-205. The translation was prepared by the Indian teacher Prajña Varma and the inter-

preter-monk of Shu-chen named Dpal-brtsegs-raksita.

113. Vāda-nyāya-vyākhyā, called in Tibetan: Rtsod-pahirigs-pahi-hgrel-wa, which is a commentary on the Vada-nyava (otherwise called Tarka-nyāya) of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 3 in the Tangyur, Mdo, Ze, folios 39-65. work opens thus: "Who is self-perfected in sweet logical discussion, supreme in patience, affection, charity and self-restraint, and who is the most excellent of logicians—to him (Buddha) bowing down I compose a commentary on the text of Vāda-nvāva."

Sambandha-parīkṣā-tīkā, called in Tibetan Hbrel-pabrtag-pahi rgya-cher-bsad-pa, which is a copious commentary on the Sambandhapariksā of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, folios 1-24. The translation was prepared by the Indian sage Jñāna-garbha and the Tibetan interpreter

Vande-nam-mkhas. The work opens thus:-

"Who is entirely unconnected with the world, and is yet designated as the supreme teacher of it—to him bowing down

fully I explain the Sambandha-pariksā."

115. Alambana-parīksā-tikā, called in Tibetan Dmigs-pabrtag-pahi-hgrel-biad, is an annotation on the Alambanapariksā of Dignāga. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the

<sup>2</sup> I examined this work by permission of the Government of India when it was brought down to Calcutta by the British Mission to Tibet,

1904.

<sup>1</sup> This work was brought down to Calcutta by the British Mission to Tibet during 1904. I examined it by permission of the Government of India. It is now deposited in the British Museum, London.

<sup>&</sup>lt;sup>8</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>4</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>&</sup>lt;sup>5</sup> I have consulted the India Office copy.

Tangyur, Mdo, Ze, folios 186—200. The translation was prepared by the Indian sage Sākya-simha and the interpreter Vandedpal-brtsegs of Shu-chen. The work opens thus:—

"Meditating on the merciful Omniscient One, and saluting

him by my head, I compose the Alambana-pariksā-tikā."

It ends thus:-

- "Here is finished the Alambana parīkṣā-tīkā, which is a clean work of the teacher Vinīta Deva who weighed all sorts of ālambana (objects of thought), and is a lion of speakers confounding the brains of the Tirthika-elephants."
- 116. Santānāntara-siddhi-tīkā, called in Tibetan: Rgyudgshan-grub-paḥi-bgrel-bśad, being a commentary on the Santānāntara-siddhi of DharmakIrti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Tshe, folios 1—21. The translation was prepared by the Indian sage Viśuddha-simha and the interpreter of Shu-chen named Dpal-rtsegs-rakṣita.

### CANDRA GOMIN (ABOUT 700 A.D.).

117. Candra Gomin.<sup>2</sup> called in Tibetan: Zla-wa-dge-bsñen. was born in a Ksatriya family in the east at Varendra (modern Rajshahye in Bengal). He was endowed with a very keen intellect and acquired distinction in literature, grammar, logic, astronomy, music, fine arts and the science of medicine. Under Ācārya Sthiramati he learnt the Sūtra and Abhidharma Pitakas of the Buddhist scripture, and was converted to Buddhism by the Vidvādhara Ācārva Aśoka.3 He had an ardent faith in the Buddhist god Avalokiteśvara and the goddess Tārā.4 He was offered in marriage a daughter of the king of Nalendra. Being told that she was named Tārā, which was the name of his tutelary deity, he thinking it improper to accept her hands shrank from her with fear. Upon this the king of Varendra became angry and put Candra Gomin into a chest which was thrown into the Ganges. The chest was carried down until it stopped at an island at the place where the Ganges flows into the ocean. Candra Gomin with deep reverence offered a prayer to goddess Tārā by whose blessing he got out of the chest. He

lately recovered from Nepal.

4 For Candra Gomin's "Ārya-Tārā-antarbali-vidhi" vide Satischandra Vidyabhusana's Sragdharā-stotra, Introduction, pp. xx, xxi

<sup>1</sup> I have consulted the India Office xylograph of the Tibetan version.
2 Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp.
145—146, 148—158; and Pag-sam-jon-zang edited in the original Tibetan by Sarat Chandra Das, Calcutta, pp. 95-96.

<sup>&</sup>lt;sup>8</sup> Ācārya Asoka was the author of a logical treatise called Sāmānya-dūṣana-dikprakāśikā, a short treatise on the refutation of generality, lately recovered from Nepal.

resided in the island which was in course of time named Candradvīpa or the island of Candra. He as a Buddhist devotee (upāsaka) established there stone-images of Avalokiteśvara and Tārā. At first only fishermen settled in the island, but afterwards other people came to live there. Gradually the island became a town.

118. Candra Gomin thereupon went to Ceylon and on his way back found in Southern India in the house of Vararuci, Nāga-S'esa's (Patañjali's) Bhāsva on Pānini's grammar. Finding that it contained "many words but few thoughts," he himself composed a commentary on Pānini, which was named Candra-vyākarana.<sup>2</sup> Afterwards he came to Nālandā—the store-house of knowledge—and met there Candra-kirti, the famous commentator on the Mādhyamika Philosophy of Arva Nāgārjuna. Candra Gomin himself was a follower of the Yogācāra system expounded by Ārya Asanga. While Candra Kīrti and Candra Gomin entered upon philosophical discussions people used to observe 3: "Alas! the text of Arya Nāgārjuna is medicine to some but poison to others, whereas the text of invincible Ārya Asanga is very ambrosia to all men." It is further stated that into a well at Nālandā Candra Gomin threw the original manuscript of his grammar, thinking that it was not better than the one which Candra Kirti had written. At that time Tārā and Avalokitesvara appeared before him saying: "Though Candra Kirti is overwhelmed with pride as a sage, your work is more useful than all others and will do immense good to the They raised the manuscript from the well, which was

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup> Candra dvīpa is situated in the district of Barisal in South-eastern Bengal at a place where the Padmā, which is a main outlet of the Ganges, falls into the ocean. Vārendra in which Candra Gomin was born is identical with the Rajshahye division in North-eastern Bengal through which the Padmā flows.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> For Candra-vyākaraṇa vide Satis Chandra Vidyabhusana's "Sanskrit works on Literature, Grammar, Rhetoric and Lexicography, as preserved in Tibet" in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, new series, Vol. iii, No. 2, 1907. The Candra-vyākaraṇa in the original Sanskrit has been printed in Germany.

³ गुःसत्यम्।रायात्रुष्ट्वाश्यात्रुष्टः। सायत्रिः भ्रदायायायत्रे पुना। से स्वसादयम्।रायात्रुष्ट्वाशासे दःम्। से से स्वसादयम्।रायात्रुष्ट्वाशासे दःम्। से से स्वसादयम्।रायात्रुष्ट्वाशासे द्वारा

thence reputed as "Candra's well" (in Sanskrit: Candra-kūpa and in Tibetan: Tsandraḥi-khron-pa), the water of which was wont to be drunk by people in the belief that thereby their intellect would become sharp. Candra Kīrti was, however, a great admirer of Candra Gomin. When the latter arrived at Nālandā the monks refused to give him a reception, saying that it was not proper for priests to welcome a mere devotee (upāsaka). Hearing this Candra Kīrti brought three chariots, two of which were occupied by himself and Candra Gomin respectively, while in the third was placed an image of Mañjuśrī, the Buddhist god of learning. The chariots passed through the town in a great procession attended by the whole body of priests who came really to recite hymns to Mañjuśrī, but apparently to accord a fitting welcome to Candra Gomin.

- 119. Candra Gomin lived at a time when Sila, son of Harşa, reigned. During this time king Simha of the Licchavi dynasty reigned in Vārendra. The famous poet Ravi Gupta was a contemporary of Bharṣa, son of Simha. Srī Harṣa seems to be the same as king Harṣa Vardhana who was a contemporary of Hwen-thsang and reigned in 647 A.D. His son Sila seems, on a rough calculation, to have reigned in 700 A.D., when his contemporary Candra Gomin must also have lived. Jaina Hema Candra Sūri who lived during 1088—1172 A.D., refers to Candra Gomin while Jayāditya, the famous author of the Kāśikā vṛtti, who died in 661—662 A.D., does not mention him. This may be explained on the supposition that Candra Gomin lived after Jayāditya, but preceded Hema Candra.
- 120. Candra Gomin was the author of the following work on Logic: Nyāyāloka-siddhi, called in Tibetan: Rigs-pa-grub-paḥisgron-ma, signifying "a lamp of logical reasoning." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, folios 200—201. The translation was prepared by Paṇḍita Sri Sita-prabha and the interpreter-monk Vairocana.

# RAVI GUPTA (ABOUT 725 A.D.).

121. Ravi Gupta, called in Tibetan: Ñi-ma-sbas, was born in Kāśmīra. He was a great poet, dialectician and Tāntric

<sup>1</sup> Vide Pag sam-jon-zang, pp. 95-96.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Professor F. Kielhorn's "Indra Gomin and other grammarians" in the Indian Antiquary, Vol. xv, June 1886, pp. 181, 184.

<sup>Vide Takakusu's I-tsing, p. lvii.
I have used the India Office copy.</sup> 

b Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 146, 147, 243; and Pag-sam-jon-zang, part i, pp. 90, 101, 118, xxxvii.

teacher, who established 12 great religious schools in his native country and Magadha. He was a contemporary of king Bharsa of Vārendra, and flourished a little later than Candra Gomin, who had lived during the time of Bharsa's father Simha. Ravi Gupta must have lived in the first quarter of the eighth century A.D., for his disciple the famous Tāntric monk Sarvajūa Mitra lived in the middle of that century. Ravi Gupta was the author 2 of the following work on Logic:—

122. Pramaņa-vārtika-vṛtti, called in Tibetan: Tshad-ma-nam-hgrel-gyi-hgrel-pa, which is an annotation on the Pramaṇa-vārtika of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in

the Tangyur, Mdo, Tshe, folios 132-252.

# JINENDRABODHI (ABOUT 725 A.D.).

123. In the Tangyur, Mdo, Re, there is the Tibetan version of a work called Viśālāmala vatī-nāma-pramāṇa-samuccaya-tikā. This version was prepared by the Tibetan interpreter Rdo-rje-rgyal-mtshan with the assistance of Dpal-ldan-blo-gros.

124. The author of the original work was Jinendrabodhi, called in Tibetan Rgyal-dwan-blo-gros, who was a venerable countryman of the Bodhisattva (Dignāga?). He is perhaps the same person who wrote the well-known Nyāsa on the grammar of Pāṇini in the eighth century A.D.

### S'ANTA RAKŞITA (749 A.D.).

125. Sānta Rakṣita, called in Tibetan: Shi-wa-htsho, was born in the royal family of Za-hor [in Bengal?]. The exact date of his birth is unknown, but it is stated that he was born at the time of Go Pāla who reigned up to 705 A.D. (vide Appendix B) and died at the time of Dharma Pāla who became king in 765 A.D. He followed the Svatantra Mādhyamika school, and was a Professor at Nālandā (vide Appendix A). He visited Tibet at the invitation of King Khri-sron-deu-tsan who was born in 728 A.D., and died in 864 A.D. The king, with the assistance of Sānta Rakṣita, built in 749 A.D. the monastery of Sam-ye 5 in

<sup>1</sup> Vide Satis Chandra Vidyabhusana's Sragdharā Stotra, Introduction, p. xxx, printed in the Bibliotheca Indica series of Calcutta.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> For Ravi Gupta's Ārya-koşa see Rockhill's Buddha, p. 228; and for his works on Tantra, see Satis Chandra Vidyabhusana's Sragdharā Stotra, Introduction, pp. v-vii.

<sup>8</sup> I have consulted the copy of the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup> Vide Pag-sam-jon-zang edited by Sarat Chandra Das, C.I.E., Calcutta, p. 112.

b Vide Csoma de Koros's Tibetan Grammar, p. 183; Sarat Chandra Das in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1881, Part I, p. 226; and Waddell's Lamaism, p. 28.

Tibet, modelled after the Odantapura Vihāra of Magadha. Samye was the first Buddhist monastery in Tibet and Sāna Rakṣita was its first abbot. He worked in Tibet for 13 years, that is, until 762 A.D. He was known there under the name of Ācārya Bodhisattva, and was the author of the following works on Logic:—

126. Vāda-nyāya-vṛtti-vipañcitārtha, called in Tibetan: Rtsod-paḥi-rigs-paḥi-hbrel-pa-don-rnam-par-hbyed-pa, an elaborate commentary on the Vāda-nyāya of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, folios 65—186, and in the Tangyur, Mdo, Tshe, folios 21—131. The translation was prepared by the Indian sage Kumāra-śri-bhadra and the Tibetan interpreter-monks venerable S'es-rab and Hbro-sen-dkar (who was a native of the province of Hbro or Dö) in the holy monastery of Bsam-yas (Sam-ye). The work opens thus:—

"Who constantly dispersing darkness by the ray of the heap of various pure precious qualities, exerted himself for the sake of obtaining the fruits of desire of various sentient beings and rejoiced to do good to the entire world—to that Maūju-śrī bowing down in reverence, I compose this concise and stainless Vāda-

nyāya-vṛtti-vipañcitārtha.

127. Tattva-samgraha-kārikā, called in Tibetan: De-kho-nanīid-bāduṣ-paḥi-tshig-leḥur-byaṣ-pa, a work containing memorial
verses on a summary of the Tattvas. The Sanskrit original of
this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, He, folios 1—146. The translation
was prepared by the Indian Paṇḍita Guṇākara-śrī-bhadra (belonging to the religious circle first instituted by the great king
Lalitāditya in the incomparable city of Kāśmīra) and the great
Tibetan interpreter the S'ākya monk Lha-bla-ma-shi-wa-hod in
the province of Guge (S.-W. Tibet). The work reviews various
systems of philosophy such as the Sāmkhya, Jaina, etc.3

<sup>1</sup> I have consulted the xylograph of this work contained in the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted the work in the monastery of Labrang, Sikkim, which I visited in June 1907. For a detailed account of this work vide my "Sāmkhya Philosophy in the Land of the Lamas" in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, new series, Vol. iii, No. 8.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> The Tattvasamgraha herein noticed is quite different from the Tattvasamāsa, a Brāhmanic work on the Sāmkhya philosophy, a manuscript of which is contained in the library of the Asiatie Society of Bengal.

Dr. George Bühler, during his explorations of the Brhat-jñāna koşa in the temple of Parsva-nātha at Jesalmir, found in 1873 a Pothi, consisting of 189 ancient palm-leaves showing the characters of the 12th or 13th century, and bearing on the outside corner the title Kamala-fila-tarka

128. The subject-matter of the work begins thus:—
"From *Pradhāna* (the primordial matter or nature) possessed of entire powers all sorts of effects are produced."

(vide Dr. G. Bühler's correspondence with Rai Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., published in the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, Vol. i, part ii, p. x). The real name of the work, according to Dr. Bühler, is Tarka-samgraha. Now, this Tarkasamgraha is nothing but Tattvasamgraha of Sānta Rakṣita with the commentary, by Kamala Sīla. The introductory part (Mangala) of the Tarka-samgraha, as noticed by Dr. Bühler, runs as follows:—

प्रकृतीशोभयातादि [कियया] रहितं चल्पः ।
कर्मा तत्फलमन्त्रस्य खनच्यादिसमात्रयम् ॥
गुणक्रविक्रयाजातिसमनायाद्यपिषितः ।
प्रद्रमारोपिताकारश्रव्यप्रत्ययोगेषरम् ॥
स्पष्टलचणसंयुक्त प्रमाहितयनिश्चितम् ।
स्पष्टलचणसंयुक्त प्रमाहितयनिश्चितम् ।
स्पौयसपि नांग्रेन मित्रोभूतापरात्मकम् ॥
संक्रान्मिमनाद्यनं प्रतिविक्षादिसंनिभम् ।
स्वन्त्रमृतिनःसङ्गो जगहितविषित्यया ।
सनस्यकस्पासंद्येय सात्मीभूत महोदयः ॥
यः प्रतौत्यसमृत्यादं जगाद वदतां वरः ।
तं सर्वेत्रं प्रथ्यायं क्रियते तकसंग्रदः ॥

The introductory part in the Tattvasangraha is identical with the above as is evident from the Tibetan version extracted below:—

द्रान्तिक्रन्त्राः स्वतः मिष्टेक्षः गाः न्द्राः।

प्रमाशं मिक्षः मुद्रेन्द्रः स्वतः मिष्टेक्षः ।।

स्वारान्द्रः त्रम्याः स्वतः स्वतः मिष्टेक्षः ।।

स्वारान्द्रः त्रम्याः स्वतः स्वतः मिष्टेन्द्रः ।।

स्वारान्द्रः स्वार्तः स्वाराम्यः स्वतः स्वतः ।।

स्वारान्द्रः स्वार्तः स्वाराम्यः स्वतः स्वतः ।।

स्वारान्द्रः स्वारान्ति स्वाराम्यः स्वतः स्वतः ।।

स्वारान्द्रः स्वारान्ति स्वारान्ति ।।

स्वारान्द्रः स्वारान्ति स्वारान्ति ।।

स्वारान्तिकाः स्वतः स्वतः स्वतः ।।

The work is divided into 31 chapters, viz.: (1) examination of nature (in Sanskrit: Svabhāva-parīksā, in Tibetan: Ran-bshinbrtag-pa); (2) examination of the sense-organs (in Sanskrit: Indriva-pariksā, in Tibetan: Dwan-phyug-brtag-pa); (3) examination of both (in Sanskrit: Ubhaya-parīksā, in Tibetan: Gñiska-brtag-pa): (4) examination of the theory that the world is self-existent (in Sanskrit: Jagat-svabhāva-vāda-parīksā, Tibetan: Hgro-wa-ran-bshin-du-smra wa-brtag-pa); (5) examination of Brahma, the presiding deity of sound (in Sanskrit: Sabda-Brahma-pariksā, in Tibetan: Sgrahi-tshans-pa-brtag-pa); (6) examination of the soul (in Sanskrit: Purusa-pariksā, in Tibetan: Skyes-bu-brtag-pa); (7) examination of the Nyāya and Vaisesika doctrines of the soul (in Sanskrit: Nvāva-vaisesika-parikalpita-purusa-pariksā, in Tibetan: Rigs-pa-can-dan-byebrag-pas-kun-tu-brtags-pahi-skyes-bu-brtag-pa); (8) examination of the Mimāmsaka doctrine of the soul (in Sanskrit: Mimāmsaka-kalpita-ātma-parīksā, in Tibetan: Spyod-pa-pasrtags-pahi-bdag-brtag-pa); (9) examination of octrine of the soul (in Sanskrit: Kapila-parikalpita-ātma-parīksā. in Tibetan: Ser-skya-pas-kun-tu-brtags-pahi-bdag-brtagpa); (10) examination of the Digambara Jaina doctrine of the soul (in Sanskrit: Digambara-parikalpita-ātma-pariksā, in Tibetan: Nam-mkhahi-gos-can-gyis-kun-tu-brtags-pahi-bdagbrtag-pa); (11) examination of the Upanisad-doctrine of the soul (in Sanskrit: Upanisad-kalpita-ātma-parīkṣā, in Tibetan:

मह्दन्ते द्वारा स्टाल्ट स्टाल स्ट

U-pa-ni-sa-di-kas-brtags-pahi-bdag-brtag-pa); (12) examination of the Vatsiputra doctrine of the soul (in Sanskrit: Vatsiputrakalpita-ātma-parīksā, in Tibetan: Gnas-mahi-bus-bdag-brtagpa); (13) examination of the permanence of entities (in Sanskrit: Sthira-padartha-pariksa, in Tibetan: Brtan-pahi-dnospo-brtag-pa); (14) examination of the relation between Karma and its effect (in Sanskrit: Karma-phala-sambandhapariksā, in Tibetan: Las-dan-hbras-buhi-hbrel-pa-brtag-pa); (15) examination of the meaning of the word 'substance' (in Sanskrit: Dravya-padārtha-parīksā, in Tibetan: Rdsas-kyi-tshig gi-don-brtag-pa); (16) examination of the meaning of the word quality; (in Sanskrit: Guna-sabdārtha-parīksā, in Tibetan: Yon-tan-gyi-tshig-gi-don-brtag-pa); (17) examination of the meaning of the word Karma (in Sanskrit: Karma-śabdarthaparīksā in Tibetan: Las-kyi-tshig gi-don-brtag-pa); examination of the meaning of the word generality or genus (in Sanskrit: Sāmānya-sabdārtha-parīksā, in Tibetan: Spyihitshig-gi-don-brtag-pa); (19) examination of the meaning of the words 'generality,' and 'particularity' (in Sanskrit: Sāmānya-viśesa-śabdārtha-parīkṣā, in Tibetan: Spyi-dan-bye-brag-gitshig-gi-don-brtag-pa); (20) examination of the meaning of the

त्रभ्यःयः मृत्यः अन्तः भ्रः न्यः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः त्रेयः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः यः स्थः ।।

त्रेत्रं केटः त्रेयः यः स्थः यः स्थः ।।

Dr. Bühler further observes that the first section of the Tarkasamgraha contains देशर-परीचा (examination of God), कापलक स्पितादा-परीचा (examination of Kapila's doctrine of the soul), श्रीपनिषदकस्पितादा-परीचा (examination of the soul according to the Upanisads), स्थिरभाव-परीचा (examination of permanent entity), etc. The last colophon appears to him to be खतः प्रामाणवाद (examination of the doctrine of self-evidence). These are the very subjects treated in the Tattvasamgraha. So the two works are identical.

word 'co-existent cause' (in Sanskrit: Samavāya-śabdārthapariksā, in Tibetan: Hdu-wahi-tshig-don-brtag-pa); (21) examination of the meaning of the word 'sound' (in Sanskrit: Sabdārtha-parīksā, in Tibetan: Sgra-vi-don-brtag-pa); (22) examination of the definition of perception (in Sanskrit: Pratvaksa-laksana-parīksā, in Tibetan: Mnon-sum-gyi-mtshannid-brtag-pa): (23) examination of inference (in Sanskrit: Anumānaparīksā, in Tibetan: Rjes-su-dpag-pa-brtag-pa); (24) examination of other kinds of valid knowledge (in Sanskrit: Pramānāntara-parīksā, in Tibetan: Tshad-ma-shan brtag-pa): (25) examination of the doctrine of evolution (in Sanskrit: Vivartavāda-parīksā, in Tibetan: Hgyur-war-smra wa brtagpa); (26) examination of the three times (in Sanskrit: Kālatraya-pariksā, in Tibetan: Dus-gsum-brtag-pa); (27) examination of continuity of the world (in Sanskrit: Samsara-santatipariksā, in Tibetan: Hjig-rten-rgyud-pahi-brtag-pa); (28) examination of external objects (in Sanskrit: Vahyartha-pariksa. in Tibetan: Phyi-rol-gyi don-brtag-pa); (29) examination of S'ruti or Scripture (in Sanskrit: S'ruti-pariksā, in Tibetan: Thos-pa-brtag-pa); (30) examination of self-evidence (in Sanskrit: Svatah-prāmānya-parīksā, in Tibetan: Ran-las-tshad-madrtag-pa); and (31) examination of the soul which sees things beyond the range of senses (in Sanskrit: Anyendriyātītārthaarsana purusa-patiksā, in Tibetan: Gshan-gyi-dwan-po-lashdas-pahi-don-mthon-wa-can-gyi-skyes-bu-brtag-pa).

#### KAMALA S'ILA (ABOUT 750 A.D.).

- 129. Kamala S'īla, lalso called Kamala S'rīla, was a follower of S'ānta Rakṣita. He was for some time a Professor of Tantras in Nālandā whence he was (vide Appendix A) invited to Tibet by king Khri-sron-deu-tsan (728—736 A.D.). While in Tibet he vindicated the religious views of Guru Padma-sambhava and S'ānta Rakṣita by defeating and expelling a Chinese monk named Mahāyāna Hoshang. He was of wide fame and the author of the following works:—
- 130. Nyāya-bindu pūrva-pakṣe-saṁkṣipta, called in Tibetan Rigṣ-paḥi-thigṣ-paḥi-phyogṣ-ṣṇa-ma-mdor-bṣduṣ-pa, a summary of criticisms on the Nyāyabindu of DharmakIrti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation <sup>2</sup> in the Tangyur, Mdo, She, Folios 106—115. The translation was prepared by the Indian sage

<sup>1</sup> Vide Pag-sam-jon-zang, part i, p. 112, edited by Sarat Chandra Das, and also the Journal of the Buddhist Text Society of Calcutta, vol. i, part i, p. 10, and Waddell's Lamaism, p. 31.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted the copy brought down by the British Mission to Tibet in 1904.

Visuddha Simha and the interpreter monk of Shu-chen named

Dpal-rtsegs-raksita.

131. Tattva-samgraha-pañjikā, called in Tibetan De-khona-ñid-hsdus-pahi-dkah-hgrel, a commentary on the Tattva-samgraha of Santa Raksita. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation of part I of this work in the Tangyur, Mdo, He, Folios 146-400, and part II of it in the Tangyur, Mdo, Ye, Folios 1-385. The translation was prepared by the Indian sage Devendra Bhadra and the interpreter monk Grags-hbyor-ses-rab.

#### KALYĀNA RAKSITA (ABOUT 829 A.D.).

- 132. Kalyāna Rakṣita,² called in Tibetan Dge-bsrun, was a great dialectician and teacher of Dharmottarācārya. He flourished during the reign of Mahārāja Dharma Pāla who died in 829 A.D. (Vide Appendix B). He was the author of the undermentioned works 3:-
- Vāhyārtha-siddhi-kārikā, called in Tibetan phyi-rolgyi-don-grub-pa-ces-bya-wahi-tshig-lehur, which signifies memorial verses on the reality of external things. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangvur, Mdo, Ze, Folios 202-210. The translation was prepared by the Vaibhāsika teacher Jina Mitra of Kāśmīra and the Tibetan interpreter-monk Dpal-brtsegs-raksita.

·134. Śruti-parikṣā, called in Tibetan Thos-pa-brtag-pahitshig-lehur-byas-pa, which signifies 'memorial verses on the examination of Sruti or verbal testimony.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan trans-

lation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 210-211.

Anyāpoha-vicāra-kārikā, called in Tibetan Gshan-labrtag-pahi-tshig-lehur-byas-pa, which signifies 'memorial verses on the determination of a thing by the exclusion of its opposites.' The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 211-213.

136. Iśyara bhanga-kārikā, called in Tibetan Dwan-phyughjig-pahi-tshig-lehur-byas-pa, which signifies 'memorial verses

3 I have consulted Kalyana Raksita's works in volume Ze of the

Tangyur lent to me by the India Office, London.

I have consulted this work in the monastery of Labrang, Sikkim, which I visited in June 1907.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 216—219: and Pag-sam-jon-zang, p. 114. The particle 'bsruh' signifies 'protected' and is an equivalent for Sanskrit 'Raksita.' But Schiefner has taken it as an equivalent for 'Gupta.' This does not seem to be correct, for the Tibetan equivalent for Gupta is "sbas."

on the refutation of God.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze. Folios 214—215.

#### DHARMOTTARĀCĀRYA (ABOUT 847 A.D.).

- 137. Dharmottara i (Ācārya Dharmottara or Dharmottarā-cārya) called in Tibetan Chos-mchog, was a pupil of Kalyāṇa Rakṣita and of Dharmākara Datta of Kāśmīra. He appears to have flourished in Kāśmīra while Vanapāla was reigning in Bengal about 847 A.D. (vide Appendix B), and is mentioned by the Jaina philosophers Mallavādin the author of Dharmottara-ṭippanaka about 962 A.D.<sup>2</sup> and Ratnaprabha Sūri<sup>8</sup> the famous author of Syādvāda-ratnāvatārikā dated 1181 A.D. Dharmottara was the author of the following works:—
- 138. Nyāya-bindu-ṭīkā, called in Tibetan Rigṣ-paḥi-thigṣ-paḥi-rgya-cher-hgrel-wa, a detailed commentary on the Nyāya-bindu of Dharmakīrti. The Sanskrit original of this work was preserved in the Jaina temple of Sāntinātha, Cambay, and has been published by Professor Peterson in the Bibliotheca Indica series of Calcutta. There exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo. She, Folios 43—106. The translation was prepared by the Indian sage Jñāna-garbha and an interpreter-monk of Shu-chen named Dharmāloka, and afterwards recast by the Indian sage Sumati-kīrti and the Tibetan interpreter-monk Blo-ldan-śeṣ-rab. Nyāyabindu-tīkā begins thus:—"Sugata, the conqueror of lust, etc., has overcome this world, the source of series of evils beginning with birth: may his words dispelling the darkness of our mind attain glory." b

1 Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 225;

and Pag-sam-jon-zang, p. 114.

- <sup>2</sup> The Jaina logician Mallavād'n (q. v.) wrote a gloss called Dharmottara-tippanaka on Dharmottarācārya's Nyāyabindutīkā. The year 884 in which Mallavādin flourished corresponds to 827 A.D. or 962 A.D. according as we take it to refer to Vikrama-samvat or Saku-samvat. On one supposition Mallavādin was a contemporary of Dharmottara and on the other he flourished a century later.
- ³ चन भर्मोत्तरानुसारी प्राप्त। प्रयोजनमादिवाच्येन साचादाख्यायते रति न चमे। (Syādvāda-ratnāvatārikā, p. 10, Jaina yaśovijaya series of Benares). ●
- <sup>4</sup> I have consulted the copy brought down by the British Mission to Tibet during 1904. The Tibetan version has also been edited by F. J. Sherbatski and printed in Russia.
  - <sup>5</sup> जयिन जातियसम्प्रस्थान प्रस्ति हेती जंगती विनेतः।

    रागादारावेः सुगतस्य बाची मनस्यमस्यानवसादधानाः॥

    (Nyāyabindutīkā, Chap. I).

139. Pramāna-parīksā, called in Tibetan Tshad-ma-brtagpa, signifying 'an examination of Pramana or the sources of valid knowledge.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 1 in the Tangyur. Mdo, Ze, Folios 215-237, as well as Folios 238-253. The

translation was prepared by monk Blo-Idan-ses-rab.

Apoha-nāma-prakarana, called in Tibetan Gshan-selwa, signifying 'a treatise on the determination of a thing by the exclusion of its opposites.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 2 in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 254-266. The translation was prepared by the Kaśmirian Pandita Bhāgyarāja and the interpreter-monk Blo-ldan-ses-rab, in the incomparable city of Kāśmīra.

141. Pāra-loka-siddhi, called in Tibetan Hjig-rten-pha-rolgrub-pa, signifying 'proof of the world beyond.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 3 in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 266-270. The translation was prepared by the great Pandita Bhāgvarāja and the interpreter-monk Tshab-ñi-ma-grags during the lifetime of Sri Harsa Deva (king of Kāśmīra, 1089—1101 A.D.) in the great incomparable city of Kāśmīra.

The work begins thus:-

"Some say that the world beyond is possessed of the characteristics of a complete separation from the link of consciousness which began from before birth and continued after death, etc."

- Ksana bhanga-siddhi, called in Tibetan Skad-cig-mahjig-pa-grub-pa, signifying 'proof of the momentariness of things.' The Sanskrit original of this work appears to be lost. but there exists a Tibetan translation 4 in the Tangyur, Mdo, Ze. Folios 270-282. The translation was prepared by the Indian sage Bhāgyarāja and the interpreter-monk Blo-ldan-sesrab.
- Pramāņa-viniścaya-tīkā, called in Tibetan Tshad-marnam-nes-kvi-tīkā, which is a commentary on the Pramāna-viniścaya of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangvur, Mdo, Dse, folio 346 f, and We, Folios 1-188. The translation was prepared by the Kāśmirian Pandita Parahita Bhadra and the Tibetan interpreter Blo-ldan-ses-rab in the model city of Kāśmira. In the concluding lines of the work

<sup>1</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>3</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>4</sup> I have consulted the India Office copy. 5 I have consulted the India Office copy

Dharmottara, the author of it, is described as "the excellent subduer of bad disputants (quibblers)."

#### MUKTĀ-KUMBHA (AFTER 847 A.D.).

- 144. Muktā-kumbha,² called in Tibetan Mu-tig-bum-pa, was the author of a work called Kṣaṇa-bhaṅga-siddhi-vyākhyā, which is a commentary on Dharmottarācārya's Kṣaṇa-bhaṅga-siddhi. Muktā-kumbha must have flourished after 847 A.D., when Dharmottara lived.
- 145. The Kṣaṇa-bhaṅga-siddhi-vyākhyā is called in Tibetan Ṣka l-cig-ma-hjig-grub-paḥi-ṛnam-hgrel. The Sanskrit original of the work appears to be lost, but a Tibetan translation <sup>8</sup> is embodied in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 282—301. This version was prepared by the Indian sage Vināyaka and the interpreter-monk Grags-hbyor-ses-rab.

#### · ARCATA (AFTER 847 A.D.).

146. Guṇa-ratna Sūri,\* the famous Jaina author of the Ṣaḍdarśana-samuccaya-vṛtti, who lived in 1409 A D., mentions the Tarkaṭīkā of Arcaṭa.<sup>5</sup> Arcaṭa is also mentioned by the Jaina philosopher Ratnaprabha Sūri,<sup>6</sup> the well-known author of Syādvādaratnāvatarikā, dated 1181 A.D. In the Jaina Nyā-yāvatāra-vivṛti <sup>7</sup> it appears that Arcaṭa criticised Dharmottarācārya who lived about 847 A.D. Roughly speaking he flourished in the 9th century A.D.

Arcata was the author of the following work on Logic:-

147. Hetu bindu vivarana, called in Tibetan Gtan-tshigs-thigs-paḥi-hgrel-wa, being a commentary on the Hetu-bindu of Dharmakirti. The Sanskrit original of this work appears to be

# । र्ह्मिन'दिन'र्हेस'सर्हेन्।'हेन्।'न्ने'दद'द्रहेस्स'सर्हेन्। (Tangyur, Mdo,

We, Folios 188).

<sup>2</sup> The name Muktākumbha is restored from Tibetan.

- 3 I have consulted the work belonging to the India Office, London.
  4 Vide Satis Chandra Vidyabhusana's Jaina Logic under "Gunaratna Suri."
- $^5$  Vide Dr. Suali's edition of the Saddarśana-samuccaya-vṛtti, chapter on Bauddha darśana.  $\blacksquare$
- <sup>6</sup> **षर्कटचर्चचतुरः पुनराह**। **रह** प्रेचावतां प्रष्टतिः प्रयोजनवत्तयाः याप्ता...। (Syādvāda-ratnāvatārikā, chap. i, p. 17, published in Jaina ¶aśovijaya granthamālā of Benares).

7 Vide Satis Chandra Vidyabhusana's edition of the Nyāyāvatāra with vivṛti which is being published by the Indian Research Society of Calcutta.

lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, She, Folios 205—375. It is divided into four chapters treating respectively of (1) Identity (in Tibetan: Ran-bshin, and in Sanskrit Svabhāva); (2) Effect (in Tibetan: hbras-bu, and in Sanskrit: Kārya); (3) Non-perception (in Tibetan: Mi-dmigs-pa, and in Sanskrit: Anupalabdhi); and (4) Explanation of Six Characteristics (in Tibetan: Mtshan-ñid-drug-bsad-pa, and in Sanskrit: Ṣad-lakṣaṇa-vyākhyā). In the beginning of the work it is stated that Arcaṭa was a Brāhmaṇa, and from the concluding part it appears that he lived in Kāśmīra. The Tibetan version ends thus:—

"In the city of Kāśmīra, the pith of Jambudvīpa, the commentary (on the work) of Dharmakīrti, who was the best of sages, was translated. From this translation of Pramāṇa the pith of holy doctrines, let the unlearned derive wisdom." 2

#### Dānasīla (about 899 A.D.).

- 148. Dānaśīla,³ also called Dānaśrīla, was born in Kāśmīra about 899 A.D., when Mahī Pāla was reigning in Bengal. He was a contemporary of Parahita Bhadra, Jina Mitra, Sarvajña Deva and Tilopa. He visited Tibet and co-operated in the propaganda of the translations of Sanskrit books into Tibetan. He was the author of the following work on Logic:—
- . 149. Pustaka-pāṭhopāya, called in Tibetan Glegs-bam-bklag-paḥi-thabs, signifying the method of reading books. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folio 270. The translation was prepared by the author himself.
- <sup>1</sup> The volume She, containing this work, was brought down by the British Mission to Tibet in 1904. I borrowed it from the Government of India.

(Tangyur, Mdo, She, folio 375).

- 8 Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 225—226; and Pag-sam-jon-zang, p. xlvi.
  - I have consulted the India Office copy.

#### JINA MITRA (ABOUT 899 A.D.).

- 150. Jina Mitra <sup>1</sup> was a native of Kāśmīra who, together with Sarvajña Deva, Dāna-śīla and others, visited Tibet and helped the Tibetans in the work of translating Sanskrit books into Tibetan. Jina Mitra lived about 899 A.D., <sup>2</sup> when his contemporary kings Khri-ral (or Ral-pa-can) of Tibet and Mahī Pala of Bengal, died. He wrote the undermentioned work on Logic:—
- 151. Nyāya-bindu-pindārtha, called in Tibetan Rigs-paḥi-thigs-paḥi-don-bsdus-pa, which contains the purport of Dharma-kirti's Nyāyabindu. The Sanskrit original of this work is lost, but there exists a Tibetan translation <sup>3</sup> in the Tangyur, Mdo, She, Folios 115—116. The translation was prepared by the Indian teacher Surendrabodhi, and the interpreter of Shuchen, named Vande-ye-śes-sde.

#### PRAJÑĀKARA GUPTA (ABOUT 940 A.D.).

- 152. Prajñākara Gupta, de called in Tibetan S'es-rab-hbyungnas-sbas, lived at the time of Maha Pāla, who died in 940 A.D. He was a lay devotee and quite different from Prajñākara Mati, who was a monk and keeper of the southern gate of the university of Vikrama-silā during the reign of Canaka in 983 A.D. (Vide Appendix C). Pranjñākara Gupta was the author of the following works:—
- 153. Pramāṇa-vārtikālaṅkāra, called in Tibetan Tshad-marnam-hgrel-gyi-rgyan, which is a commentary on the Pramāṇa-vārtika of Dharmakīrti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation be which is divided into two parts. The first part extends over Folios 1—352 of volume Te, and the second part Folios 1—328 of volume She of the Tangyur, section Mdo. The translation was prepared by the great Kasmīrian Paṇdita Bhāgya-rāja and the Tibetan interpreter Blo-ldan-ses-rab. Subsequently, it was looked through by Sumati and the interpreter Blo-ldan-ses-rab. The translation has the advantage of having been assisted by numerous sages of the great monastery of Vikramasilā in Middle India,

<sup>1</sup> Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 226; and Pag-sam-jon-zang, pp. xevi, 115.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Csoma de Koros's Tibetan Grammar, p. 183.

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup> Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 230, 235; and Pag-sam-jon-zang, p. 116.

<sup>&</sup>lt;sup>5</sup> I have consulted this work in the monastery of Labrang in Sikkim, which I visited in June, 1907.

under the supervision of the great wise Paṇḍita S'rī S'unayaśrī Mitra and also of the wise Paṇḍita Kumāraśrī of the model

city of Kāśmira.

154. Sahāvalambha-niścaya, called in Tibetan Lhan-eigdmigs-pa-nes-pa, signifying "the ascertainment of objects and their knowledge arising together." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 301—308. The translation was prepared by the Nepalese Paṇḍitā Santi Bhadra and the Tibetan interpreter-monk Sākya-hoḍ of the village of Sen-dkar in the province of Hbro (Do).

#### ÃCĀRYA JETĀRI (940—980 A.D.).

155. Jetāri i or Ācārya Jetāri, called in Tibetan Dgra-las-rgyal-wa, was born of a Brāhmaṇa family. His father, Garbha-pāda, lived in Vārendra at the court of Rājā Sanātana, who was a vassal to the Pala kings of Magadha. Being expelled by his kinsmen, Jetāri became a Buddhist devotee and worshipped Mañjuśri, by whose grace he became a perfect master of sciences. He received from king Maha Pāla the royal diploma of Paṇḍita of the university of Vikramaśilā.

156. The famous Dīpankara or Srījñāna Atisa is said, when very young, to have learnt five minor sciences from Jetāri. Maha Pāla reigned up to 940 A.D. (vide Appendix B), and Dīpankara was born in 980 A.D.<sup>3</sup> Their contemporary, Jetāri,

must have lived between those dates.

He was the author of the following works 4 on Logic:—

157. Hetu-tattva-upadeśa, called in Tibetan Gtan-tshigs-kyi-de-kho-na-ñid-bstan-pa, signifying "instruction on the real nature of the middle term in a syllogism." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 344—354. The translation was prepared by the Indian sage Pandita Kumāra-kalasa and the Tibetan interpreter-monk S'ākya-hod.

158. Dharma-dharmi-viniścaya, called in Tibetan Chos-dań-chos-can-gtan-la-dwab-pa, signifying "determination of the minor and major terms." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the

Tangyur, Mdo, Ze, Folios 354-359.

<sup>1</sup> I have consulted the India Office copy.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 230—233; and Pag-sam-jon-zang, p. 116.

<sup>3</sup> Vide the "Journal" of the Buddhist Text Society of Calcutta, vol.

<sup>4</sup> The Volume Ze, of the Tangyur, Mdo, containing Jotari's works, was lent to me by the India Office. London.

- 159. Bālāvatāra-tarka, called in Tibetan Biṣ-wa-hjug-pahirtog-ge, signifying "children's introduction to Logic." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 359—372. The translation was prepared by the Indian sage Nāga Rakṣita and the Tibetan interpreter of the province of Sum-pa (in Amdo) named Dpal-mchog-dan-pohi-rdo-rje. The work begins thus:—
- "Who by the lustre of his sermon has completely dispersed and cleared the veil of the gloom of ignorance, who is a single lamp to three worlds—may that Bhagavān long remain victorious." It consists of three chapters named respectively: (1) Perception; (2) Inference for one's own self; and (3) Inference for the sake of others.

#### JINA (ABOUT 983 A.D.).

10. Jina, called in Tibetan Egyal-wa-can, was the author of the following work:—

Pramaṇa-vārtikālaṅkāra-ṭīkā, called in Tibetan Tshad-marnam-hgrel-gyi-rgyan-gyi-hgrel-bśad, a voluminous work, the Tibetan version of which occupies volumes De and Ne of the Tangyur, section Mdo. This version was prepared by Pandita Dīpankara of Vikramaśilā (who arrived in Tibet in 1040 A.D.) and the Tibetan interpreter, Byan-chub-śes-rab of Shan-shun.

161. Jina, the author of the original work, is probably the same as Jina Bhadra of Konkana, who was a contemporary of Vāgīšvarakīrti, about 983 A.D. (Vide Appendix C).

### JÑĀNA-ŚRĪ (ABOUT 983 A.D.).

162. Jñāna-śrī, or rather Jñāna-śrī Mitra 8 (probably the same as Jñāna-śrī Bhadra, who worked in Kāśmīra), was born in Gauda. He was at first admitted into the Srāvaka school of

मारमीक्षःमाश्चरःरयदिन् चेरःमान्स्यमानीक्ष।। श्वनःयतेःरयःरेयः इष्ठःयरः मूजिः सर्हनः माक्षत्र।। श्वनःयतेः रयःरेयः इष्ठः यरः मूजिः सर्हनः माक्षत्र।। यदिसः इष्ठः यन्त्रः नेतः सुजिः स्वनः सुजिः स्वा।।

(Tangyur, Mdo, Ze, folio 359).

Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 235.
 Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 235—242; and Pagsam-jon-zang, pp. 117—120.

Buddhism, but afterwards imbibed faith in the Mahāyāna. Dīpaṅkara or Srī-jñāna Atiśa (born in 980 A.D.) is said to have been much indebted to him. Jñāna-śrī Mitra was appointed a gate-keeper of the university of Vikramaśilā by Canaka who reigned in Magadha up to 983 A.D. (Vide Appendices B and C). The Hindu philosopher Mādhavācārya in the 14th century quotes <sup>1</sup> Jñāna-śrī, who is perhaps the same as Jñāna-śrī Mitra. He was the author of the following works on Logic:—

163. Pramāṇa-viniścaya-ṭīkā,² called in Tibetan Tshad-marnam-par-neṣ-paḥi-ḥgrel-ḥśad, which is a commentary on the Pramāṇa-viniścaya of Dharmakīrti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Dse, Folios 1—346, and We, Folios 188—322. The translation was prepared by the author 8 himself with the co-operation of the interpreter-monk Choṣ-kyi-brtson-bgrus.

164. Kārya-kāraṇa bhāva-siddhi, called in Tibetan Rgyudan-hbras-buḥi--no-wo-grub-pa, signifying establishment of the relation of cause and effect. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 413—418. The translation was prepared by the great Indian sage Kumāra Kalasa and the interpreter-monk Sākya-hod. Subsequently, it was retouched and published by the Nepalese Paṇḍita Ananta-śrī and the interpreter-monk aforementioned.

- 165. Tarka-bhāṣā, called in Tibetan Btog-gehi-skad, signifying 'technicalities of logic.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation 6 in

#### तदुक्तं ज्ञानत्रिया

यत् सत् तत् चिषकं यथा जलस्यः समस्य भावा चमी। सत्तामितिर चिकक्षीण मितेः सिद्धेषु सिद्धा न सा॥ नाप्येकैव विभान्यया परक्ततेनापि क्रियादिर्भवेत्। द्वेभापि चण्भक्रसम्मतिरतः साध्ये च वित्रास्यति॥

<sup>2</sup> I have consulted the Tibetan version of this work in the monastery of Labrang in Sikkim.

& The author of the Pramāṇa-viniścaya-tikā is called Jũanaśrī Bhadra and also simply Jūāna-śrī. He is stated in the Colophon of the work to have been a native of Kūśmīra. Vide Satis Chandra Vidyabhusana's "Indian Logic as preserved in Tibet, No. 3" in the Journal of the Asiatic Society of Bengal, New Series, vol. iii, No. 7, 1907. Jūāna-śrī Mitra, of Gauda, seems to be the same as Jūāna-śrī Bhadra, of Kūśmīra, who may have left Gauda to live in Kūśmīra.

4 The author of this work is named Jūāna-śrī Mitra.

I have consulted the India Office copy.
I have consulted the India Office copy.

<sup>1</sup> Vide the Sarvadarsana-samgraha, chapter on Bauddha-darsana:-

the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 373—413. The translation was prepared by the interpreter-monk Dpal-ldan-blo-gros-brtan-pa. The work is divided into three chapters named respectively: (1) Perception; (2) Inference for one's own self; and (3) Inference for the sake of others. It begins thus:—"Bowing down to the teacher, the lord of the world, I elucidate Tarkabhāṣā (the technicalities of logic) for the sake of introducing children of small intellect to the system of Dharmakīrti."

#### RATNA VAJRA (ABOUT 983 A.D.).

- 166. Ratnavajra.<sup>2</sup> called in Tibetan Rin-chen-rdo-rje, was born in a Brāhmana family in Kāśmīra. His ancestors were His father, Hari deerly versed in the sastra of the Tirthikas. Bhadra, was the first convert to Buddhism in his family. Ratnavajra, who was an upāsaka (lay devotee), studied by himself up to the 36th year of his life all the Buddhist sutras, mantras, and sciences. After this he came to Magadha and Vajrāsana (Buddha-Gayā) where he beheld the face of Cakra-samvara, Vajravarāhī and many other deities, by whose grace he completely mastered the Buddhist sastras. He received the royal diploma of the university of Vikramasilā and was appointed a gate-keeper of the university (vide Appendix C). Afterwards he came back to Kāśmīra, whence he went through Udyāna (Kabul) to Tibet, where he was known by the name of Acarya. He flourished during the reign of Canaka about \$83 A.D. (Vide Appendices B and C). He was the author of the following work:-
- 167. Yukti-prayoga, called in Tibetan Rigs-pahi-sbyor-wa, signifying "application of reasoning." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 372—373. The

द्वासायहेनाहेशन्याः यहुन्त्रस्य।। द्वेसायायेन्यान्यस्य त्यान्यस्य ।। द्वेसायायेन्यान्यस्य त्यान्यस्य ।। देवानोर्यः स्वर्तान्यस्य ।।

(Tangyur, Mdo, Ze, folio 373).

 $<sup>^2</sup>$  Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 240.  $^3$  I have consulted the Tibetan version in the possession of the India Office, London.

translation was prepared by the Indian sage Srī Subhūti-śānta and the interpreter-monk of Shu-chen, named Tin-ne-hdsin-bzan-po.

#### RATNĀKARA S'ĀNTI (ABOUT 983 A.D.).

- 168. Ratnākara S'ānti ¹ was known to the Tibetans as Ācārya S'ānti or simply S'āntipa. He was ordained in the order of the Sarvāstivāda school of Odantapura, and learnt the Sūtra and Tantra at Vikramaśilā from Jetāri, Ratna-kīrti ² and others. Thereafter he was appointed by king Canaka (who died in 983 A.D.) to be a gate-keeper of the University of Vikramaśilā (vide Appendix C), where he defeated the Tīrthika disputants. At the invitation of the king of Ceylon he visited that island where he spread the Buddhist doctrine. He was the author of a work on Chanda (prosody) called Chando-ratnākara³ and of the following works ³ on Logic:—
- 169. Vijñapti-mātra siddhi, called in Tibetan Bnam-par-rig-pa-tsam-ñid-du-grub-pa, signifying 'establishment of a mere communication of knowledge.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 335—338. The translation was prepared by the Nepalese Paṇḍita Sānti Bhadra, and the Tibetan interpreter-monk Sākya-hoḍ of the province of Hbro (Þo). Subsequently, it was published by the same Paṇḍita and Klog-skya-śeg-rab-hrtsegs.

1.0. Antar vyapti, called in Tibetan Nan-gi-khyab-pa,

1 Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 234, 235 and Pag-sam-jon-zang, pp. 117, cx. The Tibetan equivalent for the

# name Ratnākara Santi is 국국 출국 '유밀도' 미국지 중'디 |

- <sup>2</sup> This Ratnakīrti is different from the sage of that name who was patronised by King Vimala Candra about 650 A.D. (vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 172, 174, and my discussion in art. 108 under the head Vinīta Deva in the Buddhist Logic). This earlier Ratnakīrti, known through a commentary on the Madhyamakāvatāra, wrote Kulyāṇa-kāṇḍa and Dharmavini-caya embodied in the Tang yur Mdo, Ku. The same Ratnakīrti was perhaps the author of Apohasiddhi and Kṣaṇabhaṅgasiddhi which are being published in the Bibliotheca Indica series of Calcutta under the editorship of M. M. Hara Prasād Sāstri. Two other works called Sthira-dūṣaṇa and Vicitrādvaita-siddhi are ascribed to him.
- <sup>3</sup> For an account of the Chandoratnākara see Satischandra Vidyabhi sana's "Sanskrit works on Literature, Grammar, Rhotoric and Lexicografiy as preserved in Tibet" in J. A. S. B., new series, vol. III, no. 2, 1907.
- 4 The volume Ze of the Tangyur, section Mdo, containing Ratnākara Sānti's works, was lent to me by the India Office, London.

<sup>5</sup> The Sanskrit original of 'Antarvyāpti' or more fully 'Antarvyāpti-

signifying 'internal inseparable connection.' It is embodied in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 338—344. The translation was prepared by the Indian sage Kumāra Kalasa and the interpreter-monk Sākya-hod.

#### Vāk-PRAJA (ABOUT 983 A.D.).

171. In the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 201—202 there is the Tibetan version of the Sarvajña-siddhi-kārikā, called in Tibetan Thams-cad-nkhyen-pa-grub-paḥi-tshig-leḥur-byaṣ-pa, signifying memorial verses on the attainment of omniscience. The author of this work is named in Tibetan Nag-hbans which may be restored in Sanskrit as Vāk-praja. If he is the same as Vāgīś-vara-kīrti, he must have lived about 983 A.D. (vide Appendix C).

#### YAMĀRI (ABOUT 1050 A.D.).

- 172. Yamāri was specially versed in Grammar and Logic. But he was very poor. Once, being unable to support his family and children, he came to Vajrāsana (Buddha-Gayā). There he related his poverty to a Yogin, who replied: "You Paṇḍits despise Yogins and do not solicit dharma from them, hence this has come to pass." Saying this, he uttered the Vasudhara benediction in virtue of which Yamāri rose to opulence. He afterwards received the royal diploma of the university of Vikramaśilā. He lived during the time of Naya Pāla who died in 1050 A.D. (vide Appendix B). He was the author of the following work:—
- 173. Pramāṇa-vārtikālankāra tīkā, called in Tibetan Tshad-ma-ṛnam-ḥgrel-ṛgyan-gyi-ḥgrel-ḥśad, which is an annotation on the Pramāṇa-vārtikālankāra of Prajñākara Gupta. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a very voluminous Tibetan translation which covers volumes Be, Me, and Tse of the Tangyur, Mdo. The translation was prepared by Pańdita Sumati and the interpreter Blo-

samarthana' has recently been recovered from Nepal by M. M. Hara Prasad Sastri, M.A., of Calcutta, and is deposited in the Library of the Asiatic Society of Bengal. It begins thus:— रूच सच्चमधिक्रयाकारिलं तैदितर्ज्ञचणायोगात्! तच क्रमयोगपदास्यां व्याप्तं परस्परव्यक्षेद्ज्जणलादनयाः।
प्रकाराकारेण करणासभावात्। It ends thus:— चन्नवांतिसमयनं सुमार्गामति।
क्रितिरियं रवाकरणान्तिपादानाम्॥

<sup>1</sup> I have consulted the copy belonging to the India Office, London.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 247, 253.

ldan-śeṣ-rab in the monastery of Ṣñe-than near Lhasa. The volume Be ends thus:—" From the immeasurable merit acquired by me by composing this regular annotation, may the world, subduing its adversary death, obtain the indestructible and perfected Nirvāṇa." <sup>1</sup>

#### S'ANKARĀNANDA (ABOUT (1050 A.D.).

174. Sankarānanda,² called in Tibetan Bde-byed-dgah-wa, was born in a Brāhmaṇa family in Kāśmīra. He was learned in all sciences, and was above all an expert in Logic. He intended to write an original work on Logic refuting Dharmakīrti, but in a dream he was told by Mañjuśrī: "Since Dharmakīrti is an Ārya (a Buddhist monk), one cannot refute him, and if thou seest mistake in him, it is the mistake of thine own understanding." Thereupon Sankarānanda repented and composed a commentary on Dharmakīrti's Pramāṇa-vārtika in seven chapters. He flourished ³ during the time of Naya Pāla, who reigned until 1050 A.D. He was the author of the following works on Logic:—

175. Pramāṇa-vārtika-ṭīkā, called in Tibetan Tshad-marnam-hgrel-gyi-hgrel-báad, being an annotation on the Pramāṇa-vārtika of Dharmakīrti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation which covers volumes Pe and Phe of the Tangyur, Mdo.

176. Sambandha-parīkṣānusāra, called in Tibetan Hbrel-pabrtag-paḥi-rjes-su-hbran-wa, which is a commentary on the

र्डभः निविद्दे ने प्राप्त ने विश्वस्था सम्मान प्रितः य ।। निसंति विस्ति ने क्षेत्र निस्ति ने क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र य ।। निसंति निस्ति ने क्षेत्र मिलिक क्षेत्र क्षेत्र स्वाप्त स्वित्त ।। स्रो चित्र प्राप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वित्त ।। (Tangyur, Mdo, Be, folio 303).

2 Vide Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp.

247, 349; and Pa-sam-jon-zang, pp. 107, 120.

4 I have consulted this work in the monastery of Labrang, in Sikkim,

in 1907.

Some maintain that Sankarananda was a personal pupil of Dharmakirti. On this point Lama Taranatha observes:—"The Brahmana Sankarananda appeared at a much later time, and to call him a personal pupil of Dharmakirti would be a great confusion."—Taranatha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, p. 188.

Sambandha-parīkṣā of Dharmakīrti. The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 24—39. The translation was prepared by the great Indian Paṇḍita Parahita, and the Tibetan interpreter-monk Dgaḥ-waḥi rdo-rje.

The work begins thus:-

- "By whom connection with the world has been renounced, in whom there are no "I" and "mine," who is called free from concerns—to that Omniscient One I bow down." 2
- 177. Apohasiddhi, called in Tibetan Sel-wa-grub-pa, signifying 'establishment of a thing by the exclusion of its opposites.' The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation s in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 308—334. The translation was prepared by the Kāśmīrian Paṇḍita Manoratha and the Tibetan interpreter Blo-dan-śeṣ-rab in the incomparable city of Kāśmīra.

The work opens thus:-

- "The Omniscient One who is free from all mistakes and who looks to the interests of living beings in all times, saluting him and relying on his mercy, I elucidate the puzzle of 'self' and 'others' connected with the doctrine of Apoha." 4
- l I have consulted the Tibetan version in the possession of India Office, London.
  - गुनःसहिनःनेत्यः सुनाःत्रस्यानुरःस।। महारःत्रेहेनःसेन्यः स्वनःनीःसे।। गुनःसहिनःनेत्यः स्वनःनीःस्वा।

(Tangyur, Mdo, Ze, folio 24).

- 3 I have consulted the India Office copy.
  - गुन्महिन्द्रम्भः त्रायः द्रशः माश्चसः मान्यः यः प्रो।।
    देने द्रम्भः हे मान्निः माञ्चमासः यः यः प्रः द्रदे ।।
    यहे यः मान्यः द्रशः स्रोयः यः यः प्रः द्रिः प्रदे ।।
    यद्राः मान्यः द्रशः स्रोयः यः यः प्रः द्रशः यदि ।।
    प्रमाणान् स्रायः द्रशः यदि याष्ट्रियः प्रस्थः युर्धः ।।
    (Tengyur, Modo, Ze, folio 308).

178. Pratibandha-siddhi, called in Tibetan Hbrel-pa-grubpa, signifying "establishment of the causal connection." The Sanskrit original of this work appears to be lost, but there exists a Tibetan translation in the Tangyur, Mdo, Ze, Folios 334—335. The translation was prepared by Paṇḍita Bhāgyarāja and the interpreter Blo-ldan-śeṣ-rab.

<sup>1</sup> I have consulted the India Office copy.

# APPENDIX A.

#### THE UNIVERSITY OF NALANDA.

(About 300-850 A.D.).

Nālandā was a village which is identified with modern Baragaon, 7 miles north of Rajgir, in Behar. Though occasionally mentioned in the Pāli literature, Nālandā was not of great importance before the rise of the Mahāyāna at the beginning of the Christian era, Nāgārjuna, about 300 A.D., and Ārva Deva. about 320 A.D., were the earliest scholars to take interest in the educational institution at that village. A Brahmana named Suvisnu, a contemporary of Nāgārjuna, is said to have established 108 temples there in order that the Abhidharma of the Mahāyāna might not decline. About 400 A.D., the Chinese pilgrim, Fahian, visited this place, which he calls "the village of Nalo." He saw there a tower which had been erected on the spot where Sariputra, the right-hand disciple of Buddha, had entered Nirvana. Early in the 7th century A.D., another Chinese pilgrim, the famous Hwen-thsang, visited Nālandā and halted 4 there 15 months to study the Sanskrit language under Sīlabhadra. According to him 5 the site of Nālandā was originally a mango garden which was bought by 500 merchants at a cost of ten crores of gold pieces and given to Buddha.6 After the Nirvana of Buddha, five kings, named Sakraditya Buddha Gupta, Tathagata Gupta, Baladitya, and Vajra, built five Sanghārāma or monasteries at Nālandā. A king of Central India established another magnificent monastery, and began to build round these edifices a high wall with one gate. A long succession of kings continued the work of building, using all the skill of the sculptor, till at the time of Hwen-thsang in 637 A.D. the whole was "truly marvellous to behold." In the estab-

<sup>1</sup> Vide Cunningham's Ancient Geography of India, p. 468.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 70—86.

8 Vide Beal's Fa-hian, p. 111.

Vide Cunningham's Ancient Geography of India, p. x.
 Vide Beal's Buddhist Records of the Western World, vol. ii, pp. 168-170.

<sup>6</sup> It must have been given to a Buddhist saint of a later age and not to Buddha himself.

lishment were some thousands of monks, all men of great ability and learning. They were very strict in observing the rules of Vinava, and were looked up to as models by all India. Learning and discussing they found the day too short, day and night they admonished each other, juniors and seniors mutually helping to perfection. Learned men from different cities came to Nālandā to acquire renown, and some persons even usurped the name of Nālandā students in order that they might be received everywhere with honour. "Of those from abroad who wished to enter the schools of discussion, the majority, beaten by the difficulties of the problems, withdrew; and those who were deeply versed in old and modern learning were admitted, only two or three out of ten succeeding." Hwen-thsang mentions some celebrated men of Nālandā, such as Dharmapāla and Candrapāla, Gunamati and Sthiramati,2 Prabhāmitra and Jinamitra, and Jñānacandra and Sīlabhadra.

Another Chinese pilgrim named I-tsing, who resided in Nalandā for ten years (probably 675—685 A.D.), says that there were eight halls and 300 apartments in the monastery of Nālandā with more than 3.000 resident monks. The lands in its possession contained more than 200 villages which had been bestowed

upon the monastery by kings of different generations.8

Nālandā assumed the character of a university from about 450 A.D. Bālāditya, king of Magadha, who built a monastery at Nālandā, was a contemporary of the Hun king Mihirakula, who reigned first in Sakala and afterwards in Kasmīra. Now Mihirakula began his reign in 515 A.D., and his contemporary. Bālāditya, must also have lived about that time. There were three predecessors of Bālāditya who built monasteries at Nālandā. Of them, the earliest, named Sakrāditya, must have reigned about 450 A.D. if we suppose 25 years as the average duration of the reign of each of them. The year 450 A.D. is then the earliest limit which we can roughly assign to the royal recognition of Nālandā. The latest limit which we know with certainty is 750 A.D., when Kamalasila (q. v.) was the professor of Tantras at Nālandā. But as we read in the accounts of Vikramasilā that there was for some time an intercourse between that university

<sup>Nide Watters' "On Yuan Chwang," vol. ii, pp. 164—165.
This Sthiramati seemed to be the one mentioned by I-tsing (vide)</sup> Takakulu, p. 181). He flourished after Asanga and Vasubandhu.

Vide Takakusu's I-tsing, pp xxxiii. 65 and 154.
 Vide Watters' "On Yuan Chwang," vol. i, p. 289.

Takakusa, in his "Paramartha's Life of Vasubandhu," published in the "Journal" of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, January 1905, maintains that Baladitya came to the throne in 481 A.D., but this statement is by no means final. The date (452-480 A.D.) of Vikramāditya, Bālādītya's father, is also open to dispute.

and Nālandā, we may suppose that the latter continued to exist

approximately until 850 A.D.

According to Tibetan accounts the quarter in which the Nālandā University, with its grand library, was located, was called Dharmagañja (Piety Mart). It consisted of three grand buildings called Ratnasagara, Ratnodadhi, and Ratnarañjaka, respectively. In Ratnodadhi, which was nine-storeyed, there were the sacred scripts called Prajñāpāramitā-sūtra, and Tāntrik works such as Samāja-guhya, etc. After the Turuska raiders had made incursions in Nalanda, the temples and Caityas there were repaired by a sage named Mudita Bhadra. Soon after this, Kukutasiddha, minister of the king of Magadha, erected a temple at Nālandā, and while a religious sermon was being delivered there, two very indigent Tirthika mendicants appeared. Some naughty young novice-monks in disdain threw washing-water on them. This made them very angry. After propitiating the sun for 12 years, they performed a yajña, firesacrifice, and threw living embers and ashes from the sacrificial pit into the Buddhist temples, etc. This produced a great conflagration which consumed Ratnodadhi. It is, however, said that many of the Buddhist scriptures were saved by water which leaked through the sacred volumes of Prajñapāramitāsūtra and Tantra.

<sup>1</sup> Vide Pag-sam jon-zang, edited in the original Tibetan by Rai Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., at Calcutta, p. 92.

# APPENDIX B.

# A LIST OF KINGS OF THE PALA DYNASTY OF BENGAL AND BEHAR.

(From Tibetan sources).

In the Tibetan books, such as Pag-sam-jon-zang, Lama Taranatha's Chos-byun, etc., we find a short account of the kings of the Pāla dynasty of Bengal. Go Pāla, the founder of the dynasty, lived principally in Pundra-vardhana. His successor, Deva Pāla, annexed Vārendra to his kingdom. Deva Pāla's grandson, Dharma Pāla, conquered Magadha and annexed it to Bengal. Dharma Pāla's power is said to have extended in the east to the ocean, in the west to Delhi, in the north to Jālandhara, and in the south to the Vindhya ranges. It is stated that during his reign Santa Raksita died. Now Santa Raksita visited Tibet during the reign of Thi-srong-deu-tsan in 749 A.D., and worked there for 13 years, that is, till 762 A.D. His death must therefore have taken place after 762 A.D. Dipankara Srijnana, alias Atisa, High-priest of Vikramasilā, who was a contemporary of king Nava Pāla of Magadha, visited Tibet in company with Nag-tsho-lotsava in 1040 A.D. during the reign of Lhatsun-byan-chub, son of Lha-lama-ye-seg-hod, who held his court at Tholing in Nari. These facts throw a good deal of light on the dates of the Pāla kings.2 It is further stated that the death of Mahi Pāla is exactly synchronous with that of the Tibetan king Khri-ral. Now Khri-ral (or Ral-pa-can) died in 899 A.D.3 This fixes the date of the death of Mahi Pāla. As the period of reign of each of the kings that preceded and succeeded Mahi Pāla is definitely stated by Lama Tārānātha, and also by the author of the Pag-sam-jon-zang, there is no difficulty in ascertaining the dates of the Pala kings. Proceeding in this way, we can fix the dates as follows:—

1. Go Pāla .. .. 660—705 A.D. '2. Deva Pāla .. .. 705—753 A.D.

dur, C.I.E., pp. 112—121.

2 Vide the 16th volume of Klon-rdol-gsun-hbum, and Sarat Chandra Das's "Indian Pandits in the Land of Snow," pp. 50—76.

8 Vide the Chronological Table extracted from the Vaiduryakarpo in Csoma de Koros's Tibetan Grammar, p. 183.

<sup>1</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 202—252; and Pag-sam-jon-zang, edited by Rai Sarat Chandra Das, Bahadur, C.I.E., pp. 112—121.

| 3.  | Rasa Pāla               | • •           | <br>753—765         | A.D.        |
|-----|-------------------------|---------------|---------------------|-------------|
| 4.  | Dharma Pāla             | • •           | <br>765 - 829       | A.D.        |
| 5.  | Masu Raksita            | • •           | <br>829 - 837       | A.D.        |
| 6   | Vana Pāla               | • •           | <br>837—847         | A.D.        |
| 7.  | Mahī Pāla               | • •           | <br>847—899         | A.D.        |
| 8.  | Mahā Pāla               | • •           | <br><b>899—94</b> 0 | AD.         |
| 9.  | S'āmu Pāla <sup>1</sup> |               | <br>940 - 952       | A.D.        |
| 10. | S'restha Pāla or I      | Praistha Pāla | <br>952955          | A.D.        |
| 11. | Canaka                  | • •           | <br><b>955—983</b>  | A.D.        |
| 12. | Bhaya Pāla              |               | <br>983—1015        | A.D.        |
| 13. | Naya Pāla               |               | <br>1015-1050       | A.D.        |
| 14. | Āmra Pāla               |               | <br>1050-1063       | A.D.        |
| 15. | Hasti Pāla              |               | <br>1063-1078       | A.D.        |
| 16. | Kṣānti Pāla             |               | <br>1078-1092       | A.D.        |
| 17. | Rāma Pāla               |               | <br>1092-1138       | A.D.        |
| 18. | Yakşa Pāla              |               | <br>1138-1139       | <b>A.D.</b> |

The researches on the Pāla kings, by the late Dr. Rājendra Lāl Mitra, arrived at a conclusion which is somewhat different from mine. Dr. Mitra's list of Pāla kings 2 is given below:-

| 1.  | Go Pāla          |       | <br>855—875 A.D.   |
|-----|------------------|-------|--------------------|
| 2.  | Dharma Pāla      |       | <br>875—895 A.D.   |
| 3.  | Deva Pāla        |       | <br>895—915 A.D.   |
| 4.  | Vigraha Pāla I   |       | <br>915—935 A.D.   |
| 5.  | Nārāyaņa Pāla    |       | <br>935—955 A.D.   |
|     | Rāja Pāla        |       | <br>955—975 A.D.   |
| 7.  | Pāla             |       | 975—995 A.D.       |
| 8.  | Vigraha Pāla II  |       | 995—1015 A.D.      |
| 9.  | Mahī Pāla        | <br>• | 1015—1040 A.D.     |
| 10. | Naya Pāla        |       | <br>1040—1060 A.D. |
| 11. | Vigraha Pāla III |       | <br>1060—1080 A.D. |

Probably the same as Nārayaṇa Pāla who, in the Bhagalpur plate, is styled "the lord of Anga."
 Vide Dr. Rājendra Lāl Mitra's "Indo-Aryans," vol. ii, p. 232.

# APPENDIX C.

# THE ROYAL UNIVERSITY OF VIKRAMASILA.

(About 800—1200 A.D.).

Vikramašilā, mentioned in Sanskrit Sragdharāstotra-tīkā,<sup>2</sup> Vrhat-svayambhū-purāṇa,8 Tibetan Tangyur,4 etc., was a great collegiate monastery, or rather University, founded by king Dharma Pāla at the close of the 8th century A.D. It was situated on a precipitous hill 5 in Behar at the right bank of. the Ganges, possibly at Sila-samgama, now called Patharghata, near Colgong in the Bhagalpur district. Dharmapāla endowed

श्रीमञ्जाबनगरी सदेवमदाविदारीय राजगृषपिकतिमत्त्र श्रीजनरचितकता बासार्क-खातिडोका परिसमाप्ता (Sragdharā-stotra, edited in the Bibliotheca Indica series by Satis Chandra Vidyabhusana, p. 50).

<sup>8</sup> वाराणस्यां नगर्थां च विचारे य**न प्यान्ति**के। तदा विज्ञमशीलिस विचारे वसद्त्रमः ॥ धर्मत्रीमियो नामीऽधं भिक्ः पण्डितकस्कः। थमी दिरेशयामास नामसङ्गीति च कथाय ॥

(Vrhat-svayambhū-

purana, edited by M. M. Hara Prasad Sastri, chap. vi, pp. 320-321). 4 Numerous Sanskrit works such as नारिकविंग्रतिकाङ्गस्त ने संचेप. नारा निरत-खोचम etc., were translated into Tibetan in the monastery of Vikramaśilā, as is evident from the Tangyur, Rgyud, La, Folios 11-26, 54, etc.

<sup>1</sup> Vide Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 234-242, 259-261; Pag-sam-jon-zang, pp. 113, 117, 118; and Sarat Chandra Das's article in the "Journal" of the Buddhist Text Society of Calcutta, vol. i, part i, pp. 10—12; and his "Indian Pandits in the Land of Snow," pp. 50—76.

2 The colophon of the Sragdharā-stotra-ṭīkā runs as follows:—

<sup>5</sup> At the distance of a day's sail below Sultangan; there is a steep hill called Pātharghātā overhanging the Ganges, which here is uttaravāhini (or flows towards the north). This corresponds exactly with the account of Vikramasilā given in Tibetan books. There are also ruins of Buddhistic images at Patharghata. For its old name Sılasamgama vide Francklin's "Site of Ancient Palibothra," pp. 54—55, Appendix p. xiii. General Cunningham identifies Vikramasilā with modern Silao, which is a small village three miles to the south of Bargaon (ancient Nālandā) and six miles to the north of Rajgir in the subdivision of Behar (vide Report of the Archæological Survey, vol. viii, p. 83). But this identification does not tally with the description found in Tibetan books, for the Ganges never passed by Silso, nor is there any hill near to it.

the university with rich grants sufficing for the maintenance of 108 resident monks besides numerous non-resident monks and pilgrims. At the head of the university was always a most learned and pious sage. Thus at the time of Dharma Pala, Acarva Buddha-jñana-pada directed the affairs of the university, and during 1034-1038 A.D. Dīpankara or Srījnāna Atiša was at its head, and Sthavira Ratnākara was the superior of the monastery. The famous Tibetan scholar Nag-tshul-khrimsrgyal wa, better known as Nag-tsho Lotsava, who came to take Dīpankara Srījnāna alias Atiša to Tibet, resided in the monastery of Vikramasilā for three years, 1035—1038 A.D. Kamalakuliša, Narendra-śrī-jñāna, Dāna Raksita, Abhayakara Gupta, Subhakara Gupta, Sunāyakasrī, Dharmākara Santi and Sakvaśri Pandita also belonged to the university of Vikramaśila. Provision was made specially for the study of grammar, metaphysics (including logic) and ritualistic books. On the walls of the university were painted images of panditas eminent for their learning and character. The distinguished scholars of the university received a diploma of "Pandita" from the kings themselves. For instance, the distinguished logicians, Acarya Jetāri of Vārendra and Ratnavajra of Kāśmīra, were granted such a diploma. The most erudite sages were appointed to guard the gates of the university. These were six in number, each of which had to be guarded by scholars designated "Gatekeepers" (called in Tibetan Go-srun, corresponding, perhaps, to our Dvāra-pandita). During the reign of Canaka (955—983 A.D.) the undermentioned eminent logicians acted as gatekeepers :-

(i)—At the eastern gate .. Ācārya Ratnākara Santi. (ii)—At the western gate .. Vāgīšvarakīrti, of Benares.

(iii)—At the northern gate ... The famous Naropa. (iv)—At the southern gate ... Prajñākaramati.

(v)—At the first central gate.. Ratnavajra of Kāśmīra. (vi)—At the second central gate Jñāna-śrī-mitra of Gauda.

The university of Vikramasilā is said to have been destroyed by the Mahomedan invader Bakhtiar Khiliji <sup>2</sup> about 1203 A.D. when Sākya-śrī-pandita, of Kāśmīra, was at its head.

<sup>1</sup> Vide Klon-rdol-gsun-hbum, vol. xvi.

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup> Vide the Tibetan-English Dictionary compiled by Rai Sarat Chandra

Das, p. 869; Waddell's "Lamaism," p. 16.

The Turuskas or Mahomedans attacked Magadha several times. Thus Tārānātha, speaking of Ārārya Kamala Raksita who was at the head of the Vikramasilā university at the end of the 10th century A.D., observes:—"A minister of the Turuska king, out of the Karna land in the west, together with 500 Turuskas, drew to Magadha to plunder. They plundered

the sacrificial materials, but when they began to walk all in a body to the Ācārya (Kamala Rakṣita) the Ācārya got into a rage and walked up along, throwing a jug, filled with water, over which he had spoken the mantras. On the spot a great and indomitable storm collected, out of the wind came forth many black men armed with swords who fell upon the Turuṣkas; the minister himself perished spitting blood, and various contagious illnesses repulsed the others in such a way that none of them could reach their native country, and a great terror came over the Tīrthas and Turuṣkas—Tārānātha's Geschichte des Buddhismus von Schiefner, pp. 266, 261.

# GENERAL INDEX.

| A                                    | Page  |
|--------------------------------------|---|
| Page                                 | Ācārya 78, 80, 83, 102, 103, 121,           |
| Abbot 125                            | 131, 136, 139, 151, 152                     |
| bhāsa 28, 40, 42                     | Ācārya Bodhisattva 125                      |
| Abhāva 10, 24, 42                    | Ācārya Sānti 140                            |
| Abhayadeva 36, 37                    | Act 29                                      |
| Abhayagirivāsin 65                   | Action 8, 32, 95                            |
| Abhayakara Gupta 151                 | Act-fruit 44                                |
| Abhayatilakopādhyāya 53              | Ādinātha 34                                 |
| Abhidhammapitaka 58, 59, 60,         | Ādipurāņa 14, 24, 28, 34                    |
| 63, 64                               | Adrikalpa 81                                |
| Abhidhammatthasamgaha 59             | Advaita 23, 27                              |
| Abhidhanacintamani 45                | Advaitavāda 23                              |
| Abhidharma 121, 145                  | Affirmation 30                              |
| Abhidharma-jñāna-prasth <b>ān</b> a- | Affirmative 30, 31, 32                      |
| ś <b>ā</b> stra 64, 66               | Āgama 3, 4, 10, 13, 29, 32, 40              |
| Abhidharma-mahāvibhāṣā 64            | $\bar{\mathbf{A}}_{\mathbf{gam}}$ ābhāsa 33 |
| Abhidharma-mahāvibhāṣā-              | Ahmedabad 44                                |
| ś <b>ā</b> stra 63, 66               | Ain-i-Akbari 40, 41                         |
| Abhidharma-vibhāṣā 63                | Ajātaśatru 58                               |
| Abhinibodha 4                        | Ajīva 8                                     |
| Abhrānta 109                         | Akalańka 25, 26, 27, 28, 33,                |
| Absence of connection 97             | . 37, 40                                    |
| Absence of disconnection 93          | Akalankadeva 25, 54                         |
| Absence of inverse disconnec-        | Akalankacandra 25                           |
| tion 98                              | Akalankastotra 26                           |
| Absolute 42                          | Ākāśa 74                                    |
| Absolute knowledge 2, 15             | Akbar 55                                    |
| Absolutely 109                       | Akevalajñāna 4                              |
| Absolute non-existence 24, 25        | Akşa Candra 69                              |
| Absolute reality 68                  | Akṣapāda xvii, 11, 46, 51, 53               |
| Acandra 112                          | Akṣapāda Gautama 🕺 xvi                      |
| Ācāra 71, 80                         | Ālambaṇa 121                                |
| Acāra-dinakara 3                     | Alambana-parikaā 101, 120                   |
| Ācārānga-sūtra 6                     | Ālambana-parīksā-tīkā 120, 121              |
| 7 . T . 3                            | Alambana-parikes-vetti 101                  |

|                       |                 |        | Page  | 1                                     |   |        | Page       |
|-----------------------|-----------------|--------|-------|---------------------------------------|---|--------|------------|
| Ālambaņa-praty        | aya-dh <b>y</b> | āna-   |       | Aniscita                              | ••                                      |        | 93         |
| á <b>ä</b> stra       | ••              |        | 101   | Antar                                 | ••                                      |        | 42         |
| Alambana praty        | ya-dhy          | āna-   |       | Antar-vyāpti                          | 18,                                     | 42, 76 | , 140      |
| ś <b>ās</b> tra-vyākh | ıyā             |        | 102   | Antarvyāpti-s                         | amarthana                               |        | 141        |
| Ālaya-vijñāna         |                 |        | 71    | Antecedent                            | ••                                      |        | 42         |
| Alberuni              |                 |        | 14    | Antecedent no                         | n-existence                             | 2      | 4, 25      |
| Āloka                 |                 |        | xviii | Antiquary, In                         | dian 3,                                 | 4, 5,  | 6, 9,      |
| Āloka-darpaņa         |                 |        | xviii | 13, 14, 3                             | 8, 39, 45, 4                            | 9, 53  | , 123      |
| Aloka-kantakodd       | hāra            | :      | xviii | Antiquities                           |   |        | 68         |
| Aloka-rahasya         |                 | :      | xviii | Anumana 4,                            | 5, 10, 15,                              | 16, 29 | , 40,      |
| Āloka-sāra-mañja      | rī              | :      | viii  | 4                                     | 1, 49, 54, 7                            | 4, 99, | 109        |
| All-pervading         |                 |        | 112   | Anumānābhās                           | а                                       |        | 99         |
| Alwis, Dr.            |                 |        | 58    | Anupalabdhi                           | 30, 42,                                 | 110    |            |
| Amaracandra           |                 | 47     | , 48  | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 00, 12,                                 |        | 134        |
| Amarasvāmi-cari       | ta              |        | 49    | Anustubh                              |   |        | 84         |
| Amarāvatī             |                 |        | 68    | Anuyoga-dvār                          | <br>a.cūtra                             | • •    | 4          |
| Ambiguous             |                 | 95,    | 113   | Anvayi                                |   | •      | 31         |
| Ambrosia              |                 |        | 122   | Ānvīksikī                             | ••                                      | • •    | xvii       |
| Amdo                  |                 |        | 137   | Anyāpoha                              | ••                                      |        | 24         |
| Āmra Pāla             |                 |        | 149   | Anyāpoha-vicā                         |   | • •    | 130        |
| Anadhyavasāya         |                 |        | 40    | Anyonyābhāva                          |   | • • •  | 24         |
| Anahillapurapatt      | ana             | 38     | , 53  | Aparāntaka                            | • |        | 69         |
| Anaikāntika           |                 | 19,    | 113   | Aparasaila                            | ••                                      | • • •  | 65         |
| Analysis              |                 |        | 100   | Aparaseliya                           | • • •                                   | • •    | 58         |
| Analysis of wheel     |                 |        | 100   | Apoha                                 | ••                                      | • •    | 143        |
| Analogy               |                 | 74     | , 75  | Apoha-nāma-p                          |   | • • •  | 132        |
| Ānanda Sūri           |                 | 47     | , 48  | Apohasiddhi                           |   |        | 143        |
| Ananta-śri            |                 |        | 138   | Apparent                              | •••                                     |        | 95         |
| Anantavirya           |                 | 28, 37 | , 38  | Appendix                              | 145                                     |        |            |
| Ananyaya              | 1               | 9, 97, | 116   | Application                           |   | 31, 32 |            |
| Ancient               |                 |        | xvii  | Application of                        | -                                       |        | 61         |
| Ancient school        |                 |        | xvii  | Apprehend                             | • •                                     |        | 95         |
| Andhra                | 68,             | 78, 81 | , 82  | Apprehension                          | •••                                     | • •    | 10         |
| Aneldota Oxonie       | nsia            | •      | 75    | Apradarsitānv                         |   |        | 116        |
| Anekānta-Jaina-r      | nata-           |        |       | Apradarsitavy                         | •                                       |        | 21         |
|                       | •••             |        | 54    | Āpta-mīmāmsā                          |   |        |            |
| Anekārthasamgra       | ha              |        | 45    | Āpta-mīmāmsā                          |   |        | 26         |
| Anga                  |                 |        | 149   | Āpta-mī <b>mā</b> msā                 |   | ٠.,    | 23         |
| Anguttara Nikay       |                 |        | 59    | Āpta-mīmāmsā                          |   |        | 54         |
| Anhilwad              |                 |        | 35    | Āpta-parikṣā                          | ••                                      |        | 27         |
| Anhilwad Patan        |                 |        | 35    | Arāsana                               | ••                                      |        | <b>3</b> 9 |
|                       |                 |        |       |                                       |   |        |            |

| Pag                                  | Page                        |
|--------------------------------------|-----------------------------|
| Arcața 46, 50, 53, 133, 13           | 4 Aştasāhasrī-vṛtti 55      |
| Arcata-tarka-tikā 5                  | 3 Aştasatī                  |
| Archaic xx                           |                             |
| Ardha-Magadhi                        | 3 Astronomy 62, 121         |
| Argument 4                           | 4 Aśvaghosa 67              |
| Argumentation 29, 40, 41, 54, 60, 7  | 3 Aśvavabodhatīrtha 50      |
| Arhat 7, 41, 4                       | _ ·                         |
| Arithmetic 6                         | _                           |
| Aristotle 9                          | _                           |
| Art 62, 10                           |                             |
| Art of healing 10                    |                             |
| Arthapatti 1                         | 1                           |
| Ārya 65, 83, 122, 14                 | 00                          |
| Ārya Asanga 73,7                     | ,                           |
| Ārya Deva 67, 70, 72, 140            | - 0, 00                     |
| Ārya-koşa 12                         |                             |
| Arya Mahāsāmghika 68                 | 1                           |
| Ārya Nāgārjuna 68                    |                             |
| Ārya Sammitīya 65, 66                |                             |
| Ārya Sarvāstivāda 68                 | l -                         |
| Ārya Sthavira 65, 67                 | 1                           |
| Ārya-Tārā-antarbali-vidhi 121        | 1 <del>-</del>              |
| Asādhāraņa 94                        | 1 .                         |
| Asanga xix, 73, 74, 78, 95, 96,      | Āvasyakaniryukti 2          |
| 122, 146                             |                             |
| Aśańkā 7                             | Avāya 41                    |
| Āśankā-pratisedha 7                  | Avayava 42                  |
| Ascetic 15                           |                             |
| Asiatic Society xiii, 9, 23, 40, 52, | Avinābhāva 29               |
| 72, 125, 141                         | Avyatireki 21               |
| Asiddha 18, 93, 112                  | Ayodhyā xix, 67, 73, 74, 75 |
| Aśoka 58, 61, 121                    | , , , , , , ,               |
| Aspect 92                            | В                           |
| Āśrava 8                             | Bactria 61                  |
| Assertion 44                         | Bahir 42                    |
| Aştasāhasrī 23, 26, 27, 37, 54       | Bahir-vyāpti • 18, 42 •     |
| Aşṭasāhasrikā 105                    | Bahuśrutiya 65              |
| Astasāhasrikā Prajnāpāra-            | Bāhulika 58                 |
| mit <b>š</b> 64                      | Bakhtiar Khiliji 151        |
| Aştasāhasrī-vişamapada-tāt-          | Bālāditya xix, 145, 146     |
| parya-ṭīkā 26, 37                    | Bālāvatāra-tarka 137        |
|                                      |                             |

| Page                                 | Page                              |
|--------------------------------------|-----------------------------------|
| Bāṇa 34                              | Bharsa 123, 124                   |
| Bandha 8                             | Bhartrhari 26, 27, 28, 34, 102,   |
| Baragaon 145, 150                    | 105, 119                          |
| Barisal 122                          | Bhā-sarvajña 53                   |
| Baroda 55                            | Bhasvamin 22                      |
| Basket 58                            | Bhāṣya 8, 10, 12, 122             |
| Bauddha 46, 49, 54                   | Bhatta 34, 81                     |
| Bauddhadarsana 49, 66, 67, 68,       | Bhāṭṭa 54                         |
| 82, 105, 107, 133, 138               | Bhattapāda 51                     |
| Bdag 127, 128                        | Bhattāraka 54                     |
| Bdag-gi-don-gyi-rjes-su-dpag-        | Bhāva 11, 24                      |
| pa 109                               | Bhavanagara 13, 46                |
| Bde-byed-dgah-wa 142                 | Bhavānanda xviii                  |
| Beal, Rev. xix, 14, 62, 63, 66, 67,  | Bhavānandivyākhyā xviii           |
| 68, 69, 71, 72, 74, 75, 80, 82, 145  | Bhaya Pāla 149                    |
| Bedā vṛtti 102                       | Bhikşu 61, 69, 99                 |
| Behar xx, 57, 103, 145, 148, 150     | Bhikşu-sūtra 61                   |
| Belief 91                            | Bhim Sing 8                       |
| Benares xiii, xiv, 6, 8, 39, 50, 51, | Bhoja Deva 68                     |
| 52, 55, 133, 151                     | Bhorasilā 80                      |
| Benediction 141                      | Bhoṭa 50                          |
| Bengal xiii, xv, xx, 102, 117, 121,  | Bhrama-pramathana-yukti-          |
| 122, 124, 131, 134, 135, 141, 148    | hetu-siddhi 71                    |
| Berar 68                             | Bhrānta 81                        |
| Berlin 3, 37                         | Bhrānti 81                        |
| Bhadrabāhu 5, 6, 8                   | Bhūmi 71                          |
| Bhadrabāhucarita 2                   | Bibliotheca Indica xx, 9, 14, 23, |
| Bhadra Pālita 80                     | 65, 70, 109, 113, 114, 124, 131,  |
| Bhadreśvara 50                       | 140, 150                          |
| Bhagalpur 149, 150                   | Bibliothek zu Berlin 37           |
| Bhagavān 137                         | Bimba 39                          |
| Bhagavān Upavarşa 33                 | Biş-wa-hjug-pahi-rtog-ge 137      |
| Bhagavatī-sūtra 4                    | Bliss 21                          |
| Bhāgyarāja 132, 135, 144             | Blo-ldan-śeg-rab 108, 131, 132,   |
| Bhāmati 23, 105                      | 135, 142, 143, 144                |
| Bhāmatī tikā 23                      | Blunders 81                       |
| Bhamsa Candra 69                     | Bodhisattva 65, 82, 83, 99,       |
| Bhandarkaf, Dr. R. G. 2, 5, 6, 14,   | 101, 124                          |
| 24, 25, 26, 37, 38, 41, 45, 47,      | Bodhisattva-caryā-nirdeśa 72, 73  |
| 53, 63, 68                           | Bombay xiii, 6, 8, 13, 34, 46,    |
| Bharaṇi 30                           | 54, 95                            |

| Page                               | Page                                |
|------------------------------------|-------------------------------------|
| Bombay Gazette 44                  | Buddhist Records xix, 14, 62, 66,   |
| Bompas, Mr. C. H xv                | 67, 68, 71, 72, 75, 82, 102, 145    |
| Bondage 8, 44                      | Buddhist Text Society 68, 70,       |
| Bonn xiv                           | 71, 72                              |
| Bos gavaeus 29                     | Bühler, Dr. George 44, 48, 59,      |
| Brahma 104, 127                    | 125, 126, 128                       |
| Brahmajālasutta 59,60              | Bull in Discussion 80, 81           |
| Brāhmaņa 2, 49, 59, 60, 83, 102,   | Bunyiu Nanjio 61, 64, 66, 70, 71,   |
| 103, 104, 142, 145                 | 72, 73, 74, 76, 80, 89, 101, 102    |
| Brahma-nemidatta 28                | Burmah 63                           |
| Brāhmaņī 2                         | Bu-ston 78                          |
| Brāhmaņic 10                       | Byan-chub-ses-rab                   |
| Brāhmaņie Logie xiv                | Bye-brag 128                        |
| Brahmavādī 46                      | Bye-brag-pas 127                    |
| Brhadāraņyaka-vārtika 105          | ,                                   |
| Brhat-jñāna-koşa 125               | C                                   |
| Brhat-tikā 35                      | Caitya 39, 147                      |
| British Government xxi             | Cakra-samvara 139                   |
| British Mission xv, 120, 129,      | Calcutta i, xiii, xv, xvi, xx, xxi, |
| 131, 134                           | 3, 4, 9, 11, 14, 63, 65, 67, 68,    |
| Broach 50                          | 69 70, 71, 73, 76, 109, 120,        |
| Brtag-pa 129                       | 121, 124, 126, 131, 133, 136,       |
| Brtan-pahi 128                     | 140, 147, 150                       |
| <u>Bsam-yas</u> 125                | Calcutta University xxi             |
| Bsgrub-par-bya 90                  | Cambay $xx, 22, 109, 131$           |
| Bsgrub-par-byed 90                 | Canaka 135, 138, 139, 140,          |
| <u>B</u> srun 130                  | 149, 151                            |
| Buddha 1, 20, 21, 27, 57, 58, 60,  | Candra 122                          |
| 62, 63, 65, 66, 67, 69, 70, 71,    | Candra-dvipa 122                    |
| 72, 73, 75, 80, 99, 101, 104,      | Candra Gomin xx, 121, 122,          |
| 120, 129, 145                      | 123, 124                            |
| Buddha Gautama . 57, 65            | Candra Gupta 3, 69, 70, 71          |
| Buddha Gayā 139, 141               | Candra Kirti 70, 122, 123           |
| Buddhaghoṣa 76                     | Cakkhu-viññāṇa 59                   |
| Buddha Gupta 145                   | Candrakūpa • 123                    |
| Buddha-jñāna-pāda 151              | Candra Nārāyaṇa xviii               |
| Buddhism 57, 63, 67, 71, 73        | Candrapāla 146                      |
| Buddhist xiii, xviii, xix, 50, 54, | Candraprabha 45, 46                 |
| 59, 91                             | Candrasena                          |
| Buddhist India 64, 67              | Candra-vyākaraņa 122                |
| Buddhist Logic xiv, xv, 57         | Candra's well 123                   |

| Page                                | Page                            |
|-------------------------------------|---------------------------------|
| Cāndrī-patrikā xviii                | Chos-can 90                     |
| Candrodaya 33                       | Chos-dan-chos-can-gtan-la-dwab- |
| Canon 3, 64                         | pa 136                          |
| Canonical 3, 63                     | Chos-grags 103                  |
| Canonical scriptures 3              | Chos-kyi-brtson-bgrus 138       |
| Canonised 58                        | Chos-mchog 131                  |
| Cap 78, 79                          | Chog-mi-mthun-dpe-ltar-gnan     |
| Capital 49                          | wa 97                           |
| Carpenter, J. E 60                  | Chos-mi-mthun-pa 90             |
| Cārvāka 43, 46, 51                  | Chos-mthun 96                   |
| Caste 102, 103                      | Chos-mthun-dpo-ltar-snan-wa 96  |
| Casuist 62                          | Chos-wthun-pa 90                |
| Casuistry 59, 60                    | Chowkhamba 50, 51, 52           |
| Catalogue 36                        | Christian 145                   |
| Catalogue of the Chinese Tri-       | Citrakūța 50                    |
| pitaka 66                           | Class 65, 109                   |
| Categories 8                        | Classification 59               |
| Caturvimsati-Jina-stuti 23          | Софа 103                        |
| Caturvimsati prabandha 6, 48, 51    | Co-existent 129                 |
| Causation 62                        | Co-existent cause 129           |
| Cause 11, 29, 30, 31, 111, 117,     | Cogitation 40                   |
| 129, 138                            | Cola 71                         |
| Cemetery 104                        | Colgong 150                     |
| Cetiya 58                           | Collective 11                   |
| Ceylon 57, 58, 63, 122, 140         | Commentary xvii, xix, 66        |
| Chala 51, 61                        | Comparison 4, 10, 74, 85, 88    |
| Chalukya xx, 81                     | Compendium 49, 82, 83           |
| Chanda 140                          | Concentration 10                |
| Chandonuśāsana-vrtti 45             | Conception 112                  |
| Chando-ratnākara 140                | Concern 143                     |
| Chaplain 49                         | Conclusion 8, 16, 31, 32, 42,   |
| Characteristics 40, 41, 91, 92, 93, | 92. 94                          |
| 99, 100, 109, 110, 112, 134         | Conditional 68                  |
| Characteristics of the middle       | Confusion 109                   |
| term 91                             | Conjeeveram 80, 102             |
| China wiv, 63, 71, 73, 74, 75,      | Connection 42, 55, 87, 92, 96,  |
| 76, 89, 101                         | 97, 111, 116, 118, 144          |
| Chittore 50                         | Connection unshown 20, 116      |
| Chola 103                           | Consciousness 40, 43, 59        |
| Chos 90                             | Consequence 40                  |
| Chos-byun 148                       | Constituent 44                  |

|                        | Page          | D                            |                   |
|------------------------|---------------|------------------------------|-------------------|
| Contained              | 29            |                              | Page              |
| Container              | 29, 111       | Dabhoi                       | 55                |
| Contemplation          | 80            | Dad-pahi-ses-rab             | 84                |
| Contemplative          | 109           | Dad-pa-śeg-rab               | 100               |
| Contemplative system   | 71            | Dakşina                      | 81                |
| Continuity             | 118, 129      | Dāna Rakṣita                 | 151               |
| •                      | 5, 113, 114   | Dānasila                     | 134, 135          |
| Contradictory          | 18, 94, 95,   | Dāna-śrīla                   | 134               |
| •                      | 112, 113      | Darjeeling                   | xv, xv            |
| Contradistinction      | 62            | Dar-ma-grags                 | 117               |
| Contrariety            | 17            | Darśanaśuddhi                | 46                |
| Contrary separation    | 21            | Daśabhūm <b>ī</b> śvara      | 64                |
| Controversialist       | 85            | Daśāśruta-skandha-sútra      | 6                 |
| Controversy            | 79            | Daśavaikālika-niryukti       | 5, 6              |
| Conventional           | 12            | Daśavaikālika-niryukti-țīk   | ιā 48             |
| Conviction             | 111           | Daśavaikālika-sūtra          | 5                 |
| Conveyancing           | 62            | Daśavaikālika-ţīkā           | 46                |
| Cordier, Dr. Palmyr    | 70            | Daśavaikālika-vṛtti          | 3                 |
| Corea                  | 63            | Daśāvayava-vākya             | 6                 |
| Cosmic blindness       | 59            | Das, Sarat Chandra x         | v, 63, 72,        |
| Council 13, 57, 58     | , 59, 60, 61, | <b>78, 82, 84, 119,</b> 121, | 1 <b>24,</b> 126, |
|                        | 63,64,67      | 129, 147, 148                | , 150, 151        |
| Council of discussion  | 44            | Death                        | 57                |
| Counter-argument       | 44            | Debate 44, 65                | 2, 74, 104        |
| Counter-assertion      | 44            | Debater                      | 107               |
| Counterpart            | 29            | Debator                      | 74                |
| Counter proposition    | 7             | Decean xiii, xix, 26, 68,    | 103, 107          |
| Cowell, Mr E. B.       | 8, 26, 66,    | Deccan College               | 28, 34            |
|                        | 67, 68        | Declaration                  | 111               |
| Crawford, Mr           | xv            | Defeat                       | 61, 74            |
| Credible               | 88, 89        | Defect                       | 21                |
| Credible word          | 85, 88, 89    | Defective                    | 41                |
| Cremation              | 104           | Defective knowledge          | 4                 |
| Crest-gem of logicians | 26            | Definite                     | 40                |
| Csoma de Koros         | 105, 124,     | Definition                   | 129               |
|                        | 135, 148      | Degree                       | 1                 |
| Cūdāmaņi               | 26, 103       | De-kho-na-nid-badus-pani-    | •                 |
| Culla Vagga            | 57            | dkah-hgrel                   | 130               |
| Cunningham, General    | 145, 150      | De-kho-na-ñid-bsdus-pahi-    |                   |
| Cûrņika                | 3             | tshig-lehur-byaş-pa•         | 125               |
| Cycle                  | 57            | Delhi                        | 63, 148           |

|                      | Page           | Page  |
|----------------------|----------------|---|
| Demonstration        | 89             | Dharmakīrti xvii, xix, 24, 26, 27,                      |
| Derivation           | 12             | 34, 41, 48, 49, 53, 82, 103,                            |
| Deva                 | 67, 70, 71, 72 | 104, 105, 106, 107, 108, 109,                           |
|                      | 44             | 113, 114, 115, 116, 117, 118,                           |
| Devadatta            |                | 119, 120, 121, 124, 125, 129,                           |
| Devāgamastotra       | 23             | 131, 132, 133, 134, 135, 138,                           |
| Deva Pāla            | 148, 149       | 139, 140, 143   |
| Devardhi Gani        |                | Dharmāloka 131  |
| Devasundara          |                | Dharmapāla 102, 103, 105, 124,                          |
| Deva Sūri            |                | 130, 146, 148, 149, 150, 151                            |
| Devendra Bhadra      |                | Dharmapāla, A. H 61                                     |
| Devendrabodhi        | xvii. 118, 119 | Dharmaputra 48  |
| Devotee 103,         |                | Dharmasāgaragaņi 5                                      |
|                      | 136, 139       | Dharmasamgraha 71                                       |
| Dgah-wahi-rdo-rje    | 143            | Dharmāśoka 99   |
| Dge-berun            |                | Dharmavijaya, Muni xiv, 2, 6,                           |
| Dge-śeg-sin-gyan     | 100            | 13, 22, 46, 49, 50, 52, 54                              |
| Dge-wahi-blo-gros    | 106, 117,      | Dharmaviniścaya 140                                     |
| 580 wait 810 B105 11 | 118, 119       | Dharmin 29,90   |
| Dgra-las-rgyal-wa    | 136            | Dharmottara xix, 35, 46, 50, 53,                        |
| Dhammaguttika        | 58             | 67, 131, 133  |
| Dhammasangani        | 59             | Dharmottarācārya xx, 130, 131,                          |
| Dhammuttariya        | 67             | 133   |
| Dhanapat Sing        | 3, 4, 6,       | Dharmottaratippanaka 34, 131                            |
| Enanapar ong         | 8, 11          | Dialectic 106   |
| Dhandhuka            | 44             | Dialectician 72, 80, 100, 107,                          |
| Dhaneśvara           |                | 123, 129  |
| Dhānyakataka         | xx             | Dialectics 83   |
| Dhāraṇā              | 41             | Dialogue of Buddha 60                                   |
| Dhāraṇī              | 103            | Dīdhiti xviii   |
| Dharma               | 29, 80, 90,    | Dīdhiti-sāra-mañjarī xviii                              |
| Diamie               | 104, 141       | Dīdhiti-tīkā xviii                                      |
| Dharmabhüşana        | 54, 82         | Dīdhiti-țippanī xviii                                   |
| Dharmābhyudaya-me    |                | Dīdhiti-vyākhyā-vivecana x <b>v</b> iii                 |
|                      | 47, 48         | Digambara xviii, 1, 2, 5, 9, 22,                        |
| Dharma-dharmi-vinis  | cava . 136     | 25, 26, 28, 33, 36, 37, 38,                             |
| Dharmagañja          |                | 54, 82, 105, 127  |
|                      | 46             | Dīgha Nikāya 59,60                                      |
| Dharma-guptiya       | 65             | Dignāga xvi <sup>1</sup> , xix, 27, 34, 49,             |
| Dharmākan Datta      | 131            | 52, 53, 54, 70, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, |
| Dharmakar Santi      |                | 01, 02, 03, 04, 00, 00, 07,                             |

| Page (                            | Page                                |
|-----------------------------------|-------------------------------------|
| 101, 102, 105, 106, 113,          | Dpe-dan-dpe-ltar 85                 |
| 114, 124                          | Dpe-ltar-snan-wa 96                 |
| Dinna Gani 22                     | D. P. I xv                          |
| Dîpanî xviii                      | Dravali 104                         |
| Dīpaṅkara 117, 136, 137, 138,     | Drāvida xviii, xix, xx, 102, 104    |
| 148, 151                          | Dravya 11, 128                      |
| Diploma 139, 141, 151             | Drop of Logie 109                   |
| Direct 112                        | Drop of Reason 117                  |
| Direct apprehension 28            | Dṛṣṭānta 7, 16, 17, 18, 31, 42, 74, |
| Direct knowledge 4, 9, 10, 15 21, | 76, 90,                             |
| 29, 40                            | Drstāntābhāsa 19, 20, 33,           |
| Discipline Basket 58              | 96, 97                              |
| Disconnection 98                  | Dṛṣṭivāda 3, 4, 5                   |
| Discuss 62                        | Dul-lha 119                         |
| Discussion 44, 62, 64             | Duş 129                             |
| Disputant 40, 44, 62, 133         | Dūşaņa 21, 98, 116                  |
| Disputation 62, 114               | Dūṣaṇābhāsa 21, 99                  |
| Dispute 70                        | Duş-gsum-brtag-pa 101               |
| Dissenter 67                      | Dvāra-paņdita 151                   |
| Distinction 62                    | Dvāśraya-mahā-kāvya 45              |
| Dittha 86                         | Dvātrimsikā 51                      |
| Diţţhivāo 4                       | Dwan-phyug-brtag-pa 127             |
| Dmigg-pa-brtag-pa 101             | Dwan-phyug-hjig-pahi-tshig-         |
| Dmigs-pa-brtag-pahi-hgrel 101     | lehur-byaş-pa 130                   |
| Dmigs-pa-brtag-pahi-hgrel-        | Dwań-po 129                         |
| þś <b>a</b> d 120                 | _                                   |
| <u>D</u> nos-po 128               | E                                   |
| Dö 125, 136, 140                  | Ear 15, 87                          |
| Doctor of Philosophy i            | Earle, Mr. A xv                     |
| Doctrine 91, 104                  | Early history of the Deccan 26      |
| Dogma 44,71                       | Earth 22                            |
| Dogmatik xiii                     | Effect 29, 30, 31, 110, 111. 117,   |
| Door of Entrance to Logic 89      | <b>126, 128,</b> 134, <b>138</b>    |
| Dorje 80                          | Efficiency 110                      |
| Doubt 18, 19, 40, 116             | Ego 72                              |
| Dpal-brtsegs Raksita 120          | Ekabbohārika 58                     |
| Dpal-ldan-blo-gros 124            | Emancipation 21, 41, 44             |
| Dpal-ldan-blo-gros-brtan-pa 139   | Enlightened One 57                  |
| Dpal-mchog-dan-pohi-rdo-rje 137   | Enlightenment 15                    |
| Dpal-rtsegs Raksita 121, 130      | Entire knowledge 4                  |
| <u>Dpe-prjod</u> 90               | Entity 11, 128                      |
|                                   |                                     |

q

|                   |                | Page  | Page                               |
|-------------------|----------------|-------|------------------------------------|
| Entrance to the   | Science of     |       | Fallacy of absence of connec-      |
| Logic             |                | 100   | tion 97                            |
| Equanimity        |                | 21    | Fallacy of absence of discon-      |
| Era               |                | 63    | nection 98                         |
| Era of tradition  |                | 1     | Fallacy of argumentation 32        |
| Erring one        |                | 81    | Fallacy of "collective" 43         |
| Error             |                | 62    | Fallacy of example 19, 33, 98      |
| Ether             | 21, 74         | 1, 93 | Fallacy of excluded middle         |
| Etymological      |                | 12    | and major terms 97                 |
| Europe            |                | xxi   | Fallacy of heterogeneous ex-       |
| Evambhūta         | 4, 12          | 2, 21 | ample 20, 21, 97                   |
| Evambhūtābhāsa    |                | 43    | Fallacy of homogeneous ex-         |
| Evolution         | •••            | 129   | ample 19,96                        |
| Examination       |                | 129   | Fallacy of included major          |
| Example 7, 16     | , 17, 18, 31,  | , 32, | term 98                            |
| 42, 74, 76, 9     | 0, 95, 96, 97, | 98,   | Fallacy of included middle         |
|                   | 114, 115       | , 116 | and major terms 98                 |
| Excluded          |                | 96    | Fallacy of included middle         |
| Excluded major    |                | 96    | term 98                            |
| Excluded middle   |                | 96    | Fallacy of inference 99            |
| Excluded middle   | and major      |       | Fallacy of inverted negation 98    |
| terms             |                | 97    | Fallacy of middle term 18, 33, 93, |
| Existence         | 20, 24,        | 25,   | 98, 112                            |
|                   | 4              | 3, 68 | Fallacy of minor term 17, 32       |
| Experience        | 99             | , 109 | Fallacy of naya 43                 |
| Extent            |                | 92    | Fallacy of perception 32, 99       |
| External          |                | 42    | Fallacy of "practical" 43          |
| External insepara | able connec-   |       | Fallacy of reason 33               |
| tion              |                | 42    | Fallacy of reasoning 98            |
| Extreme           |                | 68    | Fallacy of recognition 32          |
| Extrinsic         |                | 18    | Fallacy of recollection 32         |
| Eye               | 15, 59, 8      | 7, 95 | Fallacy of refutation 98, 116      |
|                   |                |       | Fallacy of "subtle" 43             |
| 1                 | F              |       | Fallacy of "suchlike" 43           |
| Fact              |                | 74    | Fallacy of straight expres-        |
|                   | 30, 3          | -     | sion 43                            |
| Fahian            | 62, 67, 69     |       | Fallacy of thesis 90, 98, 112      |
| Fallacious '      | 90, 96         |       | Fallacy of verbal testimony 33     |
| Fallacy 21, 28,   |                |       | Familiar 95                        |
|                   | 96, 98, 99,    |       | Feeling 91                         |
|                   | 113, 114, 115  | , 116 | Fine Art 103, 121                  |

| Page                              | Page                              |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| First Council 58                  | Gokulika 58                       |
| Fitness 32                        | Go Pāla 124, 148, 149             |
| Fleet, Dr. J. F 57,63             | Gorakhpura 57                     |
| Form 110                          | Gorbara 3                         |
| Form of a syllogism 90            | Go-srun 151                       |
| Formula 6                         | Gosvāmi, Dāmodara Lal 51          |
| Francklin 150                     | Gotama 2                          |
| Fraud 61                          | Gotamastotra 3                    |
| Futility 116                      | Gotra 5                           |
| ·                                 | Gough, Mr. 8, 26, 66, 67, 68      |
| G                                 | Govi Candra 119                   |
| Gacchotpatti-prakīrņaka 48        | Govind 26                         |
| Gadādhara xviii                   | Grags-hbyor-ses-rab 130, 133      |
| Ganadhara 2                       | Grags-pa-rgyal-mtshan-dpal-       |
| Ganadhara-sārdha-śataka 3         | b <b>zań</b> 89                   |
| Gandavyūha 64                     | Grammar 103, 121, 122, 140,       |
| Gandha-hasti-mahābhāşya 23        | 141, 151                          |
| Gāndhāra xix, 74, 75              | Great Britain 57, 58, 63, 64, 66, |
| Ganges 121, 122, 150              | 72, 76                            |
| Gangeśa Upadhyaya xvii, xviii, 48 | Great Vehicle 63                  |
| Garbhapāda 136                    | Glegs-bam-bklag-pahi-thabs 134    |
| Gate-keeper 138, 139, 140, 151    | Gser-gyi-go-cha 84, 100           |
| Gāthāsāhasrī 48                   | Gshan-gyi-don-gyi-rje-dpag 85     |
| Gauda 137, 138, 151               | Gshan-gyi-don-gyi-tshig 106       |
| Gautama xvii, 2, 3, 11, 57        | Gshan-gyi-don-rjes-su-dpag-pa 109 |
| Gems 6, 14, 15                    | Gshan-la-brtag-pahi-tshig-lehur   |
| Genealogy 8                       | bya <u>s</u> -pa 130              |
| General 11, 17, 32, 86, 93, 94,   | Gshan-sel-wa 132                  |
| 113, 115                          | Gtan-tshigs 85, 90, 91            |
| Generality 82, 95, 121, 128       | Gtan-tshigs-kyi-de-kho-na-ñid-    |
| General knowledge 109             | bstan-pa 136                      |
| General property 11               | Gtan-tshiga-kyi-hkhor-lo-gtan-    |
| Generic property 11, 43           | la-dwab-pa 99                     |
| Genus 85, 86, 99                  | Gtan-tshigs-kyi-thigs-pa 117      |
| Genyo 75                          | Gtan-tshigs-kyi-thigs-pa-rgy      |
| Germany 122                       | cher-hgrel-wa 120                 |
| Ghānaviññāṇa 59                   | Gtan-tshigs-ltar-snan 93          |
| Ghata 12                          | Gtan-tshigs-thigs-pahidigrel-     |
| Gloss xix, 131                    | ****                              |
| Gnas-mahi-bus 128                 | Gugo                              |
| God 128, 131                      | Guņa 128                          |

|                                | Page                            | Page                              |
|--------------------------------|---------------------------------|-----------------------------------|
| Guṇākara-śrī-bhadra            | 125                             | Hema 35                           |
| Guņamati                       | 146                             | Hemacandra 2, 26, 35, 44, 45, 51, |
| Guņaratna                      | 48, 5 <b>2,</b> 5 <b>3,</b> 133 | 123                               |
| Guņava                         | 3                               | Hema Varma or Kanaka              |
| Gupta                          | 49, 130                         | Varma 84, 100                     |
| Gupta era                      | 70                              | Heresy 77                         |
| Gupta samvat                   | 49                              | Peretic 61, 102                   |
| Guru                           | 129                             | Heretical 58, 65                  |
| Gurvāvalī                      | 6, 39, 53                       | Heterodox 103                     |
| Gurvāvalī-sūtra                | 5                               | Heterogeneous 17, 19, 20, 31, 32, |
| Gustatory                      | 59                              | 90, 91, 94, 96, 98, 110, 112,     |
| Guzerat xv                     | riii, 38, 44, 45,               | 115, 116, 117                     |
|                                | 46, 47                          | Heterogeneous example 20, 21,     |
| Gyantse                        | xv                              | 97, 98                            |
|                                |                                 | Hetu 4, 5, 7, 11, 16, 17, 19, 29, |
| н                              |                                 | 30, 33, 41, 42, 62, 74, 76,       |
| Haimavata                      | 65                              | 77, 85, 90, 91, 117               |
| Hamisa                         |                                 | Hetubindu 53, 120, 133            |
| Hamsarāja, Hira Lal            | 51                              | Hetubindutikā 120                 |
| Han                            | 64                              |                                   |
| Handschriften-verzei           | chnisse 3                       | Hetu-cakra-hamaru 99              |
| Hanoi                          | 70                              | Hetu-dvāra-śāstra 99              |
| Hardy, Rev                     | 57                              | Hetu-prayoga 42                   |
| Haribhadra 3, 46, 47           | ,48,49,50,139                   |                                   |
| Harivamsa Purāņa               | 2                               | _                                 |
| Harşa                          | xx, 123                         | Hetuvidyā xvii, 65, 82            |
| Harşa Deva                     | 132                             | 1                                 |
| Harşa Vardhana                 | 123                             | _                                 |
| Hasti Pāla                     | 149                             |                                   |
| I <b>lbra</b> s-bu             | 110, 134                        |                                   |
| ll <b>bra</b> s-buhi-gtan-tshi | gs 117                          |                                   |
| Ilbrel-pa-brtag-pahi-          |                                 | llgyur-war-smra-wa 129            |
| þśad-pa                        | 120                             | - 00                              |
| llbrel-pa-brtag-pahi-          | ries-su                         | Himavata 58                       |
| hkran-wa                       | -                               |                                   |
| librel-pa-grub-pa              |                                 |                                   |
| Ilbrel-wa-brtag pa             | 118                             | 00 101                            |
| librel-wa-brteg-pahi-          |                                 |                                   |
| Ilbro                          | · -                             |                                   |
| Ubro-sen-dkar                  |                                 | •                                 |
| IIdu-wa 🖍                      |                                 | 1221                              |
|                                |                                 | TIMESTICAL POLICE                 |

| Page                            | Page  |
|---------------------------------|---|
| Historical Records 39           | Inconsistent 95   |
| Iljam dpal-rtsa-rgyud 69        | Indescribable 25  |
| Hjig-rten 129                   | India xiv, xv, xvi, xvii, xix, xx, 50,                                |
| Ijjig-rten-pha-rol-grub-pa 132  | 61, 62, 63, 64, 65, 67, 69,   |
| Hodgson, Mr xv, 64              | 71, 76, 78, 81, 96, 101, 102,   |
| Hoernle, Dr 9, 23               | 103, 105, 108, 120, 122, 134,   |
| Holy saying 74                  | 135, 145, 146   |
| Homogeneous 17, 19, 31, 32, 90, | Indian Logic i, xvii  |
| 91, 94, 96, 110, 112, 113, 115  | India Office xv, 84, 89, 100, 101,                                    |
| Homogeneous example 19, 97, 115 | 106, 107, 108, 109, 117, 118,   |
| Hornell, Mr. W. W xvi           | 120, 121, 123, 124, 125, 130,   |
| Hoshang 129                     | 132, 133, 134, 135, 136, 138,   |
| Householder 7                   | 139, 140, 141, 143, 144   |
| Humiliation 61                  | Indirect 112  |
| Hun xix, 14, 146                | Indirect apprehension 28  |
| Huskapura xx                    | Indirect knowledge 4, 9, 10, 15,                                      |
| Hwen-thsang 14, 62, 66, 67, 68, | 21, 29, 40, 41, 54  |
| 71, 72, 73, 74, 75, 76, 78, 82, | Individual knowledge 109  |
| 101, 102, 103, 105, 123, 145,   | Indra 11, 43  |
| 146                             | Indrabhūti 2, 3   |
| ı                               | Indra Gomin 123   |
| I 143                           | Indravijaya, Muni xiv, 2, 6, 13,                                      |
| Identification 41               | 22, 46, 49, 54  |
| Identity 31, 110, 111, 117, 134 | Indriya 40, 129   |
| Ignorance 21, 32                | Indriya-parīksā 127   |
| Ihā 41                          | Induction 96  |
| Illumination 41                 | Inference 4, 5, 10, 15, 16, 19, 29,                                   |
| Illusion 59                     | 30, 31, 40, 41, 42, 54, 74, 76,                                       |
| Illusory 43, 85, 99, 109        | 86, 87, 88, 89, 90, 99, 109,  |
| Image 11, 109                   | 111, 112, 114, 129  |
| Immediate 43                    | Inference for one's self 16, 31, 41, 85, 106, 108, 109, 110, 137, 139 |
| Imperceptible 30, 31            | Inference for others 41   |
| Implied 95, 113                 | Inference for the sake of   |
| Implied major term 113          | others 16, 17, 31, 85, 88 109,  |
| Imposition 55                   | 111, 112, 137, 139  |
| Impressions 29                  | Infinite knowledge 15   |
| Included major term 98          | Inquiring 41  |
| Included middle and major       | Inseparable 96  |
| terms 98                        | Inseparable connection 98, 20, 29,                                    |
| Included middle term 98         | 42, 92, 116   |
| Incompatible 90, 91, 112        |   |
|                                 | ,   |

|                    |                 | Page          | : [                   | Page                           |
|--------------------|-----------------|---------------|-----------------------|--------------------------------|
| Instrument         |                 | 29            | Jaina Logic           | xiii, xvi, xix, 1              |
| Intelligence       |                 | 97            | Jaina system          | xviii                          |
| Intercourse        |                 | 40            | Jainendra             | 54                             |
| Internal           |                 | 42            | Jain Vaidya,          | Mr 23, 25, 28, 33              |
| Internal inseps    | rable           | connec-       | Jaipur                | 23, 25, 28, 33                 |
| tion               |                 | 42, 76, 141   | Jálandhara            | 63, 148                        |
| Interpretation     |                 | 43            | Jamanagara            | 51                             |
| Intrinsic          |                 | 18            | Jambudvīpa            | 134                            |
| Introduction       |                 | xvii          | Jambudvīpase          | māsa 9                         |
| Intuition          |                 | 41            | Japan                 | xiv, 63, 73, 74,               |
| Invalid            |                 | 19, 100       |                       | 75, 76, 89, 101                |
| Invariable accor   | m <b>pan</b> in | nent 18       | Jarrett, Col.         | 40                             |
| Invariable separ   | ration          | 21            | J. A. S. B.           |                                |
| Inverse connect    | ion             | 97            | 12                    | 2, 124, 125, 138, 140          |
| Inverse disconne   | ection          | 98            | Jāti                  | 51, 116                        |
| Inversion          |                 | 40            | Jaya Candra           | 69                             |
| Inverted           |                 | 97, 98        | Jayadeva Miśr         | a xviii                        |
| Inverted connec    | tion            | 20, 116       | Jayaditya             | 123                            |
| Inverted negation  | n               | 98            | Jayanta               | 53                             |
| Ireland 57, 58     | <b>, 63,</b> 6  | 4, 66, 72, 76 | Jayasimha             | 38, 39, 44, 46                 |
| Istavighātakṛt     |                 | 113           | Jayasoma              | 5                              |
| Iśvara-bhanga-k    | ārikā           | 130           | J. B. B. R. A.        | S. 24, 26, 27, 28,             |
| Iśvara Krsna       |                 | 83, 95        |                       | 34, 63, 82, 105, 114           |
| Iśvara Sena        |                 | 106           | J. B. T. S.           | 63, 65, 66, 67, 68,            |
| Itaretarabhāva     |                 | 42            | 71, 78                | 3, 126, 129, 136, 1 <b>5</b> 0 |
| Itihāsa            |                 | 62            | Jesalmir              | 125                            |
| I-tsing 63, 6      | 66, 84,         | 89, 99, 101,  | Jetāri                | 136, 140, 151                  |
| 102, 103,          | 105, 1          | 19, 123, 146  | Jetavanīya            | 65                             |
|                    |                 |               |                       | i, 1, 55, 80, 82, 137          |
|                    | J               |               | Jina Bhadra           | 137                            |
|                    | •               |               | Jinabhata             | 50                             |
| Jacobi, Dr. Hern   | nan             | xiii, xiv,    | Jinadatta             | $\cdots$ $32$                  |
| T 177              |                 | 1, 5, 13, 49  | Jinadattasüri         | 3                              |
| Jagadiśa           | ••              | xviii         |                       | , 130, 134, 135, 146           |
| Jagat-svabhava-    | _               | •             | Jinaprabha            | 1, 3, 9, 51                    |
| Jaimini            | ••              | 81            | Jina Sena             | 14, 24, 28, 34                 |
| Jaiminīya<br>Jaina | ••              | 33, 49, 51    | Jinendrabodhi         | xvii, 124                      |
| o anna             |                 | xiii, xviii,  | Jineśvara             | 37                             |
| Jaina darana       |                 | 32, 104, 125  | Jitări                | 49                             |
|                    | ••              | 8, 38         | Jīva                  | 8, 22                          |
| Jaināgaina List    | • •             | 46, 54        | Ji <b>vh</b> āviññāņa | 59                             |

| Page                           | Pag <b>€</b>                         |
|--------------------------------|--------------------------------------|
| Jñāna 4                        | Kanaka Muni 57                       |
| Jñānabindu-prakaraņa 54        | Kanaka Varma. Vide Hema              |
| Jñina Candra 51, 52, 146       | Varma                                |
| Jñānagarbha 118, 120, 131      | Kāńci xx, 80, 81                     |
| Jñāna-prasthāna-śāstra 66      | Kāńcipura xx. 102                    |
| Jñāna-śrī 137, 138             | Kangyur 72, 73                       |
| Jñāna-śrī Bhadra 117, 137, 138 | Kaniska 62, 63, 64, 65, 66, 67, 78   |
| Jñāna-śrī Mitra 137, 138, 151  | Kanva 68                             |
| J. P. T. S 58, 68              | Kapila 20, 21, 127, 128              |
| J. R. A. S. xix, 57, 58, 63,   | Kapilavastu 57                       |
| 64, 66, 72, 76, 103, 146       | Kāraņa 29, 30, 31                    |
| Jyotirvidābharaņa 15           | Kāraņānupalabdhi 111                 |
| Jyotiskāvadāna 15              | Kāraņaviruddhopalabdhi 111           |
|                                | Karma 44, 128                        |
| K                              | Karna 151                            |
| Kabul 139                      | Karnaripa 70                         |
| Kādambarī 34                   | Karņāta xix                          |
| Kāla 129                       | Kārya 29, 30, 31, 110, 111, 117, 134 |
| Kalasa 12                      | Kāryahetu 117                        |
| Kālāśoka 58                    | Kārya-kāraņa-bhāva-siddhi 138        |
| Kālid <b>ās</b> a 81           | Käryänupalabdhi 110                  |
| Kalikāla Gautama 48            | Käryaviruddhopalabdhi 111            |
| Kalikāla Sarvajūa 44           | Kāśikā-vṛtti 123                     |
| Kalinga 68, 104                | Kāśmīra xx, 62, 67, 108, 123, 125,   |
| Kālīśankara xviii              | 130, 131, 132, 134, 135, 136,        |
| Kālīśańkarī-patrikā xviii      | 137, 138, 139, 142, 143, 146, 151    |
| Kalpanā 109                    | Kāśmīrian 89, 108                    |
| Kalpasūtra 1, 5, 6, 13         | Kassapiya 58                         |
| Kalyāņa-kāṇḍa 140              | Kāṣṭhāsaṅgha 9                       |
| Kalyāṇa-mandira-stava 14       | Kāśyapa 57, 58                       |
| Kalyāņa Raksita 130, 131       | Kāśyapīya 65                         |
| Kamalakuliśa 151               | Kathākoşa 28                         |
| Kamala Rakşita 151, 152        | Kathāvatthuppakaraņa 60, 61          |
| Kamalaśila 53, 126, 129, 146   | Kathavatthuppakarana-attha-          |
| Kamala-śīla-tarka 125          | kathā 61                             |
| Kamala-śrīla 129               | Kathiwar •13, 34, 51                 |
| Kanabhaksa 46                  | Kātyāyanīputra 64, 66                |
| Kaņāda 46, 104                 | Kaubhişanin-gotra 9                  |
| Kaṇāda Gupta 104               | Kauśāmbī 74, 75, 102                 |
| Kaṇāda Tarkavēgiša xviii       | Kausika                              |
| Kāņa Deva 71                   | Kavi 23, 25, 33, 47                  |

| Page                                | Page                               |
|-------------------------------------|------------------------------------|
| Kāvyamālā 3                         | Kṣānti Pāla 149                    |
| Kāvyānuśāsanavrtti 44               | Kşapanaka 15                       |
| Kāvya-prakāśa-samketa 47            | Kṣatriya 121                       |
| Kāyaviññāna 59                      | Kubja 81                           |
| Kern, Prof 63                       | Kukutasiddha 147                   |
| Kevala 10, 15                       | Kumārajīva 70, 71, 76              |
| Kevalajñāna 2, 4                    | Kumārakalasa 136, 138, 141         |
| Kevalin 2                           | Kumāralābha 67                     |
| Khamba 32                           | Kumāralabdha 67                    |
| Kharataragaccha 3, 5, 13, 14,       | Kumāra Nandi 54                    |
| 49, 53                              | Kumāra Pāla 44                     |
| Kharataragaccha-pattāvalī 48        | Kumāraśrī 136                      |
| Khri-ral xx, 135, 148               | Kumāra-śrī-bhadra 125              |
| Khri-sron-deu-tsan 124, 129         | Kumārila 24, 26, 27, 28, 34, 81,   |
| Khuddaka Nikāya 60                  | 104, 105                           |
| Khyab 92                            | Kumārila Bhatta 81                 |
| Kielhorn, Prof. F 123               | Kumbha 12                          |
| King 62                             | Kumuda-candra 14                   |
| Kīrti 105                           | Kumuda-candrācārya 38              |
| Klatt, Dr. J. 3, 5, 13, 14, 35, 38, | Kundakunda 9                       |
| 39, 45, 48, 49, 53                  | Kurukullaka 65                     |
| Klog-skya-śes-rab-brtsegs 140       | Kuśinagara 57                      |
| Klon-rdol-gsun-hbum 148, 151        | Kuśinārā 57                        |
| Knowledge 4, 10, 22, 40, 59,        | Kusumapura 9                       |
| 109, 112                            | Kutārkika 81                       |
| Kolhāpura 54                        | Kwei-ke 76                         |
| Konkana 137                         |                                    |
| Korunanda 103                       | L                                  |
| Korur 14                            | Labrang xv, xvi, 89, 99, 118, 119, |
| Koşa-kāraka-śāstra 66               | 125, 130, 135, 138, 142            |
| Krakucchanda 57                     | Laghīyastraya 26, 33               |
| Kratu 43                            | Laghusamantabhadra 26, 37          |
| Krishnā 68                          | Laghuṭīkā 50                       |
| Kriyī-ratna-samuccaya 52, 53        | Laghuvrtti 52                      |
| Krenakānta xvii                     | Lakṣaṇa 54, 109, 129               |
| Kṛṣṇarāja 26                        | Lalita Candra 119                  |
| Krttikā 30, 31                      | Lalitāditya xx, 125                |
| Kşamāśramaņa 13, 22                 | Lalitavistara 64, 65               |
| Kṣaṇa-bhanga-siddhi 132, 133, 140   | Lama xx, 125, 148                  |
| Kşana-Vnanga-siddhi-vyākh-          | Lamaism 78 , 124, 129, 151         |
| yā 138                              | Lankāvatāra 64, 72                 |

| Page                              | Page                               |
|-----------------------------------|------------------------------------|
| Lankāvatāra sūtra 71, 72, 73      | 125, 130, 133, 136, 139,           |
| Las 128                           | 140, 141, 143                      |
| Lassen, Mr 63                     | Luna 112                           |
| Laukāyatika 33                    | ••                                 |
| Laukika 16                        | M                                  |
| Law 62, 75, 80, 104               | Mādhavācārya 8, 26, 38, 66, 67,    |
| Leipzig xiii                      | 68, 82, 105, 107, 138              |
| Leumann, Dr. E 6                  | Madhu-sūdana Thakkura xviii        |
| Lévi, Sylvain 63                  | Madhyadeśa 103                     |
| Lexicography 122, 140             | Madhyama 68                        |
| Lha-bla-ma-shi-wa-hod 125         | Madhyamakāvatāra 140               |
| Lha-dwan-blo 118                  | Mādhyamika 51, 66, 67, 68, 70,     |
| Lha-lama-ye-seg-hod 148           | 71, 122, 124                       |
| Lhan-cig-dmigs-pa-nes-pa 136      | Mādhyamika-kārikā 70               |
| Lhasa 142                         | Mādhyamikā Vr≇ti 68, 70            |
| Lha-tsun-byan-chub 148            | Madhyānta-vibhāga-śāstra 73        |
| Library 147                       | Madras xx, 68, 78, 80, 81, 82,     |
| Licchavi 123                      | 102                                |
| Life 68                           | Magadha 3, 20, 57, 61, 69, 97, 103 |
| Likeness 78                       | 124, 125, 136, 138, 139, 146,      |
| Limitation 7                      | 147, 148, 151                      |
| Linga 14, 16, 29, 90, 91          | Magadhi 3, 57                      |
| Lion-cub 47                       | Magic 62                           |
| Literature 57, 59, 121, 122,      | Ma-grub 93                         |
| 140                               | Mahābhadra-kalpa 57                |
| Little Vehicle 63                 | Mahādeva Pandita xviii             |
| Locus 29                          | Mahākāla 14                        |
| Logie xiii, xiv, xv, xvii, xviii, | Mahākośala 68, 71                  |
| xix, xx, xxi, 3, 4, 5, 6, 13, 14, | Mahāmati 72                        |
| 51, 52, 54, 57, 59, 60, 61, 64,   | Mahā Pāla 135, 136, 149            |
| 65, 67, 70, 71, 73, 74, 75, 77,   | Maharaja xv                        |
| 78, 89, 99, 101, 105, 107, 109,   | Mahārāja-Kanika-lekha 62           |
| 117, 118, 119, 121, 123, 124,     | Maharani xv                        |
| 125, 134, 136, 137, 138, 139,     | Mahārāṣṭra 80, 81                  |
| 140, 141, 142, 151                | Mahāsamaya-sūtra 72, 73            |
| Logician 59, 72                   | Mahāsāmghika 58, 65, 67            |
| Lohācārya 9                       | Mahāvagga 59                       |
| Lokāyata 62                       | Mahāvamsa 57, 58, 61, 66, 67       |
| Lokottaravādin 65                 | Mahāvibhāṣā • 64                   |
| London xiv, xv, 58, 59, 60, 61,   | Mahāvihāra 65                      |
| 68, 84, 89, 100, 101, 106, 107,   | Mahāvīra 1, 2, 3, 6, 13, 14, 22,   |
| 108, 109, 112, 117, 118, 120,     |                                    |

| Page                               | Page                            |
|------------------------------------|---------------------------------|
| Mahāvīracarita 2                   | Manual of Buddhism 57           |
| Mahāvīracaritra 45                 | Manusamhitā 103                 |
| Mahāyāna 62, 63, 64, 65, 66, 74,   | Māra 116                        |
| 75, 78, 80, 129, 138, 145          | Mark 29, 49, 90, 99             |
| Mahāyāna-samparigraha-śās          | Masu Rakşita 149                |
| tra 74                             | Mathurānātha xviii              |
| Mahendra Sūri 47                   | Mati 4, 10                      |
| Maheśa Thakkura xviii              | Maticitra 62                    |
| Mahinda 58                         | Matter 126                      |
| Mahī Pāla 134, 135, 148, 149       | Max Müller 71, 75               |
| Mahīśāsaka 65, 74                  | Mayadevi 26                     |
| Mahomedan xx, 151                  | Mediæval xvii                   |
| Mahopādhyāya 5                     | Medieval Logic xiii, xviii, xix |
| Maitreya xix, 57, 73, 74, 75, 78   | Medieval school i, xiii, xvii   |
| Major term 16, 18, 29, 30, 31, 41, | Mediate 43                      |
| 55, 76, 90, 91, 92, 93, 94, 95,    | Medicine 62, 121                |
| 96, 97, 98, 99, 110, 112, 113,     | Meditation 71, 104              |
| 136                                | Meghadūta 81                    |
| Malla 34                           | Members 44                      |
| Malladhāri 38, 51                  | Menander 61                     |
| Mallavādin xix, 34, 35, 131        | Mental 59                       |
| Mallinātha 81                      | Merutunga 1                     |
| Mallişena 51                       | Metaphysical Basket 58          |
| Malwa xviii, 14, 119               | Metaphysics xviii, 13, 151      |
| Manah-paryāya 4, 10, 41            | Method of discussion 117        |
| Manak 8                            | Metre 84                        |
| Manas 15, 40, 86, 87               | Middle Age xiv, xx              |
| Ma-nes-pa 93                       | Middle Country 103              |
| Mangala 126                        | Middle Path 68                  |
| Manibhadra 52                      | Middle term 16, 17, 29, 30, 31, |
| Māṇikya Candra 35, 36, 47          | 33, 41, 55, 76, 77, 85, 90, 91, |
| Māṇikya Nandi 26, 28, 33, 34, 37,  | 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, |
| 40, 54                             | 100, 110, 111, 112, 113, 114,   |
| Manjunātha 100                     |                                 |
| Manjusrī 80, 82, 83, 84, 123,      | 1 2 0.1                         |
| 125, 136, 142                      | Mi-dmigs-pahi-gtan-tshigs 117   |
| Mañjuśri-mūla-tantra 69            | Mihirakula xix, 146             |
| Manoratha                          | Milinda 61, 62                  |
| Manoviña spa 59                    | Milinda-pañha 61, 62            |
| Mantra                             | Mīmāmsaka 27, 32, 46, 54, 91,   |
| Manu 103                           | 93, 94, 105, 127                |
|                                    |                                 |

|                  |            | Page        |                       | Page               |
|------------------|------------|-------------|-----------------------|--------------------|
| Mīm <b>āṁ</b> sī | ••         | 60          | Mutual non-existence  | 24, 25             |
| Mind 10,         | 15, 40, 86 | 8, 87, 109  | Myrobalan             | 80                 |
|                  | ••         |             | Mythical              | 57                 |
| Minor term       | 16, 17, 18 | 8, 29, 30,  |                       |                    |
| 33, 41, 76,      | 90, 91, 93 | , 95, 110,  | N                     |                    |
|                  |            | 112, 136    | Nadia                 | xxi                |
| Mirok            | • •        | 73          | Nāgadatta             | 80                 |
| Misconception    |            | 18          | Nāga Raksita          | 137                |
| Mithilā          |            | xxi         | Nāgaravācaka          | 8                  |
| Mitra, Dr. R. L  | 3          | 6, 65, 149  | Nāgārjuna 67, 68, 69  | ), 70, <b>7</b> 1, |
| Mnon-sum 85      | , 99, 106, | 108, 109,   |                       | 122, 145           |
|                  |            | 129         | Nāga Sena             | 61, 62             |
| Mnon-sum-ltar-   | nan        | 99          | Nāgasena-Bhikṣu-sūtra | 61                 |
| Modern           | ••         | xvii        | Nāga Seşa             | 122                |
| Modern school    | ••         | xviii       |                       | 47, 48, 51         |
| Mody Keshable    | վ          | 9           | Ñag-hbans             | 141                |
| Moggaliputta     |            | 60, 61      | Ñag-tsho-lotsava      | 148                |
| Moksa            | ••         | 8, 21       | Naigama               | 4, 11, 21          |
| Momentariness    |            | 132         | Naigamābhāsa          | 43                 |
| Momentary        |            | 17          |                       | 49, 54, 72         |
| Monastery xx     | , 89, 100, | 118, 119,   | Nālandā xx, 69, 71,   |                    |
|                  | 124        | , 125, 151  | 81, 101, 102, 103,    |                    |
| Mongolia         |            | 63          | 123, 124, 129, 145,   |                    |
| Morris, Dr.      |            | 59          |                       | 150                |
| Mtshan-ñid       | • •        | 129, 134    | Nālendra              | 121                |
| Mucak            |            | 74          | Nālo                  | 69, 145            |
| Mudita Bhadra    |            | 147         | Nāma                  | 11                 |
| Mnkhopadhyay     | a, Just    | ice         | Nāmamālā              | 45                 |
| Asutosh          | • •        | iii         | Name 11,              | 85, 86, 99         |
| Muktākumbha      | • •        | 133         | Nam-mkhahi-gos-can    | 127                |
| Muktāpida        | • •        | xx          | Nāṇambā               | 37                 |
| Mūla Sarvāstiv   | zāda       | 65          | Nanda                 | 3                  |
| Mumbha           |            | 32          | Nandī Sūtra           | 3, 4               |
| Muni Candra      |            | 38, 50      | Nan-gi-khyab-pa       | . 140              |
| Muniratna        |            | 49          | Nārāyaņa Pāla .       | . 149              |
| Munisundara      | ••         | 6, 39, 53   | Narendra-śrī-jñāna    | , 15]              |
| Muñja            |            | 37          | Ñāri                  | 148                |
| Music            | 69         | 2, 104, 121 | Naropa                | 151                |
| Muştiharītakī    |            | 80          | Nāsti                 | 24                 |
| Mu-tig-bum-pa    | ٠          | 133         | Nature                | 126, 1 <b>27</b>   |
| Mutual           |            | 42          | Nava Dharma .         | → 64, 72           |
| •                |            |             |                       |                    |

| Page                               | ge                                 |
|------------------------------------|------------------------------------|
| Naya 4, 8, 11, 15, 21, 22, 40, 43, | Non-self 22                        |
| 51, 54, 55                         | Nose 15; 87                        |
| Nayābhāsa 43                       | Notion 32                          |
| Naya Pāla 141, 142, 148, 149       | Novice 62                          |
| Negation 30, 98, 117               | Nyagrodhikā 9                      |
| Negative 30, 31, 32, 92            | Nyāsa 124                          |
| Nemicandra 46, 47, 69, 70          | Nyāya 13, 40, 52, 61, 62, 127      |
| Neminātha 39                       | Nyāya-bhāsya xvii, 53, 86, 88      |
| Nepal 57, 63, 71, 121, 141         | Nyāyabhūṣaṇa 53                    |
| Nibandhana 40                      | Nyāyabindu xix, 41, 53, 54, 109,   |
| Niebuhrstrasse xiv                 | 113, 114, 115, 116, 117, 120,      |
| Nigamana 8, 16, 31, 42             | 129, 131, 135                      |
| Niggaha 61                         | Nyāyabindupiņdārtha 135            |
| Niggaha-catukka 61                 | Nyāya-bindu-pūrva-pakṣe-           |
| Nighantuśesa 45                    | samkṣipta 129                      |
| Nigliva 57                         | Nyāyabinduṭīkā xix, 34, 35, 113,   |
| Nigraha 61                         | 114, 120, 131                      |
| Nigrahasthāna 51                   | Nyāya-dīpikā 54,82                 |
| Nihksepa 55                        | Nyāya-dvāra-śāstra 89              |
| Nīla-netra 71                      | Nyāya-kalikā 53                    |
| Ni-ma-sbas 123                     | Nyāya-kandalī 51                   |
| Nirgrantha 104                     | Nyāya-khaṇḍa-khādya 54             |
| Nirjarā 8                          | Nyāya-kumuda-candrodaya 33         |
| Nirnaya 39, 40                     | Nyāya-kusumānjali 53               |
| Nirnayasāgara 6,8                  | Nyāyālaṅkāra xvii, 53              |
| Nirvāņa 1, 2, 3, 8, 39, 57, 58,    | Nyāyālaṅkāra-vṛtti 53              |
| 62, 63, 64, 65, 66, 69, 73, 75,    | Nyāyālokasiddhi 123                |
| 82, 142, 145                       | Nyāyāmṛta-taraṅgiṇī . 54           |
| Nirvikalpaka 20                    | Nyāyānusāra-śāstra 66              |
| Niryukti 6                         | Nyāyapradīpa 54                    |
| Nīti 61, 62                        | Nyāya-praveśa 89, 90, 95, 102,     |
| Noble truths 20                    | 113, 114<br>Nyāya-praveśaka 53     |
| Nomenclature 12                    | Nyāya pravesaka                    |
| Non-conception 18                  | Nyāya-praveša-tarka-šāstra 89, 102 |
| Non-distinguished 11               | Nyāya-praveso-nāma-pramā-          |
| Non-entity 11                      | ņa-prakaraņa 89, 102               |
| Non-erroneous 94, 114              | Nyāya-rahasya 54                   |
| Non-erroneous contradiction 114    | Nyāya-sāra 53                      |
| Non-existence 10, 24, 25, 42       | Nyāya-śāstra xvii                  |
| Non-perception 110, 111, 134       | Nyāya-sūtra xvii, 11, 53, 86, 87,  |
| Non-reflective 20                  | 88, 116                            |

| _                                |  |
|----------------------------------|--|
| Page                             |  |
| Nyāya-vārtika xvii, 53, 81, 85,  | Padmā 122  |
| . 88, 89                         | Padmacarita 35   |
| Nyāyavārtika-tātparya-tīkā xvii, | Padma-sambhava 129   |
| 66, 81, 86, 88                   | Pag-sam-jon-zang xv, 82,                                     |
| Nyāya-vārtika-tātparya-tīkā-     | 84, 119, 121, 122, 123, 124,                                 |
| pariśuddhi xvii                  | 140 140  |
| Nyāyāvatāra xix, 13, 15, 40, 46, | 137, 140, 142, 147, 148, 150                                 |
| 48, 76, 133                      | Pakṣa 16, 17, 18, 29, 33, 41, 42, 76, 90, 91, 112            |
| Nyāyāvatāra-vivṛti 13, 19, 21,   |  |
| 46, 133                          | Paksabhasa 11, 02, 00, 112                                   |
| Nyāyāvatāra-vṛtti 48, 49         | I aka prayoga  |
| Nyāyāvayava 85,89                |  |
| Nyāyaviniścaya 26, 37, 40, 54    | Faillava   |
| Nyāya-viniścaya-vṛtti 37         | Dali viv 3 D7 D8 D8 UU UI UI                                 |
| Nyāya-vṛtti xvii                 | Palibothra 150   |
| Nyojits-ron 77                   |  |
| • •                              | Tan Dadding Enterature                                       |
| 0                                | 77   |
| Object 29, 95, 99, 109, 110, 129 | D-7  |
| Object of knowledge 40           | Day along along  |
| Object of sense 40               | 23 26  |
| Ocean of discussions 36          | ) I tindataparame  |
| Ocular 59                        | Pandita xx, 49, 62, 71, 78, 79, 80, 101, 108, 117, 123, 136, |
| Odantapura 125, 14               | 138, 140, 141, 143, 144, 151                                 |
| Odantapurī x                     | Pandita's Cap 79   |
| Oldenberg, Dr 58, 5              | 9 Panini 102 122 124   |
| Olfactory 5                      | 9 Dadille 38, 51   |
| Omniscience 14                   | 1 mijika   |
| Onesided 4                       | 3 Famacti 143  |
| Offeringer with another          | D 111- Phodes 108 132 134                                    |
| Opponent 40, 44, 98, 104, 112,11 | 9 43   |
| Opposition 11                    | 3 1 01010 8-0222   |
| Olumation                        | 48 50  |
| Organis of solise                | 0 1 at attraction 146  |
| Orissa 80, 8                     | 100  |
| Orthodox 65, 10                  | 73 Faramarthasar 15 40 41 43                                 |
| Others 14                        | 77   |
| Oudh x                           | I aramar mika praty dina                                     |
| P                                | Parārtha 41<br>Parārthānumāna 16, 31, 85, 109,               |
| •                                | _ 111  |
| Padārtha 12                      | 48 T   |

| Page                                 | Page                                |
|--------------------------------------|-------------------------------------|
| Parārtha-vākya 106                   | Pāvā 1                              |
| Pariccheda 24, 39                    | Pearl-oyster 40                     |
| Parīkṣā 129                          | Perceptible 30                      |
| Parīkṣāmukha 28, 37, 54              | Perception 4, 10, 15, 16, 19, 29,   |
| Parīkṣāmukha-pañjikā 28, 37          | 40, 54, 85, 86, 88, 89, 90, 99,     |
| Parīkṣāmukha-śāstra 28               | 105, 106, 108, 109, 110, 111,       |
| Parīkṣāmukha-sūtra 26, 28, 29, 33,   | 112, 129, 137, 139                  |
| 40                                   | Perfect 41                          |
| Parišistaparvan 1, 45                | Perfection 71, 146                  |
| Parivrājaka 103                      | Perfect knowledge 109               |
| Paroksa 4, 9, 10, 15, 28, 29, 40,    | Permanence 128                      |
| 41, 54                               | Permanent 128                       |
| Pārśva 63                            | Personal Testimony 16               |
| Pārśvanātha 1, 14, 125               | Pervaded 29, 30, 31                 |
| Pārśvanātha-caritra 35, 36, 47       | Pervader 29, 111                    |
| Pārtha Sārathi 81                    | Pervasion 29                        |
| Pārtha Sārathi Miśra 81              | Peshwar xix, 74, 75                 |
| Partially 92                         | Peterson, Professor xiii, xx, 2, 3. |
| Particle 95                          | 5, 9, 13, 14, 22, 23, 24, 26,       |
| Particular 11, 17, 32, 86, 115       | 28, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 44,     |
| Particularity 128                    | 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52,     |
| Particular property 11               | 54, 109, 113, 114, 131              |
| Parts of a syllogism 42, 85, 89      | Petitio Principii 70                |
| Party 93                             | Phakkikā-śāstra xvii                |
| Pāṭaliputra xviii, 9, 26, 28, 58     | Phala 28, 128                       |
| Patan 35                             | Phalavardhigrāma 39                 |
| Patañjali 122                        | Phani Candra 69                     |
| Pathak, K. B. 26, 28, 34, 105, 114   | Phases 33                           |
| Pātharghātā 150                      | Philosophy 78                       |
| Paticcasamuppāda 59                  | Phodang xv, xvi                     |
| Pātimokkha 78                        | Phyi-rol-gyi-don 129                |
| Patinna 61                           | Phyi-rol-gyi-don-grub-pa-ces-       |
| Patna 9                              | bya-wahi-tshig-lehur 130            |
| Pātra Kesari 28                      | Phyogs 90                           |
| Pātra Kesari Svāmi 28                | Phyogs-glan 80                      |
| Patta 38                             | Phyogg-ltar-snan 90                 |
| Pattadhara 5                         | Piety Mart 147                      |
| Pattāvalī 1,63, 5, 6, 9, 13, 14, 49, | Pingala-netra 71                    |
| 53, 55                               | Piṭaka 80, 103, 121                 |
| Pattāva ī-vācanā 3                   | Pitakatraya 58                      |
| Paudgalfka 17                        | Pitakattaya 58                      |

|                                  | Page           | Page   |
|----------------------------------|----------------|--|
| Place                            | 29             | Pramāņa 4, 8, 9, 10, 11,                                     |
| Poet 25                          | , 123          | 15, 21, 22, 29, 40, 43, 51, 54,                              |
| Poetry                           | 62             | 55, 84, 106, 108, 129, 132, 134                              |
| Pole                             | 32             | Pramāṇamīmāmsā 26, 45  |
| Polemic                          | 77             | Pramāṇa-naya - tattvā - lokā-                                |
| Polity                           | 62             | lankāra 38, 39, 41, 42, 50, 51                               |
| Poona                            | 28             | Pramāṇa-nirṇaya 54   |
| Positive                         | 92             | Pramāṇa-parīkṣā 27, 54, 132                                  |
|                                  | 0, 31          | Pramāna-samuccaya xvii, 80, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 100, |
| Pothi                            |                | 108  |
| Poussin, Louis De La Vallee      |                | Pramāṇa-samuccaya-ṭīkā xvii, 124                             |
|                                  | ĺ              | Pramāna-samuecaya-vrtti xvii, 100                            |
|                                  | , 108          | Pramāna-śāstra xvii  |
| •                                | 4, 34          | Pramāṇa-śāstra-praveśa 100                                   |
| Prabhacandra 23, 24, 28, 33      | , 34,<br>8, 82 | Pramāṇa-siddhi 106   |
| T. 11 W                          | •              | Pramāṇa-sūtra-samuccaya 84                                   |
|                                  | 7, 34          | Pramāņa-svarūpa 28, 39                                       |
| D 11= 0                          | 3, 54          | Pramāṇa-vārtika 53, 106, 118,                                |
|                                  | 146            | 124, 135, 142  |
| Prabhāvakacaritra 14, 35, 38     | 5. 48          | Pramāņa-vārtika-kārikā xvii, 103,                            |
|                                  | .,             | 105, 106, 107  |
| Prācīna Prācīna Gotra            | 5<br>5         | Pramāṇa-vārtikālankāra xviii,                                |
| Prācīna Gotra<br>Practical 11, 1 |                | 135, 141   |
| •                                | 110            | Pramāņa-vārtikālankāra-tīkā                                  |
| Practice                         |                | xviii, 137, 141  |
| Pradhāna                         |                | Pramāņa-vārtika-pañjikā xvii, 118,<br>119                    |
|                                  | 4, 42          |  |
| Pradyumna 14, 35, 3              | 6. 45          | Pramāņa-vārtika-pāñjikā-ṭīkā<br>xvii, 119                    |
| •                                | 4, 42          | Pramāna-vārtika-tīkā xviii, 142                              |
|                                  | 149            | Pramāṇa-vārtika-vṛtti xvii, 107,                             |
| Prajňākara 2                     | 7, 53          | 124  |
| Prajňākara Gupta xviii, 135      | , 141          | Pramāņa vinišcaya 107, 108, 132,                             |
| Prajňākara Mati 135              | , 151          | 138  |
| Prajñāpāramitā-sūtra             |                | Pramāņa-viniścaya-tīkā 132, 138                              |
| Prajňaptivādin                   | 65             | Prameya-kamala-māranda 28, 33,                               |
| Prajñāvarma                      | 120            | 34, 54   |
| Prakaraņa                        | 9, 45          | Prameya-ratna-mālā 28, 37, 46                                |
| Prakāśa                          | 54             | Prasamarati . 9  |
| Prākṛta 3,                       | 4, 14          | Pratibandhasiddhi . 144                                      |

| Page                                  | Page                             |
|---------------------------------------|----------------------------------|
| Pratijnā 7, 42, 61, 74                | Public opinion 90                |
| Pratijñā-vibhakti 7                   | Pūjāprakarana 9                  |
| Pratisedha 30                         | Puṇḍravardhana 148               |
| Pratisthana 6                         | Punjab xix, 67                   |
| Prativādi 40, 44                      | Purāṇa 62                        |
| Pratyabhijñāna 29, 40, 41, 54         | Purandara 43                     |
| Pratyabhijñānābhāsa 32                | Pure Logic 74, 78                |
| Pratyaksa 4, 9, 10, 15, 28, 29, 49,   | Pūrņaka 63                       |
| <b>54, 74,</b> 85, 99, 105, 106, 109, | Pūrņimāgaccha 45                 |
| 129                                   | Puruṣa 127                       |
| Pratyakṣābhāsa 32, 99                 | Puruṣa-parīkṣā 127               |
| Pratyakṣa-svarūpa 40                  | Pūrva 5, 30, 31                  |
| Pratyakṣa-vyavasthā 108               | Pūrvasaila 65                    |
| Pravacana-sāroddhāra-vṛtti 37         | Pustakapāthopāya 134             |
| Prayāga 71 103                        | Puṣyā 30                         |
| Prāyaścitta 26                        |                                  |
| Predicable 93                         | Q                                |
| Predicate 16, 29, 90, 91, 92          | Quality 43, 93, 95, 128          |
| Preface xiii                          | Questions of King Milinda 61, 62 |
| Premchand 9                           | Quibble 59                       |
| Premise 96                            | Quibbler 81, 133                 |
| Presidency College xvi                |                                  |
| President 44                          | R                                |
| Presumption 10, 87                    | Raghunātha Siromaņi xviii        |
| Priesthood 65, 103                    | Rahasya xviii                    |
| Prince of poets 81                    | Rāhuvratin 104                   |
| Principles 13                         | Rājagaccha 35, 36                |
| Prior 30, 31                          | Rājagirīya 58                    |
| Probability 10                        | Rājagrha 3, 58                   |
| Procedure 40                          | Rāja Pāla 149                    |
| Professor xiii, 124, 129, 146         | Rājaśekhara 38, 48, 51, 52       |
| Proof 44, 90, 91, 112, 118            | Rājatarangiņī xx                 |
| Properties 11                         | Rājavārtika 54                   |
| Prophecy 62                           | Rajgir 3, 145, 150               |
| Proposition 7, 16, 31, 42, 44, 61,    | Rajputana 28                     |
| 76, 90, 95, 96, 112                   | Rajshahye 121, 122               |
|                                       | •                                |
| Prosody 140                           | Raksita 130                      |
| Proximity 109                         | Ral-pa-can xx, 135, 148          |
| Proximity 109 Prthvi 2                | Ral-pa-can xx, 135, 148 Rāma 43  |
| Proximity 109                         | Ral-pa-can xx, 135, 148          |

|  | P      | Page |                  |                    | Pa         | ige       |
|--|--------|------|------------------|--------------------|------------|-----------|
| Ran-bshin  | 110,   | 134  | Records          |                    | ì3.        | 66        |
| Ra <b>ņ</b> -bshin-brtag-pa                            |        | 127  | References       |                    |            | <b>57</b> |
| $\textbf{Ra\dot{n}-bshin-gyi-gtan-tshig}\underline{s}$ |        | 117  | Reflective       | • •                |            | 20        |
| Ran-don-gyi-rje-dpag                                   |        | 85   | Refutation       | 21, 89, 9          | 8, 116, 1  | 31        |
| Ran-don-gyi-rjes-su-dpag-p                             | 8.     | 108  | Relation         |                    |            | 96        |
| Ran-gi-don-rjes-su-dpag-pa                             | ١      | 106  | Relative extens  | ion                |            | 92        |
| Ran-lag-tshad-ma                                       |        | 129  | Release          |                    |            | 8         |
| Rasa Pāla  |        | 149  | Reliable author  | ity                | 4,         | 10        |
| Rāṣṭrakūṭa   |        | 26   | Religion         | 2                  | kviii, 13, | 78        |
| Rathavirapura  |        | 2    | Remoteness       |                    | 1          | 09        |
| Ratnākara  |        | 151  | Research Socie   | ty                 | 76, 1      | 33        |
| Ratnakarandaka   | 23,    | , 24 | Resident         |                    | 1          | x v i     |
| Ratnākara Sānti  | 140,   | 151  | Respondent       |                    |            | 44        |
| Ratnakīrti   |        | 140  | Restraint        |                    |            | 8         |
| Ratnaprabha 38, 46, 50,                                | 131,   | 133  | Result           |                    |            | 43        |
| Ratnarañjaka   |        | 147  | Rgyal-dwan-blo-  | gros               | 1          | 24        |
| Ratnaraśmi   |        | хx   | Rgyal-wa-can     |                    | 1          | 37        |
| Ratnasāgara  |        | 147  | Rgyu-dan-libras  | -buhi <b>-n</b> o- | - wo -     |           |
| Ratna-śekhara  |        | 52   | grub-pa          | ••                 | 1          | 38        |
| Ratnavajra   | 139,   | 151  | Rgyud-gshan-gr   | ub-pa              | 1          | 18        |
| Ratnāvalī  |        | 68   | Rgyud-gshan-gr   | ub pahi-l          | grel-      |           |
| Ratnāvatārikā  |        | 51   | þś <b>a</b> d    | ••                 | 1          | 21        |
| Ratnāvatārikā-pañjikā                                  |        | 51   | Rgyud-pa         |                    | 1          | 29        |
| Ratnāvatārikā-tippana                                  | 51,    | 52   | Rhetoric         |                    | 122, 1     | 140       |
| Ratnodadhi   |        | 147  | Rhys Davids, I   |                    |            |           |
| Raudrī patrikā   | x      | viii | 61,              | 62, 64,            | 66, 67, 1  | 03        |
| Ravi Gupta xvii, xx,                                   | 123,   | 124  | Right-hand       | • •                | 1          | 45        |
| Rdo-rje-rgyal-mtshan                                   |        | 124  | Rigs-ldan-rgyal  | -po                | 1          | 00        |
| Rdsas  |        | 128  | Rigg-pa-can      |                    | 1          | 127       |
| Real   | 43,    | 109  | Rigs-pa-grub-pa  | hi-sgron           | -ma        | 123       |
| Reality  |        | 66   | Rigs-pahi-sbyor  | -wa                | 1          | 139       |
| Reason 4, 7, 16, 30, 31                                |        | 41,  | Rigs pahi-thigs  | ра                 | 1          | 109       |
| 74, 90, 91, 92, 94,                                    |        |      | Rigs-pahi-thigs- | pahi- dor          | 1 -        |           |
|  | 110,   | 111  | þsdus-pa         | • •                | 1          | 135       |
| Reasoning 10, 17, 59, 60                               | 73,    | 74.  | Rigs-paht-thigs  | pahi ph            | yogs       |           |
| 75, 77, 90, 91, 94, 95,                                | 98, 1  | 10,  | sna-ma-wd        | or-þ <u>s</u> dus- | pa l       | 129       |
| 112, 114, 116,   | 123,   | 139  | Rigs- pahi- thig | g- pahi -          | rgya-      |           |
| Recluse  |        | 60   | cher-hgrel-      | wa ·               | 1          | 131       |
| Recognition 29, 4                                      | 0, 41, | 54   | Rigs-pahi-thigs  | pa rgyā-           | cher -     |           |
| Recognition of similarity                              |        |      | ligrel-wa        | ••                 |            | 20        |
| Recollection 29, 4                                     | 0,41,  | 54   | Rigs-pahi-yan-l  | ag                 | 85,        | 89        |

|                     |                          | 1            | Page          |                |                            | $\boldsymbol{P}$ | age         |
|---------------------|--------------------------|--------------|---------------|----------------|----------------------------|------------------|-------------|
| Rin-chen-rdo-rje    |                          |              | 139           | Sabda-Brahma-  | parīkṣā                    |                  | 127         |
| Rjes-dpag-ltar-snai | à                        |              | 99            | S'abdānumāna   | ••                         | ,                | 85          |
| Rjes-su-dpag        |                          |              | 99            | S'abdānuśāsana |                            |                  | <b>3</b> 5  |
| Rjes-su-dpag-pa     |                          |              | 129           | Sabhāpati      |                            |                  | 44          |
| Rjes-su-hgro-wa-m   | ed                       |              | 97            | Sabhya         |                            |                  | 44          |
| Rjes-su-hgro-wa-pl  | ıy <mark>i</mark> n-ci-l | og -         |               | Sacrifice      |                            | 43,              | 147         |
| pa                  |                          |              | 97            | Şaddarsana     | • •                        |                  | 49          |
| Ŗjusūtra            |                          | 4, 1         | 1, 21         | Saddarsanasam  | uccaya 4                   | 18, 49,          | <b>5</b> 0, |
| Ŗjusūtrābhāsa       |                          |              | 43            |                |                            | 52,              | 53          |
| Rnam-par-rig-pa-t   | sam-ñid                  | -du-         |               | Şaddarsana-san | iuccaya-vi                 |                  | 52,         |
| grub-pa             | • •                      | • •          | 140           |                |                            | 53,              |             |
| Rock                |                          |              | 81            | Saddharma-pur  | ıd <b>ar</b> îka           | ••               | 64          |
| Rockhill, Mr.       |                          | 66           | , 124         | Sādhana        | • •                        | 29,              | 90          |
| Rohiņī              |                          | 3            | 0, 31         | Sādhāraņa      |                            | • •              | 93          |
| Ronki               |                          |              | 76            | Sādharmya      |                            | 31,90            |             |
| Ronshiki            |                          |              | 76            | Sādharmya-dṛṣ  | ț <b>ā</b> ntābh <b>ās</b> | a 19.            |             |
| Ronshin             |                          |              | 76            | Sādharmyavat   | • •                        | • •              | 112         |
| Ŗṣabhadeva          |                          |              | 1             | Sādhu          | • •                        |                  | 7           |
| Ŗşibhāşita-sūtra    | ••                       |              | 6             | Sādhya l       | 6, 18, 19,                 | 29, 76           | , 90        |
| Rsimandala-praka    | raņa-vŗ                  | tti          | 6             | Sādhyasama     | • •                        | • •              | 70          |
|                     |                          |              | 99            | Şad-lakşana    |                            |                  | 134         |
| Rtog-gehi-skad      |                          | • •          | 138           | Sadvāha        |                            | • •              | <b>6</b> 8  |
| Rtsod-pahi-khyu-n   | nchog                    |              | 80            | Sāgaracandra   |                            |                  | 47          |
| Rtsod-pahi-rigs-pa  | 1                        |              | 117           | Sāgarendu      |                            |                  | 47          |
| Rtsod-pahi-rigs-pa  | ի <mark>i- և br</mark> e | l-pa         |               | Sahacara       |                            |                  | , 31        |
| -don-rnam-pa        | r-h byed                 | -pa          | 125           | Sahāvalambha   | •                          |                  | 136         |
| Rtsod-pahi-rigs-pa  | hi-hgrel                 | - <b>w</b> a | 120           | Saint          |                            | 80, 83,          |             |
| Rucidatta           |                          |              | xvii <b>i</b> | Saka 1, 14, 26 | 3, 28, 34.                 | 51, 63,          | 131         |
| Rudra               | • •                      |              | 14            | Sakābda        | • •                        |                  | 63          |
| Rudra Nārāyaņa      |                          |              | xviii         | Sakha          | • •                        |                  | . 8         |
| Rudra Nyāyavāca     | aspati                   |              | <b>xv</b> iii | Sakala         |                            | ••               | 41          |
| Rugged hand         |                          |              | 81            | Sākala         | ••                         | <b>7</b> 5,      | 146         |
| Rules of debate     |                          |              | 44            | Sakra          | • •                        | 12               | , 43        |
| Russia              |                          |              | 131           | Sakrāditya     | ••                         | 145,             | 146         |
| ••                  |                          |              |               | Sakti          | • •                        |                  | 12          |
| ,                   | 8                        |              |               | Sākya          | • •                        | 89,              | 125         |
| Sabalā              |                          |              | 32            | Sakyabodhi     |                            | xvii,            |             |
| S'abarasvāmi        |                          | 2            | 7, 34         | Sākya-hod      | 136, 13                    | 8, 140,          | 141         |
| Sabbatthi •         |                          |              | 8, 66         | Sākya Muni     | • •                        | 57,              | 116         |
| Sabda               | 4, 12,                   | 15, 1        | 6, 21         | Sākya-simha    | ••                         |                  | 121         |
| <b>Kah</b> dāhhāsa  |                          |              | 43            | Sakva-śri Pan  | dita                       |                  | 151         |

|                      |           | F      | Page        |                  |                 | $\boldsymbol{P}$ | age        |
|----------------------|-----------|--------|-------------|------------------|-----------------|------------------|------------|
| Sāla Candra          |           |        | 69          | Samvat 35, 36, 3 | 37, 38, 3       | 9, 44,           | 45,        |
| Sālikā Nātha         |           |        | 54          | 46, 47, 48, 4    |                 |                  |            |
| Salvation            | 8, 21,    | 38.    | <b>3</b> 9, |                  |                 | 55,              | 131        |
|                      | -, . ,    |        | 83          | Samvrti          | ••              |                  | 43         |
| amabhir <b>ū</b> dha |           | 4, 12  | , 21        | Sāmvyavahārika   | ••              | • •              | 40         |
| Samabhirüdhäbhä      |           |        | 43          | Samyaktvapraka   | raņa            | • •              | 46         |
| Sambhūtivijaya       |           |        | 5           | Samyaktvaprakā   | ś <b>a</b>      | • •              | 28         |
| Samādhirāja          |           |        | 64          | Sam-ye           | ••              | 124,             |            |
| Samāja-guhya         |           |        | 147         | Sanātana         | ••              |                  | 136        |
| Samana               |           |        | 13          | Sangha           | ••              | • •              | 103        |
| Samantabhadra        | 22, 23    | , 24,  | 25,         | Sanghabhadra     | ••              |                  | 76         |
|                      |           |        | , 54        | Sanghārāma       | 6               | 7 ,74,           | l 45       |
| Samantapāsādikā      |           |        | <b>7</b> 6  | Sankantika       |                 | • •              | <b>58</b>  |
| Sāmānya 17, 32,      | 54, 82,   | 95, 1  | .09,        | Sankara          | • •             |                  | <b>2</b> 3 |
|                      |           |        | 128         | Sankarācārya     | ••              | xx,              | <b>2</b> 3 |
| Sāmānya-dūṣaṇa-d     | -         | śikā   | 121         | Sankarānanda     | ••              | xviii,           | 142        |
| Sāmānya-lakṣaṇa      |           |        | 109         | Sankara Svāmin   | 89              | , 101,           | 102        |
| Samaraiceakahā       | • •       | • •    | <b>4</b> 9  | Sanskrit         |                 | 3,               | 15         |
| Samāropa             | • •       | • •    | 40          | Sanskrit Buddhis | t Litera        | ture             |            |
| Samatata             | • •       |        | 102         |                  |                 | 63,              | 64         |
| Samavāya             |           |        | 129         | Sāntakara Gupta  |                 | ]                | 101        |
| Samavāyābhāva        | • •       |        | 24          | Santānāntara-sid | dhi             | 117,             | 121        |
| Samayabhedopara      | cana-cak  | ra     | 119         | Santānāntara-sid | dhi-ṭīkā        | !                | 121        |
| Sambandha            |           |        | 128         | S'ānta Rakṣita   | 79, 124,        | 125, 1           | 26,        |
| Sambandha-parīk      | эā 118,   | 120,   | 143         |                  | 129             | , 130,           | 148        |
| Sambandha-parīk      | ānusāra   |        | 142         | Santati          |                 | :                | 129        |
| Sambandha-parīks     | ā-ţīkā    |        | 120         | Santi Bhadra     | ••              | 136,             | 140        |
| Sambandha-parīks     | ā-vṛtti   |        | 118         | Santinatha       | xx, 22          | , 109, 1         | 131        |
| Sambhava             | ••        |        | 10          | S'āntipa         | • •             | ••               | 140        |
| Samgraha             |           | 4, 11, | 21          | Santi-sena       |                 |                  | 37         |
| Samgrahābhāsa        |           |        | 43          | Sānti Sūri       |                 |                  | 37         |
| Sāmkhya xix, 27      | , 33, 46  | , 49,  | 51,         | Säntyäcärya      |                 |                  | 37         |
|                      | 2, 65, 91 |        |             | Saptabhangī      |                 |                  | 51         |
| Sāmkhya-kārikā       |           | 83,    | 95          | Saptabhangi-nay  | a. 8,           | 24, 43,          | 51         |
| Sammati-tarka-süt    | tra       | 14,    | 36          | Sapta-bhangi-tar | a <b>n</b> giņī | ٠,               | 8          |
| Sammitī <b>ya</b>    |           | 65,    | 66          | Saptadaśa-bhūmi  | śāstra-y        | ogā-             |            |
| Sāmprata             |           |        | 12          | cārya            | •               | 72,              | 73         |
| Samsāra              |           | :      | 129         | Saraha           | •               |                  | 68         |
| Samsaya              |           |        | 40          | Sarasvatī        | •               | iii, I           | 103        |
| Sāmu Pāla            | ••        | ••     | 149         | Sarasvatīgaccha  |                 | 6                | , 9        |
| Samvara              |           |        | 8           | Sāriputra        |                 |                  | 145        |

| Page                               | Page                                 |
|------------------------------------|--------------------------------------|
| Sarvadarsana-samgraha 8, 26, 38,   | Science 13, 59, 62, 139              |
| 66, 67, 68, 82, 105, 107, 138      | Schlagintweit, Dr. 71, 73            |
| Sarvajña Deva 134, 135             | Scripture 4, 15, 16, 29, 32, 40, 41, |
| Sarvajña Mitra 124                 | 58, 114, 121, 129                    |
| Sarvājna-siddhi-kārikā 141         | Scriptural method 22                 |
| Sarvajňa-śrī Rakṣita 89            | Scriptural testimony 16              |
| Sarvarājagaņi 3                    | Sculptor 145                         |
| Sarvāstivāda 65, 66, 75, 140       | Scythian 62                          |
| S'ası 112                          | Second Council 58                    |
| Saskya 89, 100                     | Sect 2, 58, 65, 66, 67, 74, 75       |
| Sāstra 82, 83, 84, 89, 100, 103,   | Seish 75                             |
| 106, 139                           | Self 22, 143                         |
| Sāstraja 16                        | Self-conscious 22                    |
| Sāstra on the grouped infer-       | Self-consciousness 109               |
| ences 84                           | Self-evidence 128, 129               |
| Sästri, Gangādhara 81              | Sel-wa-grub-pa 143                   |
| S'āstri, Hara Prasad 140, 141, 150 | Semblance . 17, 28, 116              |
| Sat 109                            | Semblance of reason 18               |
| Sataka śāstra 71                   | Semblance of refutation 21, 116      |
| Sata-śāstra-vaipulya-vyākhyā 102   | Sen-dkar 136                         |
| Sātavāha 68                        | Sensation 111                        |
| Sātavāhana 68                      | Sense 10, 29, 85, 95, 99, 109, 129   |
| Såtru 12                           | Sense-organ 40, 86, 87, 127          |
| Satrunjaya 34                      | Sense-perception 10                  |
| Sauddhodani 46, 53                 | Separation 49                        |
| Saugata 17, 27, 33, 46, 54         | Separation unshown 21                |
| Sautrāntika 65, 66, 67             | Sermon Basket 58                     |
| Sāvaka 60                          | Ser-skya-pa 127                      |
|                                    | Serviceable 95                       |
| Savikalpaka 20                     | S'eșa 122                            |
| Sbas 139                           | Seg-pahi-dge-gnas 84                 |
| S. B. E. series 58, 59, 61, 62     | Seg-rab 125                          |
| Schiefner, A. xv, 66, 67, 68, 69,  | Seg-rab-hbyun-gnag-gbag 135          |
| 70, 71, 72, 74, 80, 81, 82, 103,   | Seg-rab-gdon-bu 69                   |
| 106, 118, 119, 121, 123, 130,      | Sewell, Mrxx, 68, 81                 |
| 131, 134, 135, 136, 137, 139,      | Sgra 129                             |
| 140, 141, 142, 145, 148, 150,      | Sgrahi-tshans-pa-brtag-pa 127        |
| 152                                | Sgra-rje-dpag 85                     |
| Scholar 62                         | Shalu 78                             |
| School •xvii, xviii, 66, 104, 140  | Sha - ma - kun - laş-btuş-pahi-      |
| School of thought 62               | hgrel-wa 100                         |

|                   |                    | Page       | e     |                    |       | Pag         | je         |
|-------------------|--------------------|------------|-------|--------------------|-------|-------------|------------|
| Shan-shun         |                    | 137        | 7   1 | Simsapā            | 5,    | 31, 110, 1  | 11         |
| Shawl             |                    | 79         | 9   8 | Simultaneity       | ••    | 9           | 29         |
| Sherbatski, F. J. | 109,               | 114, 131   | ι¦    | Simultaneous       |       | 30,         | 31         |
| Shi-wa-litsho     |                    | 124        | 1 :   | Sitaprabha         |       | 12          | 23         |
| Shu-chen 120, 1   | 21, 130,           | 131, 135   | ,     | Si-wahi-dge-gnas   |       | 10          | 00         |
|                   |                    | 140        | 0     | Skad-cig-ma-hjig-r | a-gru | ıb-pa 13    | 3 <b>2</b> |
| Sh'-yen-töh-cia   |                    | 68         | 8     | Skad-cig-ma-hjig-g | rub - | pahi -      |            |
| Siam              |                    | 6          |       |                    |       | n-hgrel 13  | 33         |
| Siamese edition   |                    | 6          | l     | Skyes-bu           |       | 19          | 27         |
| Siddha            | ••                 | 3          | 5     | Skyes-bu-brtag-pa  |       | 15          | 27         |
| Side              |                    | 4          |       | Sky-lotus          |       |             | 18         |
| Siddha-Hema-śak   | odānuś <b>ā</b> sa | ına-       |       | Sloka-vārtika      |       | 27,         | 54         |
| brhat-țikä        | • •                | 3          | 5     | Sloka-vārtika-bhā  | şya   |             | 51         |
| Siddhajayantī-ca  | ritra-țikă         | ī :        | _     | Smarana            |       | 40,         | <b>4</b> l |
| Siddhānta         |                    | :          | 3     | Smaranābhāsa       |       |             | 32         |
| Siddharāja        |                    | 47         | 7     | Smith, Vincent A   |       | 58, 61,     | 63         |
| Siddharși         |                    | 46, 4      | ~     | Smṛti              |       | 29,         |            |
| Siddhasena        | 1                  | 5, 22, 3   | 7     | Sñes-than          |       | 1           |            |
| Siddhasena Divā   | kara xi            | ĸ, 13, 14  |       | Sophism            |       |             | 60         |
|                   | 15, 22, 4          | 10, 46, 70 |       | Sophist            |       | 59, 60,     | -          |
| Siddhasena-divāk  | ara-vyāk           | τ-         |       | Sophistry          |       |             | 60         |
| hyānaka           | ••                 | 4          | 6     | Sorrow             |       | 49,         |            |
| Siddhasena Gani   |                    | 9, 2       | 2     | Sotaviññāna        |       |             | 59         |
| = -               |                    | 5          | 8     | Soul 8, 10, 15, 2  |       |             |            |
| Siddha-vyākhyā    | aka                | 4          | 6     | 72, 91, 95,        |       |             |            |
| Sign              |                    | 16, 2      | 9     |                    |       |             | 8          |
| •                 | , 89, 99,          | 118, 119   | ),    | Sound              | • •   |             | -          |
| 125,              | 130, 135           | , 138, 14  | 2     | Source of knowle   |       | ,           |            |
| Sīla              |                    | 12         | 3     | Specific property  | _     |             |            |
| S'ilabhadra       | 101, 102           | , 103, 14  | 6     |                    | ••    | •           | 62         |
| Silāditya         | • •                | 3          | 4     | Spyi               | ••    |             | 28         |
| Silao             |                    | 15         | 0     | Srāddha-pratikra   |       |             | 20         |
| Silasamgama       |                    | 15         | 0     | vrtti              |       |             | <b>52</b>  |
| Silver            | • •                | 4          | 0     | Sragdharā-stotra   | 70,   | 21, 124, 1  | 50         |
| Simha             |                    | 123, 12    | 4     | Sragdharā-stotra-  | tīkā  | 1           | 150        |
| Simhagiri         |                    | 2          | 2     | Sramana            | ٠     |             | 60         |
| Simhasūri         |                    | 2          | 2     | Srāvaka            |       |             | 137        |
| Simhasisuka       |                    | 4          | 7     | Srestha Pāla       |       | 1           | 49         |
| Simhavaktra       |                    | 8          | 0     | Srī                |       | 100, 136, 1 | <b>4</b> 0 |
| Simha-vyāghrī-la  | kṣaṇa              | 4          | 8     | Srī Dhānyakatak    |       | ٠           | хx         |
| Similar           | ••                 | 8          | 8     | Srīdhara           | • •   | <b>.</b>    | 51         |
|                   |                    |            | 1     |                    |       |             |            |

|                            |       | Pag           | ge  | 1                |            |          | Page         |
|----------------------------|-------|---------------|-----|------------------|------------|----------|--------------|
| Srī Harşa                  |       | xx, 12        | 23  | Succession       | ••         | 29,      | 118          |
| Sri Harsa Deva             |       | xx, 13        | 32  | Such-like        | • •        | •        | 12           |
| Sri-jñāna                  |       | 138, 148, 15  | 51  | Sudhākara Dvi    | vedi       |          | 14           |
| Srikantha                  |       | xvii, 5       | 53  | Sudharma Svār    | mi         |          | 2            |
| Srilabdha                  |       | 6             | 7   | Sudurjaya        | ••         |          | 80           |
| Sriparvata                 |       | 6             | 8   | Sugata           |            | 54,      | 131          |
| Srī-śaila                  |       | 6             | 8   | Suggestiveness   |            |          | 32           |
| Sron-tsan-gam-po           |       | 104, 10       | 5   | Sugiura, Dr.     | xiv, 73    | , 74, 75 | , 76,        |
| Srughna                    |       | 7             | 1   |                  |            | 89,      | 101          |
| Sruta                      |       | 4, 10, 2      | 2   | Suhrllekha       | • •        |          | 68           |
| Srutakevalin               |       |               | 5   | Suitable         |            |          | 12           |
| Sruti                      |       | 129, 130      | 0   | Sukhabodhikā ţ   | īkā        |          | 13           |
| Sruti-parīkṣā              |       | 130           | 0 [ | Sukṛtasamkirta   | na         |          | 48           |
| Statement                  |       | 91, 115       | 2   | Sultanganj       |            |          | 150          |
| Stein, Dr.                 |       | x:            | x   | Sumati           |            | 135,     | 141          |
| Steinthal, Paul            |       | 60            | 0   | Sumati-kîrti     |            |          | 131          |
| Sthananga-sutra            |       | 4, 8, 13      | 1   | Sum-pa           |            |          | 137          |
| Sthāpanā                   |       | 1             | 1   | Sum-pahi-chos-b  | yuń        |          | 63           |
| Sthavira                   |       | 65, 67, 15    | l   | Sun              |            | • •      | 64           |
| Sthira                     |       | 128           | 8   | Sunāyakasrī      |            | • •      | 151          |
| Sthira-düşana              |       | 140           | 0   | Sunaya-śrī Mitr  | а          |          | 136          |
| Sthiramati                 |       | 121, 146      | 6   | Sung-yun         |            | 67       | <b>, 6</b> 9 |
| Sthūlabhadra               |       | :             | 3   | Sun-hbyin        |            |          | 98           |
| Sthulahasta                |       | 81            | 1   | Sun-hbyin-ltar-s | nan-wa     |          | 99           |
| Stimuli                    |       | 98            | 5   | Superimposition  | ٠.,        |          | 40           |
| Ston-gshon                 |       | 100           | 0   | Superior         |            |          | 151          |
| St. Petersburg             |       | 114           | 1   | Surendrabodhi    | • •        |          | 135          |
| Straight expressio         | n     | 11            | 1   | Sureśvara        |            |          | 105          |
| Study                      |       | 10            | )   | Sureśvarācārya   |            |          | 105          |
| Stūpa                      |       | xx, 68        | 3   | Sūri             | 39         | 45, 53,  | 55           |
| Suali, Dr.                 |       | 49, 52, 133   | 3   | Surname          |            | 46,      | 48           |
| Subhakara Gupta            |       | 151           | LÌ  | Sūrya-prajñapti- | sütra      | ••       | 6            |
| Subhatunga                 |       | 26            | 3   | Sūtra 8, 10, 45, | 103, 12    | 1, 139,  | 140          |
| S'ublyūti-śānta            |       | 140           | )   | Sütra-kṛtānga-ni | ryukti     |          | 8            |
| Subhūti-śrī                | • •   | 118           | 3   | Sūtra-kṛtāṅga-sū | itra       |          | 6            |
| Subh <b>üti-st</b> i-santi |       | 106           | 3   | Sütrālankārațiki | <b>5</b> . |          | 73           |
| Subject                    |       | 29, 90, 91    | ιĺ  | Sütränta         | • •        |          | 67           |
| Subsequent                 | ••    | 42            | 2   | Sūtra upadeśa    |            |          | 63           |
| Subsequent non-ex          | ciste | nce 24, 25    | 5   | Sutta            |            |          | 58           |
| Substance                  | 43    | , 93, 95, 128 | 3   | Suttanta         |            |          | 67           |
| Subtle                     |       | 12            | :   | Sutta piṭaka     | 58,        | 59, 60,  | 63           |
|                            |       |               |     |                  |            |          |              |

|                                    | Page            | Т   |
|------------------------------------|-----------------|---|
| Suva <b>rņa-</b> prabh <b>ā</b> sa | 64              | Page  |
| Suvisnu                            | 145             | Tactual 59  |
| Svabhāva 31, 110, 111,             |                 | Takakusu xix, 63, 64, 66, 76, 84,                           |
| Svabhāva-hetu                      |                 | 89, 99, 101, 102, 103, 105,                                 |
| Svabhāvānupalabdhi                 | 110             | 119, 123, 146   |
| Svabhāva-parīksā                   | 127             | Takka 60  |
| Svabhāvaviruddhopalabd             |                 | Takki 59, 60  |
| Svalaksaņa                         | 109             | Takkika 59, 60  |
| Svārtha                            | 41              | Takṣaśilā 67  |
| Svārthānumāna 16, 31               | , 85, 106,      | Tāmraśāṭīya 65  |
|                                    | , 109, 110      | Tangyur xx, 62, 70, 72, 78, 84, 85,                         |
| Svarūpa                            | 40              | 89, 99, 100, 101, 106, 107,                                 |
| Svarūpasambodhana                  |                 | 108, 109, 117, 118, 119, 120,                               |
| Svatah-prāmānya                    |                 | 121, 123, 124, 125, 129, 130, 131, 132, 134, 135, 136, 137, |
| Svatantra                          | 124             | 138, 139, 140, 141, 142, 143,                               |
| Svatantra Mādhyamika               | school 124      | 144, 150  |
| Svāti                              | 9               | Tantra 70, 124, 129, 140, 146, 147                          |
| Svāti-tanaya                       | 9               | Tantric 124   |
| Svayambhūstotra                    | 23              | Tapāgaccha 1, 3, 52, 55                                     |
| Svetāmbara xviii, 1, 2, 5          | 5, 6, 9, 14,    | Tapāgacchapattāvalī 48                                      |
| 22, 34, 35, 36, 38, 4              |                 | Tārā 121, 122   |
|                                    | 52, 54          | Tārānātha, Lama xv, 66, 67, 68,                             |
| Syādasti                           | 24              | 69, 70, 71, 72, 74, 80, 81, 82,                             |
| Syād-nāsti                         | 24              | 103, 106, 118, 119, 121, 123,                               |
| Syādvāda 8,                        | 22, 23, 24      | 130, 131, 134, 135, 136, 137,                               |
| Syādvāda-kalikā                    | 51              | 139, 140, 141, 142, 145, 148,                               |
| Syādvāda-mañjarī                   | 51              | 150, 151, 152   |
| Syādvāda-ratnāvatārikā             |                 | Tarka 29, 40, 41, 54  |
| •                                  | 131, 133        | Tarkabhāṣā 53, 54, 55, 138, 139                             |
| Syādvādara tnā vatārikā-           | pañ-            | Tarkābhāsa 32   |
| jik <b>ā</b>                       | 38              | Tarka-nyāya 117, 120  |
| Syādvāda-sruta                     | 22              | Tarka-pungava 80, 81  |
| Syādvāda-vidyāpati                 | 54              | Tarka-rahasya-dīpikā 52                                     |
| Syāt                               | 8               | Tarkasamgraha 126, 128                                      |
| Syllogism 6,7, 16, 29,             | 42, 77, 85,     | Tarka-śāstra xvii, 76, 77                                   |
| 89, 9                              | 2, 114, 136     | Tarka-ṭīkā 133  |
| Syllogistic                        | 76              | Tarkī 60  |
| Synonyms                           | 12              | Tārkika 26, 59, 72, 73                                      |
| System                             | xiii, <b>49</b> | Tārkika-cakra-cūḍāmaṇ 26                                    |
| Systematic                         | 13              | Tarkin 59   |
| Systems of philosophy              | 33              | Tashilhunpo 78  |

| Page   | Page !   |
|--|--|
| Tathāgata 57   | Thibaut, Dr. G xvi, 14                         |
| Tāthāgata 27,54  | Third Council 58                               |
| Tathāgata-guhyaka 64   | Thi-srong-deu-tsan 148                         |
| Tathagata Gupta 145  | Tholing 148                                    |
| Tātparya-pariśuddhi 53   | Thomas, Mr. F. W. xv, 84                       |
| Tātparyatīkā 53  | Thos-pa 129                                    |
| Tattva 125   | Thos-pa-brtag-pahi-tshig-lehur-                |
| Tattva-āloka xviii   | byas-pa 130                                    |
| Tattvacintāmaņi xvii, xviii, 48  | Three Baskets 58                               |
| Tattvacintāmaniprakāśa xviii   | Three-formed 111                               |
| Tattvārtha-bhāşya 54   | Thunderbolt 80                                 |
| Tattvārthādhigama sūtra xiii, 8,   | Thun-mon 93                                    |
| 9, 10, 11, 12, 22, 23  | Thun-mon-ma-yin 94                             |
| Tattvārtha-bodha-vidhāyinī 36  | Tibet xv, xx, 50, 63, 69, 71, 78, 79,          |
| Tattvārtha-śloka-vārtika 54  | 89, 100, 120, 122, 124, 125,                   |
| Tattvārtha sūtra 54  | 129, 131, 134, 135, 137, 139,                  |
| Tattvārtha-tīkā 22   | 140, 148, 151                                  |
| Tattva-samāsa 125  | Tibetan Dictionary 78                          |
| Tattva-samgraha 53, 125, 126, 128,   | Tibet Mission xv                               |
| 130  | Tiger-cub 47                                   |
| Tattva-samgraha-kārikā 125   | Ţīkā         28         Tilakācārya         46 |
| Tattva-samgraha-panjika 130  |  |
| Tattva-tīkā xviii  | Tilopa 134                                     |
| Tawney, Mr 14  | Time 101, 129                                  |
| ·· · · · · · · · · · · · · · · · · ·   | Tin-ne-lidsin-bzan-po 140                      |
| Taxila          67           Technicality          70, 138, 139                            | Tippanaka 35                                   |
| Taxila         67         Technicality        70, 138, 139         Telingāna        78, 82 | Tirtha 80, 83, 103, 104, 152                   |
| Tepitaka   | Tīrthakalpa 1, 9                               |
| Terai 57   | Tîrthankara 1                                  |
| Testimony 4, 10, 15, 32, 40, 41, 43,   | Tirthika 71, 116, 121, 139, 147                |
| 85, 88, 89, 130  | Tiryak 32                                      |
| Text xvii, xix   | Tissa 60, 61                                   |
| Thams-cad-ukhyen-pa-grub-  | Tongue 15, 87                                  |
| pahi-tshig-lehur byas-pa 141   | Total unreality 68                             |
|  | Touch 15, 87                                   |
| Thān 64 Tha sam-tan 100  | Tower 145                                      |
| Theory of example 114  | Tradition 1, 54, 58, 62                        |
| Thera 58, 65, 67   | Traditional 13                                 |
| Theravads 58   | Trairūpya 91 Transcendental 15, 40, 41         |
| Thesis ziii, xv, xvi, 74, 76, 90, 91,  |  |
| 04 00 110  | Transcendental perception 21                   |

|                                      | F              | age        |   |         | P                                       | age       |
|--------------------------------------|----------------|------------|---|---------|---|-----------|
| Trikāla-parīkṣā                      |                | 101        | Turuska                                 | 62, 14  | 17, 151,                                | 152       |
| Trilckasāra                          |                | 1          | Tutelary                                | ••      | • •                                     | 121       |
| Trimalaya                            |                | 103        | Туре                                    |         | 5, 16,                                  | 40        |
| Tripitaka 58, 61                     | 1, 64          | , 80       | -                                       |         |   |           |
| Tri-rūpa-hetu                        |                | 85         |   | U       |   |           |
| Trișașțiśalākapurușa-caritra         | в.             | 45         | Udaharana                               |         |   | 31        |
| Truth                                |                | 44         | Udāna                                   |         |   | 60        |
| Tsandrahi-khron-pa                   |                | 123        |   |         | 53,                                     | 54        |
| Tshab-ñi-ma-grag <u>s</u>            |                | 132        | Udayanācārya                            |         | xvii,                                   |           |
| Tshad-ma                             |                | 129        | Udayaprabha                             |         | 47, 48,                                 |           |
| Tshad-ma-brtag-pa                    |                | 132        | Udyāna                                  |         |   |           |
| Tshad-ma-grub-pa                     |                | 106        | Udyotakara xvi                          | i, 27.  |   |           |
| Tshad-mahi-bstan-bcos-rig-r          | a-             |            | • |         | , 88, 89,                               | •         |
| la-hjug-pa                           |                | 100        | Oha                                     |         |   | 29        |
| Tshad-mahi-mdo-kun-las-htu           | us-            |            | Ujjairī                                 |         | xviii, 14,                              |           |
| ра                                   |                | <b>84</b>  | Umā                                     | ••      |   |           |
| Tshad-ma kun-las-btus-pa             |                | 84         | Umāsvāmin                               |         | ••                                      | _         |
| Tshad-ma-rigs-par-hjug-pah           | i-             |            | Umāsvāti xiii,                          |         |   |           |
| sgo                                  |                | 89         | 01110117 011 11111,                     | -, 0, 0 | , 10, 12,                               | 23        |
| Tshad-ma-rnam-hgrel-gyi-dl           | kalı-          |            | Uncertain 19, 93                        | R. 94 1 | 100 112                                 |           |
| hgrel                                | • •            | 118        | Uncertainty                             |         |   |           |
| Tshad-ma-rnam-li <b>g</b> rel-gyi-li | -              |            | Unconnected                             |         | 19,                                     |           |
| · -                                  | 119,           | 142        | Unfamiliar                              |         |   |           |
| Tshad-ma-rnam-ligrel-gyi-lig         | g <b>r</b> el- |            | Universal                               | ••      | 95, 96,                                 | -         |
| ра                                   |                | 124        | Universal connec                        | etion.  | 55, 50,<br>55 09                        | 00        |
| Tshad-ma-rnam-hgrel-gyi-hg           |                |            | Universal propos                        |         |   | 97        |
| wa                                   |                | 107        | University i, xvi                       |         |   | - •       |
| Tshad - ma - rnam - ligrel - g       | yi-            |            | 102, 103, 13                            |         |   |           |
| rgyan                                | • •            | 135        | 141, 145,                               |         |   |           |
| Tshad-ma-rnam-hgrel-gyi-rg           | -              |            | University studie                       |         | , 100,                                  | 1         |
| -gyi-hgrel-bsad                      | ••             | 137        | Unproved                                |         | 18 02                                   |           |
| Tshad-ma-rnam-hgrel-gyi-ts           | _              | 106        |   |         |   | 62        |
| Tshad-ma-rnam-hgrel-rgyan            |                | ,,,        | Unseparated                             | ••      | • | 21        |
| gyi-hgrel-bsad                       |                | 141        | Upadeśamālā-ţīk                         |         | • | 38        |
| Tshad-ma-rnam-neg-kyi-tik            |                | 132        | Upadesamālā-viš                         |         |   | 36<br>46  |
| Tshad-ma-rnam-par-nes-pa             |                | 108        |   |         |   |           |
| Tshad-ma-rnam-par-nes-pal            | ì <b>1-</b>    | 190        | Upadesamālā-vṛt<br>Upalabdhi            |         |   | 50 a      |
| hgrel-báad<br>Tshig-gi-don           | ••             | 138<br>128 | Upamāna                                 | ••      | <br>4, 10, 74,                          | 30<br>9.5 |
| •                                    | <br>81         |            | Upanaya                                 | 1.      | S, 1U, /4,<br>R 91 4∩                   | A1        |
|                                      | 61             |            |   |         |   |           |
| •                                    | ••             | 91         | Upanaya-catukk                          |         | • •                                     | 61        |
| Tshul-hkhrims-rgyal-mtshar           | 3              | 101        | Upāngas                                 | • •     |   | 3         |

|                         | Page        |                       | Page                           |
|-------------------------|-------------|-----------------------|--------------------------------|
| Upanişad                | 127, 128    | Vairocana             | 123                            |
| U-pa-ni-sa-di-kas       | 128         | Vaiśālī               | 58,71                          |
| Upāsaka 103, 122        | , 123, 139  | Vaiśeșika 27, 46, 49, | 82, 65, 82, 91                 |
| Upāsakādhyayana         | 23, 24      |                       | 94, 127                        |
| Upavarsa                | 33          | Vaisņava              | xx                             |
| Urddhvatā               | 32          | Vajiriya              | 58                             |
| Utpādasiddhi-prakaraņa  | 45          | Vajra                 | 80, 145                        |
| Utsarpiņī               | 1           | Vajracchedikā         | 75                             |
| Uttara                  | 30,31       | Vajraśākhā            | 44                             |
| Uttaradharma            | 67          | Vajrāsana             | 139, 141                       |
| Uttarādhyayana-brhad-vi | tti 37      | Vajravarāhī           | 139                            |
| Uttarādhyayana-sūtra    | 6           | Vāk-praja or Vāgbhaṭ  | a 141                          |
| Uttaravāhinī            | 150         | Vākyapadīya           | 27                             |
| Uvāsagadasāo            | 23          | Valabhi               | xviii, 13                      |
| ·                       |             | Valid                 | 94, 100                        |
| Vācakācārya             | 8           | Validity              | 74                             |
| Vācaka-śramana          | 8           | Valid knowledge 4, l  | 0, 15, 16, 19,                 |
| Vācaspati               | 53, 105     | 21, 28, 29, 32, 4     |                                |
| •                       | 23, 49, 66, |                       | 110, 129, 132                  |
|                         | 86, 88, 105 |                       | 131, 149                       |
| Vāda                    | 8, 44       | Vande-dpal-brtsegs    | 121                            |
| Vāda-mahārnava          | 36, 37      | Vande-nam-ṃkhaṣ       | 118, 120                       |
| •                       | , 120, 125  | Vande-ye-ses-sde      | 120, 135                       |
| Vāda-nyāya-vṛtti-vipañc |             | Varāhamihira          | 6, 14                          |
| tha                     | 125         | Vararuci              | 122                            |
| Vāda-nyāya-vyākhyā      | 120         | Vardhamāna            | 1, 54                          |
| <b>Vā</b> di            | 40,44       | Vardhamāna sūri       | 3                              |
| Vādin                   | 34          | Vārendra 121, 122,    |                                |
| Vādipravara             | 38          |                       | 148, 151                       |
| Vāgbhaṭa: vide Vākpraj  | a.          | Vasubandhu xix,       | 74, 75, 76, 78,<br>80, 81, 146 |
| Vāgīśvarakīrti 13       | 7, 141, 151 | Vasubhūti             | •                              |
| Vāhyārtha               | 129         | i                     | 2                              |
| Vāhyārtha-siddhi-kārikā |             | Vasudhara Rakşita     | 100                            |
| Vaibhāşika 65, 66, 67,  |             | 351                   | 63                             |
| •                       | 130         |                       |                                |
| •                       | 20, 31, 90  | Vatsagotra            | 66, 128                        |
| Vaidharmya-dṛṣṭāntābhā  |             | Vātsīputra            | 65, 66, 80                     |
| ì .                     | 97          |                       | 9                              |
| Vaidharn yavat          | 112         | 1                     | cvii, 53, 86, 87               |
| Vaidūryakarpo           | 148         |                       |                                |
| Vairasvāmi              | 47          | Vaṭṭagāmaṇi           | 58                             |

|                            | Page     | e         | Page                               |
|----------------------------|----------|-----------|------------------------------------|
| Veda                       | 62, 103  | 3 7       | Vikala 41                          |
| Vedānga                    | 10       | 3 \       | Vikrama 1, 2, 35, 63, 131          |
| Vedānta                    | 5        | 1   1     | Vikramāditya xix, xx, 6, 14, 15,   |
| Vedāntasūtra               | 23, 10   | 5         | 22, 81, 146                        |
| Vedāntin                   | 8        | 32        | Vikramanīpura 117                  |
| Vengi                      | 81,8     | 32        | Vikrama samvat 49                  |
| Venkapatta                 | 3        | 36        | Vikramasilā xx, xxi, 79, 135, 136, |
| Verbal                     | 12, 4    | 12        | 137, 138, 139, 140, 141, 146,      |
| Verbal fallacy             | 4        | 13        | 148, 150, 151                      |
| Verbal testimony 4, 10, 15 | , 32, 40 | ν,        | Vimala Candra 119, 140             |
| 41, 85, 88                 | , 89, 13 | 30        | Vimala Dāsa 8                      |
| Vibhāṣā                    | 6        | 86        | Vīmamsā 60                         |
| Vibhāṣā-śāstra             | 6        | 87        | Vīmamsi 60                         |
| Vibhāṣā-vinaya             | 7        | 76        | Vinaya 146                         |
| Vicārāmṛta-saṁgraha        | 4        | 18        | Vinayāditya xx                     |
| Vicāra-ratna-samgraha      |          | 5         | Vināyaka 133                       |
| Vicāra-sāra-prakaraņa      | 1, 14, 4 | 48        | Vinaya Piṭaka 57, 58, 59, 63, 78   |
| Vicāraśreņî                |          | - 1       | Vinaya Vibhāṣā 63                  |
| Vicitrādvaitasiddhi        | 14       | 40        | Vinaya Vijaya Gaņi 13              |
| Victory                    | 4        | 44        | Vindhya 103, 104, 148              |
| Vidarbha                   | (        | 68        | Vinīta Deva 119, 121, 140          |
| Vidhi                      | :        | 30        | Viññāṇa 59                         |
| Vidyabhusana, Satis Chan   | .dra     |           | Vipakṣa 7                          |
| i, xvi, xxi, 63, 66, 67    | , 68, 7  | 0,        | Vipakṣa-pratiṣedha 7               |
| 71, 72, 76, 80, 121,       |          |           | Viparītānvaya 20, 21, 97, 116      |
| 133, 138,                  | 140, 1   | 50        | Viparyaya 40                       |
| Vidyādhara                 |          | 21        | Vīra 13, 35                        |
| Vidyāmātra-siddhi-śāstra-  |          |           | Viraha 49, 50                      |
| vyākhyā                    |          | 02        | Viruddha 18, 94, 111, 113          |
| Vidyānanda 23, 26, 27, 2   |          |           | Viruddhakāryopalabdhi 111          |
|                            | 82, 1    | .05       | Viruddhāvyabhicāri 114             |
| Vienna                     | • •      | 35        | Viruddhavayāptopalabdhi 111        |
| Vienna Oriental Journal    | • •      | 35        | Viśālāmalavatī xvii, 124           |
| Vigraha Pāla               |          | 49        | Viśālāmalavatī-nāma-pramāṇa-       |
| Vigraha-vyavartanī-kārik   | ā        | 70        | samuccaya-țikā zvii, 124           |
| Vigrahavyavartanī vṛtti    | • •      | 70        | Visaya 28, 49                      |
|                            | , 104, 1 | 25        | Viśeṣa 17, 32, 128                 |
| Vijaya                     | • •      | 37        | Visnuvardhana 81                   |
| Vijayasena                 | 47,      | 50        | Visual 10                          |
| Vijñāna                    | ••       | <b>59</b> | Visuddha-simha 121, 130            |
| Vijfiapti-mātra-siddhi     | 1        | 140       | Viśvanātha xvii                    |

| Vitanda  | i                                | Page        | Page                                |
|--|----------------------------------|-------------|-------------------------------------|
| Vivartavăda         129         Wordy         62           Vivrti         13, 133         World         60, 129           Vow         5, 45         World         60, 129           Vrata         5, 45         World-renowned         37           Vrada         5, 45         X           Vrdhavādi         14         Xylograph xv, 72, 100, 101, 108, 109, 121, 125           Vyāptaka         29, 111         Vyāpakānupalabdhi         111           Vyāpakāviruddhopalabdhi         111         Yakyapa Pāla         149           Vyāpti 18, 20, 29, 42, 48, 92         Yasovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyāpti 20         29, 30, 31         Yasovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyatricka         32         Yasovijaya Gani         54           Vyavahārabhāsa         43         Yasovijaya Pāthasālā         55           Vyavahāraka         15         Yasovijaya Pāthasālā         55           Vyavahārika         15         Yasovijaya Pāthasālā         56           Vyavahārika         15         Yogācārya         171, 72,         74, 75, 78, 102, 122           Wasters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73,         74, 75, 80, 146         Yuga pradhāna         5           Water         22  | Vitanda                          | 62          | Word for the sake of others 106     |
| Vivţti         13, 133         World         60, 129           Vow         5, 45         Worldnavādi         37           Vrata         5, 45         World-renowned         37           Vrata         50         World-renowned         37           Vparata         150         Yorland Stand Stan  | Vītarāgastuti                    | 51          | Wordsworth, Mr. W. C •xvi           |
| Vow         5, 45         World-renowned         37           Vrata         5, 45         X           Vrddhavādi         14         X           Vrhadgaccha         50         109, 121, 125           Vyāpakā         47         Yāķinī         48           Vyāpakānupalabdhi         111         Yakṣa Pāla         147           Vyāptigraha         56         Yakṣa Pāla         149           Vyāptigraha         56         Yakovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyatireka         32         Yakovijaya Gani         53, 55           Vyavahāra         4, 11, 21         Yakovijaya Pāthakālā         55           Vyavahārabhāsa         43         Yakovijaya Pāthakālā         55           Vyavahārabhāsa         43         Yakovijaya Pāthakālā         55           Vyavahārabhāsa         43         Yakovijaya Pāthakālā         55           Vyavahārabhāsa         65         Yaga 10, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83         Yogācārya pāthakālā         55           Vyavahārabhāsa         65         Yaga 10, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83         Yogācārya pāthakālā         55           Vyavahārabhāsa         67, 105         Yagācārya pāthakālā         83           Vyagācārya hūmi-śāstra  | Vivartavāda                      | 129         | Wordy 62                            |
| Vow         5, 45         World-renowned         37           Vrata         5, 45         X           Vrddhavādi         14         X           Vrhadscacha         50           Vrhat-svayambhū-purāna         150           Vyāpakā         29, 111         Yajāa         147           Vyāpakānupalabdhi         111         Yajāa         149           Vyāpakāviruddhopalabdhi         111         Yaksa Pāla         149           Vyāptigraha         55         Yašovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyāptigraha         55         Yašovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyatrieka         32         Yašovijaya Gani         54           Vyavahāra sūtra         6         74         Yašovijaya Pāthasālā         55           Vyāvahārasūtra         6         74         Yašovijaya Pāthasālā         55           Vyavahārasūtra         6         74         Yasovijaya Pāthasālā         55           Vyavahārasūtra         6         74         Yasovijaya Pāthasālā         55           Vyavahārasūtra         6         74         Yasovijaya Pāthasālā         55           Vyavahārasūtra         6         74         Yogācārya si, 51, 66, 67, 71, 73, 73, 74, 75, 78, 102, 12  | Vivrti 13,                       | 133         | World 60, 129                       |
| Vrata          5, 45           Vrddhavādi          14           Vrhadgaccha          50           Vrhat-svayambhū-purāṇa          160           Vyāghra-šiśuka          47           Vyāpaka          29, 111         Yākinī          48           Vyāpaka rigudhopalabdhi          111         Vyāspaka rigudhopalabdhi          141         Yaksa Pāla          149           Vyāptigraha  |                                  |             | World-renowned 37                   |
| Vrddhavādi         14         Vrhadgaccha         50           Vrhat-svayambhū-purāṇa         150         109, 121, 125           Vyāpaka         29, 111         Yāķinī         48           Vyāpakānupalabdhi         111         Yākinī         48           Vyāpakānupalabdhi         111         Yākinī         48           Vyāptic         18, 20, 29, 42, 48, 92         Yasodharma Deva         149           Vyāptigraha         55         Yasovijaya Gaṇi         54           Vyāpya         29, 30, 31         Yasovijaya Gaṇi         54           Vyavahāra         4, 11, 21         Yasovijaya Gaṇi         54           Vyavahārabhāsa         43         Yasovijaya Pāthasālā         55           Vyavahārabūtra         6         Yogalo, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83           Yogacāra xix, 51, 66, 67, 71, 72,         74, 75, 78, 102, 122           Yogācārya-bhūmi-sāstra         83           Yogarpardhāna         5           Yuga-pradhāna         5 <td>Vrata 5</td> <td>, 45</td> <td>~</td>   | Vrata 5                          | , 45        | ~                                   |
| Vrhatasvayambhū-purāṇa         . 150           Vyāghra-śiśuka         . 47           Vyāpaka         . 29, 111           Vyāpakānupalabdhi         . 111           Vyāpakaviruddhopalabdhi         . 111           Vyāptigraha         . 55           Vyāptigraha         . 55           Vyāpya         . 29, 30, 31           Vyatireka         . 32           Vyatireki         . 31           Vyavahāra         . 4, 11, 21           Vyāvahāra-sūtra         . 6           Vyāvahārika         . 15           Vyāvahāra-sūtra         . 6           Vyāvahārika         . 15           Vyāvahārika         . 15           Vyāvahāra-sūtra         . 6           Vyāvahārika         . 15           Vyasalijew         . 6           Waddell, Col.         78, 124, 129, 151           Wassiljew         . 68           War         . 62           Water         . 62           Waters, Dr.         . 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146           Weber, Dr.         . 71           Wheel Dr.         . 100           Wheel Or Reasons         . 99, 100           White, Mr. Claude         . xvi </td <td>Vrddhavādi</td> <td>14</td> <td></td>   | Vrddhavādi                       | 14          |                                     |
| Vṛhat-svayambhū-purāṇa         150           Vyāghra-śiśuka         47           Vyāpaka         29, 111           Vyāpakānupalabdhi         111           Vyāpakaviruddhopalabdhi         111           Vyāptic         18, 20, 29, 42, 48, 92           Vyāptigraha         55           Vyāpya         29, 30, 31           Vyatireka         32           Vyatireki         31           Vyavahāra         4, 11, 21           Vyavahārabhāsa         43           Vyāvahārika         16           Vyāvahārika         16           Waddell, Col.         78, 124, 129, 151           Wassilief         62           Water         62           Water         62           Water         62           Waters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146           Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53           Weir Smyth         4           Wenzel, Dr.         71           Wheel of Reasons         99, 100           Whele, Mr. Claude         vi           Williams, Monier         63           Winding up         63  | Vrhadgaccha                      | 50          |                                     |
| Vyāpaka         47         Yajňa         147           Vyāpaka         29, 111         Yākinī         48           Vyāpakaviruddhopalabdhi         111         Yakṣa Pāla         149           Vyāptic         18, 20, 29, 42, 48, 92         Yaśodharma Deva         14           Vyāptigraha         55         Yaśovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyātireka         32         Yaśovijaya Gani         54           Vyavahāra         4, 11, 21         Yaśovijaya-granthamālā         6, 39, 52           Vyāvahārabūhāsa         43         Yaśovijaya Pāthaśālā         55           Vyāvahārika         15         Yaśovijaya Pāthaśālā         56           Vyāvahārika         15         Yaśovijaya Pāthaśālā         56           Vyāvahārika         15         Yaśovijaya Pāthaśālā         56           Vyāvahārika         15         Yagāvijaya Pāthaśālā         56           Vyauga         15         Yagāvijaya Pāthaśālā         56           Vyauga         16         Yagāvijaya Pāthaśālā         56           Yaga         10, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83         Yogācārya būūmi-śāstra         83           Yogācārya būūmi-śāstra         83         Yogācārya-būūmi-śāstra         83  | _                                | 150         |                                     |
| Vyāpakānupalabdhi         111         Yakṣa Pāla         149           Vyāptic 18, 20, 29, 42, 48, 92         Yasodharma Deva         14           Vyāptigraha         55         Yaśovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyatireka         32         Yasovijaya Gaṇ         54           Vyatireki         31         Yasovijaya Pāthaśālā         55           Vyavahāra         4, 11, 21         53, 55           Vyavahārasūtra         6         Yasovijaya Pāthaśālā         55           Vyāvahārika         15         Yogācāra xix, 51, 66, 67, 71, 72, 73, 74, 75, 78, 102, 122         Yogācārya-bhūmi-śāstra         34           Wasilje         68         Yasovijaya Pāthaśālā         55           Water         67, 105         Yogācāra xix, 51, 66, 67, 71, 72, 73, 74, 75, 78, 102, 122         Yogācārya-bhūmi-śāstra         43           Yogin         141         Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146         Yuga-pradhāna         55           Weber, Dr.         3, 4, 5, 37, 50, 51, 53         Yuga-pravara         5           Weir Smyth         4         Yuga-pravara         5           Wheel of Rasons         99, 100         Yuktisastikā kārikā         70           Wheel of Rasons         99, 100         Yuktyanušāsana         23 </td <td>• •</td> <td>47</td> <td></td>   | • •                              | 47          |                                     |
| Vyāpakānupalabdhi         111         Yakṣa Pāla         149           Vyāpakaviruddhopalabdhi         111         Yamāri         xviii, 141           Vyāptic         18, 20, 29, 42, 48, 92         Yaśodharma Deva         14           Vyāptigraha         55         Yaśovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyatireka         32         Yaśovijaya Gaṇ         54           Vyavahāra         4, 11, 21         74, 75, 78, 102, 122           Vyāvahārika         15         Yaśovijaya Pāthaśālā         55           Vyāvahārika         15         Yogācārya Pāthaśālā         55           Vyaddell, Col.         78, 124, 129, 151         Yogācārya ya 9, 50, 51, 52, 54, 131           Wasovijaya Gaṇ         54         Yaśovijaya Pāthaśālā         55           Yasovijaya Pāthaśālā         55         53, 55           Yauga         54         Yogācārya Pāthaśālā         55           Yauga         67, 105         Yogācārya bhūmi-śāstra         83           Yogaisāstra         45         Yogin         141           Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146         Yuga-pravara         5           Weber, Dr.         71         Yuka Ron         73           Yuktiṣaṣtikā kārikā         70 <td>Vyāpaka 29.</td> <td>111</td> <td>Yākinī 48</td>  | Vyāpaka 29.                      | 111         | Yākinī 48                           |
| Vyāpaka viruddhopalabdhi         111         Yamāri         xviii, 141           Vyāptic         18, 20, 29, 42, 48, 92         Yaśodharma Deva         14           Vyāptigraha         55         Yaśovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131           Vyāpya         29, 30, 31         Yaśovijaya Gaṇ         54           Vyatireki         31         Yaśovijaya Gaṇ         54           Vyavahāra         4, 11, 21         74, 75, 78, 102, 122           Vyāvahārika         6         Yaśovijaya Pāthaśālā         55           Vyavahāra-sūtra         6         Yagaga 10, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83         Yogācāra xix, 51, 66, 67, 71, 72, 74, 75, 78, 102, 122           Waddell, Col.         78, 124, 129, 151         Yogācārya-bhūmi-śāstra         83           War         68         Yogin         141           Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146         Yuga-pradhāna         5           Weber, Dr.         3, 4, 5, 37, 50, 51, 53         Yuga-pravara         5           Wincel of Rasons         99, 100         Yukti-prayoga         139           Wheel of Rasons         99, 100         Yuktyanuśāsana         23           Yul-lho-phyog         107           Williams, Monier         63           Winding up         66  | Vyāpakānupalabdhi                | 111         | Yakşa Pāla 149                      |
| Vyāpti       18, 20, 29, 42, 48, 92       Yaśodharma Deva        14         Vyāptigraha           Yaśovijaya 39, 50, 51, 52, 54, 131         Vyatireka   |                                  | 111         | •                                   |
| Vyāptigraha  |                                  | , 92        | Yasodharma Deva 14                  |
| Vyapya       29, 30, 31       133         Vyatireka       32       Yaśovijaya Gaṇi       54         Vyavahāra       4, 11, 21       53, 55         Vyavahārabhāsa       43       Yaśovijaya Pāthaśālā       55         Vyāvahārika       6       Yauga       54         Vyāvahārika       15       Yasovijaya Pāthaśālā       55         Vyavahārika       6       Yauga       54         Vyāvahārika       15       Yasovijaya Pāthaśālā       55         Vyauga       54       Yauga       54         Yauga       66       67       71       72         Yogācārya       71       Yauga Chwang 63, 67, 68, 71, 72       72         Yogin       141       Yaun Chwang 63, 67, 68, 71, 72       73, 74, 75, 80, 146         Weber, Dr.       3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuka Ron       73         Wheel Or.       70       Yuktişaştikā kārikā       70         Yuktyanušāsana       23  |                                  | 1           | Yasovijava 39, 50, 51, 52, 54, 131  |
| Vyatireki  | Vyāpya 29, 30                    | ), 31       |                                     |
| Vyavahāra       4, 11, 21       53, 55         Vyavahārābhāsa  | Vyatireka                        | 32          | Yaśovijaya Gaņi 54                  |
| Vyavahārābhāsa   | Vyatireki                        | 31          | Yaśovijaya-granthamālā 6, 39, 52,   |
| Vyavahārābhāsa       43       Yaśovijaya Pāthaśālā       55         Vyavahārika       15       Yauga       54         Vyāvahārika       15       Yoga 10, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83       Yogācāra xix, 51, 66, 67, 71, 72, 74, 75, 78, 102, 122         Waddell, Col.       78, 124, 129, 151       Yogācārya xix, 51, 66, 67, 71, 72, 74, 75, 78, 102, 122       Yogācārya bhūmi-śāstra       83         Wassiljew       68       War       62       Yogācārya bhūmi-śāstra       83         Water       22       Yogācārya bhūmi-śāstra       83       Yogašāstra       45         Waters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146       Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 73, 74, 75, 80, 146       Yuga-pradhāna       5         Weir Smyth       4       Yuga-pradhāna       5         Wenzel, Dr.       71       Yuka Ron       73         Yuka Ron       73       Yukti-prayoga       139         Yukti-prayoga       139       Yuktyanuśāsana       23         Yuktyanuśāsana       23       Yul-lho-phyog       107         Williams, Monier       63       Za-hor / £ul       99, 124         Winding up       62       Za-hor / £ul       75  | Vyavahāra 4, 11                  | , 21        | 53, 55                              |
| Vyāvahārika  |                                  |             | Yaśovijaya Pāṭhaśālā 55             |
| W       Yogācāra xix, 51, 66, 67, 71, 72, 74, 75, 78, 102, 122         Wassilief       67, 105       Yogācārya   | Vyavahāra-sūtra                  | 6           | Yauga 54                            |
| Waddell, Col.       78, 124, 129, 151       Yogācārya  | Vyāvahārika                      | 15          | Yoga 10, 27, 33, 62, 65, 71, 73, 83 |
| Waddell, Col.       78, 124, 129, 151       Yogācārya  | •                                |             | Yogācāra xix, 51, 66, 67, 71, 72,   |
| Wassilief       67, 105         Wassiljew       68         War       62         Water       22         Watters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146       Yuga-pradhāna       5         Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuga-pradhāna       5         Weir Smyth       4       Yuga-pravara       5         Wenzel, Dr.       71       Yuka Ron       73         Wheel       100       Yukti-prayoga       139         Yuktisastikā kārikā       70         Yuktyanušāsana       23         Yul-lho-phyog       107         Williams, Monier       63         Winding up       62   | w                                |             | . 74, 75, 78, 102, 122              |
| Wassiljew       68         War       62         Water       22         Watters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146       Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146         Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuga-pradhāna       5         Weir Smyth       4         Wenzel, Dr.       71         Wheel       100         Wheel of Reasons       99, 100         White, Mr. Claude       xvi         Wijesimha       58, 61, 66, 67         Williams, Monier       63         Winding up       62     Yogašāstra Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 73, 74, 75, 80, 146 Yuga-pravara 5 Yuga-pravara 5 Yuka Ron 73 Yukti-prayoga 139 Yuktisaṣtikā kārikā 70 Yuktyanuśāsana 23 Yul-lho-phyog         Yul-lho-phyog       107   | Waddell, Col. 78, 124, 129,      | 151         | Yogācārya 71                        |
| War       62         Water       22         Watters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146       Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146         Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuga-pradhāna       5         Weir Smyth       4         Wenzel, Dr.       71         Wheel       100         Wheel of Reasons       99, 100         White, Mr. Claude       xvi         Williams, Monier       63         Williams, Monier       63         Winding up       62   | Wassilief 67,                    | 105         | Yogācārya-bhūmi-śāstra 83           |
| Water       22         Watters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146       Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146         Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuga-pradhāna       5         Weir Smyth       4         Wenzel, Dr.       71         Wheel       100         Wheel of Reasons       99, 100         White, Mr. Claude       xvi         Wijesimha       58, 61, 66, 67         Williams, Monier       63         Winding up       62     Yuan Chwang 63, 67, 68, 71, 72, 73, 74, 75, 80, 146  Yuga-pradhāna       5         Yuka Ron       73         Yukti-prayoga       139         Yuktyanuśāsana       23         Yul-lho-phyog       107  | Wassiljew                        | 68          | Yogaśāstra 45                       |
| Water              73, 74, 75, 80, 146         Weber, Dr.  | •                                | 62          |                                     |
| Watters, Mr. 63, 61, 68, 71, 72, 73       Yuga-pradhāna       5         Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuga-pravara       5         Weir Smyth       4       Yuka Ron       73         Wenzel, Dr.       71       Yukti-prayoga       139         Wheel       100       Yukti-prayoga       70         Wheel of Reasons       99, 100       Yuktyanuśāsana       23         White, Mr. Claude       xvi         Wijesimha       58, 61, 66, 67         Williams, Monier       63       Za-hor       2         Za-hor       99, 124         Winding up       62       2   |                                  | 22          |                                     |
| 74, 75, 80, 146       Yuga-pradhāna       5         Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51, 53       Yuga-pravara       5         Weir Smyth       4       Yuka Ron       73         Wenzel, Dr. 71       71       Yukti-prayoga       139         Wheel of Reasons       99, 100       Yuktisastikā kārikā       70         White, Mr. Claude       xvi       Yul-lho-phyog       107         Williams, Monier       63       Za-hor / & land / All /   | Watters, Mr. 63, 67, 68, 71, 72, | 73,         |                                     |
| Weir Smyth       4         Wenzel, Dr.       71         Wheel       100         Wheel of Reasons       99, 100         White, Mr. Claude       xvi         Williams, Monier       63         Winding up       62            Yuka Ron       73         Yukti-prayoga       139         Yuktisastikā kārikā       70         Yuktyanuśāsana       23         Yul-lho-phyog       107         Za-hor       2         Za-hor       99, 124         Winding up       62   |                                  |             |                                     |
| Wenzel, Dr.       71         Wheel       100         Wheel of Reasons       99, 100         White, Mr. Claude       xvi         Wijesimha       58, 61, 66, 67         Williams, Monier       63         Winding up       62             Yuktisastikā kārikā       70         Yuktyanušāsana       23         Yul-lho-phyog       107  | Weber, Dr. 3, 4, 5, 37, 50, 51   | , 53        |                                     |
| Wheel         100       Yuktiṣaṣtikā kārikā        70         Wheel of Reasons        99, 100       Yuktyanuśāsana        23         White, Mr. Claude        xvi         Wijesimha         58, 61, 66, 67         Williams, Monier        63         Winding up        62     Yuktiṣaṣtikā kārikā  Yul-lho-phyog         107         Yuktyanuśāsana         23         Yul-lho-phyog            Za-hor (culture)            Winding up  | Weir Smyth                       | 4           |                                     |
| Wheel of Reasons       99, 100       Yuktyanuśāsana       23         White, Mr. Claude       xvi       Yul-lho-phyog       107         Wijesimha       .58, 61, 66, 67       Za-hor / εα       Za-hor / εα       99, 124         Winding up       .62       Za-hor / εα       75   | Wenzel, Dr                       | 71          |                                     |
| White, Mr. Claude       xvi         Wijesimha       58, 61, 66, 67         Williams, Monier       63         Winding up       62    Yul-lho-phyog  107  Za-hor   € n   2   2   2   2   2   2   2   2   2   | Wheel                            | 100         | · · · ·                             |
| White, Mr. Claude       xvi       Yul-lho-phyog       107         Wijesimha       58, 61, 66, 67       Za-hor / € Cl       Za-hor / € Cl       99, 124         Winding up       62       Za-hor / € Cl       75  | Wheel of Reasons 99,             | 100         | •                                   |
| Williams, Monier 63 Za-hor / € € 1   |                                  | <b>x</b> vi | Yul-lho-phyog 107                   |
| Winding up 62 Zasonuh 75   | Wijesimha 58, 61, 66             | 6, 67       | , <b>z</b>                          |
| Winding up 62 Zasonuh 75   | Williams, Monier                 | /           | Za-hor / cr. 64. 99, 124            |
| Word 4 85, 88, 89, 106, 111 Zla-ya-dge-bassen 121  | Winding up                       | 62          | Daschuh 75                          |
| The state of the s | Word 4 85, 88, 89, 106,          | 111         | Zla-ya-dga-bsñen 121                |